पृथ्वीराज रासो

Prithvi Raj Raso

[लघु संस्करण]

पंजाब विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. डिगरी के लिए
स्वीकृत शोध प्रबन्ध ।

[मूल-इंगलिश से परिवर्द्धित हिन्दी रूपान्तर]
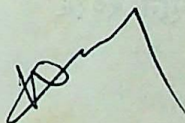
सम्पादकः— Dr. B.P. Sharma

डा० बी० पी० शर्मा

एम. ए., पी. एच. डी.

डी० ए० वी० कालेज, चण्डीगढ़ ।

Vishv Bharti Prakashan

विश्व भारती प्रकाशन chandigarh

प्रकाशक—
सुरेन्द्र कुमार कौशिक
व्यवस्थापक, विश्व-भारती प्रकाशन,
1178/22-B चंडीगढ़ ।
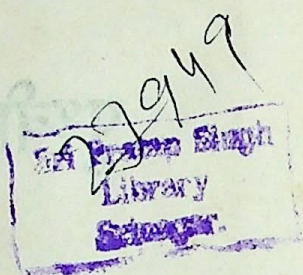
मुद्रक :—
आर्य प्रिंटिंग प्रेस,
अम्बाला छावनी ।

प्रथमावृत्ति १०००
मूल्य—१५ रु०
फाल्गुन २०१६

अन्य प्राप्ति स्थान—

आमुख

मेरे मित्र डा० वेणीप्रसाद शर्मा द्वारा सुसम्पादित "पृथ्वीराज रासो" के इस संस्करण का प्रकाशन निस्संदेह स्वागत योग्य है। सभी जानते हैं कि पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता को लेकर हिन्दी भाषा और साहित्य के विद्वानों में कितना मत भेद हैं। किसी समय इसे भारतीय इतिहास के लिये बहुमूल्य ग्रन्थ समझा जाता था। "रायल एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल नामक विद्वत्सभा ने इस का प्रकाशन शुरु किया था, परं "पृथ्वीराज विजय" नामक संस्कृत काव्य के मिल जाने से इस की ऐतिहासिक प्रामाणिकता पर संदेह होने लगा। प्रो० बूलर ने सन् १८६३ में एक पत्र उक्त सोसायटी को लिखा था जो उस साल की प्रोसीडिंग्स में प्रकाशित हुआ था। इस पत्र में प्रो० बूलर ने लिखा था कि मुझे उन लोगों का समर्थन करना पड़ेगा जो रासो को जाली मानते हैं। मेरे एक विद्यार्थी श्री जेम्स मोरिसन ने पृथ्वीराज-विजय नामक संस्कृत ग्रंथ का अध्ययन किया है, जो मुझे सन् १८७५ में काश्मीर में प्राप्त हुआ था और उन्होंने १४५०-७५ में लिखित जोन राज की टीका का भी अध्ययन कर लिया है पृथ्वीराज-विजय का लेखक निस्संदेह पृथ्वीराज का समकालीन आदि राज कवि था। संभवतः कश्मीरी था और अच्छा कवि एवं विद्वान् था। उस का लिखा हुआ चौहानों का बृत्तान्त चंद के लिखे विवरण के विरुद्ध है। और वि०सं० १०१० तथा वि० सं० १२२५, (जे० ए० एस० बं० भाग-५५, प्रथम जिल्द-१८८६ पृष्ठ १५ और टिप्पणी,) के शिला लेख लेखों से मिल जाता है। पृथ्वीराज विजय काव्य में जो वंशावली दी हुई है वही उक्त लेखों में मिलती हैं और उन में दी हुई घटनाएं दूसरे प्रमाणों-अर्थात् मालवा और गुजरात के शिला लेखों से मिल जाती हैं।" इसके बाद कुछ और ऐतिहासिक असंगतियों का उल्लेख करने के बाद प्रो० बूलर ने लिखा था—"मैं समझता हूँ कि रासो का प्रकाशन बन्द कर दिया जाए तो अच्छा होगा"। इस पत्र के परिणाम स्वरूप सोसायटी ने रासो का प्रकाशन बन्द कर दिया। परन्तु प्रकाशन बन्द होने से एतद्विषयक ऊहा-पोह बंद नहीं हुआ बल्कि बढ़ता ही गया। काशी नागरी

कई विद्वानों ने उसकी ऐतिहासिक विप्रतिपत्तियों को सुलझाने का असफल प्रयत्न किया। डा० बेणी प्रसाद जी ने इस संस्करण की भूमिका में विद्वत्ता पूर्ण इन सभी बातों की समीक्षा की है। उन्होंने पृथ्वीराज रासो के सब से पुराने समझे जाने वाले हस्त लेख के अध्ययन से अनेक महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले हैं। वे हिन्दी के भावुक हिमायतियों की भांति हर बात का उल्टा-सीधा समर्थन करना अपना कर्तव्य नहीं मानते। वे सत्य की खोज करना ही अपना पावन कर्तव्य समझते हैं, वे कहते हैं-"उपर्युक्त ऐतिहासिक विप्रतिपत्तियों की उपस्थिति में हमें ऐसा विश्वास नहीं होता कि रासो की रचना तेहरवीं शताब्दी में हुई हो।" .....अतः प्रतीत एसा होता हैं कि रासो की रचना सम्राट् पृथ्वीराज के राज्यकाल--१३वीं शताब्दी के प्रथमार्ध में नहीं हुई अपितु यह एक लगभग बाबर समकालीन कृति है"। (पृष्ठ ७३) यह निष्कर्ष अभी सर्वजन ग्राह्य हो सकेगा या नहीं यह कहना अभी कठिन है। किन्तु डा० शर्मा के तर्क और निवेचन पद्धति में बल है और विद्वानों को इस पर अवश्य विचार करना पड़ेगा।

रासो के चरित नायक के इतिहास-प्रथित व्यक्ति होने के कारण आरम्भ में इसके ऐतिहासिक पक्ष पर ही अधिक चर्चा हुई। परन्तु पृथ्वीराज रासो एक काव्य है, उसमें ऐतिहासिक विप्रतिपत्तियां हों भी तो वह काव्य के अध्येता के लिए उपेक्ष्य नहीं है। डा० शर्मा ने इस बात का पूरा ध्यान रखा है। यह ठीक है कि रासो की ऐतिहासिक सामग्री भी बहुत महत्वपूर्ण है और इतिहास का विद्यार्थी उस की उपेक्षा नहीं कर सकता। परन्तु रासो को चरित-काव्य के रूप में अध्ययन करना अधिक आवश्यक हैं। डा० शर्मा जी को "प्रस्तुत लघु संस्करण, प्रबंधात्मकता, कथा-सौष्ठव तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से उपर्युक्त तीनों संस्करणों से अधिक समीचीन प्रतीत हुआ" है। स्पष्ट है कि उन का बल रासो के साहित्यक अध्ययन पर है।

वस्तुतः जैसा कि मैं ने पहले कहा हैं, इस देश में इतिहास को ठीक आधुनिक अर्थ में कभी नहीं लिया गया। बराबर ही ऐतिहासिक व्यक्ति को पौराणिक या काल्पनिक कथा-नायक बनाने की प्रवृत्ति रही है। कुछ में दैवी-शक्ति का आरोप करके पौराणिक बना दिया गया है। जैसे राम

कृष्ण तथा बुद्ध आदि। और कुछ में काल्पनिक रोमांस का आरोप करके निजंधरी कथाओं का आश्रय बना दिया गया है। जैसे—उदयन, विक्रमादित्य और हाल। जायसी के रत्न सेन और रासो के पृथ्वीराज में भी तथ्य और कल्पना का Facts और Fiction का अद्भुत योग हुआ है। कर्म फल की अनिवार्यता में दुर्भाग्य और सौभाग्य की ओर मनुष्य के अपूर्व शक्ति भण्डार होने में दृढ़ विश्वास और आस्था ने इस देश के ऐतिहासिक तथ्यों को सदा आदर्शवादी काल्पनिक रंग में रंगा है। यही कारण है कि जब ऐतिहासिक व्यक्तियों का भी चरित्र लिखा जाने लगा तब भी इतिहास का कार्य नहीं हुआ। अन्त तक ये रचनाएं काव्य ही बन सकीं, इतिहास नहीं। फिर भी निजंधरी-कथाओं से वे इस अर्थ में भिन्न थीं, कि उन में बाह्य तथ्यात्मक जगत् से कुछ न कुछ योग अवश्य रहता था। कभी कभी मात्रा में कमी पेशी तो हुआ करती थीं, परं योग रहता अवश्य था। ये निजंधरी कथाएं अपने आप में ही पूर्ण होती थीं। जिस प्रकार भारतीय कवि काल्पनिक कथाओं में ऐसी धटनाओं को नहीं आने देता, जो दुःखपरक विरोधों को उकसावे, उसी प्रकार वह ऐतिहासिक कथानकों में भी किया करता है। सिद्धान्ततः काव्य में उस वस्तु का आना भारतीय कवि उचित नहीं समझता जो तथ्य और औचित्य की भावनाओं में विरोध उत्पन्न करे। दुःखोद्रेचक परिस्थितियों Tragic Contradiction की सृष्टि करे। परन्तु वास्तव जीवन में ऐसी बातें होती ही रहती हैं इस लिए इतिहासाश्रित काव्य में भी ऐसी बातें आवेंगी हीं। बहुत कम कवियों ने ऐसी घटनाओं की उपेक्षा कर जाने की बुद्धि से अपने को मुक्त रखा है। ऐतिहासिक काव्य में भी नायक को सब प्रकार से धीरोदात्त या धीर ललित बनाने की प्रवृत्ति ही प्रबल रही है। परन्तु वास्तविक जीवन के कर्तव्य-द्वन्द्व, आत्म-विरोध और आत्म-प्रतिरोध जैसी बातें उस में नहीं आ पातीं या बहुत कम आ पाती हैं, ऐसा करने से इन काव्यों में इतिहास का रस भी नहीं आ पाता और कथानायक कल्पित-पात्र की कोटि में आ जाता है। फिर जीवन में कभी २ हास्योद्रेचक अनमिल-स्वर भी आ जाते हैं। नायक के प्रसंग में भारतीय कवि कुछ अधिक गम्भीर रहने में विश्वास करता हैं, और ऐसे प्रसंगों को प्रायः तरह दे जाता।

हिन्दी के आदि कालीन ऐतिहासिक चरिताश्रित काव्यों में यह

समर्पण:—

परम श्रद्धास्पद

स्व० डा० बनारसीदास जैन

जिनकी प्रेरणा तथा आशीर्वाद से

मैं इस ग्रन्थ को सम्पूर्ण कर पाया हूँ

उनकी ही पुण्य स्मृति में

सादर समर्पित।

श्रद्धावनत

—वी. पी. शर्मा

—आपका जन्म लुधियाना नगर के एक साधारण वैश्यकुल में दिसम्बर सन् १८८९ में हुआ। आपने ओरियण्टल कालेज लाहौर से एम. ए. (संस्कृत) में उत्तीर्ण किया। मेयो-पटियाला रिसर्च स्कालर के रूप में पंजाब भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन किया। भारत के पुरातत्व विभाग में शिलालेख तथा पुराने सिक्कों पर अनुसन्धानात्मक कार्य किया ओरिएण्टल कालेज में प्राध्यापक नियुक्त होने आप डा० ए. सी. वुल्लर के सम्पर्क में आने से आपने प्राकृत, अपभ्रंश तथा जैन साहित्य का विशेष अध्ययन किया। सन् १९२८ में लण्डन युनिवर्सिटी से आपको "फोनोलोजी ऑफ पंजाबी" विषय पर डॉक्टरेट की उपाधि मिली। आपने संस्कृत तथा पंजाबी भाषा विषयक अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे। आपका जीवन परोपकारी तथा बड़ा ही सात्विक था।

भारत के यशस्वी भाषाविद्—

डा० बनारसी दास जैन, एम. ए., पी. एच. डी.
(लण्डन)

जन्म—१६-१२-१८८६ मृत्यु—अप्रैल, १९४५

विषय-सूची

द्वितीय भाग

—o—

प्रस्तावना

पृथ्वीराज रासो राजपूताने के क्षत्रिय वीरों का अति प्रिय ग्रंथ रहा है। वहां महाभारत से उतर कर रासो ही सर्व श्रेष्ठ गौरव का पात्र समझा जाता था। इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ को हिन्दी साहित्य का आदि स्रोत तथा आदि ग्रंथ माना गया है। इस के वैज्ञानिक तथा प्रामाणिक सम्पादन के लिये लगभग गत सौ वर्षों से प्रयत्न होते रहे, परन्तु इस का अभी तक कोई प्रामाणिक तथा भाषा विज्ञान की दृष्टि से उचित संस्करण प्रकाशित नहीं हो सका था। ऐसा होने में दो बाधाएं थीं। प्रथम तो इस के अन्तर्गत आने वाली ऐतिहासिक समस्याओं अथवा विप्रतिपत्तियों को लेकर विद्वानों में ऊहा पोह चलता रहा, क्योंकि रासो का सम्बंध इतिहास के प्रसिद्ध व्यक्ति भारत पर मुस्लिम आक्रमणकारियों से लोहा लेने वाले हिन्दु सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के जीवन चरित्र तथा तत्कालीन राजनैतिक वातावरण से है। इसकी ऐतिहासिक विषमताओं अथवा विप्रतिपत्तियों के कारण ही किसी विद्वान् ने इसे जाली ग्रंथ माना तो किसी ने अप्रामाणिक[1]।

सर्व प्रथम सन् १८३६ में राबर्टलेंज नामक एक रूसी विद्वान् इस ग्रंथ के कुछ भाग का अनुवाद कर प्रकाशित करना चाहता था, परन्तु उसकी असामयिक मृत्यु ने पूर्वी भाषा तथा साहित्य के विद्वानों को उसका कौशल देखने से वंचित कर दिया। कर्नल टांड इस ग्रंथ से इतना प्रभावित था कि उसने अपने गुरु यति ज्ञानचन्द्र से रासो के पद्यों का अर्थ सुन सुन कर कुछ अंशों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया तथा अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Annals of Rajasthan" में रासो का विशेष उपयोग किया। यही नहीं लम्बी सर्विस के पश्चात् भारत भूमि को छोड़कर स्वदेश चले

1 इस समस्या पर विशेष विवरण "ऐतिहासिकता" अध्याय में देखें।

प्रस्तावना

पृथ्वीराज रासो राजपूताने के क्षत्रिय वीरों का अति प्रिय ग्रंथ रहा है। वहां महाभारत से उतर कर रासो ही सर्व श्रेष्ठ गौरव का पात्र समझा जाता था। इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ को हिन्दी साहित्य का आदि स्रोत तथा आदि ग्रंथ माना गया है। इस के वैज्ञानिक तथा प्रामाणिक सम्पादन के लिये लगभग गत सौ वर्षों से प्रयत्न होते रहे, परन्तु इस का अभी तक कोई प्रामाणिक तथा भाषा विज्ञान की दृष्टि से उचित संस्करण प्रकाशित नहीं हो सका था। ऐसा होने में दो बाधाएं थीं। प्रथम तो इस के अन्तर्गत आने वाली ऐतिहासिक समस्याओं अथवा विप्रतिपत्तियों को लेकर विद्वानों में ऊहा पोह चलता रहा, क्योंकि रासो का सम्बंध इतिहास के प्रसिद्ध व्यक्ति भारत पर मुस्लिम आक्रमणकारियों से लोहा लेने वाले हिन्दु सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के जीवन चरित्र तथा तत्कालीन राजनैतिक वातावरण से है। इसकी ऐतिहासिक विषमताओं अथवा विप्रतिपत्तियों के कारण ही किसी विद्वान् ने इसे जाली ग्रंथ माना तो किसी ने अप्रामाणिक[1]।

सर्व प्रथम सन् १८३६ में रार्बटलेंज नामक एक रूसी विद्वान् इस ग्रंथ के कुछ भाग का अनुवाद कर प्रकाशित करना चाहता था, परन्तु उसकी असामयिक मृत्यु ने पूर्वी भाषा तथा साहित्य के विद्वानों को उसका कौशल देखने से बंचित कर दिया। कर्नल टांड इस ग्रंथ से इतना प्रभावित था कि उसने अपने गुरु यति ज्ञानचन्द्र से रासो के पद्यों का अर्थ सुन सुन कर कुछ अंशों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया तथा अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Annals of Rajasthan" में रासो का विशेष उपयोग किया। यही नहीं लम्बी सर्विस के पश्चात् भारत भूमि को छोड़कर स्वदेश चले

---

1 इस समस्या पर विशेष विवरण-"ऐतिहासिकता" अध्याय में देखें।

जाने पर भी कर्नल महोदय का प्रेम रासो में बराबर बना रहा; जिसका परिचय कन्नौज खण्ड के उस पद्यमय अनुवाद से लगता है जिसे छपवा कर कर्नल महोदय ने अपनी मित्र मण्डली में मुफ्त वितरित किया। इंगलैण्ड की गुणग्राही विद्वन्मण्डली ने उसे इतना पसन्द किया कि सन् १८३८ के एशियाटिक सोसाइटी के जनरल की ३५वीं जिल्द में उसे पुनः प्रकाशित किया गया। केवल अनुवाद से ही विदेशी विद्वान् मुग्ध हो गए।

इसके पश्चात् सन् १८७१ में मैनपुरी के मजिस्ट्रेट ग्रौस महोदय ने रासो का सम्पादन प्रारम्भ किया और बंगाल एशियाटिक सोसाइटी को इस के छपवाने के लिए प्रेरित किया। परन्तु दो वर्षों तक रासो पर निरन्तर कार्य करने के पश्चात् ग्रौस महोदय ने सरकारी कार्य अधिक होने के कारण अथवा रासो गत भाषा आदि की कठिनाइयों के कारण इस ग्रंथ के सम्पादन में अपनी असमर्थता प्रकट की और उक्त सोसाइटी को सम्मत्ति दी कि यह कार्य किसी भारतीय विद्वान् को सौंपा जाय। एतदनन्तर उक्त सोसाइटी ने भारतीय भाषाओं के विशेषज्ञ जॉन बीम्स को रासो के सम्पादनार्थ प्रेरित किया। बीम्स महोदय ने सम्मति दी कि रासो के सम्पादन से भाषा शास्त्र की विशेष पुष्टि हो सकेगी और इससे इण्डो-आर्य भाषाओं की खोई हुई लड़ी का पता चल जाएगा। संस्कृत और प्राकृत की बोलियों से भारत की वर्तमान बोलियों के उद्गम और उनके तारतम्य पूर्ण विकास के इतिहास का भली प्रकार ज्ञान रासो के सम्पादन तथा प्रकाशन के बिना सम्भव नहीं है। परिणाम स्वरूप बीम्स महोदय ने जय नारायण कालेज बनारस के संस्कृत के प्रोफैसर डा० रूडोल्फ हर्नले के सहयोग से रासो का सम्पादन कार्य आरम्भ किया। फलतः रासो का आंशिक प्रकाशन "बिब्लियाथिका इण्डिका" ग्रंथमाला में प्रारम्भ हुआ। लगभग चार सौ पृष्ठ ही प्रकाशन में आए थे कि बीम्स महोदय सन् १८७४ में अपने सहायक हर्नले सहित किसी कारण वश रासो के सम्पादन कार्य से विरत हो गए।

सन् १८८६ में महामहोपाध्याय कविराज मुरारी लाल श्यामलदास

ने बंगाल एशियाटिक सोसाइटी के जरनल[1] में एक लेख प्रकाशित किया जिस में रासो को सर्वथा एक जाली ग्रंथ ठहराया गया और कविवर चंद बरदाइ के साथ रासो के सम्बंध को आकाश कुसुमवत् मिथ्या प्रमाणित किया। प्रो० बूलर[2] ने "पृथ्वीराज विजय" काव्य के आधार पर कविराज जी का समर्थन किया, परिणामतः विद्वानों का रासो विषयक जोश ठंडा पड़ गया। इसी समय कविराज श्यामलदास जी के प्रतिवाद में श्री मोहन लाल विष्णु लाल पाण्ड्या ने "रासो संरक्षा" नामक लेख ब.ए.सो. के जनरल में प्रकाशनार्थ भेजा परं सोसाइटी रासो के प्रति इतनी निराश हो चुकी थी कि उक्त लेख के छापने से भी इनकार कर दिया। इस पर पाण्ड्या जी ने उक्त लेख को पुस्तिका रूप में छपवा कर मुफत वितरण किया। मिश्रबंधु तथा बाबू श्यामसुन्दर दास आदि विद्वानों ने पाण्ड्या जी की युक्तियों का समर्थन किया। परिणाम स्वरूप नागरी प्रचारिणी सभा काशी ने सहस्रों रुपयों के व्यय से रासो के प्रक्षेप विक्षेप पूर्ण बृहद संस्करण को पाठ शुद्धि का विशेष ध्यान न करते हुए सन् १६००–८ में कतिपय भागों में प्रकाशित किया।

इस पर भी प्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वान् स्व. डा० गौरीशंकर हीरानंद ओझा जा ने रासो गत ऐतिहासिक विषमताओं के आधार पर रासो को एक जाली ग्रंथ ठहराया। स्वः आचाय शुल्क जी ने भी रासो का प्रामाणिकता में संदेह प्रकट किया। रासो की प्रामाणिकता सम्बंधो उपर्युक्त ऊहापोह रासो के बृहद् संस्करण तथा मध्यम संस्करण को लेकर ही चलता रहा। लघु तथा लघुत्तम संस्करण की पाण्डुलिपियां अभी तक प्रकाश में नहीं आई थीं।

पंजाब विश्व विद्यालय लाहौर के तत्कालीन वाइस चांसलर डा० ए.सी. वुलनर की प्रेरणा से स्व० डा० बनारसी दास जैन के निर्देशन में मध्यम संस्करण को लेकर पं० मथुराप्रसाद दीक्षित कुछ संशोधन कार्य करते रहे। डा० बनारसी दास जी के सुयोग्य

1 देखो B.A.S. Journai Vol. ∠V. 1886 Part I Page 5।

2 देखो—R A.S.J. जनवरी-दिसम्बर १९९३ पृष्ठ ८३

पुत्र श्री मूलराज जैन ने रासो के लघु संस्करण के सम्पादनार्थ सामग्री एकत्रित की थी परन्तु देश के विभाजन के कारण वह समस्त सामग्री लाहौर में ही रह गई और संभवतः आग की भेंट हो गई।

रासो के समालोचनात्मक सम्पादन में दूसरा कारण उसकी विविध वाचनाओं (Recensions) की उलझन रही हैं। सन् १९३० तक इस ग्रन्थ की बृहद् तथा मध्यम वाचनाओं का ही ज्ञान था। सन् १९३० से १९४२ तक के समय में बीकानेर के प्रसिद्ध व्यापारी तथा विद्वान् श्री अगरचन्द जी नाहटा के परिश्रम से रासो की लघु तथा लघुतम दो वाचनाएं और प्रकाश में आईं। बृहद् तथा मध्यम वाचनाओं की अनेकों पांडु लिपियां भारत तथा योरुप की लाइब्रेरियों में कुछ पूर्ण और कुछ खण्डित रूप में सुरक्षित हैं। कुछ प्रतियों का व्योरा इस प्रकार है:—

१. बीकानेर फोर्ट लाइब्रेरी में आठ प्रतियां।
२. अबोहर साहित्य सदन में एक प्रति।
३. बीकानेर बृहद् ज्ञान भण्डार में एक प्रति।
४. बीकानेर के श्री अगरचन्द नाहटा की एक प्रति।
५. पञ्जाब यूनिवर्सिटी लाहौर लाइब्रेरी में चार प्रतियां।
६. भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट में दो प्रतियां।
७. रायल एशियाटिक सोसाइटी बम्बई शाखा में तीन प्रतियां।
८. जोधपुर सुमेर लाइब्रेरी में दो प्रतियां।
९. उदयपुर स्टेट विक्टोरिया हाल लाइब्रेरी में एक प्रति।
१०. आगरा कालिज़ आगरा में चार भागों में एक प्रति।
११. कलकत्ता निवासी स्वर्गीय पूरणचन्द नाहर की एक प्रति।
१२. रायल एशियाटिक सोसायटी बंगाल में कुछ प्रतियां।
१३. नागरी प्रचारिणी सभा काशी की कुछ प्रतियां।
१४. किशनगढ़ स्टेट लाइब्रेरी की कुछ प्रतियां।
१५. अलवर स्टेट लाइब्रेरी में कुछ प्रतियां।
१६. चंद के वंशधर नानूराम की दो प्रतियां।
१७. युरोप के विभिन्न पुस्तकालयों में कतिपय प्रतियां।

मध्यम रूपान्तर की सब से प्राचीनतम प्रति लन्दन के रायल एशिटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में है। इसका लिपि काल सं० १६९२ है। बृहद् रूपान्तर की सब से प्राचीनतम प्रति सं० १७३८ की हैं और वह मेवाड़ के ठिकाना भींडर के संग्रह में है।

लघु रूपान्तर की तीन प्रतियां बीकानेर के राजकीय पुस्तकालय में है। इनमें से एक का लिपि काल सम्वत् १६३० के लगभग निश्चित है। बीकानेर के मोतीचंद-खजानची संग्रह में एक प्रति तथा एक प्रति नाहटा कला भवन में है। ये दोनों प्रतियां बीकानेर राजकीय लाइब्रेरी वाली प्रति से अर्वाचीन हैं। लघुतम रूपान्तर, जिसका कुछ सम्पादित पाठ "राजस्थान[1] भारती" में प्रकाशित हुआ है, की एक प्रति श्री अगरचन्द नाहटा जी को गुजरात के किसी एक गांव से प्राप्त हुई थी। इसका लिपिकाल संवत् १६६७ बताया जाता है। एक प्रति मुनि जिनविजय जी के संग्रह में है। (लिपिकाल सं० १६९७)

प्रबन्धात्मकता को दृष्टि से बृहद् तथा मध्यम रूपान्तरों में तो प्रबन्धात्मकता नाम मात्र ही है। घटनाक्रम अत्यन्त शिथिल है। प्रत्येक घटना अपने स्वतन्त्र रूप में वर्णित है और बीच बीच में इतने अनिच्छित प्रसंग आ घुसे हैं कि उनका प्रधान कथानक से लेशमात्र का भी सम्बन्ध नहीं जोड़ा जा सकता। जैसे—दीपावली प्रसंग, शकुन विचार, भूत, प्रेत, ऋषि मुनि, देवता और न जाने कितने प्रसंग हैं कि मुख्य कथावस्तु उपर्युक्त प्रसंगों में आटे में नमक के समान है। लघुतम रूपान्तर का कथानक जहां तहां बिखरा पड़ा है। अनुमान ऐसा है कि इस वाचना का पाठ क्रमबद्ध नहीं है। जैसे प्रथम खण्ड के प्रारम्भ में छन्द भुजंगी संख्या २ में ईश्वर, व्यास— शुकदेव तथा कवि कालिदास आदि की प्रस्तुति के पश्चात् छंद संख्या ३ में वंशोत्पत्ति वर्णन है। इसके बाद छंद विराज (संख्या २२) में शिव स्तुति और छंद साटक २३ में गणेश स्तुति का वर्णन है। हालांकि मंगलाचरण ग्रन्थ के प्रारम्भ में चाहिए था और उपर्युक्त छंद भुजंगी संख्या २ का सम्बन्ध छंद (दूहा) संख्या १९ के साथ होना चाहिए था।

---

1 खण्ड विभाजन सम्पादक द्वारा ही निश्चित किया गया है।

खट्टुवन में धन प्राप्ति, किल्ली-ढ़िल्लो कथा तथा अनंगपाल द्वारा पृथ्वीराज को दिल्ली राज्य का समर्पण प्रसंग संकेत मात्र से एक २ दोहे में ही समाप्त कर दिए हैं। दूसरे खण्ड में संयोगिता के जन्मे बिना ही उसका स्वयम्बर रचाया जा रहा है। अप्रासांगिक रूप से कहीं सुनार और बढ़ई आदि विवाहार्थ आभूषण तथा मण्डप की सजावट के लिये सामान तैयार कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त अप्रसंग में ही संयोगिता यौवन मद वर्णन तथा एक ही छंद में जयचंद-पृथ्वीराज युद्ध समाप्त है। इस प्रकार लघुतम रूपान्तर में प्रबन्धात्मकता नाम की कोई वस्तु खोजने पर भी नहीं मिलती।

प्रस्तुत लघु संस्करण प्रबंधात्मकता, कथा सौष्ठव तथा भाषा विज्ञान की दृष्टि से उपर्युक्त तीनों संस्करणों से अधिक समीचीन प्रतीत हुआ। इसकी पाण्डुलिपिएं भी उक्त तीनों वाचनाओं की पाण्डुलिपियों से प्राचीनतम प्राप्त हुई हैं। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान् डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का भी यह मत है कि रासो का लघु संस्करण अन्य तीनों संस्करणों से प्रामाणिक[1] है। डा० दशरथ[2] शर्मा इस लघु संस्करण की पाण्डुलिपियों के विशेष अध्ययन से इसी निष्कर्ष पर पहुँच सके कि पृथ्वीराज रासो का वास्तविक रूप इन्हीं प्रतियों में मिल सकता है।

उपर्युक्त कारणों से तथा स्व० डा० बनारसी दास जैन की प्रेरणा से उनके निर्देशन में मैंने यह कार्य सन् १९५३ में प्रारम्भ किया था। मैं इस दिशा में किंचित् मात्र ही प्रगति कर पाया था कि अप्रैल १९५४ में अकस्मात् हृदय गति रुक जाने से श्रद्धेय जैन जी का स्वर्गवास हो गया। शोक संतप्त मुझको कुछ न सूझा। तीन मास तक किं कर्तव्य विमूढ़ रहा। आरब्ध कार्य को सिरे तक ले जाने की प्रबल इच्छा तो मन में हिलोरे ले ही रही थी। अन्ततः मैं ने डा० माता प्रसाद गुप्ता जी (रीडर

---

1 देखो—"संक्षिप्त रासो" पृष्ठ १६०

2 हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग सन् १९३९ के विवरण में डा० शर्मा का लेख देखें। "इण्डियन हिस्टोरिकल क्वाटरली जिल्द १८, १९४०"

हिन्दी विभाग इलाहाबाद वि० विद्यालय) से इस कार्य में निर्देशन की प्रार्थना की। उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दे दी। उनके सुयोग्य निर्देशन तथा परिश्रम से मैं इस कार्य को सम्पूर्ण कर पाया हूँ। मेरे पास ऐसे शब्द नहीं कि जिनके द्वारा मैं श्रद्धेय गुप्त जी का ग्राभार प्रदर्शन कर सकूं। प्रस्तुत प्रति जो ग्राप के हाथों में है यह उन्हीं की कृपा, विद्वत्ता, तथा परिश्रम का फल है, मैं तो केवल कारण मात्र हूँ।

मेरी ग्रार्थिक दशा भी ग्रच्छी नहीं थी। ग्रत: मुझे हर समय भय लगा रहता था कि कहीं ग्रार्थिक कठिनाई के कारण प्रस्तुत शोध कार्य ग्रधूरा न रह जाए। पंजाब विश्व विद्यालय के तत्कालीन रजिस्टरार डा० भूपाल सिंह के सौजन्य तथा सहयोग से मुझे कुछ शोध-ग्रनुदान प्राप्त हो सका था। एतदर्थ पंजाब विश्व विद्यालय का ग्राभार-प्रदर्शन करना मेरा कर्तव्य बन जाता है।

प्रस्तावना को समाप्त करने से पूर्व सर्व प्रथम महाराज बीकानेर के प्राईवेट सैक्रेट्री श्री के. एस. राजगोपाल का मैं ग्राभारी हूँ, जिन के सौजन्य से मुझे ग्रनूप संस्कृत राजकीय पुस्तकालय से तीन पाण्डुलिपिएं प्राप्त हो सकीं। बीकानेर के श्री ग्रगर चंद नाहटा जी, जो कि मुझे समय समय पर ग्रपनी सम्मति तथा शोध सम्बंधी सामग्री प्रदान करते रहे है, का कृतज्ञ हूँ। प्रयाग विश्व विद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष का बहुत ग्रनुगृहीत हूँ। जब मुझे शोध संबंधी कार्य के लिये कुछ समय के लिये प्रयाग में रहना पड़ा तो मुझे उक्त पुस्तकालय से ग्रपने विषय से सम्बंधित सामग्री एकत्रित करने की सुविधा रही। ग्रपने परम मित्र प्रो० कैलाश चन्द्र सिंहल (गौर्वनमैंट कालेज लुधियाना) तथा श्री मूलराज जैन (स्व० डा० जैन के सुयोग्य पुत्र) का मैं हृदय से ग्रभारी हूँ, जिन की सुसम्मति मुझे हर समय प्राप्त होती रही।

ग्रन्त में ग्रपने परीक्षक-डा० सुनीति कुमार चैटर्जी तथा डा० वासु देव शरण ग्रग्रवाल का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ, जिनकी सुसम्मति से प्रस्तुत पुस्तक ग्रौर भी ग्रधिक उपयोगी रूप में प्रकाशित हो सकी है।

१९५८ से १९६२ चार वर्ष पर्यन्त मैं निरन्तर गण्य माण्य प्रकाशकों के दरवाजे इस महत्वपूर्ण महाकाव्य के प्रकाशन के लिये खटखटाता रहा, परन्तु किसी भी प्रकाशक ने उचित शर्तों पर इसे प्रकाशित करना स्वीकार नहीं किया। मेरी प्रार्थना पर, इस ग्रन्थ के प्रकाशनार्थ, भाषा विभाग पटियाला ने १४०० रु० का अनुदान प्रदान किया, एतदर्थ भाषा विभाग के अधिकारीगण का मैं हृदय से आभारी हूँ।

विदुषामनुचर :
बेनी प्रसाद शर्मा कौशिक
लक्ष्मी निवास
1178 सैक्टर 22 बी, चण्डीगढ़।

माघ संक्रांति
२०१९

प्रथम अध्याय

भूमिका

प्राप्त पाण्डुलिपियों का विवरण

पहिले कहा जा चुका है कि पृथ्वीराज रासो की अभी तक चार वाचनाएं उपलब्ध हुई हैं:—वृहद्, मध्यम, लघु तथा लघुतम। वृहद् रूपान्तर के विविध संस्करणों का पाठ १६००० से ४०००० श्लोक प्रमाण तक अनुमान किया गया है। मध्यम का ११००० श्लोक प्रमाण, लघु का ३५०० श्लोक प्रमाण और लघुतम का ४०० छंद (१३०० श्लोक) प्रमाण पाठ है। पहले तीनों रूपान्तर खण्डों में विभाजित हैं। इनमें क्रमशः ६९, ४०-४५, १९ खण्ड अथवा समय हैं। लघुतम रूपान्तर खण्डों में विभाजित नहीं है। इसका पाठ पाण्डुलिपियों में बिना विराम के लिखा मिलता है। पाठ विश्लेषण की दृष्टि से लघुतम रूपान्तर के सभी पद्य लघु रूपान्तर में मिलते है और लघु के मध्यम में तथा मध्यम के वृहद् में। परन्तु चारों रूपान्तरों में खण्डों की योजना, छन्दों का पूर्वापर सम्बन्ध तथा शब्दावली में पर्याप्त अन्तर है। लघु रूपान्तर की पांडुलिपियां अन्य तीनों रूपान्तरों की पाण्डुलिपियों से प्राचीनतम अनुमानित की गई हैं। पाठ तथा भाषा की दृष्टि से भी डा० दशरथ[1] शर्मा आदि कई विद्वानों ने इस लघु रूपान्तर को ही वास्तविक पृथ्वीराज रासो माना है। इस रूपान्तर की तीन पाण्डुलिपियां राजकीय अनूप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर में सुरक्षित हैं। महाराजा बीकानेर के प्राइवेट सैक्रेटरी श्री के. एस. राजगोपाल के अनुग्रह तथा सौजन्य से ये तीनों

देखो—रासो की एक प्राचीन पाण्डुलिपि तथा उस की प्रमाणिकता" काशी नगरी प्रचारिणी पत्रिका, कार्तिक संम्बत् १९९६।

तथा—पृथ्वीराज रासो का समय तथा उसकी प्रमाणिकता" इण्डियन हिस्टोरिकल क्वाटरली जिल्द १६ दिसम्बर १९४०।

प्रतियां मुझे अध्ययनार्थ उपलब्ध हो सकी थीं। पृथ्वीराज रासो के प्रस्तुत पाठ-सम्पादन में मैंने इन्हीं तीनों प्रतियों का उपयोग किया है।

क्योंकि उक्त तीनों प्रतियां अनूप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर से प्राप्त हुई है, अतः उक्त स्थान के स्मरणार्थ प्रतियों का चिन्ह (Siglum) BK1 (६१), BK2 (५६) BK3 (६२) निश्चित किया गया है।

प्रतियों का विवरण

१. प्रात BK1—अनूप संस्कृत राजकीय पुस्तकालय में रजिस्टर नं० ६१।

यह प्रति ८½"×७" इंच आकार की है और पत्रांक ४-१०२ तक ९९ पन्नों में समाप्त है। प्रत्येक पृष्ठ में १८ से २० पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में लगभग २० अक्षर हैं। कागज जीर्ण, कहीं कहीं किनारों पर त्रुटित तथा हाथ का बना, मिट्टी रंगा खुरदरा सा है। पन्ने खुले हैं, पत्रांक संख्या देवनागरी अंकों में दाएं हाशिए के मध्य में दी हुई है। अक्षर भद्दे हैं परन्तु पाठ सुपाठ्य है। अंतिम कवित्त—

प्रथम वेद उद्धरिय बंभ, मच्छह तनु किन्नउ।
दुतीय वीर वाराह धरनि, उद्धरि जसु लिन्नौ।
कौमारिक भद्देस धम्म, उद्धरि सुर रष्षिय।
कूरम सूर नरेस हिंदु, हद उद्धरि रष्षिय।
रघुनाथ चरित्तु हनुमंत कृत, भूप भोज उद्धरिय जिमि।
पृथिराज सु जसु कविचन्द्र कृत, चंद्र सिह उद्धरिय इमि।

जो कि प्रति BK2, BK3 में मिलता है, इस प्रति में नहीं है। परन्तु इस कवित्त से पहले का रूपक लिख कर तीन चार इंच स्थान रिक्त छोड़ दिया गया है और पूर्णाहुति सूचक कुछ भी नहीं लिखा गया। प्रतीत ऐसा होता है कि जिस प्रति से प्रस्तुत प्रति को नकल किया गया है उसमें उपर्युक्त कवित्त का स्थान जीर्ण हो गया अथवा फट गया होगा। अतः स्पष्ट है कि यह छंद लिखना छूट गया। इसी लिए स्थान छोड़ा गया कि बाद में किसी अन्य प्रति से उक्त छंद को नकल कर लिया जायेगा।

इस प्रति का शीर्षक है:—' चंद वरद ई का पृथिराज रासो", और

प्रारम्भ:-ओं नम: श्री कृष्णाय परमात्मने, जय जय देवेश" तथा निम्नोक्त पुष्पिका समाप्ति सूचक है।

मन्त्रीश्वर मंडन तिलक, वच्छावंश भर भाण।
करमचंद सुत करम बड़े, भागचंद सब जाण।
तसु कारण लिषियो सही, पृथ्वीराज चरित्र।
पढ़तां सुष संपति सकल, मन सुष होवे मित्र।
शुभं भवतु।

लिपिकाल— यद्यपि इस प्रति का लिपिकाल स्पष्ट रूप से पुष्पिका में नहीं दिया गया, परन्तु पूर्वोक्त रूपक से अनुमान किया जा सकता है कि यह प्रति मंत्रीश्वर कर्मचंद के पुत्र भागचंद के लिये लिखवाई गई थी। यह बात निश्चित हो चुकी है कि मन्त्रीश्वर कर्मचंद सम्राट् अकबर के दरबार में अर्थ मन्त्री थे। इनका जन्म संवत् १५९९ पौष वदी को निश्चित किया गया है। श्री अगरचंद नाहटा[1] जी को इनकी जन्मपत्री भी मिली है जिसमें "कर्मचंद वच्छावत रो जन्म सं० १५९९ पौष वदी १० इष्ट ३२" लिखा है। सम्राट् अकबर का राज्यकाल सम्वत् १६१३–६२ तक है। कर्मचंद सं० १६५७ में अकबर के दरबार में मन्त्री अथवा दीवान थे सं० १६७८ में इन की मृत्यु हुई। इनकी मृत्यु के आस पास ही इनके सुपुत्र भागचंद एक युद्ध में खेत रहे। इस बात की पुष्टि के लिये दूसरा प्रमाण हमको "कर्मचंद[2] वंशोत्कीर्तनयं काव्यम्" में मिलता है। इस ग्रन्थ की रचना जयसोम द्वारा सं० १६५० में लाहौर में हुई। यह ग्रन्थ दीवान कर्मचन्द के जीवनकाल में ही लिखा गया। इसमें कर्मचंद को सम्राट् अकबर का प्रगाढ़ मित्र तथा अत्यन्त विश्वासपात्र 'दीवान' बतलाया गया है। इस ग्रन्थ के अनुसार कर्मचंद के दो पुत्र थे जिनमें से भागचंद ज्येष्ठ पुत्र था।

---

1 देखो—"प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ" में श्री मूलराज जैन का लेख—रासो की विविध बाचनाएं तथा श्री अगर चन्द नाहटा का लेख"—कर्म चन्द का जन्म और उनके बंशज" राजस्थान भारती—भाग २ अंक १ जुलाई १९४८।

2—देखो—काशी नगरी प्रचारिणी पत्रिका भाग ३ जिल्द २ सं० १९८१, श्री शिव दत्त पाण्डेय का एक लेख।

अतः यह बात निश्चित प्रायः है कि प्रस्तुत प्रति लगभग सं० १६३०–१६७० (सन् १५७३–१६१३ के मध्य में नकल की गई) ।

२. प्रति **BK2**—अनूप संस्कृत पुस्तकालय में रजिस्टर नं० ५६ ।

यह प्रति १०½"×६¼" साइज़ में गुटकाकार है । आदि के ५ पन्ने लुप्त हैं । ६–८४ पन्नों में रासो समाप्त हुआ है । प्रत्येक पंक्ति में १६ से १८ पंक्तियां हैं, तथा प्रत्येक पंक्ति में ३० से ३७ तक अक्षर है । लिखाई सुन्दर तथा सुपाठ्य है कागज़ भी कुछ सफेदीनुमा, मुलायम सा है, परन्तु बना हुआ हाथ का है । इसकी अन्त्य पुष्पिका इस प्रकार है :—

महाराज नृप सूर सुव, कूरम चंद उदार ।
रासौ पृथीय राज कौ, राष्यौ लगि संसार ।।
शुभं भवतु । कल्याणमस्तु । पत्रे ७० माहै
सम्पूर्ण लिषीयो त्थै । ग्रन्थाग्रन्थ ३३५० ।

लिपिकाल— इस प्रति के लिपिकाल का अभी तक निश्चय नहीं हो सका । उपरि लिखित दोहे में संकेतित महाराज नृप सूर के पुत्र उदार कूरमचंद कौन थे, एक खोज का विषय है । श्री अगर चंद नाहटा ज़ी का अनुमान है कि यह प्रति १७वीं शताब्दी के अन्तिम दशाब्द में लिखी प्रतीत होती है ।

यह प्रति जिस मूलादर्श से प्रतिलिपित की गई है उस में कुछ पाठ नष्ट हुये प्रतीत होते हैं । इसी लिये इस प्रति में लगभग ११ त्रोटक है । तथा इन त्रोटकों के लिये १, ३, ५ तथा ६ इञ्च तक स्थान रिक्त छोड़ा गया है । इसी प्रकार लगभग ८ स्थानों पर हड़ताल से पद तथा पद्यांश मिटाएं हुए हैं । हड़ताल के डॉटस तो तकरीवन् ९२ हैं । प्रतीत ऐसा होता है कि प्रतिलिपिकार कुछ योग्य व्यक्ति नहीं है । लिखना कुछ होता है और मति विभ्रम से लिख कुछ जाता है । अतः अशुद्ध अथवा अनिच्छित अक्षर अथवा शब्द लिख कर बाद में हड़ताल से मिटाने पड़े ।

दूसरे, ज्ञात होता है कि यह प्रतिलिपि राजस्थानी लिपि में लिखित

मूलादर्श से नकल की गई है। लिपिकार को राजस्थानी लिपि का पूर्ण रूप से ज्ञान प्रतीत नहीं होता। नकल करते समय जो अक्षर समझ में नहीं आया उसको उसने अपनी बुद्धि के अनुसार नकल कर लिया। इस से प्रतिलिपिकार ने रासोगत पाठ को यत्र तत्र अशुद्ध तथा असंगत बना दिया है। इसके अतिरिक्त बहुत से पद पद्यांश छोड़ दिये गये हैं, छंद भंग का कोई ध्यान नहीं और मतिविभ्रम तथा दृष्टि विभ्रम से कुछ पद पद्यांशों की आवृत्ति हो गई और कुछ छूट गए।

विकृत पाठ तथा दृष्टि विभ्रम आदि के कुछ उदाहरण देकर उपर्युक्त कथन की पुष्टि करना उचित होगा :—

१. BK1 का पाठ—लषे कृष्ण ध्यानम् (१–१२६)
BK2 का पाठ—लषेध कृष्ण ध्यानम् ,,
यहां "लषेध" शब्द में "ध" निरर्थक है।

२. BK का पाठ—"पियं कट्टी पट्टी" (१–१२८)
BK2 का पाठ—पियं केट्टी पट्टी ,,
भाषा विज्ञान की दृष्टि से "कटि" का "कट्टि" तो ठीक जंचता है "केट्टी" नहीं।

३. BK1 का पाठ—कूदंत जोरं (१–१३३)
BK2 का पाठ—कूल्लंट योरं ,, जो कि सर्वथा-अनुचित तथा असंगत प्रतीत होता है।

४. BK1 का पाठ खूब गुल्लाब केलाति हल्लं (१–१३५)
BK2 का पाठ - खूब गुल्लीब केलाति हल्लं
"गुल्लाब" के स्थान पर "गुल्लीब" शब्द अशुद्ध है।

५. BK1 का पाठ—निजु नेह सनेह जु नेह लियं (१–१४८)
BK2 में "नेह" को "नेमेह" लिखा है।
इसी प्रकार BK2 में "बृषभ घघ सुघघ पुपजियं" है तो BK2 में बृषभ गंध सुगंध पुष्पजियं"

६. BK1 का पाठ—अति सुंदर सुंदर तनह" (१–१६२)

BK2 का पाठ—अति सुंदर तनह" यहां एक "सुंदर" शब्द छोड़ दिया गया है जिससे छंदो भंग हो गया।

७. BK2 का पाठ—परमेसर सेव" (२–२१)
BK2 का पाठ—तू परमेर तौ सेव ,, जोकि अशुद्ध है।

८. BK1—सट्ठ लक्ष परजंक" (३–२)
BK2—सुप्त जंक कर जंकति" जोकि अर्थ संगति की दृष्टि से अशुद्ध है।

९. BK2 में ३–४ दोहे का द्वितीय चरण "अवर देस कहुँ केत" छूट गया।

१०. इसी प्रकार ३–२४ में त्रोटक छंद के प्रथम चरण—"भव भूपति भूप तनं लहनं" में "भूपति भूप" शब्दों को "तूपति तूप" लिखा है। इसी रूपक के अन्तिम चरण में "कयंज" शब्द का "जकयं" प्रतिलिपित किया है।

इसी तरह से यत्र तत्र ऐसी पाठ-विकृति तथा अशुद्धियां इस प्रति मैं मिलती हैं। इस प्रकार की पाठ विकृति का पाठान्तर में यथास्थान निर्देशन कर दिया गया है।

दृष्टि-विभ्रम अथवा मति-विभ्रम के भी एक दो उदाहरण दे देने अनुचित न होंगे।

१. खण्ड १३, रूपक संख्या १२ प्रति BK2 में रूपक इस प्रकार है :—

नर रहित अहितनि पंथए, गति पंक पूजित गो धनम्।
रवि रत्त मत्तह अब्भ उद्दिम, कोपि कर्कस मो धनम्॥

प्रति BK2 में इसी रूपक को इस प्रकार दिया है :—
रवि रत्त मत्तह अब्भ डद्दिम, कोपि गति पंक पूजित गो धनम्।
रवि रत्त मत्तह अब्भ उद्दिम, कोपि कर्कस मो धनम्॥

इस प्रकार :—प्रथम तथा तृतीय चरणों में एक ही पद्यांश की आवृत्ति है। इन दोनों चरणों से पूर्व का चरण—"नर रहित अहितनि पंथए" है। वास्तव में प्रतिलिपिकार की दृष्टि नकल करते समय दोनों बार "रवि रत्त मत्तह अब्भ उद्दिम" चरण पर ही पड़ी अतः "नर रहित अहितनि-पंथए" चरण छूट गया और उक्त तृतीय चरण की पुनरावृत्ति हो गई।

२. इसी प्रकार खण्ड १७, छंद ३० :—

छूटै मत्त मैमंत दीसै भयानं।
रूप्यौ रंधरी राइ सेस दिसानं।। को नकल करते समय प्रथम चरण के पद्यांश "दीसै भयानं" से दृष्टि दूसरे चरण "सेस दिसानं" पर जा अटकी। परिणामतः दीसै भयानं—रूप्यौं रंघरी राइ" पद्यांश छूट गया।

इस प्रति में उक्त प्रकार के दोषों के अतिरिक्त :—इ– द्र, थ—घ, रू –तू, च—व, द्व –द्ध, च्छ—छ, त्थ –र्थ आदि अक्षरों मैं अभेद प्रतीति है। प्रकरणानुसार ही इन अक्षरों में भेद प्रतीति हो सकी है। जैसे :—

१. उ—तु, उट्ठिय/तुट्ठिय (८-५७) तुरक्कि/उरक्कि (९-११७)
२. ऊ/औ; ऊंह/औंह (८-६८) उ/ओ; उच्छंगी/औच्छंगी (९-१२)
३. आ/ओ; ओवासं/आवासं (७-६७)
७. इ/द्र; पुहप द्रवे/पुहुप इवे (८-९५)
५. घ/ब्ब; उल्लंघि/उब्लंब्बि (७-६)
६. ध/घ; घनु/धनु (७-१३)
७. त/न; पुत्तनि/पुत्तति (७-८८)
८. न्न/त्त; छिन्न तड़िता/छित्र तड़िता (७-३)
गहन्नं/गहत्तं (८-१६)
९. स्व/स्त्थ; अस्वह/अस्त्थह (७-६)
१०. च्छ/त्थ; अच्छै/अत्थै (७-१४) मत्थ/मच्छ (८-२८)

११. च7व; वंचए7चंचए (७-२७)

१२: रू7तू; रूव7तूव (७-२८)

१३. द्द7ट्ट; वीर भद्दायं7वीर भट्टायं (७-४६)

१४. स7भ; सरिष्टं7भरिष्टं (७-५३)

१५. न7भ; नय वासर7भय वासर (८-६८)

१६. व7ठ; रूव7रूठ (८-६५)

१७. द्ध7द्द; सद्धइ7सद्दइ (६-६८)

निष्कर्ष यही निकला कि प्रतिलिपिकार को प्राचीन देव नागरी लिपि का पूर्ण ज्ञान नहीं था।

एक बात और द्रष्टव्य है कि इस प्रति में दो पन्नों का परस्पर परिवर्तन हो गया, अर्थात् पत्रांक २१ की अपेक्षा २२ और २२ की बजाय २१। परिणाम स्वरूप पंचम खण्ड के २१ रूपक, "हल्लि ढरिय धाइ धमंकि धर—से राइ षनो निरयो निज चालुक" तक पाठ छठे खण्ड में परिवर्तित हो गया। हालांकि प्रति संख्या KB1 के अनुसार तथा प्रकरण संगति से यह पाठ पंचम खण्ड में ही रहना चाहिये यह अशुद्धि प्रतिलिपिकार अथवा अनूप संस्कृत पुस्तकालय में जिल्द बांधने वाले से हुई होगी।

३. प्रति BK3— अनूप संस्कृत पुस्तकालय में रजिस्टर नं० ६२।

यह प्रति ७"×६" आकार में है। इसमें आदि के ७ पन्ने नहीं है तथा आदि के १० पन्ने कुछ खण्डित हैं। १५५ (७-१५५) पृष्ठों में रासो समाप्त हुआ है। प्रत्येक पृष्ठ में १३ से २७ तक अक्षर हैं। अक्षर भद्दे हैं। अतः कुछ अंशों को छोड़ कर सर्वत्र पाठ पढ़ने के लिए आतशी शीशे का प्रयोग करना पड़ा। अनूप संस्कृत पुस्तकालय के अधिकारियों ने इसकी जीर्ण अवस्था देख कर प्रत्येक पत्र के दोनों ओर मोमी कागज़ लगवा कर सुन्दर जिल्द बंधवा दी है। इस से प्रति तो सुरक्षित रूप में हो गई, परन्तु अक्षर जो कि पहिले ही पर्याप्त भद्दे हैं, और भी मद्धम पड़ गए। प्रति में कागज मोटा खुरदरा तथा हाथ का बना हुआ प्रयुक्त किया गया है।

यह प्रति १८ वीं शताब्दी में प्रति लिपित हुई प्रतीत होती है और

प्रति संख्या BK2 की यथार्थ रूप में प्रतिलिपि है। इसकी अन्तिम पुष्पिका निम्नोक्त है :–

"इति श्री पृथ्वीराज रासो समापता शुभं भवतु। किल्याणमस्तु। श्रीरस्तु साह श्री नरसिंह सुत नरहरदास पुस्तका लिखावतम्।
श्री ग्रन्थाग्रन्थ ५५५ छ।

जाद्रिसं पुस्तकं द्रष्टवा ताद्रसं लिषतं मिया।
जदि सुद्धि मवि शुद्धं वा मम दोषों न दीयात।
छ। लिषतं मयेन उदा ब्रह्मापुर मध्ये। छ। श्री।

द्वितीयोऽध्याय

आलोचनात्मक संस्करण की समस्या

पिछले अध्याय में वर्णित तीनों प्रतियों के विवरण से ऐसा प्रतीत होता है कि तीनों प्रतियां किसी एक ही अज्ञात मूलाधार की प्रतिलिपियां हैं क्योंकि तीनों का पाठ कुछ न्यूनाधिक तारतम्य के साथ समान है। तीनों प्रतियों में खंडों (Cantos) की संख्या १९ है। प्रथम दो समय एक ही खण्ड में समाप्त हैं; अर्थात् प्रथम खण्ड की समाप्ति सूचक पुष्पिका नहीं दी गई है। इसी प्रकार सप्तम तथा अष्टम खण्ड भी एक ही समाप्ति-सूचक पुष्पिका (Colophon) केसाथ समाप्त हैं। १९वें खण्ड की समाप्ति-सूचक पुष्पिका भी तीनों प्रतियों में नहीं दी गई है। अत: तीनों का मूल रूप (Arche type) एक ही है। समयान्तर में प्रति BK2 (५९) और EK3 (६२) ने प्रति BK1 (६१) से भिन्न रूप धारण कर लिया। और उक्त दोनों प्रतियां, प्रति BK1 से पृथक हो गई। अत: BK1 दोनों प्रतियों से पूर्व; अर्थात् सं० १६६० के लगभग प्रतिलिपित हुई। प्रति BK2 और BK3 का लिपिकाल क्रमश: १७ वीं तथा १८वीं शताब्दी अनुमानित किया गया है। अत: समय की प्रगति के साथ साथ उक्त दोनों प्रतियों में पाठ का न्यूनाधिक होना, पाठ का छूट[1] जाना तथा पाठ में कुछ परिवर्तन होना स्वाभाविक है। इसी लिए इन दोनों प्रतियों में प्रति BK1 से यत्र तत्र पाठ में न्यूनाधिकता है और यह न्यूनाधिकता शेष दोनों प्रतियों में समान है। वैसे भी ये प्रतियां पाठ साम्य, शाब्दिक साम्य तथा समान अशुद्धियों आदि की दृष्टि से समान हैं और एक दूसरे की प्रतिलिपियां जान पड़ती हैं। एक जैसे न्यूनाधिक पाठ प्रक्षिप्त अंश और समान अशुद्धियों के कुछ उदाहरण देकर दोनों की समानता को प्रमाणित कर देना उचित रहेगा।

---

1 "Omission and transposition are the surest test of affinity." Says Mr. Hall; Vide "Indian textual criticism" Page 38

1. प्रति BK2 और BK3 में प्रति BK1 की अपेक्षा न्यून पाठ की सूची :–

१ १–१३५–वें का अन्तिम चरण :–

किधुं रत्न सूं कनक मिलि कंज कोरे ।

२ १–१३८–वें का अन्तिम चरण:–

इमि भार अट्ठार वृच्छं सुहायं ।

३ ३–३३–वें का चौथा चरण:–

हैं सुदमक दामिनि ज़ामिनि जगावन ।

४ ३–४५–वें का चौथा चरण:–

सूर वीर गम्भीर धीर क्षत्रिय मन रोचन ।

५ १३–६३–वें का चौथा चरण:–

कसकि कहौं कसमीर भीर भारथ्थ संभारी ।

इसी प्रकार कोई ४५ स्थान पर दोनों प्रतियों में प्रति BK1 की अपेक्षा कहीं कहीं एक और कहीं कहीं दो-दो पद छूट गये हैं ।

2. उक्त दोनों प्रतियों में लगभग १२ स्थानों पर प्रति BK1 की अपेक्षा अधिक पाठ मिला है । कुछ उदाहरण देखिए:–

१ ५–७४–वें में प्रथम चरण के पश्चात् :–

गहि ग्गल भीम हमंकि हिलोन्यो ।

अब चरित्त ज्यों जानि झहोन्यो ।

२ ८–८७ छंद के पश्चात्:–

दोहा

सो पट्टन राव्योर पुर, उज्जल पुण्य प्रविच्छ ।

कोटि नगर नागर धरनि, धज बंधिय तिनि लच्छि ।

छंद नाराच

ज लष्षु लष्षु द्रव्य जासु, नृत्य इंद्र उट्ठवै ।

अनेक राइ जासु भाइ, आइ आइ बैठवे ।

सुगंध तार साल मान, सा मृदंग सुब्भए ।

समस्त छिती मस्त रूप, साव अंग सुब्भए ॥१॥

जिचंद वार धूव सेस,'''कंठ गाव ही ।

उपंग वीणा तासु वालि, बाल ता गावही ।
गमन्न तेय अंग रंग, संगए परच्चए ॥२॥
सवीर सद्द भरथ अंग, परधि तात नच्चए ।
सब्रद्द सोभ उद्धरैइ, कित्ति काव थानिए ।
नरिंद इंद इत्तनै जु, कोटि इंद जानिए ॥३॥

और यह अधिक पाठ प्रक्षिप्त प्रतीत होता है ।

३　११–४६–वें छंद के पश्चात् :–
धार तिच्छ अद्दरिय, पंग सेवहि वैरागिय ।

४　१४–४५ छंद के पश्चात् :–

दोहा

कहि राजा संजोगि सुनि, सुपनह कत्थ अकत्थ ।
श्रवन मंडि कनवज्जिनि, सा सुपनंतर तत्थ ।

3. BK2 और BK3 दोनों प्रतियों में समान त्रोटक तथा समान अशुद्धियां:–

१　१८–७३ छंद के अंतिम चरण :–
इनि जुद्ध हिंदुव हवस, हय गय पायक जुत्थ रत्थ ।
में "इनि जुद्ध" शब्द छूट गये और शेष पद्यांश के स्थान पर:–
"लिषय मेच्छ हिंदुव वयन, रषित हय गय जुत्त इत्थ" है ।

२　१–२०१ छंद के प्रथम दो चरणों में–
कवि एम रंच्यो, जु अग्गे सुवंदे—के स्थान पर प्रति BK2 तथा BK3 दोनों में त्रोटक है ।

३　९–१४ वें छंद के तीसरे चरण:–
"इक कवि भाष, छत्रीं सहं सुवत्ते" का स्थान दोनों प्रतियों में रिक्त है ।

४　३–४ छंद के पश्चात् :
तोरन तिलंग सुवंधि नृप, विवल फेरि त्रिकूट"
यह पद प्रति BK2 में लिख कर हड़ताल से काट दिया गया है और प्रति BK3 में इतना ही स्थान रिक्त है ।

५　५–८७ छंद के तीसरे चरण:–
"परिपंथ मारा उसो राउ पाली" में उ–पाली तक स्थान

रिक्त है, अर्थात् "सो राउ" शब्द दोनों प्रतियों में छूट गये है।

4. जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि प्रति BK2 में दो पत्रांक–२१, २२ में परिवर्तन है तो प्रति BK3 में भी ऐसा ही किया गया है। अत: यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि BK3 प्रति BK2 की वास्तविक प्रतिलिपि है।

उपर्युक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकला कि प्रति BK1 दोनों प्रतियों से प्राचीनतम तथा अधिक विश्वसनीय है। समय की प्रगति के साथ साथ BK2, BK3 प्रतियों में, प्रतिलिपिकारों की असावधानी के कारण, पाठ का छूट जाना, शब्द-व्यत्यय, आगम तथा पाठ परिवर्तन होता रहा है। अत: BK1 का पाठ प्रामाणिक, शुद्ध तथा अधिक विश्वसनीय है। यद्यपि तीनी प्रतियों का कल्पित मूलादर्श तो एक ही है परन्तु समयान्तर में BK2, BK3 प्रतियां BK1 प्रति से पृथक् हो गई' BK1 की अपेक्षा इनके पाठ में अंतर पड़ जाना स्वाभाविक है। परिणामत: उक्त तीनों प्रतियों का प्रतिलिपि-क्रम अथवा वंश-वृक्ष (Pedigree) निम्न रूप में हों सकता है :–

पाठ पुनर्निर्माण के सिद्धांत
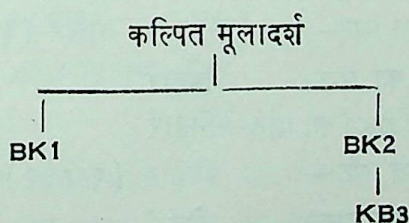
पृथ्वीराज रासो एक ऐसी काव्य रचना है जिसका उपयोग चारण अपनी आजीविकार्थ तथा अपने आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने के लिए विशेष रूप से करते थे। राजदरबारों में रासो के छंदों को उच्चारण करने का ढंग भी इन लोगों का अपना अनोखा ही था। स्वाभाविक रूप से रासो के पाठ में मौखिक परम्परा के कारण परिवर्तन होना अवश्यम्भावी है। और कुछ परिवर्तन प्रतिलिपिकारों के प्रमाद के कारण भी सम्भव है।

अतः ऐसी अवस्था में सम्पादक के लिये कवि की वास्तविक कृति की खोज करना एक कठिन कार्य होता है। मैंने उपलब्ध सामग्री के आधार पर पूर्व वर्णित तीनों प्रतियों के विभिन्न पाठों को ध्यान में रख कर प्राचीनतम पाठ की खोज करने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में पुनर्निर्मित तथा सम्पादित शुद्ध पाठ ऊपर देकर शेष प्रतियों के पाठान्तर नीचे टिप्पणी में दिये गये हैं।

सम्पादित पाठ के सिद्धान्त :—

पाठ पुनर्निर्माण में निम्नलिखित सिद्धान्तों का अनुसरण किया गया है।

१. साधारणतया प्रति BK1 सब से प्राचीनतम, विश्वसनीय तथा अन्य दोनों प्रतियों से अधिक प्रामाणिक अनुमानित की गई है, अतः अधिकतर इसी प्रति का पाठ शुद्ध तथा प्राचीनतम है। पुनर्निर्मित तथा सम्पादित शुद्ध पाठ के लिये मुख्यतया इसी प्रति का उपयोग किया गया है। शेष दोनों प्रतियों का पाठान्तर पाद-टिप्पणी में दे दिया है। उदाहरण—

(क) BK1 का पाठ— नालेर=(नारियल)
BK2, BK3 का पाठ— नालीय
स्वीकृत पाठ— नालेर (१-१३८)

(ख) BK1 का पाठ— विहारं
BK2, BK3 का पाठ—निहारं
स्वीकृत पाठ— विहारं (१-१३९)

(ग) BK1 का पाठ— टोरं
BK2. BK3 का पाठ—टेरं
स्वीकृत पाठ— टोरं— १-१४२) चाल, गति पंजाबी)

२. प्रकरण संगति को दृष्टि में रखकर सम्पूर्ण पुनर्निर्मित पाठ में बहुत कम स्थानों पर BK1 के पाठ को उपेक्षित कर BK2 तथा BK3 पाठों को स्वीकृत किया गया है। जैसे :—

(क) BK1 का पाठ— कलंक
BK2, BK3 का पाठ—कलिंग
स्वीकृत पाठ— कलिंग—प्रदेश (१-१७८)

(ख) BK1 का पाठ— मंत्री

BK2, BK3 का पाठ—मंत्र

स्वीकृत पाठ— मंत्र (५-२८)

(ग) BK1 का पाठ— पीथाति, पियन।

BK2 BK3 का पाठ—पीवति, पियनि।

स्वीकृत पाठ— पीवति, पियनि। (६-३३)

३. जिन स्थानों पर प्रति BK2 और BK3 में पाठ-भेद है. ऐसी स्थिति में उक्त दोनों प्रतियों में से एक प्रति तथा BK1 प्रति के मिलान से शुद्ध पाठ निश्चित किया है। शेष दो प्रतियों का पाठ नीचे पाठान्तर में दिया गया है। जैसे :—

(क) BK2 का पाठ— गुजहि

BK1 BK3 का पाठ—गज्जहि

स्वीकृत पाठ— गज्जहिं—(३-१) गरजते हैं

(ख) BK3 का पाठ— सुष्षनं

BK1, BK2 का पाठ— सिष्षनं

स्वीकृत पाठ— सिष्षनं—(३-५) शिक्षण

(ग) BK2 का पाठ— ससमं

BK1, BK3 का पाठ— समं

स्वीकृत पाठ— समं--(३-२४) समान

४. जहां कहीं तीनों प्रतियों में पाठ-भेद है, ऐसी स्थिति में मैंने उसी प्रति के पाठ को शुद्ध माना है जो कि प्रकरण संगति, भाषा तथा छंद की दृष्टि से शुद्ध जंचा हो। शेष प्रतियों का पाठ नीचे पाठान्तर में दे दिया गया है। जैसे :—

(क) BK1 का पाठ— ब्रुरी

BK3 का पाठ— क्षरी

BK2 का पाठ— छरी

स्वीकृत पाठ— छरी—(१-६७; छड़ी

(ख) BK1 का पाठ— हंत

BK2 का पाठ— हांत

BK3 का पाठ— हांन—(१-१७५)

स्वीकृत पाठ— हांन।

(ग) BK1 का पाठ— वधिय

BK2 का पाठ— बधिअ

BK3 का पाठ— बरधेआ

स्वीकृत पाठ— बरधेआ—(१-७८) बृद्धि।

५. प्रति BK3, प्रति BK2 की यथार्थ रूप में प्रति लिपि है। अतः पाठ-निर्णय में इस प्रति का विशेष महत्व नहीं रह जाता। क्योंकि इसकी प्रतिलिपि होने की तिथि भी अन्य दोनों प्रतियों से उत्तर काल की है। अतः बहुत कम स्थानों पर पाठ निर्णय करते समय इस का उपयोग हुआ है। फिर भी यत्र तत्र, भाषा, शब्द व्युत्पत्ति तथा प्रकरण-संगति के अनुसार इस प्रति के पाठ को शुद्ध माना गया है। जैसे :—देखो—नियम ४ ख, ग, तथा :—

(क) BK1, BK2 का पाठ— आषेटकस्य

BK3 का पाठ— आषेटक

स्वीकृत पाठ— आषेटक ७-२०)

(ख) BK1 BK2 का पाठ—पुरहं

BK3 का पाठ— पुरह

स्वीकृत पाठ— पुरह

(ग) BK1 का पाठ— संधी

BK2 का पाठ— सिंधि

BK3 का पाठ— संधि—(९-१२४) समझौता

६. जहां कहीं तीनों प्रतियों में पाठ बहुत अशुद्ध पाया गया है; ऐसे स्थानों पर मुझे अशुद्ध पाठ का सुधार (Emendation) करना पड़ा है। परन्तु शोधित पाठ सर्वत्र कोष्ठक ( ) में दे दिया। जैसे :—

(क) BK1, BK2, BK3 का पाठ—उतति (१-७४)

संशोधित पाठ— (उतपति)

(ख) BK1, BK2, BK3 का पाठ—भौमि (२-२६)
संशोधित पाठ (भौनि) भवन

(ग) BK1, BK2, BK3 का पाठ - षेडस्सं (५-१४)
संशोधित पाठ - (षोडस्सं)

कुछ अन्य ज्ञातव्य सिद्धान्त

१. ग्रन्थ कर्ता अथवा प्रतिलिपिकारों ने ह्रस्व तथा दीर्घ स्वरों में कुछ अन्तर नहीं रखा जैसे —

(क) BK1 का पाठ -- लियं वेतसल्लं (१-५३)
BK2 का पाठ— लीयं वेतसल्लं

(ख) तीनों प्रतियों का पाठ—स्वामि वचन (७-३३)
धर्म स्वामी पुंडीरं (५-१६)

इसी प्रकार—हासे—हासै, प्रकासे—प्रकासै, मिल्यो—मिल्यौ आदि। ऐसे स्थानों में छंद तथा तुकबंदी को ध्यान में रखकर मैं ने पाठ का निर्णय किया है, अन्यथा यथावत रहने दियाहै ।

(ग) जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि तीनों प्रतियां जैन यतियों द्वारा तथा राजस्थानी चारणों द्वारा प्राचीन देव नागरी लिपि में प्रतिलिपित की गई हैं। इन प्रतिलिपिकारों ने च—व, ब्ब—ध, ठ—व तथा थ—ध आदि अक्षरों में अभेद-प्रतीति से ही काम लिया है। ऐसे स्थानों पर वास्तविक अक्षर के पढ़ने में मुझे बड़ी कठिनाई अनुभव हुई। ऐसी समस्या उपस्थित होने पर प्रथम तो मैंने शाब्दिक व्युत्पत्ति को दृष्टि में रखकर यथार्थ वर्ण का निर्णय किया है। जहां ऐसा नहीं हो सका वहां सब से विश्वसनीय प्रति (BK1) का आश्रय लिया है जैसे—

(क) BK2 BK3 का पाठ— उठं
BK1 का पाठ— उवं (१-११९)
वास्तविक पाठ— उवं—उदय होना

(ख) BK2, 3 का पाठ— बढ्टी (१-२५)

BK1 का पाठ— चढ्टी
यर्थार्थ पाठ— चढ्टी
(ग) BK2 BK3 का पाठ— थरे
BK1 का पाठ— धरे (४-२३)
यथार्थ पाठ— धरे

(घ) उडे पत्त गातं बब्बूरे सपच्छं (४-१७) यहां "बब्बूरे" शब्द "बघूरे" लगता था। परन्तु प्रकरण संगति से "बब्बूरे" शब्द का अर्थ बाबरोला (Whirlwind) ठीक जंचता है। अतः "बब्बूरे" पाठ सही है।

३. तीनों प्रतियों में ञ् ङ् ण् न् म् अनुनासिकों के स्थान में सर्वत्र अनुस्वार का ही प्रयोग किया गया है। अतः मैंने भी सर्वत्र शुद्ध पाठ में इन के स्थान में अनुस्वार का ही प्रयोग किया है। जैसे :—

कुण्डला के स्थान में कुंडला (१-१) कुकम्पी की अपेक्षा कुकंपी। इसी प्रकार लङ्क–लंक आदि। इसी तरह चंद्र बिन्दु "ँ" का प्रयोग भी न्यूनाधिक रूप में ही हुआ है। जैसे : जहां–जहाँ, तहां–तहाँ।

४. तीनों प्रतियों में "ख्" की अपेक्षा ष् का सर्वत्र प्रयोग मिलता है। मैं ने भी शुद्ध पाठ में "ख्" के स्थान में ष् का ही प्रयोग किया है। वैसे भी मध्यकाल में "ख" स्थाने "ष" ही प्रयुक्त होता था। जैसे :— षंडचौ (१-१०२) पंषि (२-१५) दुष्ष (१-२२) आदि परन्तु कहीं कहीं पर "ख" भी मिलता है। जैसे : –मयूख (१-८२) तथा मुखे मंद हासं (१-३३) आदि।

५. यद्यपि रासो जैसी रचना में प्रक्षिप्त पाठ कीं खोज करना एक महान् कठिन कार्य है, क्योंकि इस कव्य में रचना क्रम विभिन्न है, विभिन्न शैलियां हैं तथा प्रत्येक पद में अनेक भाषाएं हैं, फिर भी जहां कहीं भाषा तथा शैली की दष्टि से जो पाठ मुझे प्रक्षिप्त प्रतीत हुआ है उसको मैंने कोष्टक में रख दिया है। BK1 की तुलना में BK2, BK3 का अधिक पाठ टिप्पणी के अन्तर्गत पाठान्तर में दे दिया गया है।

६. प्रतिलिपिकारों ने मूलादर्श से—प्रतिलिपि करते समय विराम-

चिन्ह तथा छंदो-भंग आदि की सर्वथा उपेक्षा की गई प्रतीत होती है। मैंने भी सम्पादन सिद्धान्तों का पालन करते हुये छंदो भंग को सुधारने के लिये निर्णीति शुद्ध पाठ में परिवर्तन करना उचित नहीं समझा। हां विराम-चिन्ह यत्र तत्र अवश्य दे दिये हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण से यह तथ्य तो निश्चित प्रायः है कि प्रति BK1 अन्य दोनों प्रतियों से विश्वसनीय तथा प्राचीनतम है। और इसका पाठ भी दोनों प्रतियों से शुद्ध प्रतीत हुआ है। अतः प्रस्तुत संस्करण का सम्पादन इसी प्रति को मुख्य आधार रखकर मैंने किया है। यथास्थान अन्य दोनों प्रतियों का उपयोग भी किया गया है।

तृतीयोध्याय

कहानी

ग्रन्थ के आरम्भ में महाकवि चन्द गणेश की बन्दना करते हुए प्रार्थना करते हैं कि इस काव्य कृति की निर्विघ्न समाप्ति के लिये गणेश ज़ी महाराज मेरी सहायत करें। गणेश जी के मस्तक पर मदगन्ध-लोभी भंवरे छत्राकार मंडरा रहे हैं, उन्होंने गले में गुन्जाओं का हार धारण किया हुआ है, कानों के अग्रभाग कुण्डल-शौभित हैं तथा करि करवत् उनकी भुजाएं हैं। एतदनन्तर कवि सरस्वतीं देवी का गुणगान करते हुए कहते है—मूर्ख तथा विद्वानों की रंक्षिका कण्ठ में सुन्दर मौक्तिक हार पहने, गौरी. गिरा, योगिनी नाम-सम्बोधिता, हाथ में सुन्दर वीणा धारिणी, दीर्घकेशी नितम्बिनी, समुद्रोत्पन्ना एवं हंस वाहिनी सरस्वती मेरे सर्व विघ्नों को नष्ट करें। इसी प्रकार जटा जूट धारी द्वितोया के बाल चन्द्रमा से शोभित मस्तक वाले शिव, जो कि पार्वती को आनन्द देन वाले हैं, जिन की जटाओं में गंगा है, ग्रीवा में सर्प तथा रुण्ड मुण्ड माला, हस्ती चर्मधारी, नेत्राग्नि से कामदेव को भस्म करने वाले प्रलयंकारी तथा नट वेषधारी हैं, उनको मैं प्रणाम करता हूँ। इसके पश्चात् कवि ने मत्स्यावतार की स्तुति पूर्वक कृष्ण लोला का विस्तृत वर्णन किया है। कृष्णलीला में नृत्य, रास, नगर तथा वन वाटिका आदि का ललित छंदों में वर्णन है। इसके अतिरिक्त बुद्ध तथा कल्कि अवतारों का वर्णन कर कवि ने अपने पूर्ववर्ती महाकवियों की प्रशंसा तथा अपनी लघुता प्रकट करते हुए कहा— "प्रथम तो मैं उस आदि कवि जगदीश्वर को नमस्कार करता हूँ जो एक होते हुए भी सर्व व्यापक है, दूसरे वेद प्रवक्ता, जगत रक्षक ब्रह्मा को मेरा नमस्कार हो, तीसरे महा भारत ग्रन्थ प्रणेता महा कवि व्यास को, चौथे श्री शुकदेव मुनि को, जिन्हों ने राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत कथा सुना कर समस्त कुरु वंशियों का उद्धार किया, पांचवें राजा नल-चरित्र (नैषध) रचयिता कवि हर्ष को, छठे छः भाषाओं के विद्वान् महाकवि

कालिदास को और सातवें कवि दण्ड माली[1] को मेरा नमस्कार हो। इन्हीं महाकवियों की रचनाओं के आश्रय से मैं भी कुछ छंदो की रचना करता हूँ।

(प्रथम खण्ड समाप्त)

द्वितीय खण्ड

वंशोत्पत्ति वर्णन—ब्रह्मा के यज्ञ से मानिक्क राय चाहुवान उत्पन्न हुआ। इसकी अनेक पीढ़ियों में धर्माधिराज से मदान्ध वीसलदेव का जन्म हुआ। वीसलदेव, एक वणिक् कन्या जिसका इसने सतीत्व नष्ट किया था, के शाप से नर मांस भक्षक राक्षस बन गया। इस शाप से मुक्ति पाने के लिए वीसलदेव गोकर्ण की यात्रा के लिए गया तो वहां सर्पदंशन से इसकी मृत्यु हो गई। इसकी पटरानी पंवारिन, चिता के साथ सती हो गई। चिताग्नि से एक भयानक मूर्ति उत्पन्न हुई जो कि वहाँ उपस्थित मनुष्यों को ढूंढ कर भक्षण करने लगी। इसी कारण इसका नाम "ढूंढा" राक्षस पड़ गया। परिणाम स्वरूप अजमेर नगरी जन शून्य हो गई। सारंगदेव (वोसलदेव का पुत्र) को भी इसी राक्षस ने भक्षण कर लिया। इसकी धर्म पत्नी गौरी अपने पति सारंगदेव की मृत्यु के समय गर्भवती थी और राक्षस के भय से अपने मैके में रहती थी। इसके गर्भ से "आनल कुमार" अथवा "आना नरिंद" का जन्म हुआ। युवावस्था को प्राप्त होने पर राजकुमार ने अपनौ माता गौरी से उक्त राक्षस को मारने की आज्ञा मांगी। माता गौरी ने उत्तर दिया कि मानव राक्षस से क्योंकर युद्ध कर सकता है ? आनल कुमार ने उत्तर दिया—"यदि युद्ध से नहीं, तो सेवा से प्रसन्न करके अजमेर नगरी पर फिर से अपना राज्य स्थापित करूँगा, सेवा सुश्रूषा से देव दानव सब प्रसन्न हो जाते हैं।"

अजमेर नगरी ढूंडा राक्षस के अत्याचार के कारण नर तथा पशु-पक्षियों से रहित हो गई थी। आना नरिंद, उजाड़ अजमेर नगरी में पहुँच कर ढूंढा राक्षस की खोज करने लगा। निदान नगरी के बाहर जंगल में एक पहाड़ की कंदरा में उसको सोते हुए देख कर 'आना' निधड़क उसके सम्मुख

---

1. बृहद् संस्करण में आठवें कवि जयदेव का नाम लिया गया है। गीत गोविंदकार जयदेव १३ वीं शती का कवि है।

जा उपस्थित हुआ। राक्षस की देह अत्यधिक विशाल थी। राक्षस के प्रश्न करने पर आना ने कहा—"मैं वीसलदेव का पौत्र तथा सारंग देव का पुत्र हूँ। मेरी माता का नाम गौरी है। मैं यहां आपके दर्शन करने आया हूँ। राक्षस ढूंढा ने कहा कि क्या तू निर्धन है अथवा कुष्ठ रोगी है या स्त्री का वियोगी है, अथवा किसी देव द्वारा शापित है, या संसार से विरक्त है, अथवा तेरी स्त्री तुझसे आलिंगन नहीं करती? 'आना' ने उत्तर दिया कि मुझे उपर्युक्त कोई कष्ट नहीं। मैं तो केवल आप के दर्शनार्थ आया हूँ। निदान, ढूंढा ने प्रसन्न होकर आना को अपनी तलवार भेंट की और अजमेर नगरी पर अक्षय राज्य करने का आशीर्वाद दिया। इसके अतिरिक्त रविवार के दिन विशेष पूजन करने का निर्देश देकर ढूंढा आकाश में तिरोहित हो गया। इस प्रकार वरदान पाकर आना नरिंद ने अजमेर नगरी को फिर से आबाद किया तथा सब प्रकार से धन धान्य समृद्ध किया। आना नरिंद का पुत्र जयसिंह हुआ, जिसने "वीसल तड़ाग" में गड़ा हुआ पर्याप्न धन प्राप्त किया। यह समस्त धन उसने यज्ञ दानादि में व्यय कर दिया।

जयसिंह का पुत्र आनन्द देव हुआ जिस को बराहावतार के दर्शन हुए। इसने सौ वर्ष पर्यन्त आनन्द से राज्य किया तदनन्तर अपने पुत्र सोमेश्वर को राज्यभार सौंप कर वह स्वयं तपोमय जीवन व्यतीत करने के लिये वन में चला गया। सोमेश्वर के राज्यकाल में भी अजमेर नगरी का यश-वैभव प्रति दिन उन्नतशील रहा।

सोमेश्वर की धर्मपत्नी तथा दिल्लीश्वर अनंगपाल तोंवर की पुत्री के गर्भ से पृथ्वीराज का जन्म (यहां संवत् नहीं दिया) छतीस कुली में हुआ। इसी समय पराक्रमी तथा विद्वज्जन वंदनीय कविचंद का जन्म हुआ (बृहद् संस्करणानुसार यहां पर चंद के पिता "राव वेन" सोमेश्वर के दरबारी कवि हैं तथा पुत्रोत्पत्ति की खुशी में इन्हें पर्याप्त धन दिया गया) कविचंद पृथ्वीराज का यश: सौरभ फैलाने के लिये उत्पन्न हुए और कवि ने साटक, गाहा, दूहा तथा कवित्त आदि अनुपम तथा अनूपम छंदों में पृथ्वीराज का यशो-वर्णन किया।

एक बार बाल्यावस्था में बालक पृथ्वीराज को स्वप्न आया कि एक सुन्दर स्त्री ने उसको अपनी गोद में बिठा कर दिल्ली का राज्य सौंप दिया है। इस घटना के कुछ वर्ष पश्चात् पृथ्वीराज अपने प्रधान मन्त्री कैमास के साथ खट्टु वन में शिकार खेलने के लिये गए तो वहां शिकार खेलते समय एक शिला के नीचे से इन्हें पर्याप्त धन मिला। मृगया से निवृत्त होकर अजमेर पहुँचे तो अनंगपाल के दूत ने एक पत्री दी जिसमें लिखा था कि राजा अनंगपाल बद्रिकाश्रम में तपस्या के लिये जा रहे हैं अतः दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को दान में दे दिया गया है।

पत्री को पढ़कर प्रधान मंत्री कैमास ने राम बड़ गुज्जर, हाहुलीराय हम्मीर तथा जैत पंवार आदि सामंतो से विचार विमर्श पूर्वक निश्चय किया कि पृथ्वीराज दिल्ली राज्य ग्रहणार्थ धूमधाम से वहां पहुँचे। परिणाम स्वरूप, पृथ्वीराज दिल्ली का सम्राट् घोषित कर दिया गया।

(द्वितीय खण्ड समाप्त)

तृतीय खण्ड

कन्नौज में कमधुज्जवंशी राजा विजयपाल राज्य करता था। एक बार विजय पाल अपनी सेना सहित दिग्विजय करता हुआ जगन्नाथ पुरी की यात्रा करके पूर्वी समुद्र के किनारे पहुँचा। यहां सोमवंशी राजा मुकुंद देव राज्य करता था। इसकी राजधानी कटक नगरी थी। इस के पास बीस हज़ार घोड़े, एक लाख हाथी तथा दस लाख पैदल सेना थी। मुकुंद देव ने विजय पाल का बहुत आदर सत्कार किया। इसके अतिरिक्त इसने असंख्य घोड़े, हाथी, धन रत्न, पर्यंक तथा अन्य बहुत सी वस्तुओं के साथ भेंट में अपनी एक सुंदरी कन्या विजय पाल को समर्पित की। विजय पाल ने इस कुमारी का विवाह अपने पुत्र जयचंद से कर दिया। जयचंद का अपनी नव परिणीता पत्नी से अत्यधिक प्रेम था। यहां तक कि दोनों पति पत्नी एक ही थाल में बैठकर भोजन करते थे। विजय पाल और जयचन्द सेत बंध मार्ग से होते हुए मार्ग में कुंकुन, कर्नाटक मैथिल, कलिंग गुर्जर, गुण्ड तथा मगध आदि प्रदेशों को विजित कर कन्नौज पहुँच गए। विजय पाल तथा जयचन्द की यात्रा से सकुशल वापसी पर कन्नौज में सर्वत्र खुशियां मनाई जाने लगीं। कुछ समयानन्तर जयचन्द की धर्मपत्नी-

जुन्हाई के गर्भ से सोलह वर्ष की अवस्था में चंद्रमा के समान सुंदर कन्या (संयोगिता) का जन्म हुआ। कन्या चंद्र कला के समान प्रतिदिन बढ़ने लगी। यह वही चंद्र कला है जिस के कारण जयचंद की अस्सी लाख अश्वारोही सेना का नाश हुआ और पृथ्वीराज का अन्तिम पतन हुआ। संयोगिता अपनी सम वयस्का सखियों में क्रीड़ा करती हुई ऐसी प्रतीत होती थी मानों तारागण में चंद्रमा। बालपन से ही संयोगिता अपने पिता जयचन्द की बहुत लाडली बेटी रही है। वह तुतली बातें कर अपने पिता का मन प्रसन्न करने लगी।

मदन ब्राह्मणी के शिष्यत्व में संयोगिता विद्याध्ययन तथा नैतिक शिक्षा ग्रहण करने लगी। मदनब्राह्मणी ने शिक्षा दी कि स्त्री को चाहिये कि वह प्रातःकाल उठकर अपने पति के चरण स्पर्श कर उस के दर्शन करे और अपनीं तुच्छता प्रदर्शन पूर्वक उनकी स्तुति करे। इस के पश्चात् स्नान ध्यानादि से निवृत्त हो, स्वादिष्ट भोजन बनाकर अपने पति को खिलाए। तदनन्तर वस्त्राभूषणों से सज कर अपने पति को प्रसन्न करती हुई सदा उसकी आज्ञा में रहे। स्त्री को चाहिये कि वह अपना तन, मन, धन, सुख-दुख, तप-जप तथा सब कुछ अपने पति को ही समझे। मान तथा अभिमान छोड़ कर स्त्री विनय पूर्वक अपने पति की आज्ञा में रहे, विनय से ही स्त्री अपने पति को वश में कर सकती है। पति के साथ रमण करते समय भी स्त्री कभी अपने पति को कटुवचन न कहे, विनयशीला ही रहे।

मदन ब्राह्मणी के आंगन स्थित एक सहकार वृक्ष पर तोता मैना (गंधर्व-गंधर्वी) रहते थे। यह दम्पति युगल संयोगिता के चरित्र, सौन्दर्य तथा उसकी विनय शीलता पर अत्यन्त मोहित हुआ और उन्होंने मन ही मन सोचा कि यह सौन्दर्य संभरि-नरेश पृथ्वीराज के उपभोग्य है। तोता मैना ने एक रात "जुग्गिनिपति, संभरि-नाथ" पृथ्वीराज का तप तेज़ तथा शौर्य-पराक्रम आदि का वर्णन करते हुए व्यतीत की। संयोगिता ने भी इस वर्णन को सुना और उस के मन में पृथ्वीराज के प्रति प्रेम अंकुरित हुआ। प्रातःकाल होने पर तोता मैना दिल्ली की ओर उड़ गये। (संयोगिता के रूप सौन्दर्य का पृथ्वीराज के सम्मुख वर्णन करने के लिये)

(तृतीय खण्ड समाप्त)

चतुर्थ खण्ड

संवत् "अठतालीसा" (११४८) चैत्र मास के शुक्लपक्ष को भोरा राय भीमदेव (गुर्जरदेशाधिपति) ने सलष पंवार (आबूराज) के पास दूत द्वारा संदेश भेजा कि वह अपनी कन्या इंच्छिनी का विवाह पथ्वीराज चहुवान से न करे अपितु उस के साथ कर देवे अन्यथा इसका परिणाम भयानक होगा। इस संदेश को सुनकर सलष पंवार का पुत्र जैत पंवार बहुत क्रोधित हुआ और उसने भीमदेव के दूत को कोरा जवाब दे दिया। इस संदेश की सूचना पृथ्वीराज के पास भी पहुँचा दी गई। उधर भीमदेव ने शहाबुद्दीन गोरी को सहायतार्थ बुलाकर आबू नरेश सलष पंवार पर चढ़ाई कर दी। पृथ्वीराज भी अपने दलवल सहित सलष पंवार की सहायता के लिये आ पहुँचा। दोनों ओर से घमसान युद्ध हुआ। सलष पंवार तथा जैत पंवार दोनों ने बड़ी वीरता से शत्रु का मुकाबला किया। लोहाना आजान बाहु ने भी अत्यन्त साहस तथा प्रचण्डता से युद्ध में "सुरितान फौज" के छक्के छुड़वाए। दोनों दलों की ओर से प्रबल खडग युद्ध हुआ। तलवारों में पे अग्नि की ज्वालाएं निकलने लगीं। एक बार तो प्रलय सी मच गई और लाशों से भूमि सट गई। "सुरितान" की सेना में भगदड़ मच गई। शहाबुद्दीन पकड़ लिया गया और भीमदेव जान बचा कर भाग निकला। पृथ्वीराज की चारों ओर से जय जयकार हुई। शहाबुद्दीन से कुछ दण्ड लेकर उसे मुक्त कर दिया गया। (चतुर्थ खण्ड समाप्त)

पंचम खण्ड

गुर्जर देशाधिपति भीम देव जैन धर्मावलम्बी था। इसने वैदिक धर्म का खण्डन कर जैन धर्म की स्थापना का प्रचार किया। इसका प्रधान मंत्री अमरसिंह सेवरा तथा वह स्वयं दोनों ही मंत्र-तंत्र विद्या में बहुत निपुण थे। भीमदेव ने पृथ्वीराज के प्रधान मंत्री दाहिमा कैमास को षडयंत्रपूर्वक अपनी ओर फांसने के विचार से अपने दूत को संदेश देकर उस के पास भेजा। संदेश में इसने अपने पराक्रम, वैभव तथा ऐश्वर्य को बहुत प्रशंसा की ओर कैमास को धन धान्य से सम्मानित करने का प्रलोभन

1. बृहद् संस्करण में "छत्तीसा शुक्रवार" लिखा है।

दिया। इस के अतिरिक्त एक चंचल नयनी, पीनस्तनी तथा अत्यन्त सुन्दर रमणी को भी भेंट देने का प्रलोभन दिया। निदान, कैमास नागौर पहुँच गया और भीमदेव का सहयोगी होकर उपर्युक्त रमणी के साथ विलासमय जीवन व्यतीत करने लगा। भीमदेव के नगर नागौर में सर्वत्र यह चर्चा फैल गई कि दाहिमा कैमास भीमदेव का सहयोगी बन गया है। इससे भीमदेव के शत्रुओं पर आतंक छा गया।

मंत्री कैमास के इस आचरण का व्योरा चंद वरदाई को स्वप्न में ज्ञात हुआ। वह घबरा उठा और विचार करने लगा कि कैमास जैसे बुद्धिमान् मंत्री को देव दानव आदि कोई भी वश में नहीं कर सकता, परन्तु मनुष्य-बुद्धि पर क्या विश्वास किया जाए। कविचंद ने भैरों तथा चण्डी देवी की स्तुति करके इस समस्या को सुलझाने तथा कैमास की बुद्धि पर जैन यंत्र मंत्र के प्रभाव को दूर कर सुबुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना की। इसके पश्चात् चंद कवि, बग्गरी राय, जद्दौराव, राम राजा, गोविंद राय तथा बलिराय आदि सामंतो को साथ लेकर शत्रु (भीमदेव) की सेना से युद्ध कर कैमास के समक्ष जा उपस्थित हुआ। चण्डी दुर्गा की कृपा से कैमास की बुद्धि पर से जैनियों के पाषण्ड का प्रभाव दूर हुआ। भीम देव भी अपनी सेना सजा कर चंद तथा कैमास के साथ युद्धार्थ आ उपस्थित हुआ। पृथ्वीराज भी इस घटना की सूचना मिलने पर अपनी सेना सहित युद्ध में सम्मिलित हो गया। दोनों सेनाओं में प्रचण्ड युद्ध हुआ। यहां कवि ने दोनों ओर के सैनिक, घोड़े, हाथी तथा युद्ध[1] की भयंकरता आदि का विस्तृत वर्णन किया है। कैमास ने भीमदेव को परास्त किया। पृथ्वीराज की सर्वत्र जय जयकार हुई। (पंचम खण्ड समाप्त)।

छठा खण्ड

कमधुज्ज जयचन्द समुद्र पर्यन्त पृथ्वी को जीत कर धर्माचरण करता हुआ कन्नौज में राज्य कर रहा है। उसके पास असंख्य हाथी, घोड़े तथा सेना है। धन-वैभव की उसके पास कमी नहीं है। एक बार उसने अपने मंत्री (सुमंत) से यज्ञ करने के लिये विचार विमर्श किया। मंत्री ने कहा

---

1. बृहद् संस्करण में इस युद्ध का सम्वत् ११४४ दिया है।

कि कलियुग में हम अर्जुनादि वीरों के समान तो हैं नहीं जो यज्ञ रचाने में समर्थ हों। जयचंद ने सुमन्त की सम्मति पर ध्यान नहीं दिया और उसने यज्ञ की सामग्री प्रस्तुत करने तथा षोडसादि दान का उत्तम प्रबंध करने की आज्ञा दे दी। यज्ञ की सूचना देने के लिये सर्वत्र दूत भेज दिये गये। एक दूत दिल्ली भी पहुँचा। पृथ्वीराज, दूत का संदेश (छड़ी हाथ में लेकर यज्ञ द्वार पर प्रतिहार-पद संभालना) सुनकर ऐसे सन्न रह गया जैसे सांकरे में फंस कर सिंह तथा गुरुजनों के सम्मुख लज्जाशील स्त्री। परन्तु पृथ्वीराज के छोंटे भाई गोइन्द राय ने क्रोधित हो उत्तर दिया कि कलियुग में यज्ञ रचाने का किस को साहस हो सकता है ? सतयुग में राजा बलि ने यज्ञ किया था, त्रेता में राजा रघु ने, जिस में कुबेर उनके सहायक थे। द्वापर में धर्मराज युधिष्ठर ने श्री कृष्ण की सहायता से यज्ञ किया था। कलियुग में यज्ञ कराने से जग हंसाई होगी। जयचंद ने यह समझ लिया है कि पृथ्वी वीर क्षत्रियों से खाली हो गई है। इसी लिये वह अहंकार से ऐसा कर रहा है। पृथ्वी निर्वीरा कभी नहीं हो सकती। हम जयचंद को यमुना के तट पर रहने वाला जंगली समझते हैं। क्या वह जुग्गिनिपुरेश पृथ्वीराज को नहीं जानता जिसने तीन बार शहाबुद्दीन को बांधा और भीमदेव को परास्त किया। पृथ्वीराज के होते हुये यह यज्ञ नहीं हो सकता। गोइन्दराय का ऐसा उत्तर सुनकर विचारे दूत सायंकाल में मुरझाए हुये कमलों जैसा मुख लेकर उठकर चल दिये। दूत मुख से पृथ्वीराज का उत्तर सुनकर जयचद बहुत क्रोधित हुआ और प्रधान को यज्ञ के द्वार पर पृथ्वीराज की स्वर्ण प्रतिमा रखने की आज्ञा दे दी।

नगर में यज्ञ के लिये सर्वत्र सजावट हो रही है। द्वारों तथा तोरणों पर बंदनवारे सजाई गईं। सुनार आभूषण बना रहे हैं। यज्ञ मण्डप पर स्वर्ण कलश चमकने लगे और वह कैलास पर्वतवत् शोभित है। विविध पताकाओं, सुन्दर वस्त्रों तथा अन्य विविध आडम्बरों से राजमहल, नगर के समस्त भवन, तथा राजमार्ग शोभित होने लगे। सुगन्धित धूप की सुगन्धि सर्वत्र फैलने लगी।

इधर राज महलों में संयोगिता अपनी समवयस्क सखियों के साथ उछल कूद कर रही है, कल-कण्ठों से मधुर गान हो रहा है। जब

सखियां संयोगिता से अठखेलियां करती हैं तो वह लज्जा से आंखें नीची कर पद नखों से भूमि कुरेदने लगती है। वह वय:संधि अवस्था में है। उसके सुन्दर घुंघराले केश कामोद्दीपन करते हैं, लाल अधरोष्ठ सुगंधित कोमल किसलय है, माथे पर मंजरी तिलक है और उसका कोयल सा मीठा स्वर है। उधर प्रकृति भी अपने यौवन पर है। विकसित पुष्पों पर भंवरे मकरंद रस का आस्वादन कर रहे हैं। फल-फूलों से लदे वृक्ष कामदेव-रूप हाथी की तरह झूम रहे हैं। बाग, वन-उपवन प्रफुल्लित हैं। मंजरित सहकार कामदेव के दूत से ज्ञात होते हैं। कोयल की मधुर ध्वनि से प्रकृति गुंजरित हो रही है। भांति भांति के पुष्पित वृक्षों की पंक्तियां कामदेव के बाणों की तरह विरही जनों के हृदयों को बींध रही हैं। इस प्रकार बसंत ऋतु शिशिर को जीतकर सर्वत्र अपना आधिपत्य जमाये हुए हैं। संयोगिता के हृदय में कामाग्नि उद्दीपित हुई। पृथ्वीराज ने भी यज्ञ विध्वंस करने के लिये (वित्रहन[1] देश) पर चढ़ाई कर दी। और षिषिंदपुर के शत्रु समूह (बालुकाराय और उसकी सेना) का संहार कर दिया। षिषिंदपुर निवासी स्त्रियों की बड़ी दुर्दशा है। आंखों से आंसू बह रहे हैं। शोक के कारण सब ने आभूषण उतार कर फेंक दिये हैं। चंद्रवदनी रमणियां पिय पिय पुकारतीं हुई जंगलों को ओर भागी जा रही हैं और कहती हैं कि "विधाता को वाम करने के लिये पृथ्वीराज से शत्रुता क्यों ठानी"। जयचन्द के दरबार में भी इस विनाश का पुकार हुई। ब्राह्मणों ने वेद मंत्रों का गायन बंद कर दिया। अत: यज्ञ कार्य[2] में विघ्न पड़ गया।

संयोगिता ने अपनी सखियों से कहा :—"मैंने पृथ्वीराज को वरण करने का व्रत लिया है, यदि पृथ्वीराज से मेरा विवाह न हुआ तो मैं गंगा में डूब मरुंगी।" जयचंद ने संयोगिता की ऐसी प्रतिज्ञा सुनकर उसको समझाने के लिये साम, दान, भेद तथा दण्ड नीति में निपुण तथा विवेक-शीला दूती को उसके पास भेजा। दूती, कलकण्ठी तथा वाग्वैदग्धा

---

1. वृहद् सांस्करण में "षिषिंद" लिखा है। यहां जयचन्द का भाई 'बालुकाराय रहता था। यहां युद्ध वर्णन नहीं, केवल मात्र नगरध्वंस का संकेत है।
2. यज्ञ विध्वंस, संकेत द्वारा ही वर्णित है, यहां युद्ध का वर्णन नहीं है।

थी। इस के अतिरिक्त वह सुन्दर इतनी थी कि (दर्शकों) के मूर्च्छित काम को उद्दीपित करती थी। परन्तु दूती संयोगिता को समझाने में सफल न हुई।

पुनः जयचन्द ने उसकी धाया को उस के पास भेजा परंतु संयोगिता ने उत्तर दिया—"कै गंगहि संचरौं कै पाणि गहौं पृथ्वीराज"। हार कर जयचन्द ने संयोगिता को गंगा तट स्थित एक ऊँचे महल में कैद कर दिया।

जयचन्द का प्रताप-तेज इतना था कि दिल्ली भी भय से कांपती थी। जिस प्रकार तालाब में पानी के कम हो जाने से मछलिएं कम हो जाती है इसी प्रकार पंग भय से दुर्जन कम होते है। (छठा खण्ड समाप्त)

सप्तम खण्ड

कैमास को राज्य भार सौंप कर सम्राट् पृथ्वीराज स्वयं (दुर्गावन में) मृगयार्थ चला गया। मेधावी कैमास ने दिल्ली-राज्य का कार्य संचालन बड़ी कुशलता से किया। वह शूरवीर इतना था कि उसनें परिहारों को विजय किया, शहाबुद्दीन को बांधा, और गुजदशाधिपति भीमदव को परास्त किया। इसके अतिरिक्त कैमास ने बुद्धिमत्ता तथा शूरवीरता के बहुत से काय किये। इसी कैमास की बुद्धि दासी कर्नाटी के प्रेम में आसक्त हो नष्ट हो गई। दैव की विचित्र गति है, इधर भादों की काली रात्रि में पृथ्वीराज मृगया में मस्त था और उधर कैमास कर्नाटी के साथ विषय भोग में आसक्त था। यही रात्रि कैमास के लिये "कालरैन" हो गई। (रानी इंच्छिनी ने कैमास की इस काम क्रीड़ा को अपने महल से देखा) एक चतुर दासी द्वारा कैमास की इस काम क्रीडा की सूचना तत्काल ही पृथ्वीराज के पास पहुँचा दी गई। पृथ्वीराज ने उसी समय इंच्छिनी के महल में पहुँच कर अपनी आंखों से कैमास की विषय लोलुपता को देखा। (कर्नाटी का महल रानी इंच्छिनी के महल के बिलकुल समक्ष ही प्रतीत होता है) पृथ्वीराज ने क्रोधित होकर, कैमास पर बाण चलाया। पहला बाण निशाने से चूक गया, दूसरे बाण से कैमास की मृत्यु हो गई। दम तोड़ने हुये कैमास ने यह समझा कि (कलियुग में) स्वामी के बिना ऐसा बाण न दशरथ का हो सकता है और न अर्जुन का, कैमास के शव को

वहीं (कर्नाटी-प्रासाद के आंगण में) भूमि में गाड़ दिया गया। पृथ्वीराज पुनः मृगयार्थ वन में चला गया। उधर कबि चन्द को स्वप्न में हंस वाहिनी देवी की कृपा से यह सब बृतान्त ज्ञात हो गया।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही पृथ्वीराज राज-दरबार में अपने सामंतों के मध्य तारागण में चन्द्रमा के समान शोभित हैं। (परंतु दरबार में कैमास उपस्थित नहीं है) चन्द कवि ने दरबार में उपस्थित होकर पृथ्वीराज का शौर्य पराक्रम, अनेक शत्रुओं पर विजय, चौहान वंश वर्णन, (माणिक राय के दस पुत्रों का वर्णन) चावंड राय का हाथी को मारना तथा उसको पृथ्वीराज द्वारा पांवों में बेड़ी डाल कर कारावास में डालना आदि अनेक प्रसंगों का संकेत कर पृथ्वीराज का स्तुति गान किया। पृथ्वीराज ने कवि चन्द से प्रश्न किया :—"कैमास कहां है ? या तो कैमास का पता बताओ अन्यथा अपनी "वरदाई" पदवी छोड़ दो"। चहुवान ने इस बात के लिये बहुत हठ करके मानों सांप के मुंह में अंगुलि दे दी हो— "अंगुलि मुषह फनिंद"। कवि ने उत्तर दिया "पहला बाण जो पृथ्वीराज ने कैमास पर छोड़ा वह केवल कवच को बींध सका और चूक गया। दूसरे बाण से कैमास की मृत्यु हो गई। उसके शव को गढ़ा खोद वहीं कर्नाटी के महल में दबा दिया गया। इस प्रलय (पाप) का कहां निपटारा होगा"। भट्ट कवि के वचन सुनकर संभरि नरेश तथा सब सामंत विस्मित तथा शोकग्रस्त, अपने अपने महलों में चले गये। यह बात सर्वत्र फैल गई, यहां तक कि घरों में पति पत्निएं समस्त रात जाग कर इस बात की चर्चा करती रहीं। कवि भी राजा को धिक्कार कर अपने घर की ओर चल दिया। (कवि का मन इतना उदास था कि वह आत्म हत्या के लिये उद्यत हुआ) परन्तु उसकी स्त्री ने कवि को समझाया कि जीवन बड़ा अमूल्य है। इसी जीवन कीं रक्षा के लिये तथा मृत्यु को टालने के लिये हम धर्म का पालन, होम, यज्ञ तथा नवग्रहों आदि का पूजन-जप करते हैं। उधर पृथ्वीराज का मन भी बहुत उद्विग्न तथा शोकमग्न था। कवि ने राजा को समझाया कि तुम्हारी तरह ही श्री रामने रावण तथा बाली को मारा था। कैमास का शव (उसकी स्त्री) को सौंप कर अपने मन का शोक दूर करें। पृथ्वीराज ने कवि से कहा—कि हम (कन्नौज) में जयचन्द के पास जाना

चाहते है। मैं सेवक के रूप में तुम्हारे साथ चलूंगा। उस से युद्ध करेंगे (तो चित्त और तरफ लगेगा) कवि ने भी स्वीकृति दे दी। पृथ्वीराज प्रसन्न हुए। (सप्तम खण्ड समाप्त)

अष्टम खण्ड

पृथ्वीराज ने अपने सामंतों को कन्नौज यात्रा के लिये तैयारियां करने की आज्ञा दे दी। निदान, संभरि नरेश ने संवत् ११६१ चैत्र तृतीया रविवार को ग्यारह सौ घुड़सवार, सौ सामंत तथा कविचन्द को साथ ले कर कन्नौज की ओर प्रस्थान कर दिया। (यहां पर कवि ने कुछ सामंतों के नाम तथा उनकी शूर वीरता का वर्णन किया हैं, जिन में से जैतपरमार[1], चंद पुण्डीर, बड़ गुज्जर, कूरम्मराव, हाहुलिराय, चालुक्कराय तथा परिहारराय आदि प्रमुख हैं) आकाश धूलि से आच्छादित हो गया। ये सौ सामंत ही जयचन्द की एक लाख सेना का मुकाबला करेंगे। मार्ग में कुछ अपशकुन दिखाई दिये तो पृथ्वीराज ने कविचंद से इन के फलाफल पर प्रकाश डालने के लिये प्रश्न किया। कवि ने उत्तर दिया कि यदि मार्ग में बिना तिलक के ब्राह्मण, काला घोड़ा, बिना विभूति के योगी तथा गधे पर सवार नंगे सिर कुम्हार सम्मुख मिले तो कुछ न कुछ उपद्रव अवश्य होता है। सिर पर दाहिनी ओर कोई पक्षी बोले तथा बाएं स्यार बोले अथवा सम्मुख शव मिले, जल पूरित कलश, उज्ज्वल वस्त्रधारी पुरुष, दीपक, अग्नि आदि सम्मुख मिलें तो ये शकुन शुभ होते हैं। कवि तथा सामंतो सहित पथ्वीराज ने नावों द्वारा यमुना को पार किया। यहां एक सुन्दर महल के समीप एक विलक्षण दृश्य दिखाई दिया। एक स्त्री जिस के एक हाथ में अनार की शाखा है, मुख में हंसी परन्तु नेत्र क्रोध से आरक्त है, वक्षस्थल पर कमल, कनेर और सिरोष के फूलों की माला धारण किये हैं। उसके बाएं अंगों पर स्वर्णाभूषण सज्जित हैं तथा दाएं अंगों पर लोहाभूषण; शिर के आधे केश खुले हैं और शेष का जूड़ा बधा है जूड़े वाले भाग पर मोतियों की माला शोभित है, श्वेत तथा पीत वस्त्र धारण किये हुये हैं और उसके मुख में से सर्प की सी फुंकार निकल रही

---

1. **कैमास की मृत्यु के पश्चात् जैतपरमार पृथ्वीराज का प्रधान मंत्री बना।**

है। पृथ्वीराज ने इस प्रकार की विलक्षण स्त्री के सम्मुख मिलने का कारण कविचंद से पूछा। कवि ने उत्तर दिया कि यह भगवती देवी है और हमारी विजय का शुभ शकुन है। (इस के अतिरिक्त इस प्रसंग में कुछ और शकुने विचारों का वर्णन है) इस प्रकार तीन रात-दिन चलते २ सूर्य उदय होते ही पृथ्वीराज अपने दलबल सहित कन्नौज के समीप जा पहूँचा।

कन्नौज नगर के मंदिरों पर स्वर्ण कलश सूर्य-किरणों में झिलमिला रहे हैं। कहीं हाथी तथा घोड़ों की ठेल-पेल है तो कहीं पर ब्राह्मण प्रातः कालिक संध्या के लिए गंगा तट की ओर जा रहे हैं। कहीं पर तपस्वी ध्यान मग्न हैं तो कहीं पर स्वर्णादि का दान हो रहा हैं। इस प्रकार गंगा तट पर पवित्र आचरण देखने से शरीर के सब पाप नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकरण में कवि ने गंगा स्नान तथा ब्रह्म कमण्डल से गंगा की उत्पत्ति का सुन्दर चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त गंगा तट पर जल भरती हुई सुन्दर रमणियों का हृदयस्पर्शी तथा शृंगारिक वर्णन है। इसी गंगा के तट पर पृथ्वीराज ने अपने दल बल सहित पड़ाव डाल दिया। चन्द कवि (साथी-"षवास" वेष में पृथ्वीराज है) पूच्छता पूच्छता जयचंद दरवार की ओर चल दिया। मार्ग में कन्नौज नगर के बाज़ारों का जिन में विविध मणिमाणिक्य तथा स्वर्णादि का व्यापार हो रहा है, कवि ने आँखों देखा वर्णन किया है। (अष्टम खण्ड समाप्त)

नवम खण्ड

कवि, जयचन्द-दरवार के द्वार पर जा पहुंचा। द्वारपालाध्यक्ष रघुवंशी हेजम कुमार ने चन्द को आसन देकर सादर पूछा—कि आप कौन हैं और कहां से आए हैं। कवि ने उत्तर दिया कि मैं सम्राट पृथ्वी राज का दरवारी कवि चंद दिल्ली से महाराजा जयचन्द का दरबार देखने के लिए आया हूँ। हेजम कुमार ने जयचन्द-दरबार में सूचना पहुँचा दी। सम्राट् जयचन्द ने दसौंधी भाट, चन्द को दरबार में लाने के लिए भेजा और कहा-- कि देखना कहीं कोई डफ बजाने वाला आडम्बर वेषधारी कवि न हो ऐसे कवियों को अर्थ, अनर्थ तथा रस आदि का कुछ भी ज्ञान नहीं होता।

यदि छः भाषाओं, नवरस, ज्ञान विज्ञान तथा काव्य का साङ्गोपाङ्ग ज्ञाता कोई विद्वान् कवि हो तो उसको मेरे पास लाओ। दसौंधी भाट ने द्वार पर जाकर कवि चन्द से उपर्युक्त विद्वत्ता की परीक्षा के लिये प्रश्न किया तो चन्द ने उत्तर दिया—"भारती वाणी के मुख-कमल, दाडिम के दानों के सदृश दान्त, स्थिर सून्दर नेत्र, शुक-नासिका, केसर के समान सूक्ष्म काले केशों की सर्पिणी सी गुंथी हुई वेणी तथा चन्द्रमा के समान सुन्दर मस्तक आदि छः अंगों से छः भाषाएं उत्पन्न हुई हैं"। कवि ने पुनः लक्ष्मीपति, द्रुपद सुता के चीर बढ़ाने वाले भगवान् कृष्ण का स्मरण कर के कहा कि गोपवर भगवान ने गज को ग्राह से छुड़ाया, राजा भान का मान रक्खा, विषाक्त को निर्विष किया और अर्जुन की सहायता कर कौरवों का नाश किया। मोह वश अर्जुन को अपने मुख में ब्रह्माण्ड दिखाकर उसका मोह दूर किया। वह अविनाशी भगवान् समस्त सृष्टि का कर्ता, पालन कर्ता तथा संहरता है। इसी परम पुरुष की, प्रकृति, भारती वाणी तथा लक्ष्मी दासी है। इसी लक्ष्मीपति भगवान् के मुख में निवास करने वाली भारती से छः भाषाओं तथा नवरसों की उत्पत्ति हुई है। दसौंधी भाट ने पुनः प्रश्न किया कि यदि आप "वरदाई" हैं तो कनवज्ज नरेश के दरबार का अदृष्ट वर्णन कीजिए। चन्द वरदाई ने उत्तर दिया, कि पंगु नरेश के शिर पर श्वेत रजत छत्र छहरा रहा है। शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित क्षत्रिय वीर तथा आसमुद्र प्रजा उस के आधीन है, परन्तु पृथ्वीराज उनके गले में, गरल के समान गड़ा हुआ है। दसौंधी भाट ने सहर्ष दरबार में उपस्थित हो, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि तथा समस्त नक्षत्रों में चन्द्र समान सुशोभित जयचन्द से निवेदन किया कि चन्द वरदाई, छहों भाषा, नवरस तथा काव्य कला का ज्ञाता और त्रिकाल दर्शी है। अन्ततः चन्द कवि ने दरबार में उपस्थित हो जयचन्द को आशीर्वचन कह उसकी कीर्ति तथा विरुदावली का बखान करते हुए कहा—कि आप ने अपनी शस्त्र सुसज्जित सेना के बल से समस्त पृथ्वी और धर्म-बल से दशों दिशाओं के दिग्पालों को जीत लिया है। शहाबुद्दीन गौरी सहित अन्यान्य समस्त नरेशों को कीर्तिहीन करके उनको आतंकित

कर दिया है। तिरहुत को विजय किया, आसेतुबंध समस्त दक्षिण देश को अपने वश में किया, कर्ण दाहल को दो बार बाँधा, सिद्ध चालुक्क को परास्त किया, तिलंगाना और गोलकुण्डा को अपने आधीन किया और गुण्ड, जीरा, और वैरागर प्रदेशों को विजय कर मुक्त किया। इस के अतिरिक्त सुलतान अपने भाई निसुत्तखां को दूत बना पर जिस के दरबार में रखता है ऐसे विजय पाल के सुपुत्र जयचन्द के क्रोध से समस्त संसार थरथर कांपता है, परन्तु पृथ्वीराज चौहान ही एक ऐसा नरेश है जो कि जयचन्द को कुछ नहीं समझता। अपने शत्रु पृथ्वीराज का नाम सुन कर जयचन्द के नेत्र रोषारक्त हो गए और उसने चन्द कवि से कहा कि तुम केवल मात्र एक याचक और दरिद्र हो, तुम्हारी ऐसी बातों से तुम्हारी दरिद्रता क्यों कर दूर हो सकती है। (यहां पर चन्द और जयचन्द में वरद्दिया-वरदाई शब्द पर एक रोचक वाद विवाद होता है) इसी प्रसंग में चन्द ने बातों ही बातों में अपने स्वामी पृथ्वीराज जो कि "षवास" (सेवक) के वेष में उसके समीप ही खड़ा था, के गुणों का वर्णन किया। इसी समय कर्नाटी[1] कुछ सहेलियों के साथ पानों का थाल हाथ में लिये दरबार में उपस्थित हुई। उसने ज्योंही सेवक वेष में चन्द के साथ खड़े पृथ्वीराज को देखा तो झट से घुंघट[2] निकालने लगी। कर्नाटी के इस आचरण को देख कर दरबार में सन्नाटा छा गया। सब के मन में संदेह हुआ कि चन्द के अनुयायियों में पृथ्वीराज अवश्य दरबार में है। किसी ने कहा कि पृथ्वीराज यहां कैसे हो सकता है। चन्द और पृथ्वीराज का मन एक है अतः यह (कर्नाटी) लज्जा[3] करती है। अन्त में सम्राट् जयचन्द ने कवि चन्द को आदर पूर्वक पान का बीड़ा दिया और कहा—कि तुम संकोच न करो, कल जो कुछ तुम मांगोगे

---

1 कर्नाटी, केवल पृथ्वीराज से ही घुंघट निकालती थी।

2 चंद ने कर्नाटी को घुंघट उठाने का संकेत किया तो उसने घुंघट उठा दिया।
(बृहद् संस्करण)

3 कैमास की मृत्यु के पश्चात् कर्नाटी पृथ्वीराज के भय से जयचन्द के दरबार में चली गई थी।

दूँगा। (दरबार विसर्जित हुआ)। जयचंद सात हज़ार शंखध्वनियों के साथ महल में चला गया।

जयचन्द ने राजा रावण नामक सामंत को बुलाकर आज्ञा दी कि वह नगर के पश्चिम प्रांत में कविचन्द के ठहरने का प्रबन्ध करे। स्वामी की आज्ञानुसार उसने ऐसा ही किया। पृथ्वीराज अपने सामंतों के मध्य उच्चासन पर शोभित है। सामंतों के पूछने पर कवि ने जयचन्द-दरबार का सब वृत्तान्त सुनाया। रात्रि को सब सामंत सो गए और पृथ्वीराज भी निःशंक पलंग पर सो गया। इसी रात को जयचन्द ने दूत द्वारा कविचन्द को नृत्य देखने के लिये बुलवा भेजा। चन्द अपने स्वामी को सुख की नींद में सोता हुआ छोड़कर पंगराज की नाटचशाला में जा पहुँचा। (यहां पर नाटचशाला तथा वेश्याओं के नृत्यादि का वर्णन है)। अगले दिन प्रातःकाल ही जयचंद ने अपने गुप्तचरों द्वारा सब भेद जानकर पृथ्वीराज को पकड़ने के लिये शिकार के बहाने सेना सजाली। (घोड़े, हाथी तथा सेना आदि का यहां विस्तृत वर्णन है) उधर पृथ्वीराज भी अपने सामतों सहित युद्धार्थ तैयार हो गया। कन्नौज में युद्ध के नगारे बज उठे और सर्वत्र कोलाहल मच गया। कमठ कलमलाने लगा, पृथ्वी हिल गई और प्रलय सी मच गई। देवतागण विमानों पर चढ़ कर रण कौशल देखने लगे। गंगा-तट स्थित महल[1] के झरोखों से सुन्दरियां पृथ्वीराज का रण चातुर्य देखने लगीं। संयोगिता ने पृथ्वीराज का शब्द सुना तो वह रोमांचित हो गई, स्वरभंग हो गया और शरीर पसीने से भीज़ गया। पृथ्वीराज ने भी संयोगिता को देख कर अपना घोड़ा उधर को ही घुमा लिया। संयोगिता भी एक दरिद्र की तरह ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त कर पथ्वीराज के गले से लिपट गई। (यहां संयोगिता का शृंगारिक वर्णन है)। पृथ्वीराज के योद्धाओं ने पंग दल को युद्ध में रोके रक्खा, और पथ्वीराज स्वयं अस्सी लाख सेना को चीरता हुआ संयोगिता को साथ लेकर दिल्ली की ओर चल पड़ा। दोनों सेनाओं में अष्ठमी शुक्रवार, (दशम

1 जैसा कि छठे खण्ड में कहा गया है कि जयचन्द ने संयोगिता को गंगा-तठ स्थित महल में कैद कर दिया था।

खण्ड) नवमी शनिवार (एकादश खण्ड) तथा दशमी रविवार (द्वादश खण्ड) तीनों दिन रात घोर संग्राम होता रहा। दोनों दलों के योद्धा कन्ह चहुवान तथा जयचन्द का मंत्री सुमंत आदि इस युद्ध में खेत रहे। पृथ्वीराज के सौ सामंत तथा एक हजार योद्धाओं ने जयचन्द की अस्सी लाख सेना का मुकाबला किया। पृथ्वीराज ने चौथे दिन एकादशी को अपने राज्य की सीमा स्थित एक जंगल में पड़ाव डाला और जयचन्द दल हाथ मलता हुआ वापिस लौट गया। उपर्युक्त तीनों खण्डों में कवि ने तीन दिन के युद्ध का विशद वर्णन किया है। युद्ध की समता कहीं राम-रावण युद्ध से की है तो कहीं कंस, शिशुपाल-कृष्ण युद्ध से की है।

(नवम, दशम, एकादश एवं द्वादश खण्ड समाप्त)

त्रयोदश खण्ड

यमुना के किनारे (निगमबोध तट) पर पृथ्वीराज-संयोगिता का स्वागत करने के लिये दिल्ली नगर के आबाल वृद्ध नर-नारी उमड़े चले आ रहे हैं। अश्वारोही तथा हाथियों पर सवार सामंतों की चहल पहल है। दिल्ली नगर के समस्त भवनों के द्वारों पर बन्दनवारें लटक रही हैं, त्रयोदशी गुरुवार को संभरि नरेश ने अपने राज महलों में प्रवेश किया। जयचन्द ने भी विवश हो अपने पुरोहित (श्री कण्ठ) के द्वारा दहेज आदि दिल्ली भेज दिया। पृथ्वीराज संयोगिता का विधिवत् विवाह संपन्न हो गया।

रात्रि में आकाश तारागण से शोभित होता है, सरोवर कमलों से रणाङ्गण योद्धाओं से तथा संसार महिलाओं से शोभित होता है। पृथ्वीराज का अन्त:पुर पहिले ही सुन्दर रमणियों से शोभित था, संयोगिता के आ जाने से वह स्वर्ग बन गया। दम्पति युगल दाम्पत्य सुख भोगने लगा। ग्रीष्म ऋतु है। संयोगिता के महल में शीतलता उत्पादक साधन एकत्रित किए जा रहे हैं। अगरबत्ति के धूम्र रूप बादलों को देखकर मत्त मयूर नाचने लगे। राजमहल के उज्ज्वल कलश बिजली की तरह चमक रहे हैं। स्त्रियों का मधुर-गान दादुर ध्वनि को मात कर रहा है। नर्तकियों के गायन तथा नूपुर ध्वनि से रंग महल गुंजरित हो उठा। पृथ्वीराज-संयोगिता विलास रस में मग्न हैं।

एक दिन संयोगिता ने स्नान करके अपने काले कोमल केशों की वेणी गुंथी और उस पर सुगंधित फूल लगाए, माथे पर जड़ाउ बिंदिया आंखों में कज्जल, नाक में मोती और मुख में पान का बीड़ा रखा। सुन्दर वस्त्र तथा आभरण पहने तथा सोलह श्रृंगार किये वह पति के समीप पहुँची। लज्जावनत मुखी, कटाक्ष विक्षेप पूर्वक वह पथ्वीराज से लिपट गई। रति का आरम्भ हुआ। गुह्म अंगों का वर्णन नहीं हो सकता। भंवरा-भंवरी रति क्रीड़ा में एक रस हो गए।

ग्रीष्म व्यतीत हो गया, वर्षा-ऋतु आ पहुँची। भूमि लहलहा उठी, लता-द्रुम फल पुष्पों से प्रफुल्लित हो उठे। उद्यानों में झूले झूलने लगे। संयोगिता नित नूतन श्रृंगार कर पति के साथ रति क्रीड़ा में मग्न रहने लगी। (इसी प्रकार तीन मास बीत गए)।

एक दिन संवत् ११५२ असौज मास में पृथ्वीराज के मन में अपने सामतों की बल परीक्षार्थ (निगमबोध स्थान पर) जैत खम्भ आरोपण करने का विचार उत्पन्न हुआ। एतदर्थ नवदुर्गा की पूजा तथा होम यज्ञ होने लगा और भैसों की बलिएं दी गईं। पड़वा तिथि से दुर्गाष्टमी तक, आठ मुट्ठी मोटा, आठ हाथ ऊँचा और आठों धातुओं को मिला कर बनाया हुआ जैत खम्भ तैयार हो गया।

चंद सेन पुण्डीर (जोकि कन्नौज की लड़ाई में मारा गया था) का पुत्र धीर सेन पुण्डीर सौ सामंतों में से एक था। वह इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये अपनी आराध्या जालंधरी देवी की आराधना करने लगा। देवी ने प्रसन्न हो, धीर पुण्डीर को एक ही सांग के प्रहार से जैत खम्भ भेदन का आशीर्वाद किया। निदान, धीर पुण्डीर आठ दिन तक नवीन विधि से शक्ति की पूजा कर, कमर में तलवार, कंधे पर ढाल और हाथ में सांग लिये अपने घोड़े पर सवार हो परीक्षा स्थान पर जा पहुँचा। पृथ्वीराज की आज्ञा पाकर समस्त शूर सामंत खड्ग सांग तथा तीरों से जैत खम्भ का भेदन करने लगे, परन्तु उस अष्टधातु मिश्रित तीस मन वजनी कठोर खम्भ में केवल एक झरीट ही पड़ सकी। धीर पुण्डीर की सांग का एक ही बार जैत खम्भ के पार हो गया। पृथ्वीराज ने प्रसन्न होकर

हिंसार गढ़ सहित पांच हज़ार गांव एक झण्डा तथा बहुत से हाथी घोड़े आदि धीर पुण्डीर को पुरस्कार स्वरूप दे कर उसको सामंतों का सरदार नियुक्त कर दिया। उसने इस पुरस्कार को स्वीकार कर प्रार्थना की कि अब मेरा क्या कर्तव्य है ? पृथ्वीराज ने उत्तर दिया कि क्षत्रियों का युद्ध के अतिरिक्त और क्या कर्तव्य हो सकता है। शहाबुद्दीन को एक बार पुनः जीवित अवस्था में पकड़ना है। पुण्डीर ने ऐसा ही करने की प्रतिज्ञा की। धीर पुंडीर के इस सम्मान से अन्य समस्त सामंत ईर्ष्याग्नि में जलने लगे। जैत राय ने चावंड राय की ओर आंख से संकेत किया तो उसने हंस कर कहा :—"धीर ! "पातसाह" की रक्षा में असंख्य सेना रहती है उसे जीवित पकड़ना आसान काम नहीं, तुम केवल घर बैठे ही शेखी बघार रहे हों।" धीर पुंडीर ने उत्तर दिया—"मैं भी चन्द पुण्डीर का पुत्र नहीं यदि अपनी इष्ट देवी शक्तिमती के बल से शाहाबुद्दीन को जीता न पकड़ लूं।" चावंडराय ने पुण्डीर की इस प्रतिज्ञा की सूचना पत्र द्वारा शाह सुलतान के पास पहुँचा दी कि वह (जालंधरी देवी की पूजा के लिये कांगड़ा जा रहा है उसको वहीं पकड़ लिया जाए)। सुलतान ने तदनुसार आठ हज़ार गक्खरों को आज्ञा दी कि धीर पुण्डीर को छलबल से पकड़ लिया जाए। गक्खर सरदारों ने ऐसा ही किया और उस को कांगड़ा से पकड़ कर सुलतान के दरबार में उपस्थित कर दिया। बातों ही बातों में सुलतान ने पुण्डीर को लालच दिया परन्तु वह अपनी प्रतिज्ञा पर अडिग रहा। परिणामतः निश्चय हुआ कि सुलतान और धीर पुण्डीर के युद्ध में दो दो हाथ होंगे। शहाबुद्दीन ने तीन लाख सेना के साथ दिल्ली पर चढ़ाई कर दी। सेना में रूमी, गक्खर, तुरक तथा बलोल आदि जाति के सैनिक थे। धीर पुण्डीर भी दिल्ली आ पहुँचा। इधर पृथ्वीराज भी सुलतान के आक्रमण की सूचना पाकर उसका मुकाबला करने के लिये तैयार हो गया। इधर जैतराव तथा चावंडराय आदि सामंत ईर्ष्याग्नि में जल रहे थे। चन्द कवि के समझाने पर वे भी युद्धार्थ तैयार हो गए। (कवि ने यहां पर दोनों ओर को सेना, हाथी, घोड़े तथा शस्त्रास्त्रों के वर्णन के साथ साथ पक्षी-विपक्षी योद्धाओं के आक्रमण-प्रत्याक्रमण कौशल का विस्तृत वर्णन किया है)। अन्ततः धीर पुण्डीर ने सुलतान के अंगरक्षक

(शस्त्री) को मार कर उसे पकड़ लिया। युद्ध समाप्त हुआ। सुलतान शहाबुद्दीन से कुछ दण्ड लेकर उसे पुनः मुक्त कर दिया गया।

इतने में शिशिर ऋतु आ पहुँची। पृथ्वीराज पुनः महलों में जाकर संयोगिता के साथ विलासमय जीवन व्यतीत करने लगा। (यहां पर शिशिर वर्णन के साथ शृंगारादि वर्णन है। (त्रयोदश खण्ड समाप्त)

चतुर्दश खण्ड

एक दिन गजनी-शाह ने अपने प्रधान मंत्री तत्तार खां से पूछा कि क्या दिल्ली से कोई सूचना मिली तत्तार खां ने उत्तर दिया :—"हिन्दू पातसाह" ने जो हमारी बे-अदवी की है उसका बदला लेने के लिये दिल्ली पर चढ़ाई कर देनी चाहिए।" निर्णयानुसार कुछ दूत दिल्ली भेजे गए। दूतों ने पृथ्वीराज के सामंतो में आपसी फूट का समस्त भेद सुलतान दरबार में आकर प्रकट किया तो सुलतान ने दिल्ली पर चढ़ाई करने का "फुरमान" घोषित कर दिया।

इधर दिल्ली नगर निवासी तथा पृथ्वीराज के सामंत सुलतान के आक्रमण की सूचना पाकर व्याकुल हो उठे तथा घर घर इसी बात की चर्चा होने लगी। सामंतों की आपसी फूट, पृथ्वीराज की संयोगिता में आसक्ति के कारण-राज्य-कार्य से विरक्ति तथा सुलतान के आक्रमण से चिन्तित और व्याकुल कवि चंद, राज-पुरोहित गुरु राम के घर पहुँचे। विचार विमर्श के पश्चात् यही निश्चय हुआ कि पृथ्वीराज को सचेत करने के लिए अन्तःपुर में लिखित संदेश भेजा जाए। कवि-चंद ने एक दासी द्वारा पृथ्वीराज के पास संदेश भेजा जिस में उक्त विषय का ज़िकर किया और एक पद्यांश भी लिखा।

"गोरी रत्तो तुअ धरनी, तूं गोरी अनुरत"

अर्थात् सुलतान गौरी तुम्हारे राज्य पर लालायित है और तुम गोरी-संयोगिता में अनुरक्त हो। पत्र पढ़कर पृथ्वीराज क्रोध से तमतमा उठा। और उसने अपने शस्त्रास्त्र संभाले। संयोगिता ने क्रोध का कारण पूछा तो उत्तर मिला कि आज रात को मुझे एक स्वप्न आया है— "अन्य रानियों के मध्य में मैं तुम्हारे साथ बैठा हूँ और तुम सब रानियों

से लड़ने लग गई। इतने में आकाश से कुछ राक्षस उतर कर, तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें अपनी ओर खींचने लगे. तो तुम चिल्लाई और मेरी आंख खुल गई।"

राज पुरोहित गुरु राम को यह स्वप्न सुनाया गया। पुरोहित जीं ने इस दु-स्वप्न के अरिष्ट निवारणार्थ अभय पजर स्तोत्र का पाठ किया ब्राह्मणों को दान दिलवाया। कवि चंद ने देवी की अर्चना पूर्वक दशों दिशाओं में दस भैंसे बलिदान करवाए ।

चावंड राय[1] की बेड़ियां खोल दी गई। इस से सब को प्रसन्ता हुई। इसी समय पृथ्वीराज का बहनोई सामंत सिंह अपनी धर्मपत्नी पृथा (पृथ्वीराज की बड़ी बहिन) सहित दिल्ली (निगम बोध घाट पर) आ पहुँचा।

पृथ्वीराज ने स्वर्ण तथा हाथी घोड़े आदि देकर उनका स्वागत किया। कविचन्द ने विरुदावली कही। रूठे सामंतों को मनाया गया, विशेष कर चावंड राय की विरुदावली कह कर उसकी कमर में खड्ग बांध'कर उसे सम्मानित किया गया। सुलतान का मुकाबला करने के लिये तैयारियां होने लगीं। बड़गुज्जर,. जैतराय राम देवगुज्जर तथा अन्य समस्त सामंत युद्ध सम्बन्धी तैयारियों में संलग्न हो गए।

इधर दिल्ली नगर में अपशकुन दिखाई दिये। निगम बोध स्थान पर, तीस हाथ लम्बी, बारह हाथ चौड़ी और चौसठ अंगुल मोटी एक पाषाण शिला स्वयं हिलने लगी। सब विस्मित हो गए। किसी ने कुछ कहा तो किसी ने कुँछ। इतने में शिला के नींचे से एक भीमकाय देव निकला। चन्द कवि ने पूछा तुम कौन हो? देव ने उत्तर दिया:— "मेरा नाम वीरभद्र है। जव सती के अपमान से रुष्ट होकर महादेव ने दक्ष प्रजापति का यज्ञ विध्वंस करने के लिए अपनी जटाओं को फटकारा तो मेरी उत्पत्ति हुई। मैंने ही दक्ष यज्ञ का विध्वंस किया। यह सतयुग की बात है। मैंने द्वापर-त्रेता युगों में इन्द्र-वृत्रासुर, राम-रावण, कृष्ण

---

1 **चावंडराय को पृथ्वीराज का हाथी मार देने के अपराध में पावों में बेड़ियां डाल कर कारावा समें डाला हुआ था। (बृहद् संस्करण)।**

जरासंध आदि युद्धों को देख है। कौरव-पाण्डवों के युद्ध से लेकर आज तक मैं यहीं पड़ा हूँ। कोलाहल सुनकर मेरी आंख खुल गई। इस कोलाहल का क्या कारण है" ? चन्द ने उत्तर दिया :—"गज़नी का सुलतान दिल्ली पर आक्रमण के लिये आ रहा है। उसका मुकाबला करने के लिये तैयारियां हो रही हैं। अतः यह कोलाहल है"। वीरभद्र ने कहा— "मानवो ! तुम्हें इतना गर्व, मैंने देवासुरों के युद्ध देखे हैं"। अन्ततः कवि चंद ने पूछा कि इस युद्ध में क्या होनहार है ? वीरभद्र ने उत्तर दिया इस युद्ध का परिणाम अच्छा नहीं होगा। इस के पश्चात् कवि चन्द ने, जैत राव, प्रसंग राव, जामराय, रामराय, बलिभद्रराय तथा चावंड-राय आदि समस्त सामंतों का, उनकी विरुदावली तथा शौर्य पराक्रम वर्णन पूर्वक, वीरभद्र से परिचय करवाया। एतदनन्तर चावंडराय तथा जामराय के मध्य पृथ्वीराज की सेना तथा सुलतान सेना के बलाबल की तुलना तथा साम दान भेदादि नीति विषयक वाद विवाद होता रहा। इसी प्रकार सिंहपरमार, लोहाना आजान बाहु, गुरु राम, सामंतसिंह आदि में युद्ध विषयक विचार विमर्श चलता रहा। (चतुर्दश खण्ड समाप्त)

पञ्चदश खण्ड

सुलतान गौरी घरियारें बजाता हुआ अपने दल बल सहित सिंधु नदी के समीप आ पहुँचा। उस की सेना पावस के बादलों की तरह उमड़ती चली आ रही है। इधर पृथ्वीराज भी अन्तःपुर से चलने लगा तो उस की बांई आंख फड़कने लगी। संयोगिता अपने प्रियतम को शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित युद्ध में जाते देख चित्रलिखित सी रह गई और एक टक पृथ्वीराज की ओर देखती रही। हृदय में करुणा उमड़ पड़ी और वह संज्ञा हीन हो गई। परन्तु अब पृथ्वीराज रुकने वाले नहीं थे। युद्ध के नगाड़े बज ही रहे थे। हिन्दु सेना ने कूच का नगाड़ा बजा दिया ! संयोगिता के मन में आभास हुआ कि अब प्रियतम से रवि मंडल (स्वर्ग) में ही मिलना होगा। हिन्दु नारियों का यही धर्म है।

शहाबुद्दीन गौरी सिंधुनद पार कर आगे बढ़ता चला आ रहा है। इधर हिसार गढ़पति पावस पुण्डीर[1] (धीर पुंडीर का पुत्र) ने पृथ्वीराज

1. पावस पुण्डीर ने पृथ्वीराज से बागी होकर लाहौर नगर को लूट लिया था। (बृहद् संस्करण)

से आकर क्षमा मांगी और स्वामी धर्म का पालन करते हुए रणक्षेत्र में जूझ मरने की प्रतिज्ञा की। पृथ्वीराज ने कवि चन्द को कांगड़ा से हाहुलि राय को मनाकर युद्ध में सहायक होने के लिये भेजा। कविचन्द आज्ञानुसार कांगड़ा पहुँचा। हम्मीर ने आवभगत की और कुशल क्षेम पूछी कवि ने कहा—कि और तो सब ठीक है पर सुलतान गौरी ने पृथ्वीराज पर आक्रमण कर दिया है। पृथ्वीराज अपनी सेना सहित पानीपत के मैदान में जा पहुँचा है। तुम्हें यही उचित है कि क्षत्रिय तथा स्वामी धर्म का पालन कर अपना जन्म सफल करो। इस के अतिरिक्त कवि ने उस को बहुत समझाया, परन्तु उस के कान पर जूं तक न रेंगी। वह तो लालच में फंसा था। (गौरी की विजय होने पर पंजाब का आधा भाग हाहुलिराय को मिलना था) अतः हाहुलिराय[1] के दिल में कपट था। वाद-विवाद के पश्चात् यही निश्चय हुआ कि देवी जालपा के मन्दिर में जाकर देवी की आज्ञानुसार इस प्रश्न का निर्णय हो। इस प्रकार कपट से हाहुलिराय ने कवि चन्द को देवी के मन्दिर में कैद कर दिया और स्वयं चालीस हज़ार सेना और पांच हजार घुड़सवार ले कर शहाबुद्दीन से जा मिला। भेंट में उसने कस्तूरी, केसर तथा अन्य अनेक पदार्थ दिए। विधिगति बलवान् है। लोभवश उसने अपने सनातन स्वामी और गौ ब्राह्मण का पक्ष छोड़, अपना देश तथा धर्मशत्रु शहाबुद्दीन को अर्पित कर दिया।

शहाबुद्दीन का दल पानीपत के मैदान की ओर बढ़ता चला जा रहा है। उसने तत्तारखां खुरासान खां, रुस्तम खां, मारूफखां तथा कमाल खां आदि अपने सरदारों से कहा—कि मैं कई बार दुश्मन से हार चुका हूँ। वैसे शत्रु अपनी फूट के कारण निर्बल हो चुका है। फिर भी होशियार तथा शौर्य-पराक्रम से युद्ध संचालन करना है। सरदारों ने सब प्रकार से सुलतान को विश्वास दिलाया। सुलतान की (तीन लाख) सेना युद्धक्षेत्र की ओर बढ़ी। पृथ्वीराज की सत्तर हज़ार सेना व्यूहाकार में युद्ध के लिये तैयार हो गई। सावन मास की अमावस्या को पूर्व-पश्चिम से दोनों सेनाओं की मुठभेड़ हुई। (पंचदश खण्ड समाप्त)

1. हाहुलि राय पृथ्वीराज से इस लिये असंतुष्ट था कि दिल्ली दरबार में पृथ्वीराज के चाचा कन्ह चौहान ने उस का अपमान कर दिया था (बृहद् संस्करण)

षोड़स खण्ड

दोनों ओर के योधा कट कट कर मरने लगे। एक एक राजपूत वीर ने शाही फौज के सैकड़ों योद्धाओं को मार कर वीर गति प्राप्त की। रक्त की धाराएं बह निकलीं। डंकिनियां रक्त पी पीकर उछलने कूदने लगीं। अप्सराएं[1] इच्छानुसार वरों की प्राप्ति से आनंदित हो उठीं। तीन दिन तक घमसान युद्ध होता रहा। राजपूत योद्धा एक एक कर वीर गति पाने लगे। पृथ्वीराज के प्रमुख सामंत–जैत राव, चावंड राय, प्रसंग राय खीचो, देवराय बग्गरी, सिंघराय परमार, वीरसिंह परमार, आजान बहु, बलिभद्र राय, पावस पुंड़ीर तथा सामंत सिंह आदि असंख्य मुसलमानी सेना का संहार कर वीर गति को प्राप्त हुए। सत्तर हजार सिपाही तथा हाथी–घोड़े खेत रहे। पृथ्वीराज को पकड़ लिया गया। कांगड़ा स्थित जालंधरी देवी के मन्दिर में वीरभद्र ने शिव जी को इस युद्ध का समस्त वृत्तान्त सुनाया। (षोडस खण्ड समाप्त)

सप्तदश खण्ड

दिल्ली के राज महलों में एक चील ने पृथ्वीराज को चंवर डुलाने वाले "षवास" (सेवक) की एक कटी हुई भुजा ला कर फेंक दी। डंकिनी ने प्रकट हो कर युद्ध वर्णन पूर्वक पृथ्वीराज के पकड़े जाने की कथा संयोगिता को सुनाई। पृथ्वीराज की पराजय का वृत्तान्त सुनते ही संयोगिता के प्राण पखेरू उड़ गये। पृथा सहित अन्य क्षत्राणिएं सती हो गईं।

(सप्तदश खण्ड समाप्त)

अष्टादश खण्ड

उधर जालंधरी देवी के मन्दिर में बंदी कवि चन्द ने वीरभद्र के मुख से, सुलतान द्वारा पृथ्वीराज के पकड़े जाने को तथा गजनी ले जाकर उसे 'अंष विहीन' करने का वृत्तान्त सुना। कवि का हृदय फट गया। व्याकुल हो वह अपने आप को संभाल न सका। उसका मन माता पिता, मित्र-बन्धु तथा सांसारिक माया मोह से विरक्त हो गया। शोकग्रस्त

---

1. युद्ध स्थल में लड़ते लड़ते मरने से स्वर्ग प्राप्ति होती है अतः जो योद्धा वीरगति प्राप्त करके स्वर्ग में पहुँचते हैं उनको अप्सराएं वर लेती हैं।

कविचन्द दिल्ली पहुँचा । नगर की दुर्दशा देखी । घर में अपनी स्त्री से भी पृथ्वीराज की पराजय का समाचार सुना । (अष्टादश खण्ड समाप्त)

नवदश खण्ड

जोगी वेष धारण कर, तन पर विभूति तथा शिर पर जटाएं बांध कविचन्द ने गजनी को जाने वाले मार्ग का अनुसरण किया । कवि के मन में यही विचार था कि कब गजनी पहुँच कर अपने स्वामी तथा सखा का उद्धार करूं । तीस दिन तक, भूखा प्यासा कवि गहन बनों में विचरता रहा । एक दिन पिपासा के कारण जल की खोज में एक वट वृक्ष के नीचे बैठा तो उसने सिंह वाहिनी हंसती हुई एक तरुणी को देखा । उसकी हंसी ऐसी थी मानों धुएं में अग्नि का प्रकाश हो । यह साक्षात् कवि की आराध्या देवी थी । चन्द ने मस्तक झुकाया । देवी ने उसकी उदासीनता को दूर करने के लिए कहा कि आत्मा परमात्मा का अंश है, जीवन नश्वर है, अतः शोक किस लिए ? एतदनन्तर देवी ने अपने आंचल से एक चीथड़ा फाड़ कर कविचन्द के शिर पर बांध दिया और उसको अपने ध्येय में सफलता प्राप्ति का आशीर्वाद दिया । भूख प्यास को सहन करता हुआ कविचन्द गज़नी पहुँच गया । गज़नी में विजय के उपलक्ष में खुशियां मनाई जा रही थीं सुलतान शहाबुद्दीन का प्रताप मध्याह्न सूर्य के समान था । नगर में योद्धाओं के आवागमन की चहल पहल थी । कोई बज़ू कर रहा था, कोई नमाज़ तो कोई कुरान पढ़ रहा था । नगर को देखता हुआ कविचन्द सुलतान दरबार के द्वार पर जा पहुँचा । कनक–दण्डधारी द्वारपालों ने उस को भीतर नहीं जाने दिया । वह नगर में इधर उधर घूमता रहा । मध्याह्न ढलते ही शहाबुद्दीन हदफ (पोलो) खेलने के लिये हाथी पर सवार हो कर महलों से बाहर निकला । उसके साथ जड़ाउ काठियों से सुसज्जित बहुमूल्य घोड़ों पर चढ़े हुये रूमी रूहेला, गक्खर, खुरासान, हबशी तथा ईरानी आदि विभिन्न जगहों के सरदार थे, कविचन्द ने हाथ उठा कर सुलतान को स्तुति पूर्वक आशीर्वाद दिया और अपना परिचय देकर कहा :—"मैं और पृथ्वीराज एक ही समय जन्मे और साथ साथ हमारा पालन पोषण हुआ । मैं ने सुना है आपने पृथ्वीराज को "अंषहीन" कर दिया है । यदि एक बार मुझे उनके दर्शन करवा दो तो फिर मैं

बद्रिकाश्रम की ओर चला जाऊंगा। सुलतान ने उत्तर दिया कि तुम कल दरबार में हाजिर होना। हुज्जाबखां को आज्ञा दी गई कि कविचन्द के आतिथ्य सत्कार का उचित प्रबंध कर दिया जाये। तदनुसार (भीम नामक) खत्री के घर कवि की रिहायस आदि का प्रबंध हो गया। चन्द ने अपनी आराध्या देवी की अर्चना तथा होम के लिये इच्छित सामग्री मंगवा कर एकान्त स्थान में आराधना आरम्भ कर दी। देवी ने प्रसन्नता पूर्वक प्रकट हो कर कहा :—"मांग, क्या मांगता है"। कवि ने उत्तर दिया कि कहां तो तपते सूर्य के समान सुलतान शहाबुद्दीन और कहां भूमि पर लुढ़कने वाला मैं फकीर। परं तू सर्वान्तरयामिनी तथा सर्वशक्तिमती है। मेरी यही अन्तिम अभिलाषा है कि मैं अपने बालसखा तथा स्वामी पथ्वीराज का उद्धार कर अपना अपयश धो सकुं। "तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो" इतना कह कर देवी अन्तर्धान हो गई।

शाही दरबार सज गया। प्रधान मंत्री तत्तार खां के साथ अन्य समस्त दरबारी उपस्थित हैं। कविचन्द भी हाजिर हुये। कवि ने प्रार्थना की कि बाल्यावस्था में मैं और पृथ्वीराज साथ साथ खेला करते थे तो एक दिन पृथ्वीराज ने मुझे शब्द वेधी बाण द्वारा सात घरियारें बींधने की प्रतिज्ञा की, परंतु उसकी यह प्रतिज्ञा अभी तक पूरी नहीं हो सकी। सुलतान कवि की बात सुनकर हंसा और कहा कि "अंषहीन" पृथ्वीराज से अब ऐसा क्यों कर हो सकता है? चन्द के आग्रह पर सुलतान ने "फुरमान" जारी करते हुए कहा कि हमें तुम्हारी बात मंजूर है। हम भी तमाशा देखेंगे।

कवि को पृथ्वीराज के पास पहुँचा दिया गया। चंद क्या देखता है कि वीर शिरोमणी पृथ्वीराज चक्षु विहीन है। चिन्ताप्रज्ज्वलित शरीर मलिन अवस्था में पड़ा है। वरदाई ने आशीर्वाद देकर कहा: "आप ने भीमदेव चालुक्य को परास्त किया, आजानबाहु तथा अर्जुनराय को बांधा और पंग नरेश का यज्ञ विध्वंस किया। क्या आप वही सोमेश सुत संभरि नरेश हैं"? पृथ्वीराज के जर्जरित शरीर ने कुछ बल पकड़ा और वह संभला। कवि ने पुनः कहा :—"तुम्हें वह अंधेरी रात स्मरण है कि जब तुम ने एक ही बाण से उल्लू को मार गिराया था और इस प्रकार के शब्द बेधी बाण से सात घरियारें भेदने की प्रतिज्ञा

की थी। निदान, पृथ्वीराज प्रोत्सहित हुआ और दोनों सुलतान दरबार में जा उपस्थित हुए। घरियारें तैयार हो गई। तत्तार खां ने इस समय सुलतान को सावधान किया कि शत्रु पर विश्वास नहीं करना चाहिये। परन्तु उसने तत्तार के सुझाव को हंसी में टाल दिया।

पृथ्वीराज रंगभूमि में खड़ा हो गया। कमान उसके हाथ में थाम दी गई। पृथ्वीराज प्रसन्न था। कवि ने कहा :—"पृथ्वीराज! इस समय तुम्हारे सम्मुख समस्त सामग्री प्रस्तुत है, हाथ में हथियार, सम्मुख घरियार तथा बांई ओर सुलतान विराजमान है। अपने हृदय की कमान को दृढ़ कर लो। इससे लोक परलोक सुधर जायेंगे। अब सोचने का समय नहीं बाण संधानिए।" इतना सुनते ही पृथ्वीराज ने कमान दृढ़ता से संभाली। चंद ने पुनः उत्तेजित करते हुये कहा :—"राजन्! राम ने एक ही बाण से रावण को मारा था, अर्जुन ने कर्ण का शिर भी एक ही बाण से उड़ाया था और एक ही बाण पर बिठा कर भरत ने हनुमान को मूर्छित लक्ष्मण के पास पहुँचा दिया था। संभरि नरेश! तुम्हें भी दूसरे बाण की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए"।

शहाबुद्दीन के प्रथम शब्द पर पृथ्वीराज ने प्रत्यंचा खींच ली, दूसरे शब्द पर वह अडिग तथा अकड़ कर खड़ा हो गया और कर्णपर्यन्त कमान खींच ली। बादशाह के मुख से तीसरा शब्द निकलते ही पृथ्वीराज ने बाण छोड़ दिया जो कि शहाबुद्दीन के ठीक जबाढ़ें में जा धंसा, दांत-जीभ को बींध कर तालु को फोड़ कर पार हो गया। वह पृथ्वी पर मिट्टी में लुढ़कने लगा। दरबार में खलबली मच गई। चंद कवि ने क्षण में छुरी से अपने दो टुकड़े कर दिए और वही छुरी (मरते मरते) पृथ्वीराज को दे दी। हंसा उड़ गया, ज्योति, ज्योति में समा गई। आकाश से देवता गण पुष्प-वर्षा करने लगे।

कविचंद ने सुधारस सदृश नवरस-शृंगार वीर करुणादि रसों से युक्त रासो की रचना की।

संसार में शरीर, धन, स्त्री, सुर, नर, वापी, कूप-अर्थात् समस्त जड़ चेतन पदार्थ नश्वर हैं, केवल अमर अक्षर—काव्य तथा गल्हां—यश अमर रहते हैं।

———

चतुर्थ अध्याय

ऐतिहासिकता

कथानक में इतिहास और कल्पना

ऐतिहासिक[1] दृष्टि से अजमेर तथा दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान तथा सुलतान शहाबुद्दीन गौरी में प्रथम युद्ध कुरुक्षेत्र भूमि से १४ मील दूरी पर तरौड़ी नामक गांव के मैदान में सन् ११९१ में हुआ। कन्नौज नरेश जयचंद के सिवाय राजपूताने के समस्त राजाओं ने इस युद्ध में पृथ्वीराज का साथ दिया। क्योंकि संयोगिता को भगा ले जाने के कारण जयचन्द पृथ्वीराज से रुष्ट था। इस युद्ध में राजपूत योद्धाओं ने पृथ्वीराज के नेतृत्व में भयंकर युद्ध किया। परिणामतः सुलतान गौरी की सेना में भगदड़ मच गई। पृथ्वीराज के भाई गोविंद राय ने सुलतान को ऐसी करारो सांग मारी कि वह जख़मो होकर युद्ध क्षेत्र से भाग निकला। शौर्य व तेज से हीन होकर सुलतान गज़नी पहुँचा। इस पराजय का बदला लेने की इच्छा से उसने दुबारा युद्ध की तैयारियां प्रारम्भ कर दीं। परिणाम स्वरूप सन् ११९२ में उसी तरौड़ी गांव के मैदान में सुलतान और पृथ्वीराज की सेनाओं में मुठ भेड़ हुई। यद्यपि इस युद्ध में पृथ्वीराज के १५० राजपूत सामंत अपनी सेनाओं सहित सहायक थे। परंतु सुलतान की भारी भरकम सेना के सम्मुख तथा राजपूत सामंतों में पारस्परिक फूट के कारण पृथ्वीराज की सेना के पांव उखड़ गए। पृथ्वीराज समरांगण से भाग निकला। परंतु वह सरस्वती नदी के किनारे (संभवतः कुरुक्षेत्र के समीप) सुलतानी सेना के सिपाहियों द्वारा एक गांव से पकड़ा गया और वहीं मार दिया गया। इसके दो बर्ष पश्चात् सन् ११९४ में सुलतान ने कन्नौज पर चढ़ाई कर दी और देश द्रोही जयचन्द भी इस युद्ध में मारा गया। प्रबंध संग्रहान्तर्गत "जयचन्द प्रबंध" के अनुसार वह इस पराजय से आत्मग्लानि के कारण गंगा में डूब कर मर गया।

---

1 देखो—"शार्ट हिस्टरी आफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया" पृष्ठ ९८ डा० ईश्वरी प्रसाद।

चन्द कवि ने इन्हीं ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर रासो (सम्भवत: लघु संस्करण) की रचना की। यह तो निःसंदेह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत प्रति में वर्णित स्थान, प्रधान पात्र तथा मध्यकालीन सामाजिक. राजनैतिक तथा धार्मिक वातावरण सामयिक तथा ऐतिहासिक हैं। जहां कहीं कवि ने इतिहास के विरुद्ध कल्पना का प्रयोग किया है तो वह केवल काव्य को उत्कृष्ट रूप देने के लिये अथवा अपने काव्य-नायक-पृथ्वीराज की प्रतिष्ठा के लिये है।

ऐतिहासिक विश्लेषण

रासो की प्रस्तुत प्रति में मुख्य घटनाएं निम्नलिखित हैं—

१—ब्रह्मा के यज्ञ से माणिक्य राय चौहान की उत्पत्ति।

२—पृथ्वीराज का खट्टुवन में धन प्राप्त करना तथा अनंगपाल द्वारा गोद लिया जाना।

३—भीमदेव चालुक्य से आबू तथा नागौर के निकट युद्ध।

४—कैमास बध।

५—संयोगिता हरण तथा जयचन्द से युद्ध।

६—जैत खम्भारोपण एवं धीर पुंडीर द्वारा शहाबुद्दीन गौरी का पकड़ा जाना।

७—पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन गौरी में युद्ध।

(क) प्रथम युद्ध—जब पृथ्वीराज भीमदेव चालुक्य से युद्ध कर रहा था।

(ख) द्वितीय युद्ध जिसमें सुलतान गौरी धीर पुंडीर के हाथों बन्दी हुआ।

(ग) अन्तिम युद्ध—जिसमें पृथ्वीराज स्वयं बंदी हुआ।

८—शब्दवेधी-बाण भेद खण्ड।

प्रस्तुत प्रति में मुख्यतया दो ही घटनाओं का विशेष रूप से वर्णन है, प्रथम पृथ्वीराज द्वारा संयोगिता हरण, द्वितीय पृथ्वीराज गौरी में युद्ध। अन्य घटनाएं गौण रूप में ही वर्णित हैं।

उपर्युक्त घटनाओं का ऐतिहासिक दृष्टि से संक्षिप्त विश्लेषण निम्नलिखित रूप से है :—

१—किसी भी ऐतिहासिक काव्य अथवा शिलालेख का इस बात से विरोध नहीं है कि माणिक्कराय चहुवान की उत्पत्ति ब्रह्मा के यज्ञ से नहीं हुई। "सुर्जन चरित[1]" "हम्मीर महाकाव्य[2]" तथा "पृथ्वीराज विजय[3]" महाकाव्य इस बात का समर्थन करते हैं कि ब्रह्मा के यज्ञ से ही प्रथम चौहान की उत्पत्ति हुई। प्रस्तुत प्रति में वृहद् संस्करणवत् प्रथम चौहान की उत्पत्ति अग्नि कुण्ड से नहीं हुई है। और इस प्रति में वर्णित चौहान वंशावली भी किसी आधार पर असत्य प्रमाणित नहीं होती।

२—सम्भव है खट्टु वन से पृथ्वीराज को धन प्राप्ति एक काल्पनिक घटना हो। और न ही यह घटना किसी भी रूप से कथा प्रवाह में सहायक अथवा चमत्कार ही उत्पन्न करती है।

पृथ्वीराज का दिल्ली गोद जाना इतिहास सम्मत नहीं है। अनंगपाल तोंवर का अपनी कनिष्ठा कन्या कमला का विवाह सोमेश्वर से करना तथा अपने दौहित्र पृथ्वीराज को अपने राज्य (दिल्ली) का उत्तराधिकारी नियुक्त करना दोनों काल्पनिक घटनाएं हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से उस समय न तो अनंगपाल दिल्ली का राजा था और न ही उसकी पुत्री कमला का विवाह सोमेश्वर से हुआ। इस समय दिल्ली का राज्य तो पहले से ही सोमेश्वर के छोटे भाई विग्रहराज (चतुर्थ) ने अपने राज्य (अजमेर) के आधीन कर लिया था। सोमेश्वर का विवाह हैहयवंशी चेदिराज नरसिंह देव की कन्या कर्पूर देवा से हुआ और उसके गर्भ से दो पुत्र—पृथ्वीराज तथा हरिराज उत्पन्न हुए। इस कथन की पुष्टि 'हम्मीर महाकाव्य[4]' 'सुर्जनचरित[5]'

---

1. १६ वीं शताब्दी के प्रथमार्ध में एक बंगाली कवि द्वारा रचित संस्कृत काव्य।
2. ग्वालियर के राणा वोरम के दरबारी कवि नयचन्द सूरी द्वारा १ वीं शताब्दी में रचित ऐतिहासिक संस्कृत महाकाव्य।
3. पृथ्वीराज के दरबारी कवि जयानक की रचना।
4. इला विलासी जयतिस्म तस्मात्, सोमेश्वरोऽनश्वर नीति रीतिः।
   कर्पूरदेवीति बभूव तस्य, प्रिया (प्रिय) राधन सावधाना। हम्मी. म. का सर्ग २
5. शकुन्तलाभां गुणरूपशीलैः कर्पूरदेवीमुद्वाह विद्वान्। सु० च० सर्ग ६

तथा अन्य शिलालेखों[1] द्वारा प्रमाणित हो चुकी हैं।

इस कल्पना प्रसूत घटना से कवि ने जयचन्द–पृथ्वीराज में उत्कट वैमनस्य तथा वैर विरोध का बीजारोपण किया है। सम्भवतः पृथ्वीराज ने संयोगिता हरण भी इसी वैमनस्य के कारण किया हो।

३. पथ्वीराज-विजय' महाकाव्य के अनुसार पृथ्वीराज का मन्त्री कदम्बवास (कैमास) चालुक्यों को अपना शत्रु समझता था। "पार्थ-पराक्रम व्यायोग[2]" से भी यह विदित होता है कि पृथ्वीराज ने भीमदेव चालूक्यं के आधीन आबू के राजा धारावर्ष पर आक्रमण किया था। प्रस्तुत प्रति में इस राजा का नाम सलष परमार मिलता है। नाम में परिवर्तन सम्भव हो सकता है। स्वर्गीय डॉ० ओझा जी के अनुसार भीमदेव चालुक्य सं० १२३५ में गद्दी[3] पर बैठा और उस ने सं० १२९८ तक नागौर पर राज्य किया। पृथ्वीराज का राज्य[4] काल सं० १२२० से १२४८ तक है। बीकानेर रियासत के एक चारलू[5] नामक गांव में कुछ शिलालेख प्राप्त हुए हैं, जिस के अनुसार आहड और अम्बरा नामक दो चौहान सरदार सं० १२४१ में नागौर के समीप एक युद्ध में मारे गए। हो सकता है कि यह युद्ध पृथ्वीराज और भीम देव चालुक्य के बीच हुआ हो। जिनपाल उपाध्याय रचित खटतर गच्छ पट्टावली" में

---

1. विजोल्यां के वि० स० १२२६ के पांच शिला लेख, का. ना. प्र. पत्रिका भाग १ सं० १९७७ पृष्ठ ३७७-४५४ तथा "कोषोत्सव स्मारक संग्रह में डा. ओझा जी का लेख" रासो निर्माण काल पृष्ठ ३३-३९।
2. डॉ० दशरथ शर्मा का लेख "रासो (लघु संस्करण) की घटनाओं का ऐतिहासिक आधार"। राजस्थानी, कलकत्ता, जनवरी १९४० जिल्द ३
3. देखो राजपूताना म्यूजियम अजमेर में भीम देव का सं० १२९५ का एक शिला लेख—Indian Antiquary Vol. II P. 29
4. "१४वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मेरु तुंगाचार्य द्वारा रचित प्रबंध चिन्ता मणि" पृष्ठ ५४ "पृथ्वीराजः सं० १२३५ वर्षे राज्यं चकार सं० १२४८ वर्षे मृतः"।
5. An Inscription of Charlu Village (Bikaner) Rajasthan Bharati P.I., Vol. I, April 1936.

भी पृथ्वीराज और भीमदेव चालुक्य के युग का वर्णन मिलता है। अतः यह घटना ऐतिहासिक प्रतीत होती है कि भीम देव चालुक्य तथा पृथ्वीराज में सं १२४० के लगभग युद्ध हुआ था।

प्रस्तुत प्रति में पृथ्वीराज-भीमदेव में युद्ध का कारण सलय परमार कीं पुत्री तथा जैत परमार की बहन इंच्छिनी है। यद्यपि उक्त तीनों व्यक्ति इतिहास सम्मत नहीं है और काल्पनिक प्रतीत होते हैं। परन्तु वि० सं० १२८७ की वस्तु पाल मन्दिर की एक प्रशस्ति[1] से ज्ञात होता है कि उस समय आबू पर परमार-वंश का अधिकार था। एक और बात कि वृहद् तथा मध्यम संस्करणों कीं तरह प्रस्तुत प्रति में, इस युद्ध में भीभदेव की मृत्यु नहीं हुई, अपितु वह युद्ध से जीवित भाग गया।

४ जैसा कि ऊपर कहा गया है कि पृथ्वोराज विजय काव्य तथा खटतरगच्छ पट्टावली में पृथ्वीराज के मन्त्री कैमास का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। और इन काव्यों में कैमास की बुद्धि कुशलता तथा उसकी नीति निपुणता को भूरि भूरि प्रशंसा की गई है। श्री जिन विजय सूरी द्वारा सम्पादित प्रबन्ध संग्रहान्तगत पृथ्वोराज[2] प्रबन्ध में कैमास की मृत्यु संबंधी जो पद प्राप्त हुए हैं, इनसे पृथ्वीराज द्वारा कैमास की मृत्यु का प्रमाण भी मिलता है। "नैणसी ख्यात[3]" में पृथ्वोराज के एक सामंत की कथा कैमास बध आख्यान से मिलती जुलती है। अतः सिद्ध है कि कैमास एक ऐतिहासिक व्यक्ति है और प्रस्तुत प्रति में वर्णित कैमांस वध आख्यान ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वथा निराधार नहीं है।

५. संयोगिता हरण तथा पृथ्वीराज जयचन्द युद्ध

इतिहास इस बात का साक्षी है कि पृथ्वीराज और जयचन्द परस्पर

---

1. देखो एपिग्राफिका इण्डिका Vol. ४ पृष्ठ २०४-१३
2. पुरातन प्रबंध संग्रह पृष्ठ ८६—"पृथ्वीराजस्यामात्यो दाहिमा जातीयः कंइवास नामा मंत्रीश्वरोऽस्ति"। नृपः (पृथ्वोराजः) मंत्रिणं (कंइवासं) हन्तुं बुद्धिमकरोत। राज्ञा दीपिकाभिज्ञानेन बाणमुक्तम् आदि।
3. देखो—रासो (ल.सं) की घटनाओं के ऐतिहासिक आधार राजस्थानी पत्रिका कलकत्ता जिल्द १९४०।

प्रतिद्वन्द्वी थे। पुरातन प्रबन्ध संग्रहान्तर्गत जयचन्द प्रबंध में इनकी शत्रुता का स्पष्ट उल्लेख है। पृथ्वीराज की मृत्यु होने पर जयचंद ने घी के दिये जलाए[1]।

संयोगिता हरण की कथा को काल्पनिक समझा जाता है। यह बहुत सम्भव है कि कविचंद के परवर्ती काव्यकारों ने रासो से ही इस कथा को लिया हो। सम्राट् अकबर के समय में यह कथा पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी थी। अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फजल द्वारा "आइनाए अकबरी" में बर्णित जयचंद यज्ञ विध्वंस तथा संयोगिता हरण कथा यथातथ्य रूप में प्रस्तुत प्रति की कथा से मेल खाती है। आइनाए अकबरी से कुछ समय पूर्व रचित "सुर्जन चरित" संस्कृत महाकाव्य में कुछ परिवर्तन से संयोगिता हरण कथा का स्रोत मिलता है। परन्तु इस काव्य में जयचंद की कन्या का नाम कांतिमती है। पृथ्वीराज चरित्र संबंध घटनाओं के लिए सब से प्राचीनतम तथा प्रामाणिक ग्रन्थ जयानक कृती "पृथ्वीराज विजय" काव्य समझा जाता है। इस काव्य में लिखा है कि पृथ्वीराज के अनेक विवाह होने पर भी वह तिलोत्तमा नामक राजकुमार पर अत्यंत मोहित था। किंतु इससे आगे यह काव्य खण्डित है। बहुत सम्भव है कि यह तिलोत्तमा अथवा कान्तिमती संयोगिता नाम से ही रासो में अवतरित हुई हो। कुछ भी हो, संयोगिता हरण कथा पृथ्वीराज रासो के प्राण हैं, इसके बिना रासो का काव्यत्त्व तथा कथानक अधूरा है। यदि यहां कवि ने किंचित्मात्र कल्पना का प्रयोग किया हो तो कोई आश्चर्य नहीं। अतः इस घटना को हम सर्वथा अनैतिहासिक नहीं कह सकते।

९. जैतषम्भ-छेदन

यह उपकथा कवि की कल्पना मात्र प्रतीत होता है। वैसे तो मध्ययुग में वीरों की बल परीक्षार्थ ऐसे समारोहों का आयोजन होता रहता था। सम्भव है कि दिल्ली में कुतुब मीनार के समीप स्थित लोह-स्तम्भ ऐसे ही जैत खम्भ का तीक हो। क्योंकि कुतुब मीनार की पार्श्वभूमि में पृथ्वीराज के महलों के अवशेष अभी तक दिखाई देते हैं। इस कथा से चंदकवि ने पृथ्वीराज के

---

1. पृथ्वीराजे दिवं गते जैचन्द्रेण गृहे गृहे घृतेनोदम्बर क्षालनमारब्धम्, तूर्यंरवश्च प्रववृत्ते। पुरातन प्रबंध संग्रह पृष्ठ ८६

सामंतों में पारस्परिक फूट का कारण उपस्थित किया है जो कि अन्ततः दिल्ली सम्राट् के अंतिम पतन का एक प्रधान कारण है।

पृथ्वीराज शहाबुद्दीन गौरी युद्ध

इतिहास साक्षी है कि सन् ११९२ में पानीपत के समीप तरावड़ी के मैदान में पृथ्वीराज शहाबुद्दीन गौरी द्वारा पराजित हुआ। पृथ्वीराज की मृत्यु किस ढंग से हुई, इस विषय में अभी तक इतिहासकार अपना निश्चयात्मक निर्णय नहीं दे सके। रासो की प्रस्तुत प्रति में पृथ्वीराज तथा सुलतान गौरी के मध्य तीन युद्धों[1] का वर्णन है। ऐतिहासिक दृष्टि से यदि तीन नहीं, दो युद्ध तो अवश्य हुए हैं। **प्रथम युद्ध**[2] में सुलतान गौरी पृथ्वीराज के हाथों परास्त हुआ। और द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज स्वयं बंदी हो गया। "आइनाए अकबरी" तथा सुर्जन चरित में, पृथ्वीराज का गौरी के हाथों बंदी हो कर गजनी ले जाया जाना, उसको "अंषहीन" करना तथा धनुर्विद्या कौशल से गौरी का मारा जाना आदि कथा प्रस्तुत प्रति में वर्णित कथा से मिलती जुलती है।

परन्तु उपर्युक्त दोनों ग्रंथों के अनुसार कविचंद तथा पृथ्वीराज को सुलतान गौरी के दरबारियों ने हमला करके उनके टुकड़े टुकड़े कर दिये। मेरु तुगाचार्य (जन्म सं० १३६१) द्वारा रचित प्रबंध चिन्तामणि (पृष्ठ १४५) "पृथ्वीराज का म्लेच्छों द्वारा मारा जाना" प्रबंध में पृथ्वीराज को दिल्ली में ही कुठाराघात से मारा जाना लिखा है। "पुरातन प्रबंध संग्रह" के अनुसार, पृथ्वीराज ने गजनी के राज-दरबार में सुलतान की एक लोह मूर्ति पर निशाना लगाया. निशाना तो ठीक लगा परन्तु सुलतान बच गया। पृथ्वीराज पकड़ा गया और मारा गया। पृथ्वीराज की मृत्यु किसी भी रूप में हुई हो, परन्तु कवि को एक सुन्दर काव्य की पूर्ति के लिये खल नायक-सुलतान गौरी को अवश्य दण्ड देना

---

1. पुरातन प्रबंध संग्रह में सात युद्धों का उल्लेख है।
2. पृथ्वीराजस्य तुरुष्क सैन्येन युद्धं जातम् ,भग्नं शाक सैन्यम्। सुरत्राणो जीवन् गृहीतः। स्वर्ण निगड़े क्षिप्त्वा योगिनी पुरे (दिल्ली) मातुर्वचसा मुक्तः। पु. प्र. सं. पृष्ठ ८६

था और अपने चरित नायक-पृथ्वीराज को प्रतिष्ठा तथा काव्य नायक के नायकत्त्व की रक्षा अवश्य करनी थी। अत: कवि ने कल्पना के अल्प मात्र प्रयोग से पृथ्वीराज की पराजय को विजय में परिणत कर दिया।

८. हाहुलिराय

कांगड़ा प्रदेशाधिपति हाहुलिराय तथा पृथ्वीराज में विद्रोह की घटना भी ऐतिहासिक दृष्टि से निराधार नहीं कही जा सकती। तब-काते नासीरी[1] के अनुवाद टिप्पणों में रैवर्टी ने पर्वत प्रदेश विशेषकर, जम्मु के राजाओं की तवारीख से कई ऐसे अवतरण दिये हैं कि जम्मु के एक राजा ने पृथ्वीराज के विरुद्ध शहाबुद्दीन गौरी का साथ दिया था। प्रस्तुत प्रति में हाहुलिराय जम्मु नरेश[2] ही वर्णित है। उस समय कांगड़ा जम्मु राज्य के अन्तर्गत था। अत: यह वही देश द्रोही हाहुलि राय है जिसने पृथ्वीराज के विरुद्ध शहाद्बुीन गौरी का साथ दिया था।

ऐतिहासिक तिथियां

संस्कृत के आदि महाकाव्य: बाल्मीकि रामायणवत् पृथ्वीराज रासो को हिन्दी साहित्य का आदि महाकाव्य समझा जाता है। लगभग गत एक शताब्दी से अद्यावधि इस में वर्णित घटनाओं तथा उपकथाओं को लेकर उन की ऐतिहासिक दष्टि से प्रामाणिकता[3]-अप्रामाणिकता विषयक चीर फाड़ होती रही है और उनको ऊहा पोह द्वारा इतिहास की कसौटी पर परखा जाता रहा है। इस संघर्ष[4] संबंधी लेख अनेक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। किन्तु कोई भी विद्वान् इस विषय में अपना निर्णयात्मक मत स्थापित नहीं कर सका।

---

1. देखो—लघु संस्करण की ऐतिहासिक घटनाओं के ऐतिहासिक आधार "।जस्थानी" जनवरी १६४० १६४० जिल्द ३
2. (क) जालंधरा।य (हाहुलीराय) जंवू धर्नी, सुनि हम्मीर 'चंदहु सुमति' १५-२७।
   (ख) हौं पर्वत कौ राजधांन पंज।ब सुषाई। १२-४१
3. देखो—भूमिका, पृष्ठ १६०-२२८ "रेवा तट समय" सम्पादित डा० विपिन विहारी त्रिवेदी, प्रकाशित,-हिन्दी विभाग लखनऊ विश्व विद्यालय।
4. (क) "रासो की प्रमाणिकता" गौरी शंकर हीरानंद ओझा।—→

डा० व्यूहलेर, महामहोपाध्याय कविराज श्यामल दास तथा डा० गौरीशंकर हीरानंद ओझा आदि विद्वानों ने रासो के बृहद संस्करण के विषय में एतदन्तर्गत ऐतिहासिक विप्रतिपत्तियों, भाषा विकृति तथा सन संम्वतों की उथल पुथल को देख कर अपना मत दिया था कि रासो १७वीं शताब्दी की रचना है। इन विद्वानों ने निम्नलिखित ऐतिहासिक विप्रतिपत्तियों के आधार पर अपनी उपर्युक्त सम्मति दी है :—

१. कि चौहान वंश की उत्पत्ति अग्निकुल से है, जब कि किसी भी ऐतिहासिक प्रमाण से चौहन वंश को उत्पत्ति अग्नि कुल से सिद्ध नहीं होती।

२. अनंगपाल तोंवर का कन्या का सोमेश्वर के साथ विवाह, उसके गर्भ से पृथ्वीराज का जन्म, अनंगपाल तोंवर द्वारा पृथ्वीराज को गोद लेना तथा उसे दिल्ली राज्य का उत्तराधिकारी नियुक्त करना इतिहास सम्मत नहीं है।

३. पृथ्वीराज की बहन पृथा का विवाह मेवाड़ के राणा समरसिंह से हुआ और वह पृथ्वीराज के पक्ष में शहाबुद्दीन के साथ युद्ध करता हुआ दूसरी पानिपत कीं लड़ाई में मारा गया। जबकि ऐतिहासिक सचाई यह है कि समर सिंह पृथ्वीराज से १०९ वर्ष पीछे तक जीवित रहा।

४. पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर को गुजरात नरेश भीमदेव चालुक्य ने एक युद्ध में मार दिया था और कुछ समय पश्चात् अपने पिता का बदला लेने के लिए पृथ्वीराज ने भीमदेव को मार दिया, जब कि

→(ख) पृथ्वीराज रासो की एक प्राचीन प्रति और उसकी प्रामाणिकता का. ना. पत्रिका कार्तिक सं० १९९६।

(ग) The Aage and Historicity of Prithviraj Raso- Indian Historical quarterly Vol. 16-1940.

(घ) The Antiquity authenticity and genuineness of P.R. by K. Shamal Dass, Bengal Asiatic society journal Vol. LV (1886) Part I Page 5

इतिहास इस घटना को प्रमाणित नहीं मानता। क्योंकि सोमेश्वर की मृत्यु के समय (संवत् १२३६) भीम देव चालुक्य अभी बालक ही था और सं० १२९८ तक जीवित रहा।

५. पृथ्वीराज ने कई विवाह किए जिन में से देव गिरि के राजा की कन्या शशिब्रता, नाहर राय की पुत्री हंसावती, समुद्रशिखर नरेश की दुहिता पद्मावती तथा आबू नरेश सलष परमार की लड़की इंच्छिनी आदि के अपहरण प्रमुख हैं। परन्तु इतिहास से ज्ञात होता है कि पृथ्वीराज के समय उक्त राजाओं का अस्तित्व ही नहीं था।

६. निम्नलिखित सम्वत् भी ऐतिहासिक दृष्टि से अशुद्ध प्रमाणित होते हैं।

क—सम्वत् ८२१ में वीसल देव का राज गद्दी पर बैठना।

ख—१११५ में पृथ्वीराज का जन्म।

ग—११३८ में पृथ्वीराज का राज्याभिषेक।

घ—११३६ में सलष परमार द्वारा शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना।

ङ—११५२ में धीर पुंडीर का सुलतान गौरी से युद्ध।

च—११४८ में आबू के समीप पृथ्वीराज-भीमदेव युद्ध।

इसके अतिरिक्त बृहद् तथा मध्यम संस्करणों में और भी बहुत सी ऐतिहासिक विषमताएं हैं जिन का यहां विवरण देना संभव नहीं है।

उपर्युक्त ऐतिहासिक विषमताएं रासो के मध्यम तथा वृहद संस्करणों पर ही आधारित हैं, क्योंकि लघु संस्करण उस समय प्रकाश में नहीं आया था जिस में उपर्युक्त अधिकतर ऐतिहासिक विषमताओं के दर्शन नहीं होते।

१. रासो की लघु संस्करणात्मक प्रस्तुत प्रति में चौहान वंश की उत्पत्ति ब्रह्मा के यज्ञ से हैं अग्नि कुण्ड से नहीं। यथा:—

"ब्रह्मान जग्य ऊपन्न सूर, मानिक्कराय चहुवान मूर।"

इस बात का किसी भी शिला लेख तथा इतिहास ग्रंथ ने विरोध नहीं किया। वृहद् संस्करणवत् यहां चौहान वंशावली भी अधिक विस्तृत तथा अनियमित नहीं है :—

मानिक्कराय चहुवान
|
अनेक प्रतापी उत्तराधिकारी
|
धर्माधिराज
|
वीसल देव
|
सारंग देव
|
आना नरिंद
|
जयसिंह
|
आनंद देव
|
सोमेश्वर
|
पृथ्वीराज

२. जैसा कि पहसे कहा जा चुका है कि अनंगपाल तोंवर की कन्या कमला का सोमेश्वर के साथ विवाह होना तथा पृथ्वीराज का अनंगपाल द्वारा गोद लिया जाना काल्पनिक घटनाएं है।

३ समर सिंह पृथा विवाह—यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि चित्तौड़ के रावल समरसिंह वि० सं० १३५८, अर्थात् पृथ्वीराज की मृत्यु (१२४८) से १०९ वर्ष बाद तक जीवित रहे। परन्तु उदयपुर राज्य का इतिहास[1] (डुंगरपुर ख्यात) से यह ज्ञात होता है कि पृथ्वीराज की वहन पृथा का विवाह मेवाड़ के रावल समतसिंह अथवा सामंत सिंह से हुआ प्रस्तुत प्रति में रावल समर सिंह का नाम—"समर सीह" "रावल समर" "सामंत सिंह" तीन रूपों में लिपिकृत है :—

क—समंतसिंह राव (१६-५)

ख—सामंत सिंह दुज्जन सया, दया न कीज्जै काल खल। १४-१०४

जैन लिपि अथवा प्राचीन देवनागरी लिपि जिसमें रासो की पाण्डु

1. जिल्द १ पृष्ठ १५४, सन् १९३२ संस्करण

लिपियां लिखी मिलती हैं "र" और "त" अक्षर लिखने में अभेद-प्रतीति है। कवि चंद ने तो समतसिंह अथवा सामंत सिंह ही लिखा होगा परन्तु किसी एक प्रतिलिपिकार ने समत सिंह के "त" को "र" नकल किया होगा। जिसमें समतसिंह अथवा सामंत सिंह का समरसिंह तथा समरसि बनना स्वाभाविक प्रतीत होता है। मेरा अनुमान है कि यह अशुद्धि निरन्तर अभी तक चली आ रही है। क्योंकि रासो की पांडुलिपियां सैकड़ों प्रतिलिपिकारों के माध्यम से हमारे हाथ लगी है। अतः प्रस्तुत प्रति के चतुर्दश खण्ड से पृथा विवाह और समतसिंह का सुलतान के विरुद्ध लड़ते हुए मारा जाना गलत साबित नहीं होता। राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता स्वर्गीय जगदीश सिंह गलहोत ने भी यही लिखा[1] है कि चित्तौड़ के रावल सामंत सिंह[2] का विवाह पृथ्वीराज की बहन[3] पृथा से हुआ था।

४. यह प्रकरण प्रस्तुत प्रति में नहीं हैं।

५. प्रस्तुत प्रति में केवल संयोगिता अपहरण की कथा ही विस्तृत रूप में वर्णित हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से यह घटना अकबर राज्य काल से

---

1. देखो—राजस्थान का इतिहास, पृष्ठ १९८, सन् १९३७ संस्करण।
2. पृथ्वीराज और जयचंद के समय (सं० १२२६) में मेवाड़ का राजा सामंत सिंह और उसका छोटा भाई कुमार सिंह थे। इन से पांचवीं पुस्त में चित्तौड़ का राजा राणा समरसिंह हुआ जो सं० १३५४ तक जीवित रहा। डा. जी. एच. ओझा "आनंद सम्वत् कल्पना"
3. ततः समरसिंहाख्यः पृथ्वीराजस्य भूपतेः।
पृथाख्यायाः भगिन्यास्तु पतिरित्यति हार्दतः॥
गौरी साहबदीनेन गज्जनीशेन संगरम्।
कुर्वतोऽखर्व गर्वस्य महासामन्तशोभिनः॥
दिल्लीश्वरस्य चौहाननाथस्यास्य सहायकृत्।
सः द्वादश सहस्रैः स्व वीराणां सहितो रणे।
वध्वा गोरी पतिं दैवात् स्वर्यातः सूर्य बिंबभित्॥ तृतीय सर्ग, चतुर्थ शिला सम्वत् १७३२ में श्री मधु सूदन भट्ट रचित राज प्रशस्ति महाकाव्य। (चित्तौड़ के "राज समुद्र" सरोवर की शिलाओं पर उत्कीर्ण)

पूर्व प्रचलित थी। पद्मावती, हंसावती तथा शशिव्रता आदि के विवाहों का इस प्रति में वर्णन नहीं है। हाँ, सलष परमार की कन्या इंच्छिनी का पृथ्वीराज द्वारा अपहरण यहां हुआ है। भीमदेव चालुक्य के साथ पृथ्वीराज का युद्ध इसी इंच्छिनी के कारण होता है। यद्यपि आबू नरेश सलष परमार ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं है परन्तु पृथ्वीराज के समय में आबू प्रदेश पर पम्मार वंश का राज्य था। अतः इंछिनी आदि नाम कल्पित प्रतीत होते हैं।

६. बृहद संस्करण के संवत तो इतिहास से मेल खाते ही नहीं परन्तु प्रस्तुत प्रति में निम्नलिखित संवत् भी ऐतिहासिक दृष्टि से ठीक नहीं हैं।

क—सं०[1] ११३८ में पृथ्वीराज का राज्याभिषेक।

ख—११४८ में पृथ्वीराज-भीमदेव चालुक्य युद्ध।

ग—११५१ में पृथ्वीराज का कन्नौज के लिए प्रस्थान तथा पृथ्वीराज जयचन्द युद्ध।

घ—११५२ धीर पुण्डीर का शहाबुद्दीन गौरी के साथ युद्ध।

यद्यपि डा० गौरी शंकर हीरानंद आदि द्वारा उपर्युक्त अधिकतर ऐतिहासिक विप्रत्तिप्रत्तियां प्रस्तुत प्रति में नहीं मिलतीं, फिर भी रासो का रचना काल १६वीं शताब्दी से पूर्व अनुमानित नहीं किया जा सकता। जब से सन् १९३६ में प्रकाशित श्री जिन विजय सूरी द्वारा सम्पादित पुरातन-प्रबन्ध संग्रहान्तर्गत "पृथ्वीराज प्रबन्ध" में कैमास वध सम्बन्धी[2] तीन पद्य प्राच्य अपभ्रंश भाषा में पाए गये तब से यह विश्वास

---

1. एकादस सै तीस अठ, विक्कम साक आनंद।
   तिहि रिपु जय पुर हरन कौ, भयो पृथिराज नरिंद। (२-७०)

2. इक्कु बाणु पहुवीसु जु पइं, कइंवासह मुक्कओ।
   उर भितरि खडहडिउ धीर, कक्खंतरि चुक्कउ।
   वीअं करि संधीउं भंमइ, सूमेसर नंदण।
   एहु सु गड़ि दाहिमओ खणइ, खुद्दइ सइंभरि वणु।
   फुड छांडि न जाइ इहु लुब्भिउ, बारइ पलकउ खल गुलइ।
   नं जाणउं चन्द बलद्दिउ, किं न-विछुट्टइ फलह।

   प्रस्तुत प्रति में देखो—खंड ७ छंद ६३।

   प्रबंध संग्रहान्तर्गत "पृथ्वीराज प्रबन्ध तथा जयचन्द प्रबन्ध का रचनाकाल, श्री सूरी जी ने संवत् १२९० अनुमानित किया है।

होने लगा फि पृथ्वीराज रासो वास्तविक रूप में चंद बरदाई कृत प्राचीन महाकाव्य है । श्री सूरी जी ने भी उक्त ग्रन्थ की भूमिका (पृष्ठ ८-९) में अपना यह मत दिया है कि रासो किसी न किसी रूप में सं० १२९० से पूर्व विद्यमान था । परन्तु इस संग्रह के अन्तर्गत प्रबन्धों के रचनाकाल तथा रचयिता के विषय में सन्देह है । अभी तक निश्चित रूप से कोई भी विद्वान् इस विषय में अपना प्रामाणिक मत स्थिर नहीं कर सका । डा० दशरथ[1] शर्मा ने इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १५२४ अनुमानित किया हैं । ऐसी स्थिति में श्री सूरो जी के कथन का कुछ महत्त्व नहीं रह जाता ।

यद्यपि साहित्यिक राज दरबार में कोई साहित्यिक समस्या तथा उलझन उपस्थित होने पर एक न्यायाधीश की तरह स्थिर निर्णय देना न्याय संगत प्रतीत नहीं होंतां फिर भी रासो की प्रस्तुत प्रति के अध्ययन से मुझे यह आभास हुआ है कि निम्नलिखित कारणों से रासो की रचना १६ वीं शताव्दी के प्रथमार्ध से पूर्वतर अनुमानित नहीं की जा सकती ।

१. "प्रबंध चिन्तामणि[2]" के रचयिता मेरुतुंगाचार्य ने उक्त ग्रन्थ के अन्गर्गत "पृथ्वीराज चरितम्" मैं लिखा है कि तरावड़ी के द्वितीय युद्ध में शहाबुद्दीन द्वारा पृथ्वीराज के पराजित होने पर उसे दिल्ली में ही कारावास दण्ड दिया गया और कुछ कालानन्तर वह वहीं सुलतान गौरी के सिपाहियों द्वारा कतल कर दिया गया । पृथ्वीराज का राज्यकाल तथा उसकी मृत्यु—"पृथ्वीराज: सं० १२३५ वर्षे राज्यं चकार, सं० १२४८ वर्षे मृत:" । भी इस ग्रन्थ के अनुसार ऐतिहासिक दृष्टि से ठीक बैठती है । और इस कथन को डा० ओझा जैसे इतिहास वेत्ताओं ने भी सही माना है । अत: निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि मेरुतुंगाचार्य द्वारा वर्णित पृथ्वीराज का मृत्यु-विषयक वर्णन यथार्थ है । आचार्य जी की जन्म तिथि निश्चित रूप से संवत १३६१ है । उन्होंने "पृथ्वीराज चरितम् की रचना सम्भवत: १४ वीं शताब्दी के अन्त में अथवा १५ वीं के प्रथमार्ध में की होगी । अत: रासो में वर्णित पृथ्वीराज की मृत्यु विषयक घटना में

1. देखो—"राजस्थानी" जिल्द ३ भाग २ जनवरी १९४० रासो की घटनाओं के ऐतिहासिक आधार"

2. देखो—प्रबंध चिन्तामणि पृष्ठ १४५, श्री जिन विजय सूरी द्वारा सम्पादित तथा सिंघी जैन ग्रंथ माला, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित ।

काल्पनिक परिवर्तन इस काल के पर्याप्त समय पश्चात् किया गया प्रतीत होता है।

२. चंद बरदाई को हिन्दी साहित्य का आदि महान् कवि माना गया है! और कवि ने अपने आप को इतिहास में प्रसिद्धतम व्यक्ति हिन्दु सम्राट् पृथ्वीराज का दरबारी कवि तथा जीवन सखा[1] घोषित किया है। फिर यह एक आश्चर्य की बात है कि सम्राट् अकबर के राज्य-काल से पूर्व (गंग-चंद छंद वर्णन से पूर्व) किसी भी साहित्यिक अथवा ऐतिहासिक व्यक्ति ने चंद कवि का जिकर तक नहीं किया। पृथ्वीराज के प्रमाणिक दरबारी कवि "पृथ्वीराज विजय" के रचयिता जयानक ने भी अपनी रचना में कहीं "चंद" का नाम नहीं लिया। १५ शताब्दी में ग्वालियर के तोमरवंशी राजा वीरम के दरबार में नयचन्द्र सूरी द्वारा रचित "हम्मीर महाकाव्य में "पथ्वीराज का विस्तृत वर्णन है। पृथ्वीराज-पतन के २५० वर्ष पश्चात् पांचवी[2] पीढ़ी में राणा हम्मीर हुए, अर्थात् पृथ्वीरांज से हम्मीर तक पांच पीढ़ियों का इस काव्य में वर्णन है। इन्हीं नयचंद्र सूरी द्वारा रचित "रम्मामंजरी" नाटिका में जयचंद नायक है। इन दोनों पुस्तकों में पृथ्वीराज के जीवनसाथी चंद वरदाई का नाम तक नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत प्रति में राजा वीरम को पृथ्वीराज का एक सामंत वर्णित किया गया है :—

क— बलिराइ वीरंम, सारंग गाजी। (८-१४)
ख— सैरन्ध्री उर जनम नाम, वीरम रावत्ता। (११-११८)

अतः यह कहा जा सकता है कि इस समय तक पृथ्वीराज रासो की रचना नहीं हुई थी।

३. यह एक ऐतिहासिक सचाई हैं कि सन् १२९७ (सं० १३५४) में अलाउद्दीन खिलजी ने गुजरात नरेश राजा कर्ण-(राजधानी-अनहिलपुर-अनहिलवाड़ा) को परास्त कर उसकी स्त्री कमला देवी का अपहरण कर लिया था और गुजरात पर अपना अधिकार जमा लिया था। यहां प्रस्तुत

---

1. (क) हम सु साही वर भट्ट चंद, अवतार लीन्ह पृथिराज सत्थ।
   (ख) बालप्पन पृथिराज संग, अति मित्त तन कीन। (१९–७२)
2. पृथ्वीराज-गोविंराज (रणथंभोर का प्रथम राणा) बालहन देव-वाग् भट्ट-जैत्रसिंह-हम्मीर।

प्रति में राजा कर्णराय जी पृथ्वीराज की ओर से पानीपत की दूसरी लड़ाई में शहाबुद्दीन गौरी से युद्ध करते हुए दिखाई देते हैं: -

करनराइ कुंडली समर, रावल बज्जीरं।
अनहिलपुर आभरन, राजराव ततहि भीरं।

अत: यह मानना पड़ेगा कि रासो की रचना अलाउद्दीन खिलजी के राज्य काल के पश्चात् हुई।

४. अब्दुल रहमान कृत "संदेश रासक" १३ वीं शताब्दी के प्रथमार्ध की रचना है। इस पुस्तक के योग्य सम्पादक श्री जिन विजय सूरी जी का कथन है: हेमचंद्र की मृत्यु सं० १२३० में हुई। इसके १५ अथवा २० वर्ष पश्चात् शहाबुद्दीन गौरी के उत्तरी भारत तथा पंजाब पर आक्रमण प्रारम्भ हो चुके थे। उसने अनंगपाल, पृथ्वीराज तथा जयचन्द आदि राजाओं को परास्त कर उनके राज्य अपने आधीन कर लिए थे। संदेश रासक लगभग इसी समय की रचना है। भाषा विकास की दृष्टि से यह रचना उस समय की है जब कि अपभ्रंश भाषा अपना अन्तिम दम तोड़ रही थी और आधुनिक भाषाएं विकास के पथ पर अग्रसर थीं।" सो यह कृति उस समय की भाषा का उत्कृष्ट तथा सर्वोत्तम उदाहरण है जिस काल में हम रासो रचना संभावित मानते हैं यथा—

जइ अत्थि परिजाओ, बहु विह गंधड्ढ कुसुम समाओ।
फुल्लइ सुरिंद भुवणो, ता सेस तरूम फुल्लंतु ॥ सं० रा० पृ० ५

इसके विपरीत प्रस्तुत प्रति की भाषा उपर्युक्त पद्य की तुलना में सर्वथा नव्यतर प्रतीत होती है: -

क—इतनो कहत भुवपति चढ्यौ. कहहि भले रजपूत सौं। ६-१०४
ख – च्यारि रात जंगली रह्यौ, तहं नींद न सुत्तौ। १०-६३।
ग—हलोहल्ल कनवज्ज मज्झि। ६-११३

ऐसी परिस्थिति में रासो को १३ शताब्दी की रचना मानने में हमें संकोच होता है। परन्तु इस प्रति में यत्र तत्र प्राकृत तथा अपभ्रंश के ऐसे प्राचीन रूप भी बिखरे पड़े हैं जिनसे भ्रम होने लगता है कि संभव है रासो मध्यकालीन कृति हो। किंतु ऐसे शब्दों का प्रयोग कबीर तथा जायसी, यहां तक की भूषण कवि की रचनाओं में भी उपलब्ध होता है।

1. देखो—भूमिका (पृष्ठ १४) अब्दुल रहमान कृत संदेश रासक, सम्पादित श्री जिन विजय सूरी, प्रकाशित भारतीय विद्या भवन बम्बई।

५—प्रस्तुत प्रति में हथनारि[1]=बंदूक, तथा जंबूर[2]=छोटी तोप शब्दों के प्रयोग से ऐसा प्रतीत होता है कि रासो की रचना १६वीं (वि.सं.) शताब्दी से पूर्व नहीं हुई, क्योंकि भारत में सर्व प्रथम बंदूक तथा छोटी तोप का प्रयोग मुगल सम्राट् बाबर ने किया था, जबकि उसने सन् १५२६ ई० पानीपत की लड़ाई में इब्राहीम लोदी को पराजित किया। यह बात सर्व विदित है कि भारत में सब से पहले बंदूक तथा तोप का निर्माण बाबर ने प्रारम्भ किया था। "मुगलन्नि" शब्द के प्रयोग से भी ऐसा भान होता है कि रासो की रचना भारत में मुगलों के आगमन के उपरान्त, बाबर के समय में अथवा इसी समय के लगभग हुई हो।

६—सब से अन्तिम युक्ति जो हम यहां देना चाहते हैं, यह है कि यदि चंद वरदाई पृथ्वीराज का जीवन सखा तथा उसका दरबारी कवि था तो वह अपने स्वामी तथा सखा के चरित संबंधी काव्य में ऐतिहासिक घटनाओं और तिथिओं में असाधारण विषमता उत्पन्न न करता। यह एक साधारण सी बात है कि चन्द वरदाई द्वारा (पृथ्वीराज का समकालीन होते हुए भी) ऐसी असाधारण ऐतिहासिक विषमताएं क्योंकर संभव हो सकीं। इसके विपरीत पृथ्वीराज के समकालीन तथा उसके दरबारी कवि जयानक द्वारा रचित "पृथ्वीराज विजय" महाकाव्य में ऐसी कोई ऐतिहासिक विप्रतिपत्ति अथवा विषमता दृष्टिगोचर नहीं होती। वास्तव में प्रतीत ऐसा होता है कि चंद कवि के हृदय में सम्राट् पृथ्वीराज के समान एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक[4] व्यक्ति बनने की आकांक्षा थी। और यह प्रबल इच्छा उसके हृदय में हिलोरें ले रही थी, जो एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक

---

1. (क) हथनारि सुधारि, करि अवाज उत्तंग। १३–७०

   (ख) हट्टनार कुटवार सुनि, करि सावंतनि जंग। १०–४४

2. विज्जलि जाव जंबूर झलक्किय। १०–५९

3. बाघराज वघ्घेल हेल, मुग़लन्नि हलक्किय।

   आवर्तमान सावंतन, जमर मेच्छ सम्मर मिलिय। १०–५०

4. प्रथम वैर संधन मनह, पुनि स्वामि उद्धारह।

   लोक वेद कीरति अमर, सुकिय चन्द उद्धार। १९–१२

वीर पुरुष के साथ जुड़ने से ही पूरी हो सकती थी। इसीलिए पृथ्वीराज जैसे प्रसिद्ध नायक के साथ अपना नाम जोड़कर उसने अपने को धन्य माना। तभी तो कवि ने गर्व से अभिमान पूर्ण घोषणा की कि :—

हम सु साहि वर भट्ट चन्द, अवतार लीन्ह पृथिराज सत्थ।

अतः ऐसा अनुमान है कि चन्द वरदाई बाबर समकालीन एक भाट[1] अथवा चारण कवि था। इतिहास का पूर्णरूप से उसे ज्ञान नहीं था। किंवदंतियों द्वारा सुनी सुनाई ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर उसने पृथ्वीराज रासो (लघु संस्करण) की रचना की। उसका एक मात्र ध्येय अपने काव्य-नायक पृथ्वीराज के शौर्य तेज का उत्कृष्ट रूप में वर्णन करना था। एतदर्थ उसने रासो में उन्मुक्त रूप से कल्पना का प्रयोग किया। समय की प्रगति के साथ साथ अन्य चारण कवियों द्वारा इसके कलेवर में वृद्धि होती रही। क्योंकि उस युग में रासो चारण कवियों की आजीविका का एक मुख्य साधन था। राजपूती राजदरबारों में इसी के पद्यों के उच्चारण अथवा गायन से उनकी आजीविका चलती थी। परिणामतः १८वीं शताब्दी के अन्त तक रासो के मध्यम तथा बृहद् रूपान्तर प्रकाश में आए। प्रस्तुत प्रति के निम्नोक्त पद्य से भी ऐसा ही प्रतीत होता है कि रासो की रचना १६वीं शती के लगभग हुई होगी। इस पद्य को हम प्रक्षिप्त भी नहीं कह सकते, क्योंकि प्रस्तुत प्रति में भाषा का रूप अधिकतर इसी प्रकार का है :—

अनंगपाल पुच्छहि नृपति, कहहु भट्ट धरि ध्यान।
किहि संवत मेवार पति, बाधालयो सुरतांन।
सोरहि सै कटि गहित, विक्रम साक अतीत।
ढिल्लोधर मेवारपति, लेइ षग्ग वर जीति। २—६७, ६८

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रासो की प्रस्तुत प्रति में इतिहास तथा कल्पना का सामंजस्य है। ऐतिहासिक महाकाव्य में कल्पना तथा इतिहास का मिश्रण होता ही है। प्रस्तुत प्रति में मध्य युगीय प्रथानुसार

1. (क) भट्ट कहै। ६-८१
   (ख) वरदाइ दुर्ग दुर्गहं सजिय, भट्ट जाति जीह ट्टुनौ। १४-६२

दैवी घटनाओं का सवावेश भी है। जैसे :—निगमबोध घाट पर एक भारी शिला के नीचे से दैवी पुरुष वीर भद्र का प्रकट होना, संयोगिता को डंकिनी द्वारा पृथ्वीराज-गौरी युद्ध की कथा कहलवाना, कांगड़ा-स्थित जालंधरी देवी के मंदिर में बंदी चंदवरदाई का एक दैवी पुरुष से पृथ्वीराज पराजय बृत्तान्त सुनना। इसी प्रकार काव्य में वर्णित अन्य दैवी घटनाएं भी कवि-कल्पना प्रसूत हैं। इन घटनाओं द्वारा कवि ने मध्यकालीन समाज का धार्मिक तथा सामाजिक वातावरण उपस्थित करने का प्रयत्न किया है।

उपर्युक्त ऐतिहासिक विप्रतिपत्तियों की उपस्थिति में हमें ऐसा विश्वास नहीं होता कि रासो की रचना १३वीं शताब्दी में हुई हो। १३वीं शती में रचित संदेश रासक की भाषा की तुलना में प्रस्तुत प्रति की भाषा १३वीं शताब्दी की प्रतीत नहीं होती। सम्राट् अकबर के समय तक किसी भी साहित्यकार ने अपनी रचनाओं में चन्द वरदाई का उल्लेख नहीं किया। इसके अतिरिक्त "हथनारि" "जंबूर" तथा "मुगलन्नि" शब्दो का उस युग में प्रचलन नहीं था। अत: प्रतीत ऐसा होता है कि रासो की रचना सम्राट् पृथ्वीराज के राज्यकाल १३वीं शताब्दी के प्रथमार्ध में नहीं हुई अपितु यह लगभग. बाबर समकालीन कृति है।

पंचम–अध्याय

साहित्यिक समालोचना

सर्गबंधो महाकाव्यम् तत्रैकों नायकः सुरः।
सद्वंशा क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः॥
एकवंशोद्भवाः भूपाः कुलजाः बहवोऽपिवा।
श्रृङ्गार-वीर शान्तानामेकोङ्गी रस इष्यते।
अंगानि सर्वेति रसाः सर्वे नाटक संधयः।
इतिहासोद्भवं बृत्तं अन्यद्वा सज्जनाश्रयम्।
आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तु निर्देश एव वा।
नाति स्वल्पाः नाति दीर्घाः सर्गा अष्ठाधिका इह।
सर्गान्ते भावि सर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत्।
संध्या सूर्येन्दु रजनी प्रदोष ध्वान्त वासराः।
प्रातर्मध्याह्न मृगया शेलर्तु वनसागराः।
संभोग-विप्रलम्भौ च मुनि स्वर्ग पुराध्वरा।
रणप्रयाणोपयम मंत्र पुत्रोदयादयः।
वर्णनीया यथा योगं साङ्गो पाङ्गा अमी इह।
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा।

साहित्य दर्पण में वर्णित महाकाव्य के इस शास्त्रीय लक्षण के अनुसार रासो की प्रस्तुत प्रति उक्त लक्षणों पर सम्भवतः पूरी उतरती है। इस प्रति में १९ सर्ग हैं और प्रत्येक सर्ग में न्यून से न्यून छंद संख्या ४६ तथा अधिक से अधिक २०० हैं। उच्च क्षत्रिय वंशोद्भव हिन्दु सम्राट् अजमेर तथा दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान तृतीय इस काव्य के धीरोदात्त नायक हैं। मन वचन कर्म से स्वामी-धर्म का पालन करने वाले अनेक सूर सामंत उनके अनुयायी तथा सहायक हैं। उनके प्रतिद्वंद्वी हैं :— शहाबुद्दीन गौरी, कान्य कुब्जेश्वर जयचंद तथा गुर्जरेश्वर भीम देव चालुक्य प्रतिद्वंद्वी। जयचंद की कन्या संयोगिता, नायक पृथ्वीराज के सौंदर्य तथा शौर्यादि गुणों पर मुग्धा इस काव्य को नायिका है।

यह वीर-रस प्रधान महाकाव्य है। इस काव्य के १९ खण्डों में से १५ खण्ड रण-सज्जा, शस्त्रास्त्रों की खनखनाहट, हाथी घोड़ों की ठेल-पेल तथा वीर योद्धाओं को उल्लास पूर्ण हुँकारों से भरपूर हैं। परंतु प्रकरणानुसार श्रृंगार रस का निर्वाह भी बड़े विशद तथा उत्कृष्ट रूप में हुआ है। युद्ध के तुमुल नाद, बाणों की वर्षा तथा शस्त्रों की कटु खनखनाहट में उचित श्रृंगार रस के छींटों ने काव्य में मनोहारिता और मधुरता उत्पन्न कर दी है। अतः यहां वीर तथा श्रृंगार रसों का अंगाङ्गीभाव से वर्णन हुआ है।

लगभग प्रत्येक खण्ड का अन्त आगामी खण्ड के कथा सूत्र से सम्बंधित है। जैसे सप्तं खण्ड के अन्तिम छंद में कैमास के बध से खिन्न मन पथ्वीराज ने कविचंद से प्रछन्न वेष में कन्नौज यात्रा की इच्छा प्रकट की है :—

"दिषषावइ पहु पंगुरौ, जइचंद नरेस"। (७-७५) और अष्टम खण्ड में कन्नोज यात्रा प्रारम्भ हो जाती हैं। प्रकरणानुसार कवि ने प्रातःकाल, सूर्य, मध्याह्न, उद्यान तथा षट् ऋतु-वर्णन किया है। मृगया महाकाव्य के नायक पृथ्वीराज के जीवन का एक अंग है।

विप्रलम्भ तथा संभोग श्रृंगार में से यहां केवल संभोग श्रृंगार का हीं विशद रूप में चित्रण हुआ है। विप्रलम्भ श्रृंगार की अभिव्यंजना में कवि को सफलता नहीं मिली। पृथ्वीराज के शौर्यादि गुणों पर मोहिता संयोगिता ने अपने पिता के विरोध करने पर भी पृथ्वीराज को ही वरण करने का निश्चय किया। जयचन्द ने क्रोधित होकर उसे गंगा के किनारे एक महल में कैद कर दिया। इस पर भी वह अपने निश्चय पर अटल रही। इस अवसर पर संयोगिता की विरह-दशा का सुन्दर चित्रण हो सकता था। परन्तु गंगा तट-स्थित महल के कारावास से संयोगिता इतना ही कह सकी :—

कै वहि गंगहि संचरौं, कै पाणि गहुँ पृथिराज। ९-४८

कवि के लिए दूसरा अवसर संभोग श्रृंगार मग्ना संयोगिता को छोड़कर पृथ्वीराज का अन्तिम युद्धार्थ प्रस्थान है। परन्तु कवि ने यहां संयोगिता की मर्म व्यथा अथवा विरह दशा का अल्पमात्र भी वर्णन नहीं

किया। बस इतना ही हो सका कि डंकिनी के मुख से युद्ध में पथ्वीराज की पराजय का समाचार सुनकर शोक मग्ना संयोगिता ने प्राण त्याग देने का निश्चय किया :—

जनम जानि अन्तर मिलन, जुग्गिनिपुर आवास।
चरण लग्गि वंद्यो मरण, सब परिगहरु षवास ॥१७–१

रासो में प्रयाण, मृगया तथा युद्धादि का विशद वर्णन है। पृथ्वीराज ने इंच्छिनी के अपहरणार्थ गुर्जर नरेश भीमदेव चालुक्य से युद्ध किया (पञ्चम खण्ड), तथा संयोगिता अपहरणार्थ कन्नौज पर चढ़ाई की। यहां युद्धादि प्रयाण आदि सब कार्य शकुनादि विचार पूर्वक होते हैं। धीर पुंडीर ने जैत षम्भ भेदन से पूर्व एक सप्ताह दुर्गा की पूजा की, भीमदेव ने कैमास को मन्त्रों द्वारा अपने वश में किया। १५ वें खण्ड में दिल्ली के निगम बोध स्थान पर एक भारी शिला के नीचे से एक देव-वीरभद्र का निकलना, अपशकुन दिखाई देने तथा अरिष्ट निवारणार्थ भैंसे आदि का बलिदान दिया जाना आदि दैवी वर्णन तत्कालीन समाज के धार्मिक तथा सामाजिक व्यवस्था के द्योतक हैं। काव्य का शीर्षक तो नायक-पृथ्वीराज के नाम से सम्बन्धित है ही।

कथा संगठन तथा प्रबन्धात्मकता—महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक महापुरुष पृथ्वीराज के जीवनचरित्र से सम्बन्धित है। अतः इसे कल्पना मिश्रित प्रबन्ध काव्य कहना उचित होगा, क्योंकि कवि को कथानक में रोचकता उत्पन्न करने के लिए जहां तहां कल्पना का प्रयोग करना पड़ा है। प्रधानतया कथा के केन्द्र स्थान तीन ही हैं—दिल्ली, कन्नौज, गजनी, नायक के प्रतिद्वन्द्वी खलनायक शहाबुद्दीन गौरी, भीमदेव चालुक्य तथा जयचन्द हैं। कथानक का सम्बन्ध इन्हीं स्थानों तथा व्यक्तियों से है। कवि ने ग्रन्थारम्भ में (प्रथम खण्ड) परम्परानुसार मंगलाचरण किया है। द्वितीय खण्ड में नायक पृथ्वीराज का जन्म, वंशावली तथा दिल्ली-राज्य-प्राप्ति वर्णित हैं। यहां अनंगपाल तोंवर द्वारा पृथ्वीराज को दिल्ली राज्य देना एक कवि कल्पित घटना है। क्योंकि यह घटना पृथ्वीराज-जयचन्द में पारस्परिक वैमनस्य उत्पन्न करने के कारण

कथानक की प्रगति में सहायक सिद्ध हुई है। पृथ्वीराज-जयचन्द संघर्ष यहीं से प्रारम्भ हो जाता है। यही संघर्ष संयोगिता हरण तथा अंततो गत्वा पृथ्वीराज के पतन का कारण बना। तृतीय खण्ड में नायिका-संयोगिता का जन्म, उसका बाल्यकाल, यौवनोल्लास तथा उसकी शिक्षा-दीक्षा का वर्णन है। चतुर्थ खण्ड में नायक का विरोधी दल-जयचन्द, भीमदेव चालुक्य और शहाबुद्दीन गौरी मैदान में आ उतरते हैं। चतुर्दश खण्ड तक नायक ने अपने प्रतिद्वंद्वी भीमदेव तथा जयचन्द को परास्त कर अपनी लक्ष्य सिद्धि संयोगिता को प्राप्त कर लिया और उसके साथ राज महलों में विलासादि सुखोपभोग में मग्न रहने लगा। यह कथानक की चरमस्थिति हैं। यहां कवि ने धीर पुंडीर द्वारा "जैत षम्भ भेदन" नामक काल्पनिक घटना से दिल्ली दरबार के सामंतों में आपसी फूट उत्पन्न करके पृथ्वीराज का अन्तिम पतन निश्चित कर दिया है। १५वें खण्ड में दिल्ली दरबार के सामंतों में आपसी फूट तथा पृथ्वीराज की विलास प्रियता की सूचना पाकर शहाबुद्दीन गौरी द्वारा दिल्ली पर चढ़ाई का वर्णन है। दिल्ली में अपशकुन दिखाई देने लगे। पृथ्वीराज ने अपने दलबल सहित इतिहास प्रसिद्ध तरौड़ी के मैदान में शहाबुद्दीन गौरी का मुकाबला किया, जहां वह पराजित हुआ और मारा गया। परन्तु कवि ने इस ऐतिहासिक तथ्य को अपनी प्रबंध-कल्पना शक्ति के द्वारा गजनी में कैदी तथा "अंषहीन" पृथ्वीराज के हाथों शब्द वेधी बाण द्वारा खल नायक शहाबुद्दीन की मृत्यु करवा कर नायक की प्रतिष्ठा के रूप में परिणत कर दिया है। नायक-पृथ्वीराज की विजय के उपलक्ष्य में आकाश से देवताओं द्वारा पुष्प वर्षा के साथ साथ महाकाव्य की समाप्ति होती है। कथानक के बीच बीच में प्रसंगानुसार पनघट युद्ध, तथा प्रकृत्यादि वर्णन से कथानक हृदयग्राही तथा सरस हो पाया है। इस से काव्य-कथानक में काव्य सौष्ठव तथा उचित संगठन हो सका है।

परन्तु मार्मिक स्थलों की दृष्टि से, जिनका काव्य में समावेश वांछनीय है, यह काव्य शुष्क और नीरस है। यत्र तत्र शृङ्गार रस के छींटों तथा वीर रस की उद्भावना के अतिरिक्त कवि ऐसे सरस अवसर उपस्थित नहीं कर सका जिससे पाठकों के हृदय रसोद्रेक से तरंगित हो उठें। यहां तो एक के पन्चात् दूसरी घटना इतिवृत्त मात्र रूप से घटित होती है। हालां कि कवि को ऐसे अवसर प्राप्त हुए; जैसे:-- संयोगिता की

विरह दशा तथा गजनी में "अंषहीन" पृथ्वीराज की हीन दीन दशा वर्णन से कारुण्य प्रवाह उमड़ सकता था और संयोगिता के मन में विशुद्ध प्रेम की गंगा उमड़ सकती थी।

२. चरित्र चित्रण— तुलसी के समान कवि की दृष्टि जीवन और जगत के विविध कार्य कलाप तथा क्षेत्रों पर, मानव चरित्र चित्रण पर तथा जीवन और विशेषकर सभ्यता तथा संस्कृति की ओर आकर्षित नहीं हुई। और न ही आधुनिक उपन्यासों तथा काव्य ग्रन्थों में वर्णित पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ही यहां मिलता है। यहां पात्रों के चरित्र में किसी प्रकार का उतार चढ़ाव तथा निजी व्यक्तित्व नहीं झलकता। सब एक ही प्रकार के मौनव्रती वर्गगत पात्र हैं, और ये कवि के हाथ में कठपुतली से प्रतीत होते हैं। कवि को इच्छानुसार सब पात्रों का काम शौर्य-प्रदर्शन तथा स्वामिभक्ति है। वास्तव में महाकवि चन्द का मुख्य उद्देश्य अपने काव्य नायक पृथ्वीराज के शौर्य प्रतापादि वर्णन से है। काव्य में वर्णित समस्त घटनाओं का संबंध जिस किसी भी रूप में पृथ्वीराज से सम्बन्धित है। इसका कारण एक और भी है कि मध्ययुगीय कथा प्रबन्धों में चमत्कार पूर्ण घठनाओं, पात्रों की व्यक्तिगत विशेषताओं तथा कथानक की घटनाओं में उतार चढ़ाव का रिवाज नहीं था। उस समय तो उच्च कोटि के काव्य की विशेषता घटनाओं और वस्तुवर्णन कुशलता पर ही आधारित थी। सो इन दोनों विशेपताओं का निर्वाह रासो की प्रस्तुत प्रति में पूर्ण रूप से हुआ है। रासो की प्रस्तुत प्रति की उक्त विशेषताओं का दिग्दर्शन सोदाहरण उपस्थित हैं:—

वस्तु वर्णन—प्रकृति की पृष्ठ भूमि में प्रथम खण्डगत कृष्ण लीला वर्णन में कृष्ण-गोपियों के रास नृत्यादि का अति सरस वर्णन मिलता है। चन्द्रमा की निर्मल छिटकती हुई चांदनी में मृदङ्गादि वाद्य बृन्दों की ताल पर कृष्ण तथा गोपियों के मध्य भंवरा-भंवरी की रस रीति से नृत्य हो रहा है। ब्रजवनिता वल्लरियों पर कृष्ण-भंवरा चक्कर लगा रहा हैं, उधर प्रत्येक गोपिका भी कृष्ण को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रही है। नूपुरों की झंकार है। देवतागण इस नृत्य से प्रसन्न होकर पुष्प-वर्षा कर रहे हैं:

ततथे ततथे ततथे सुरयं । तत थुंग मृदङ्ग धुनि द्वरयं ।

.... खंड १, छं. ८१-८३

इसी प्रकार कृष्ण लीलान्तर्गत दान लीला वर्णन अति सरस तथा शृङ्गारिक छींटों से आसिक्त है ।

४. कन्नौज यज्ञ वर्णन- कन्नौज में यज्ञ के लिये धूमधाम से तैयारियां हो रही हैं। नगाड़े की ध्वनि के साथ ही समस्त नगर सजने लगा। नगर भवनों तथा राज प्रासादों पर सफेदियां हो रही हैं। सर्वत्र द्वारों पर वंदनवारें लटक रही हैं। उधर यज्ञ मण्डप की सजावट के लिए सुनार सुवर्णाभूषण घड़ रहे हैं। यज्ञ मण्डप कैलाश पर्वतवत् सुशोभित है और मण्डप के मीनारों पर लगे स्वर्ण कलश अंधकार को परास्त कर रहे हैं—

सुनि सद्दनि बंधि वंदनवार।
कट्टहि सुहेम गृहि गृहि सुनार।
.... ।
धवलेह धम्म देवर सुवीय।
तम हरहिं कलस कल बींबलीय।
सज्जिया बंभ कैलास वीय। खं० ६. छं० १६-२०

कन्नौज के समीप गंगा तट पर तथा नगर के बाहर हाथी, घोड़े, ब्राह्मण, तपस्वी तथा स्नान करते हुए स्त्री पुरुषों का आंखों देखा बड़ा सुन्दर वर्णन उत्प्रेक्षालंकार से किया है :—

कहूँ संभरेनाथ गट्ठ गयंदा,
मनौ दिष्षियै रूब ऐराव इंदा
... .
कहूँ विप्रते उट्ठे हि प्रात चल्यै।
मनौ देवता स्वर्ग तें मग्ग भूलै। खं० ८ छंद ४८

कहीं तपस्वी ध्यान मग्न बैठे हैं—

कहूँ तापसा तापते ध्यान लग्गे।
तिनै देषते रूप संसार भग्गे। (पाप) खं० ८ छं० ५०

इसके अतिरिक्त गंगा स्नान का महत्व तथा गंगा की ब्रह्म कमण्डल से उत्पत्ति का वर्णन अति मनोहारी है।

गंगा के किनारे अपने सामन्तों सहित पृथ्वीराज का पड़ाव हो जाता है। चन्द कवि पूछते पूछते जयचन्द दरबार की ओर जा रहा है। मार्ग में कन्नौज नगरी का आंखों देखा वर्णन कवि ने किया है। नगर में आकाश चुम्बी भवन हैं, हाट (बाज़ार) विविध मोती माणिक्य आदि अमूल्य विक्रेय वस्तुओं से सुसज्जित हैं। दानव समान भटगण इधर उधर घूम रहे हैं और कहीं "हय गय जूथों" की ठेल पेल है। इसके अतिरिक्त कवि की रसिक दृष्टि वेश्या हाटक पर भी जा अटकती है। यहां बांके छैल छबीलों का जमघट है, परन्तु बिना पैसे के यहां काम नहीं चल सकता:—

जिके छैल संघट्ट वेशा सुरत्ते।
तिके द्रव्य के हीन हीनेति गत्ते॥

इनकी अटालिकाओं में ग्राहकों को आकर्षित करने के लिये रात भर कोकिल कंठों से मधुर राग लहरिएं थिरकती रहती हैं। इसके अतिरिक्त कवि ने यहां वेश्याओं के वस्त्र, आभूषण बनाव श्रृंगार तथा सुगन्धित पर्यंक आदि का भी आंखों देखा वर्णन किया है। देखिये एक वेश्या की अंगुली मुद्रिका का वर्णन भ्रान्तिमान् अलंकार से :—

दु अंगुली नारि निरषहि हीर।
मनौ फल बिंबहि चंपै कीर। खं० ८ छ० १०१

राजदरबार के द्वार पर पहुँच कर कवि ने दरबारी भाट दसौंधी के प्रश्न करने पर जयचन्द के दरबार तथा उसके यश प्रताप का अदृष्ट वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से किया है। लुप्तोमा की एक झलक देखें : —

मंगल बुध गुरु शुक्र शनि, सकल सूर उद्दिट्ठ।
आतप ऊ धुवतं तमै, सुभ ज़ै चंद वइट्ठ॥

इसी प्रकार जैचन्द के सम्मुख उपस्थित होकर कवि ने उसके शौर्य पराक्रम का वर्णन बड़ी ओजस्विनी भाषा में किया है। जयचन्द ने क्षत्रियों के छत्तीस वंशों को स्ववश किया हुआ है परन्तु—

वंस छत्तीस आवेह कारे।
एक चाहुवान पृथिराज टारे। खं० ९ छं० ३७

क्यों न हो, चन्द अपने स्वामी तथा सखा पृथ्वीराज की हेठी कैसे होने दे। उसी का यश प्रताप वर्णन करने के लिए तो प्रस्तुत काव्य की रचना की गई है।

जयचन्द की नृत्यशाला में चन्द रात्रि के समय नृत्यादि देखने जाता है तो उस का वर्णन कितना सुन्दर तथा सरस है। रंगमंच मृदुल मृदंग ध्वनि से गुंजरित है और शुद्ध छंदों द्वारा राग अलापे जा रहे है। समस्त रंगशाला अगरबत्ति आदि सुगंधित द्रव्यों से सुवासित हो रही है:—

मृदु मृदंग धुनि संचरिग, अलि अलाप सुध छंद।

....

जलन दीप दिय अगर रस फिरि घनसार तमोर। खं० ९ छं० ७९

तबले पर थाप पड़ रही है और सात स्वरो का अलाप हो रहा है :—

ततथेई ततथेई ततथे सुमंडियं।

तत थुंग थुंग थुंग राग काम मंडियं।

सर गिग म प्पि ध न्नि धा धनु धनि तिर षिषयं। खं.९ छं. ८२

और नूपुरों की झंकार से रंग शाला गुंजरित हैं—

"रणंकि झंकि नूपुरं बुलंति तोरनं झनं। खं. ९ छ. ८३

ऐसी सुन्दर रमणियों का लय ताल स्वरादि युक्त नृत्य देखने से दर्शकों के लिये ब्रह्म मुक्ति के द्वार खुले हैं —

निरत्तते निरषि जानि बंभ मुत्ति वाहिनी। छं. ९ छं. ८५

यहां यद्यपि कवि ने किसी अलंकार तथा व्यंजना आदि का आश्रय नहीं लिया फिर भी वाद्य-बृंदो तथा नूपुरों की झंकार के साथ भाषा किस प्रकार थिरकती सी प्रतीत होती है।

युद्ध वर्णन पृथ्वीराज रासो वीर रस प्रधान काव्य है प्रस्तुत प्रति के १९ खण्डों में से १५ खण्डों में जिस किसी भी रूप में युद्धार्थ तैयारी अथवा युद्ध का विशद वर्णन है। विशेषता इस में यह है कि जायसी के पद्मावत की तरह काल्पनिक अथवा परम्परागत युद्ध वर्णन नहीं हैं। यहां तो कवि सदा रणांगण में अपने स्वामी के अंग-संग रहता है। प्रत्येक युद्ध में कुछ न कुछ नवीनता है। आलंकारिक अतिशयोक्ति नहीं, स्वाभाविक आंखों देखा सा वर्णन है। कुछ उदाहरण देखिये :—

संयोगिता हरण प्रसंग में पंगराज जयचन्द की सेना पृथ्वीराज से युद्ध करने के लिये उमड़ीं चली आ रही है। इतनी भारी सेना को देख कर इंद्र भी कांप उठा और अस्सी लाख घोड़ों के भार से शेष नाग व्याकुल हो गया—

"पल्लान्यौ जयचन्द मरद सुरपति ग्राकंप्यौ।
ग्रसिय लष्ष तुष्षार भार फणपति फण संक्यौ।। खं० ६ छं० १०७

वर्णानुप्रास द्वारा—देखिये हाथी घोड़ों की ठेल पेल से बराह कूर्म शेषनाग ग्रौर नादिया बैल सब पंग सेना के वोझ से तिलमिला रहे है :—

हय गय दल धसमसहिं, सेसु सलमलहि सलक्कहिं।
महि कूरम ग्रहि बराह मेर, भर भार हलक्कहिं। ६-६०८

ग्रौर हांफते हुए घोड़ों की मुख लार (झाग) से पृथ्वी पर कीचड़ हो गया है :—

"हय लार बहत भीजंत थल पंक चिहुट्टहिं चक्कवै।

जिस जयचन्द की फौज को ऐसी देख कर समस्त पृथ्वी तथा इन्द्रादि देवता कांप रहे हैं, उस पंगराज की सेना का मुकाबला पृथ्वीराज के बिना कौन करे। क्यों न हो, चन्द कवि को पृथ्वीराज के ग्रतिरिक्त संसार में ग्रौर स्वर्ग में कोई ग्रधिक बलवान् क्यों नजर ग्राए :—

पंगुरौ चढ़चौ कविचन्द कहि, विनु पृथिराज हि को सहै। ६-११६

पृथ्वीराज की सेना के भार से तो पृथ्वी समुद्र पर्वतादि सब डगमगा रहे हैं ग्रौर प्रलय सी मच गई है :—

......................धरनि धसमसहि हयनि भर।
सर समुद्द षरभरहिं डट्ढ दल ढाल करक्कहिं।
कमट पीठि कलमलहिं पुहमि से प्रलौ पलट्टहिं। ६-११७

जयचन्द ग्रौर पृथ्वीराज को समरांगरण में उपस्थित देख कवि ने चन्द्र सूर्य से उपमा दी:—

तहां ग्रप्पुव्व कव्वि चन्द पिष्यौ ? तरनि द्विजराज सम तेज दिष्यौ। ६-१२६

पृथ्वीराज की क्रोधित सेना पंग सेना पर लंका पर वानरों की तरह टूट पड़ी :—

उत्परै रोस पृथिराज राजं। मनौ बैनरा लंक लागेहि काजं। १०-६

घमासान युद्ध के कारण ग्रासमुद्र धूलि उड़ रही है ग्रौर धूलि से उठे हुए ग्रंधकार के कारण कुछ भी तो नजर नहीं ग्राता :—

"तहां उट्ठियं रेण ग्राया समुदं।
....
छत्र छिति भारं दीसै न पत्ता। १०-७

क्रोधित उभय पक्षीय योद्धागण आघात-प्रतिघातों को ऐसे सहन कर रहे हैं—जैसे शिव ने गंगा के आघात को सहन किया।

मनौ झिल्लवै सीस त्रिनैन गंगा। १०-८

सेना का ऊपर को उठता हुआ घटाटोप रंग विरंगे बादलों की तरह उमड़ रहा है—

मनौ तहां टोप टंकार दीसै उतंगा।
मानौ बद्दलै पंति बंधी सुरंगा॥ १०-६

मदोन्मत हाथी सेना के आगे हैं। ये सूंडो से प्रहार भी करते हैं—

दिष्पियं मंत मयमंत मंता। छत्रहं रंग अंगे दुरंता।
.........सूंडे प्रहारे। सार समूह धावै करारे। १०-१८

हाथियों की झपट से स्वर्ग-पाताल भी कांपते हैं—

सीस सिंदूर गज झंप झंपै। देषि सुरलोक पायाल कंपै। १०-२२

युद्ध में तलवार, भाले तथा अन्य शस्त्रास्त्र प्रहारों के अतिरिक्त बाण वर्षा इतनी हुई कि सूर्य देवता भी नजर नहीं आते :—

"वहै वान कम्मान दिसै न भानं। १०-५१

योद्धागण शवों पर भागते हुए युद्ध कर रहे हैं—

"भर उप्पर भर परहिं, धरह उप्परि धावंतनि। ११-१

पृथ्वीराज के क्रोध की भी एक झलक देखिए—

"तव नरिंद जंगली कोह, कट्ढचो सुबंक असि। ११-४

और फिर क्या था शत्रु के होश हवाश उड़ गए।

"अरि धम्मिल धुंधरिग, हुअ रन मैद्धिति ससि"।

युद्ध के नगाड़ों की ध्वनि से कायर तथा हाथी चौंकते हैं तथा योद्धागण एक दूसरे का वार बचा कर वार कर रहे हैं—

धम्मकिय धोम निसांन निनद्द।
चमक्किय कातर सिंधु रसद्द।
घमंडित सिंधु रसं षुर रेन।
गहम्मह वंचि क्रम्यौ सब सेन। ११-१०

युद्ध में योद्धाओं के कटे हुए सिर भी आवाजें कसते हैं और कबंध मार धाड़ करते हुए नाचते हैं—

हंकति सिर विकंध, नचित धर कवंध। ११-६४
"दस तीनि कवंध उठंत लरै। ११-४६

युद्ध में लड़ते हुए भटों की तलवार-ढाल, नेजे और सांग की खड़खड़ाहट के साथ राजपूत वीरों की मुंछें भी कैसे फर फर कर रही हैं—

भिरै सांग सूं सांग, नेज नेजनि फरक्कै।
ढाल ढाल ढहढहै, गहै मुछनि फररक्कै। १६-८१

१६, १७, तथा १८वें खंडों में पृथ्वीराज-शहाबुद्दान की सेना में इतिहास प्रसिद्ध पानीपत की लड़ाई का वर्णन बड़ा विस्तृत तथा सजीव है। यहां अनेक प्रकार की व्यूह-रचना के साथ यबन सेना का वर्णन, हाथी घोड़ों की ठेल पेल तथा राजपूती सेना का शौर्य पराक्रम का वर्णन है। विस्तार भय से उसका दिग्दर्शन करना कठिन है। फिर भी एक दो उदाहरण देखिए—

दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हो रहा है। शस्त्रास्त्रों के प्रहारों से सिर कट कट कर पृथ्वी पर दौड़ रहे है और स्वर्ग में अप्सराएं इच्छानुसार वर चुन रही हैं (युद्ध में वीर गति मिलने से योद्धागण सीधे स्वर्ग में पहुँचते हैं)—

दुहुँ हक्कहु छक्क, सीस टुट्टै धर धावहिं।
आनंदित अपच्छरा, अप्प इच्छावर पावहिं। १६-२६

तलवारें आग उगल रही हैं—

षग्ग झार झार" १६-३२

युद्ध में भारी शास्त्रों की खनखनाहट तथा गुरजों की खड़खड़ाहट से किस तरह फटाफट सिर फूट रहे हैं जिस से पृथ्वी खून के फव्वारों से तर हो गई और घोड़े भी खून से लथ पथ है—

पृथु आउध फुट्टहिं गुरज्ज, वज्जिय गुरज्ज पर।
जनु पषांन बुंद रूंद चन्द, लग्गिय दुज्जन घन।
टुट्टि टटर सिर श्रोण छिछ, उट्ठिय भुमि बुट्ठिय।
तुरग रत्त मन मत्त सहस, आउध ले उट्ठिय। १०-२

तलवारों की मार धाड़ से लाशों के ढेर लग गए और बिना सवार के हाथी घोड़े युद्ध-मैदान में इधर उधर घूम रहे हैं—

असिजं असिजं असिजं जघयं।

लुत्थि लुत्थि उलत्थि पलत्थि पयं ।
गज वाजि फिरक्कि फिरै हथियं । १७-३

प्रकृति वर्णन—चन्द कवि का प्रकृति के प्रति विशेष ग्राकर्षण नहीं है। कारण इसका यही है कि उसकी दृष्टि काव्य नामक पृथ्वीराज के विलास, वैभव, ग्रद्भुत वीरता तथा यश-प्रताप वर्णन तक ही सीमित है। चन्द ने प्रकृति को ग्रालम्बन रूप में ग्रहण नहीं किया। यथा तथ्य रूप से वस्तु परिगणन-शैली की प्रधानता है। कवि का प्रकृति के प्रति कोई रागात्मक सम्बंध नहीं हैं ग्रौर न हीं सूक्ष्म निरीक्षण की पैनी दृष्टि ही है। हां शृंगारिक प्रकरणों में प्रकृति का उद्दीपन रूप में ग्रवश्य ग्रहण हुग्रा है। रूप चित्रण के ग्रवसर पर उपमान ग्रौर उपमेय के रूप में भी कवि ने प्रकृति का उपयोग किया है। षट-ऋतु वर्णन कामोद्दीपन की पृष्ठ भूमिका है। यहां प्रकृति में भावों को तीव्रता प्रदान करने की, तथा मानव भावनाग्रों को प्रभावित करने की शक्ति दृष्टिगोचर नहीं होती। कुछ उदाहरण देखिए :---

कृष्ण-लीला वर्णन प्रसंग में व्रज के मधुवन का वर्णन करते हुये, कवि ने ग्रनेक पक्षी तथा वृक्षादिकों के नाम गिनाए हैं। विविध मालती तथा केतकी ग्रादि लताएं पुष्पों से विकसित हैं। दाड़िम खजूर, सहकार ग्रादि वृक्ष फलों से लदे हुए हैं। इन वृक्षों पर मोर, वानर, तोते, मैना ग्रादि पक्षी गण चहचहाते हुए कल्लोलें कर रहे हैं :—

कहं विज्ज विज्जोर पीयूषभारं।
लुठे भुम्मि भुम्मे मनौ हेम नारं।
कहं दाडिमी सुव चंचानि चंपै।
मनौं लाल माणिक्क पेरोज थप्पै। १-१४०

कुछ ऐसा ही प्रकृति वर्णन धनुष भंग यज्ञ प्रसंग में नगर वाटिका वर्णन में हुग्रा है। जायसी के पद्मावत में भी ऐसी परिगणन शैली है। ऐसे प्रकृति-वर्णन प्रसंग में कवि ने प्रकृति-सौन्दर्य से मानव मन पर जो हर्ष उल्लासादि भाव जागृत होते हैं उन का वर्णन नहीं किया। हां, कामोद्दीप्ति के लिए कृष्ण-गोपियों की शृंगारिक उछल कूद का प्रतिबिंब प्रकृति के रूप में उल्लसित होता है। ऐसे स्थलों में उत्प्रेक्षालंकार की ग्रनोखी उद्भावनाएं भी कवि ने की हैं। संयोगिता हरण के पश्चात् त्रयोदश खण्ड में शृंगारिक

पृष्ठ भूमि के रूप में षट् ऋतु-वर्णन सुन्दर तथा मनोहारी है। एक ऋतु का नमूना देखिए—

रिम झिम करती वर्षा ऋतु में संयोगिता अपनी सखियों के साथ राजमहल के उद्यान में उमड़ते हुए सावन के बादलों की छाया तले गीत ध्वनि के साथ साथ झूलना झूल रही है :—

जल बुट्टि उट्ठि समूह वल्लिय, सुश्रम श्रावन ग्रावनं।
हिंदोल लोलति चाल सषि सुर, ग्राम सुख सुर गावनं। १३-२५

पुष्प रस से सुगंधित रंग विरंगे महीन (चीरा) दुपट्टे में संयोगिता तथा उसकी सहेलियों के सुप्रसाधित केश पाश (जूड़ा) तथा चन्द्र-मुख किस प्रकार झलक रहे हैं :—

कुसुमंत चीर गंभीर गंधति, मंद बुंद सुहावनं।
ढरकंत बेनिय बद्धए निय, चंद सेनिय ग्राननं। १३-२६

ऐसी रंग रंगीली वर्षा ऋतु में बादल क्या गरजते हैं मानों कामदेव सब दिशाओं में अपनी शक्ति का डंका बजा रहा हो :—

"मनौं निसान दिसाननि, ग्रानि ग्रनंग ग्रान दिय" १३-३०

पृथ्वी हरित है सर्वत्र लताद्रुम लहलहा रहे हैं, परन्तु जब तक मोर दादुरों की कूक ग्रौर टर्र टर्र सुनाई न दे तो वर्षा ऋतु शोभित नहीं होती—

"नद रोर दद्दुर मोर सद्धुर, वनसि वन वन वद्दयं"। १३-३१

इसी प्रकार प्रत्येक ऋतु का उल्लासमय वर्णन के पश्चात् पृथ्वीराज संयोगिता रति क्रीड़ा का प्रारम्भ होता है :

शरद् ऋतु में प्रकृति के उपमान उपमेय के माध्यम से पृथ्वीराज-संयोगिता की काम क्रीड़ा का वर्णन रूपकातिशयोक्ति अलंकार द्वारा एक झलक देखिए—

ग्रसि सरद सुभगति राज मन्त्रित सुमन काम उमद्दयं।
नव नलिन ग्रलि मिलि ग्रलि ति ग्रलि मिलि, मिलित ग्रलि व्रत मंडियं। १३-३३

साथ में अनुप्रासालंकार की छटा भी देखने योग्य है।

७ रूप चित्रण—युद्ध सम्बन्धी शस्त्रास्त्रों की खनखनाहट तथा वाणों की वर्षा में भी कवि की रसिक प्रवृत्ति में शृङ्गारिक भावनाओं से ग्रोत प्रोत हृदयग्राही ग्रद्भुत रूप चित्रण किया है :-

यौवनावस्था को प्राप्त होती हुई (वयःसंधि) संयोगिता की सखियों

के साथ उछल कूद यौवनोल्लास, लज्जा तथा उसकी क्रीड़ाओं का एक उदाहरण उत्प्रेक्षालंकार से देखिए—

शुभ सरल वार वलया सुथोर। अंकुरे मनहुँ मनमत्थ जोर। ६-२६

संयोगिता के घुंघराले केश मानों कामदेव के अंकुर हैं। उसके अधर, कोमल, सुगन्धित तथा अरुण किसलय समान हैं, भाल पर मंजरी तिलक सुशोभित हैं—

अधरत्त पल्लव सुवास। मंजरिय तिलकु मंजरिय पास।। ६-३१

संयोगिता के यौवनोद्गम के साथ प्रकृति भी अपने पूर्ण यौवन पर है। फल पुष्पों से लदे वृक्ष कामदेव की सेना के हाथियों की तरह झूल रहे हैं—

तरु भरहिं फूल्ल इह रत्त नील।
हलि चलहिं मनहुँ मनमत्थ पील।। ६-३३

कवि ने अपनी आराध्या देवी दुर्गा का रूप चित्रण रासो में कई स्थानों पर किया है। परन्तु यहां भी कवि अपनी शृंगारिक भावनाओं को दबा नहीं सका। सम्भव है यहां कवि कालिदास के कुमार सम्भव में वर्णित सती पार्वती के शृङ्गारिक रूप चित्रण से प्रभावित हो। देखिए शक्तिमती दुर्गा के कानों में मोतियों के कर्ण कुण्डल मानों कामदेव की रथ के दो पहिए हों –

'श्रवन्न तट्ट पिक्कए, अनंग रत्थ चक्कए"। ७-२२

और चन्द्र मुख पर बिखरे हुए काले केश सर्प हैं :—

"क इन्द केस मुक्करे, उरग्गवास विट्ठरे"। ७-२७

और सुशोभित देवी का रूप लावण्य कामदेव का कूप है (सम्भव है कामी जनों के डूबने के लिए)

"सुसोभितानि रूपये, अनंगजान्नि कूपये। (७-३०)

कन्नौज के समीप गंगा तट पर कुछ पनिहारिनें जल भरने के लिए आई हैं। अनुप्रास तथा उत्प्रेक्षालंकार द्वारा कवि ने इनके रूप सौंदर्य का अद्भुत चित्र खींचा है: —

कटित्त सोभ सेषरी, बन्यौत जानि केसरी।
अनेक छछि छत्तियां, कहंत चंद रत्तियां।

दुराइ कुच्च उच्चरे, मनौ अनंग ही भरे।
रुरंत हार सोहए, विचित्त चित्त मोहए। ८-७१

माना कि कटि तो जंगल में रहने वाले सिंहलंकवत् है, परन्तु कुचों का उभार तो देखिए, ये न कुचकुम्भ हैं और न इनमें कठोरता है। ये तो मानों कामदेव के रस-भरे रसगुल्ले हैं। और इन कुचों पर मोतियों के हार उछल रहे हैं फिर दर्शकों के चित्त मोहित क्यों न हों ?

इसी प्रकरण में व्यतिरेकालंकार द्वारा रूप चित्र की एक छटा और देखिए:—

अबद्ध ऊंच भौंह ही, चलंति ऊँह सौंह ही।
लिलाट आड लग्गए, सरद्द चन्द लज्जए। (८-७२)

आड (तिलक) से सुशोभित मुख शरद् ऋतु के चन्द्रमा को लज्जित करता है। ये तो केवल कन्नौज कीं पनिहारियां ही हैं। राज-प्रासाद में रहने वाली राजकुमारियों तथा राज महिषियों की सुन्दरता न जाने कैसी होगी ? इनको देखने मात्र से ही दर्शक गण कामदेव की तरंगों में तरंगित होने लगते हैं:—

रूव भुब देषि, अवरेषि दग्यौ।
मनौ काम करदाय. उड़ि आपु लग्यौ। (८-७९)

ऐसी रमणियों के उतुंग नितम्बों से हाथियों को भी ईर्ष्या होती है, और हैरानी की बात तो यह है कि नितंबों के ऊपर कटि प्रदेश—"गयंद रिप्पु" है, अर्थात् कटि सिंह लंकवत् है:—

नितंबं उतंगं जरेवे गयंदं। मधे रिप्पु षीनं, रष्यौ है गयंदं।

यहां रूपकातिशयोक्ति (भेदेप्यभेद) द्वारा कितनी रोमांचकारी रूप सौंदर्य की भावना उपस्थित की गई है।

रस निरूपण— कवि की निम्नलिखित उक्ति --

रासौ असंभ नव रस सरस, कविचन्द किय अमिय सम।
शृङ्गार वीर करुण विभच्छ भय अद्‌भुत हसंत सम।

के अनुसार रासो में शृंगार वीरादि रसों का वर्णन हुआ है। वैसे तो चन्द कवि के केन्द्र बिन्दु दो ही रस हैं: --वीर और शृङ्गार। अन्य रसों का चित्रण बहुत ही गौण रूप में किया गया है। काव्य में वीर रस की प्रधानता होते हुए भी शृङ्गार रस के रंग विरंगे छींटें कम नहीं हैं।

९ **वीर रस**—का बहुत सा दिग्दर्शन युद्ध वर्णन में हो चुका है। विस्तार भय से एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा।

पृथ्वीराज संयोगिता के साथ विलास में इतना आसक्त है कि उसे अपने राज्य की कोई सुध बुध नहीं। राज पुरोहित गुरुराम और चंद कवि सम्भरि नरेश की इस विलासपूर्ण आसक्ति से चिंतित हो उठे। उधर शहाबुद्दीन; पृथ्वीराज की राज्य के प्रति इस उदासीनता से लाभ उठाकर युद्ध के नगाड़े बजाता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ रहा है। चन्द ने निम्न-लिखित पद अपने स्वामी को सचेत करने के लिए दासी के द्वारा अन्तःपुर में भेजा—

"गोरीय रत्तौ तुव धरनि तूं गोरी अनुरत्त"। १४-३२

(शहाबुद्दीन गौरी तुम्हारे राज्य पर अनुरक्त है और तुम गोरी—संयोगिता के प्रेम में आसक्त हो)

अब शहाबुद्दीन का नाम सुनते ही पृथ्वीराज क्रोध से भड़क उठे। और संयोगिता का ख्याल छोड़ कर युद्ध की तैयारियां करने लगे :—

सुनि कग्गद कुग्रौ सुकर, धर रष्षै गुरु भट्ट।
तमकि तून सिंगिनि सुकर, जिमि बदल्यौ रस नट्ट। १४-४३

श्रृंङ्गार से वीर रस परिबर्तन का कितना सुन्दर उदाहरण है।

१०. **श्रृंगार रस**—रासो की प्रस्तुत प्रति में मुख्यतया संभोग श्रृंगार का ही वर्णन है, विप्रलम्भ श्रृङ्गार यहां दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

रति क्रीड़ा आरम्भ होने से पूर्व संयोगिता के षोडश श्रृङ्गार की एक झलक देखें: -

सुरेष कज्जलं दुनं, धनुक्क संगुनं मनं।
सनासिका समुत्तियं, तमोर मुष दुत्तियं।
....
सुकट्टि मेषलां भरं, सरोह नूपुरं जनं।
सताह हंस सावकं, तलेन रत्त जावकं।
सवीर चातुरी रसं, श्रृङ्गार मंडि षोडशं।
सुगंध गोय चिहुए, अभूषनन्ति भूषए ॥१२-१४-५

अब रत्यारम्भ में संयोगिता की स्त्री स्वभाव लज्जा देखिए -

लज्जा माल कटाच्छ लोकन कला, अल्पस्तथा जल्पनं।

रत्यारम्भ भयाइ पिम्म सरसा, गेहस्स बुझ्याइनो।
धीरं जे इत्थ माय चित्त हरणं, गुह्यस्थलं शोभनं।
शीलं नीर सनात नित्य तन, सा दून आभूषणं ॥१३-१६

और पृथ्वीराज-भंवरा संयोगित-मंजरी का रसास्वादन करने लग जाता हैं—

रस धुंटिय लुट्टिय मयन, टुट्टि नतं जरि जाइ।
भर भग्गत कच्छह सुमी, अलि-भरि मंजरियांह ॥१३-१८

और भंवरा-भंवरी हर समय रस-सरोवर में डूबे रहते हैं—

अलि अलि एकत मिलि, रस सरवर संयोग।
ते कवि चित्रिय वर सरस, पहु प्रगटित रति भोग ॥१३-१६

शिशिर ऋतु में उत्तेजक घनसार कस्तूरी आदि मिश्रित सुवासित सुरा का प्रयोग भी होता है। इससे रति क्रीड़ा में लज्जा "भज्जित" हो जाती है और शरीर में एक प्रकार की कंपकपी उत्पन्न होने से बोला भी नहीं जा सकता :—

घनसार मृगम्मद पान कियं,
छिन भज्जित लज्जित लोचनयं,
तन कंपत जंपत मोचनयं, १३-६३
तन कंपत जम्पत मोचनयं। १३-६३

रति क्रीड़ा में संयोगिता के गले का हार टूट गया। मोती श्रम बूंदों की तरह उसके वक्षस्थल पर लुढ़क रहे हैं—

रति विछुट्टित पंति चंगं। श्रम बुंदिनि मुत्ति झरै उरनं॥

और साथ ही रति प्रसंग में कटि मेखला की क्षुद्र घटिकाएं भी झनझना रही हैं :—

कटि मण्डल घंट रवन्ति रवै, सुर संज मंजीर अमृत श्रवै,
रति उज्ज-अमोज तरंग भरी। हिमवंत रीति रति राज करी ॥१३–६६

शीत ऋतु की समाप्ति पर वसन्तागमन के साथ साथ भंवरा-भंवरी (पृथ्वीराज-संयोगिता) के मन में आनन्द छा गया और सहकार वृक्ष पर कल कंठी कोयल की कुहू २ के साथ ही अन्तःपुर (सुधांम) में भी काम क्रीड़ा (धमारि) का उधम मचने लगा।

पव भंगति सीत सुगंध सुमंद। लगे भमरी तन मन्न अनन्द।

जगि जग्गि सवनि लता भई दार=(विकसित)
सुनि कन्नि कंठीय कंठ सहार। कुहु कुहू काम सुधांम धमारि ।।१३–१०३

और भंवरा सायंकाल होते ही नलिनी रूप अलिनी-संयोगिता का रसास्वादन करने के लिये नलिनी में जा बैठा :–

उदे नलिनि अलिनि रद मंझ।
मधुव्रत मद्धि वसौ जिमि संझ।। १३–१०५

और प्रात: काल होने पर भंवरा नलिनी का संग विवश होकर छोड़ता है –

तज्यौ तन कंत दसंत प्रभात। १३–११७

संयोगिता के पीन नितंबों पर लटकती हुई मेषला, काम देव के बाणों को लटकाने के लिये तूणीर का काम दे रही है—

रस नेव रंज नितंबिनी, कुसुमेष एष विलंबिनीं। १४–२१

और फिर उरोजों के भार से पतली कमरिया लचकती जा रही है, अत: स्थूल नितंब कुच कुम्भों के भार को सहन करने के लिये मानो खम्भ लगे हुए हों–

उर भार मद्धि विभंजन, दियय उरोज जु थम्भनं। १४–२१

ऐसे कुच-कमलों को जगली, राव (पृथ्वीराज) स्पर्श करता है तो कलिकाल के दोष (पापों) से मुक्ति मिल जाती है—

कुच कंज़ परसत जंगली मुष मोष दोष कलक्कली। १४–२३

इस के अतिरिक्त रासो में करुण, वीभत्स, अद्भुत तथा भयानक रस का चित्रण भी कवि ने यत्र तत्र किया है विस्तार भय से यहां उन सब का वर्णन कठिन है।

११ अलंकार–"अलंकरोतीति अलंकार:" अलंकार शब्द की इस व्युत्पत्ति के अनुसार अलंकार काव्य सौन्दर्य की वृद्धि के साधन हैं न कि साध्य। अलंकारों की अधिक ठूंस-ठांस से काव्य सौन्दर्य में चमत्कार की अपेक्षा भाव व्यंजना में क्लिष्टता उपस्थित हो जाती हैं। अलंकार काव्य के लिये है न कि काव्य अलंकारों के लिये। महा कवि चन्द ने रासो में अलंकारों का प्रयोग स्वभाविक रूप से किया हैं। शब्दालंकारों में कवि का झुकाव अनुप्रास तथा यमक की ओंर अधिक है और अर्थालंकारों में सादृश्यमूलक

अलंकारों की ओर, और वहां भी उत्प्रेक्षा उपमा आदि का अधिक प्रयोग मिलता है। कुछ उदाहरण देखिए—

(१) शब्दानुप्रास–

मधु रिपु मधु रितु मधुर सुष, मधु संगत कति गोप।
मधु रति मधुपुर महल सुष, मधुरित नौतन ओप। १–१४६

(२) वर्णानुप्रास– झर झ्झर सेन झंकिय सार।
धर प्पर लुत्थिय ढरे घन धार॥ ११–१६

अन्यच्च—नद रोर दद्दुर मोर सद्धुर वनसि वनवन वद्दयं। १३-३०

(३ यमक— गोरीय रत्तौ तुव धरनि, तूं गोरी अनुरत्त। १४—३८

"गोरी" शब्द में यमकालंकार के साथ साथ अर्थ गंभीर्य भी दर्शनीय है। (गोरी—संयोगिता, गोरीय—शहाबुद्दीन गौरी)

(४) लुप्तोपमा – मंगल बुध गुरु शुक्र शनि, सकल सूर उद् दिट्ट।
आतप ऊ ध्रुवतं तमै, सुभ जैचन्द दइट्ठ।

यहां मंगल तथा बुधादि नक्षत्रों में चंद समान प्रतापी जयचन्द अपने दरबारियों के मध्य विराजमान हैं। यहां जयचन्द उपमेय है और "चन्द" उपमान, समान धर्म वाचक शब्द के न होने से लुप्तोपमा। "चंद" शब्द से कवि ने दो काम लिये हैं—जयचन्द और चन्द्रमा, अतः श्लेष भी हो सकता है।

(५) उत्प्रेक्षा - उडु मध्य विराजित जानि दुजं। ०-३७

अपने राज दरबार में सिंहासनासीन पृथ्वीराज सामंतों के मध्य विराजमान मानो तारागणों में चन्द्रमा हो।

(५) रूपक—मनौ मयंक फंद पासि, काम काल दल्लिए। ९-१३९

मयंक-पृथ्वीराज को काम-काल ने अपने फंदे में आवेष्टित कर लिया। यहां कवि ने रूपकालंकार की व्यञ्जना के साथ साथ संयोगिता के प्रेम पाश में फांस कर पृथ्वीराज के भावी पतन (मृत्यु) की सूचना दे दी है।

हाथियों के "पाषर" (लोहे के झूल) मानों बादलों में बिजली की चमक हों—

पाषरां झलक गज एम झलषे।
मनौ बीज चमकंति घन मेघ पष्षे। १०-८८

हाथी के सांग लगने से उसने सूंड उठा कर चिंघाड़ा तो कवि की उत्प्रेक्षा देखिए—

लगि मुषि सांगि गयंद निहेरी। मनौ गज राज बजावत भेरी। ११-१५

एक और उदाहरण देखिए—

धवलह चढ़ी निरषहिं नारि।
गौषनि रन्ध्र राजकुमारी।
मानहुँ तडित अभ्र समाज। २-५२-३

महल के वातायनों में बैठी हुई राजकुमारियां तथा अन्य रमणिएं बादलों में मानों बिजली की झलकारें हों—सम्भव है कवि की ऐसी उत्प्रेक्षात्मक कल्पना बिलकुल निराली ही हो।

रमणियो के कानों में पहने हुए ताटंक मानों पूर्णिमा-रात्रि में दो चांद चमक रहे हों—

राजत श्रवन रवनि ताटंक। राका मानों उभय मयंक।

(७) अपह्नुति—स्त्रियों के भाल पर रत्न जटित तिलक दीपक ज्वाला की झलक है:—

तिलक नग रंग-जटित भाल, हुबहु झलक दीपक जाल।

(८) उल्लेखालंकार—की एक झलक और देखिए

कन्नौज में गंगा तट के समीप पृथ्वीराज पंग सेना से युद्ध कर रहा है। गंगा तटस्थ महल में संयोगिता की परिचारिकाओं तथा अन्य सुन्दरियों के मन में युद्ध-रत पृथ्वीराज को देख कर कई भाव उत्पन्न हुए—

"दिष्षित सुंदरि दल वलनि, चमकि चढत अवास।
नर कि देव किधुं कामहर, किधुं कच्छु गंग विगास॥
इक्क कहहि दुरि देव इह, इकु कहि इंद फनिंद।
इक्कु कहै अस कोटि नर, इक पृथ्वीराज नरिंद॥६-१२६

और विचारी संयोगिता तो श्रृङ्गार रस के अनुभावों में भीग गई—

सुनि रव पिय पृथिराज कौ, उभय रोम तन रंग।
स्वेद कंप स्वर भंग भौ, सपत भाय तिहि अंग॥ ६-१३२

इसके अतिरिक्त भ्रांतिमान्, तद्गुण, अनन्वय, दीपक तथा विभावना आदि अलंकारों की व्यञ्जना प्रस्तुत प्रति में सर्वत्र अभिव्यंजित हुई है।

छंद

संस्कृत साहित्य में अधिकतर वर्णिक छंदों का बाहुल्य है, क्योंकि

संस्कृत छंद वैदिक साहित्य से विकसित हुए हैं। फिर भी उक्त साहित्य में मात्रिक छंदों का सर्वथा अभाव नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार अपभ्रंश साहित्य के छंद प्राकृत साहित्य के छंदों से विकसित हुए हैं। प्राकृत छंद प्रारम्भ काल से ही मुख्यतया मात्रिक रहे हैं। अतः अपभ्रंश साहित्य में अधिकतर प्राकृत छंदों का प्रयोग हुआ है। इस के अतिरिक्त यहां संस्कृत के वर्णिक तथा संयुक्त छंदों को भी अपनाया गया है। क्योंकि अपभ्रंश साहित्य का विकास चारण परम्परा से हुआ माना जाता है। चारण कवि अपनी आजीविकार्थ राज दरबारों में तथा रण क्षेत्र में शृंगार तथा वीर रस की उद्भावना के लिए अथवा विशेष नृत्य और लय ताल आदि के लिए छंदों का विशेष ढंग से उच्चारण करते थे। एतदर्थ उन्हें अपनी सुविधा के लिए नूतन छंदों की कल्पना भी करनी पड़ी। अतः अपभ्रंश साहित्य में मात्रिक, वर्णिक तथा संयुक्त तीनों प्रकार के छंदों का प्रयोग हुआ है।

पृथ्वीराज रासों में वर्णिक, मात्रिक तथा संयुक्त तीनों प्रकार के छंद प्रयुक्त हुए मिलते हैं। रासों में अधिकतर प्रयुक्त तथा प्रसिद्ध छंद गाथा, पद्धड़ी कवित्त तथा दोहा हैं। रासो की प्रस्तुत प्रति में यत्र तत्र छंदों भंग दोष को सुधारने ।Amend का प्रयत्न नहीं किया। प्रस्तुत प्रति में प्रयुक्त छंदों की तालिका निम्नोक्त है :—

मात्राछंद	वर्ण वृत्त	संयुक्त वृत्त
१ गाथा	१२ अनुष्टुप	२३ कवित्त
२ त्रिभंगी	१३ साटक अथवा शाटका	२४ कुंडलिया
३ दूहा	१४ भुजंगी	२५ सोरठा
४ पद्धड़ी	१५ मोतीदाम	२६ रोला
५ अरिल्ल अथवा अडिल्ल	१६ विराज	२७ वार्ता
६ हनुफाल	१७ त्रोटक	२८ मालती
७ चौपई	१८ रसावला	
८ मुरिल्ल	१९ नाराच अथवा नराज	
९ रासा	२० भ्रमरावली	
१० ऊधो अथवा उधोर	२१ मोदक	
११ रड्डा	२२ प्रवानिक, प्रमानिक. त्रमानिक	

उपयोगिता की दृष्टि से उपर्युक्त छंदों के लक्षणों पर संक्षिप्त विवेचन उचित होगा।

मात्रा छंद

१. **गाथा**—प्राकृत काल का यह प्रसिद्ध छंद है अपभ्रंश रचनाओं में भी इसका प्रचुर मात्रा में प्रयोग मिलता है। कई छंदकारों के मतानुसार संस्कृत के "आर्या" छंद को ही गाहा, अथवा गाथा कहा जाता है।

लक्षण—४+४+४√४+४+।S। (अथवा ।।।।)+४+४
४+४+४√४+४+।४+S

२. **आर्या**—जैसा कि ऊपर कहा गया हैं प्राकृत काल में इसका नाम "गाहा", अपभ्रंश में 'गाथा" तथा संस्कृत में "आर्या" नाम से प्रसिद्ध है।

लक्षण—इस के पहिले और तीसरे चरण में १२, १२ और दूसरे तथा चौथे में १८ तथा १५ मात्राएं होती हैं। पूर्वार्ध में चतुष्कलात्मक ७ गण और एक गुरू (S) तथा इन सात गणों में से विषम गण (ज०) का निषेध होता हैं। छठा गण ज० अथवा (।।।।) होना चाहिए। उत्तरार्ध में छठा गण एक लघु मात्रिक हो, शेष पूर्वार्धवत्।

३. **दोहा अथवा दूहा**—२४ मात्राओं का छंद है १३, ११ पर यति तथा चरणान्त में लघु।

४. **पद्धड़ी**—पद्धरि, पद्धरी, पद्धड़िया–छंद अपभ्रंश–साहित्य का एक प्रसिद्ध छद हैं, वैसे तो छंदकारों ने पृथक् पृथक् रूप में इस पर विवेचना की हैं परन्तु रासो में इसका रूप–प्रत्येक चरण में १६ मात्राओं, चार चौकल और जगणांत वाला ही मिलता है।

५. **अरिल्ल अथवा अडिल्ल**—रासो में प्रयुक्त इस छंद के प्रत्येक चरण में १६ मात्राएं तथा चरणांत में दो लघु पाए गए हैं।

६. **हनुफाल**—यद्यपि प्राप्य छंद ग्रन्थों में इस नाम का कोई छंद उपलब्ध नहीं हो सका। रासो में इसका रूप–१२ मात्राओं, ३ चौकलों और अन्त में जगणात्मक है।

७. **चौपई**—प्रत्येक चरण में १६ मात्राएं, अन्त में ग०ल०, चौकल का कोई क्रम नहीं, अन्त में ज० अथवा त० नहीं होना चाहिए।

८. मुरिल्ल—नामक छंद भी उपलब्ध छंद ग्रन्थों में दृष्टिगोचर नहीं हुआ। प्रत्येक चरण में १६ मात्राए तथा इन १६ मात्राओं में गु० अथवा ल० तथा चौकलों की स्वतन्त्रता है। वर्णो का भी कोई क्रम नहीं।

९. रासा—प्रति चरण में २१ मात्राएं तथा अन्त में एक नगण कभी प्रत्येक चरण में २३ मात्राएं भी मिलती हैं और अन्तिम चरणों में २१, २१,

१०. ऊधो अथवा ऊधोर—सहायक छंद ग्रंथों में ऊधो नाम का भी कोई छंद नहीं मिला, ७, ७ मात्राओं के विश्राम से प्रत्येक चरण में १४ मात्राएं तथा अन्त में एक ल० और एक गु०।

११. त्रिभंगी—८+६ पर यति विराम से ३२ मात्राएं, प्रत्येक चरण में तथा अन्त में ल० तथा ज० नहीं होनी चाहिए।

सयुक्त वृत्त

१२. कवित्त—पिंगल परीक्षा से इस छंद का नाम षट्पद अथवा छप्पय है, "प्राकृत पैंगलम्" के अनुसार इस के प्रत्येक चरण में ११, १३ मात्राओं के यति विराम् से चार चरण होते हैं और अनन्तर "उल्लाला" के दो चरणों के मेल से दो चरण जोड़ दिए जाते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में इसी रूप में इस छंद का प्रयोग हुआ है।

१३. कुंडलिया—"प्राकृत पैंगलम्" के अनुसार "दोहा" और रोला के योग से इस छन्द का निर्माण होता है। रासो में इसका यही रूप अधिकतर प्रयुक्त हुआ है। कई अन्य छन्द ग्रन्थों के अनुसार "कुण्डलिया" का निर्माण दोहा तथा "उल्लाला" के योग से होता है।

१४. रड्ड, रड्डा - प्रस्तुत संस्करण में इस छन्द का प्रयोग दो तीन स्थानोंर पहुआ हैं, परन्तु कहीं पर भी इस का रूप स्पष्ट नहीं हो पाया। प्रत्येक चरण में भिन्न भिन्न मात्राओं तथा वर्णों की खिचड़ी सी है। "संदेश रासक" में भी इस का प्रयोग मिलता है। बृहद संस्करण में इस का "वथुआ" नाम से प्रयोग हुआ है। "रूप दीप पिंगल" नामक ग्रन्थ में इसका नाम रिड्डुक है, और इसका लक्षण निम्न प्रकार से दिया गया है--

कीजै कला प्रथम तिथ भान,
दश एको दूसरे, तीजे गिन दश पांचारिए,

फिर चौथे दश एक, परख्यन में पांच करिए।
रोडा सत सठ मत्त है, कीनो सेस बखान।
तामे फिर दोहा मिले, रिड्ड छन्द पहिचान।

"प्राकृत पैंगलम्" में रड्डा छन्द का निम्न लक्षण मिलता है—

षढम विरमइ मत्त दह पंच, पअ्र-वीअ्र-बारह ठवहु,
तीअ्र ठांइ दह पंच जाणहु, चारिम एग्गारहहि।
पंचमोहि दह पंच आणहु,
अठ्ठासट्ठी पूरवहु अग्गे दोहा देहु।
राअ्र सेण सुप्रसिद्ध इअ्र, रड्डु भणिज्जइ एह।

वर्ण वृत्त

१५. साटक—सस्कृत छन्द ग्रन्थ में इसका नाम "शार्दूल विक्रीडित" है। यद्यपि कुछ छन्द ग्रन्थों में "साटक" का रूप कुछ अन्तर से पाया जाता है परन्तु प्रस्तुत संस्करण में प्रा० पै० के अनुसार ही इसका लक्षण घटित होता है। प्रा० पै० के अनुसार इस में चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में १९ वर्ण हैं तथा म०स०ज०स०त०त०गु० योजना पाई जाती है।

१६. भुजंगी प्रत्येक चरण में १२ वर्ण तथा चार यगण होते हैं। छन्द ग्रन्थों में भुजंगी नाम का कोई छन्द उपलब्ध नहीं है। "वृत्त रत्नाकर" में इसका नाम "भुजंग प्रयात" है। "छन्द प्रबन्ध" ग्रन्थ में एकादशाक्षर जातिक समूह में इसका नाम "छन्द" भी मिलता है।

१७. मोतीदाम—मोतियदाम 'वृत्तरत्नाकर" में "मौक्तिक दाम" चार जगण, द्वादशाक्षर, "चतुर्जगणं बद मौक्तिक दाम"

१८. विराज इसके प्रत्येक चरण में ६ वर्ण, ८ मात्राएं और २ सगण। प्रा० पै० में इसे "तिल्ल" भी कहा गया है। और कहीं कहीं ६ वर्ण १० मात्राएं तथा २ यगण।

१९. त्रोटक—चार सगण, पदान्ते यति, ११ वर्ण।

२०. रसावला—उपलब्ध छन्द ग्रन्थों में इस नाम का कोई छन्द दृष्टि गोचर नहीं होता। प्रस्तुत प्रति में इसका रूप—६ वर्ण तथा २ रगण हैं। प्रा० प्रै० में ६ वर्ण, २ रगण वाले छन्द को "विजोहा" कहा गया हैं।

२१. नाराच, नाराज, नराज—१६ वर्ण, ज० र० ज० र० गु० वृ० रत्ना० में इसकी संज्ञा पंचचामर है। "जरौ जरौ जगाविदं वदंति पंच-चामरम्"।

२२. अमरावली—प्रत्येक चरण में ५ सगण, २० मात्राएं और १५ वर्ण हैं।

२३. मोदक—१२ वर्ण, १६ मात्राएं, ४ जगण, तथा कहीं कहीं १२ वर्ण, १६ मात्राएं ४ सगण।

२४. प्रमानि, प्रमानिक, प्रामणिका—"जरा लगा प्रमाणिका"

(अष्टाक्षर जाति वर्णवृत्त)

२५. वार्ता—सहायक छन्द ग्रन्थों में "वार्ता" नामक किसी छन्द का उल्लेख नहीं मिलता। प्रारम्भ में वार्ता से गद्य का ही बोध होता था। परन्तु कालान्तर में लिपिकारों के भ्रम से "वार्ता" भी छन्द रूप में प्रयुक्त होने लगा। प्रस्तुत प्रति में वार्ता के नीचे दो स्थानों पर गद्य भी दिया हुआ है और अन्यत्र छन्द भी।

२६. रोला (मात्रिक)—२४ मात्राओ का छन्द हैं। सम पदों में १३ – ३+२+४+४ या ३+२+३+३+३+२ तथा विषम पदों में ११:— ४+४+३ या ३+२+३ मात्राओं का क्रम है।

२७ सोरठा—दोहा का उल्ट सोरठा कहलाता हैं।

२८. श्लोक—अथवा अनुष्टुप्—चारों पदों में पंचम वर्ण लघु और छठा वर्ण दीर्घ होता है। सम पदों में सप्तम वर्ण भी लघु होता है।

मालती—इस छन्द में २२, २२ अक्षरों के चार चरण होते हैं। ६, ७, अथवा ८ पर यति है। प्रस्तुत प्रति में यह छन्द, "छन्द" नाम से भी पयुक्त हुआ है।

उदाहरण–दिगभरि धुम्मिल, हरित भुम्मुंल, कुमुद निर्मल सोभिलम्"

——:o:——

छठा अध्याय
भाषा और व्याकरण

पृथ्वीराज रासो का भाषा विषयक प्रश्न एक कठिन समस्या तथा भाषाविज्ञ विद्वानों में वाद-विवाद का विषय रहा हैं। इस विषयक लेख यथा समय सामयिक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। इस में कोई संदेह नहीं कि रासो की भाषा में इतनी दुरूहता तथा अव्यवस्था है कि उसपर ठीक ढंग से व्याकरण के नियम लागू करना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। स्व० डा० श्याम सुन्दर दास जी ने रासो की भाषा को पिंगल माना है। डा० ओझा जी ने इसे न पिंगल और न राजस्थानी ही कहा है। और किसी ने अनुस्वारान्त, टवर्गादि तथा द्वित्व वर्णवहुला देख कर डिंगल नाम रख दिया, तो किसी ने अपभ्रंश अथवा विकृत अपभ्रंश। इस प्रकार के भाषा वैविध्य तथा वर्ण और स्वरों की अव्यवस्था को देखकर स्व० शुक्ल जी ने झुंझला कर रासो की भाषा को "बेठिकाने की तथा भाषा के जिज्ञासुओं के काम की चीज़ नहीं है" कह दिया था और इस विषयक अपना निर्णय देते हुए कहा कि :—"कहीं कहीं तो भाषा आधुनिक सांचे में ढली दिखाई पड़ती है, क्रियाएं नए रूपों में मिलती हैं, परन्तु साथ ही कहीं २ भाषा अपने असली प्राचीन साहित्यिक रूपमें भी पाई जाती है जिस में प्राकृत और अपभ्रंश शब्दों के रूप और विभक्तियों के चिन्ह पुराने ढंग के हैं।" शुक्ल जी का यह कथन किसी सीमा तक सही है। शुक्ल जी के समय में रासो के वृहद् तथा मध्यम संस्करण ही प्रकाश में आ सके थे। वास्तव में रासो को एक बहुत प्राचीन रचना माना जाता है। इस की भाषा में अव्यवस्था तथा प्रक्षिप्त अंशों की बहुलता है। अतः एव रासो गत भाषा का स्वरूप निश्चित करने में पर्याप्त कठिनाइयाँ रही हैं।

वास्तविक रूप में रासो में भाषा वैविध्य तथा विकृति का कारण भाटों तथा चारणों द्वारा राजदरबारों तथा समरांगण में प्रशस्ति रूप में गायन अथवा उच्चारण और लिपिकारों का प्रमाद है। आचार्य शुक्ल जी के कथनानुसार, वीर गाथा काल में राज्याश्रित कवि और चारण ज़िम

प्रकार नीति, शृंगार आदि के फुटकल दोहे राज सभाओं में सुनाया करते थे उसी प्रकार अपने आश्रय दाता राजाओं के पराक्रम पूर्ण चरितों अथवा गाथाओं का वर्णन भी किया करते थे। पृथ्वीराज रासो भी इसी युग की रचना मानी गई है। आल्हा ऊदलबत् यह काव्य भी "श्रव्य काव्य" रहा है, विशेष कर राजपूताने में। यही कारण है कि रासो की भाषा का न कोई स्थिर रूप है और न ही कोई स्थिर शैली। इस में कहीं तो भाषा सर्वथा आधुनिक प्रतीत होती है, कहीं पर प्राकृत, अपभ्रंश तथा संस्कृतानुकरणात्मक है और कहीं पर पिंगल (प्राचीन व्रज) तथा डिंगल (प्राचीन राजस्थानी) रूपों में पाई गई हैं। शब्दों की बनावट में स्वरों के दीर्घ अथवा ह्रस्व होने का कोई ध्यान नहीं रखा गया। व्यंजनों में अपनी इच्छानुसार अथवा उच्चारण की सुविधा के लिये परिवर्तन कर लिये गये हैं। वास्तव में रासो की भाषा को यदि हम चारणीं भाषा कहें तो अधिक उचित रहेगा। क्योंकि चारण कवियों की अपनी एक विशेष शैली हैं और ये चारण कवि अपनी आजीविका के लिए इस शैली का १८वीं[1] शताब्दी तक दृढ़ता से पालन करते रहे हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर रासो के प्रसिद्ध विद्वान् जोहन वीम्स ने[2] रासो की भाषा के विषय में अपना मत देते हुए लिखा है :—It must be remembered that many of these poems were impromptu productions and most, if not all, were written to be sung, and any deficiency of syllable could be covered by prolonging one sound over two or three notes, as often happens in English songs, or on the other hand two or more syllables could be sung to one, not as in our chanting, where so much license could be sung. We cannot use the metrical argument except with great precaution. We

1—"डिंगल भाषा" लिखित-गजराज ओझा, का. ना. प्र. पत्रिका भाग १४, संवत १९९० नवीन संस्करण।

2—See-studies in the grammar of Chand Bardai; Bengal Asiatic society. Journal, Vol. XLI, 1873, Part I Page 165.

are, therefore, driven back to the conclusion that in chand's time the form of words and their pronunciation was extremely unfixed. It removes out of the way the necessity of attemping to establish a fixed set of forms for words and inflexions. We take all Chand's words for the present as they stand, we take each word in four or five different forms if need be, and do not trouble overselves to find out which is the right form for Chand's period, simply because we do not believe there was any right form that is more used and more generally accepted than any other. In fact we recognize thoroughly transitional character of the language." अतः यह कहना उचित होगा कि रासो के दृहद् तथा मध्यम संस्करण एक कवि की रचना नहीं कहे जा सकते।

रासो के प्रस्तुत संस्करण में भी उक्त दोनों संस्करणों की तरह भाषा विषयक वही समस्या है। यहां पर भी विभिन्न भाषाओं तथा अनेक शैलियों के दर्शन होते हैं। यदि कहीं पर विभिन्न प्राकृतों तथा अपभ्रंश के विकृत शब्द बिखरे हैं तो कहीं पर भाषा सर्वथा विकसित, नव्यतर तथा आधुनिक प्रतीत होती है। जैसा पहिले कहा जा चुका है कि १३ वीं शताब्दी में रचित संदेश रासक की भाषा के साथ तुलना करने पर प्रस्तुत प्रति की भाषा को हम १३ वीं शती की नहीं मान सकते। डा० नामवरसिंह ने अपने नव प्रकाशित प्रबन्ध[1] "रासो की भाषा" में इस विषय में अपना मत[2] दिया है कि रासो की प्राचीनतम प्रति (लघुतम संस्करण) की

---

1. "रासो की भाषा" प्रकाशित—सरस्वती प्रैस बनारस, जनवरी १९५७ संस्करण। (लघुत्तम संस्करण के आधार पर ही इसमें रासो भाषा विषयक विवेचना है।

2 (क) "उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि पृथ्वीराज रासो के जितने रूपान्तर हुए है उनमें से प्राचीनतम की भाषा भी अपभ्रंश से अधिक विकसित तथा नव्यतर है।"

(ख) "इस प्रकार रासो की भाषा "प्राकृत पैंगलम्" के बाद की प्रमाणित होती है।"

(अगले पृष्ठ पर)→

भाषा १४ वीं शती में रचित प्राकृत पैंगलम् की भाषा से अधिक विकसित तथा नव्यतर है, और इसे हम अकबर समकालीन नरहरि दास तथा गंग भट्ट भणंत परम्परा में स्थान दे सकते हैं। प्रस्तुत प्रति की भाषा में कुछ आधुनिक हिन्दी रूपों के अतिरिक्त संस्कृत, संस्कृतानुकरण, प्राकृतों के प्राचीन रूप, अपभ्रंश तथा अपभ्रंशाभास, ब्रज (पिंगल) राजस्थानी (डिंगल), फारसी, पंजाबी और दिल्ली के आस पास हिसार तथा रोहतक आदि प्रदेश के देशी शब्द मिलते हैं। परिणामतः सामूहिक रूप से हम यदि इसे 'चारणी भाषा" की संज्ञा दे दें तो अनुचित न होगा। इस चारणी रूप मिश्रित भाषा तथा शैली के कुछ उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जाएगी।

१. संस्कृत—प्रस्तुत प्रति के नाराच, शाटक, अनुष्टुप तथा कहीं कहीं दोहा छन्दों में अशुद्ध सस्कृत अथवा संस्कृतानुकरण रूप में भाषा के दर्शन होते हैं। जैसे—

(क) जौवनेन विनय विनति, सषिना मंगल माल।
सषि आग्रह मानै ग्रहन, पिय छंडै तिहि काल। ३-३७

(ख) त्वमेव इष्ट दिष्ट मुष्ट, जुष्ट रुष्टयं पतिपते।
त्वमेव सत्य सत्यवाद, गोपिकामहं गते। (३-७७)

(ग) चरणस्य मंडं, मनौ हेम दंडं। (१-११४)

→(ग) पृथ्वीराज रासो की भाषा में ध्वनि और रूप की दृष्टि से एक ओर नवीनता मिलने के साथ ही, दूसरी ओर प्राचीनता मिलती है। उसका कारण तब स्पष्ट होता हैं जब हम राजस्थान के अन्य भट्ट कवियों की रचनाएँ देखते हैं। प्राकृत अपभ्रंश की तरह व्यंजन द्वित्व वाले शब्दों के प्रयोग नरहरि गंग भट्ट आदि भट्ट कवियों की रचनाओं में भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। ये कवि १६ वीं शता के उत्तरार्ध में थे। पृथ्वीराज रासो के अन्तिम संग्रह और संकलन का समय भी लगभग वही बताया जाता है, और उसकी प्राचीनतम प्रतियां भी इसी के आस पास की हैं। ऐसी हालत में तत्कालीन "भट्ट भणंत" के रूप में भी रासो की भाषा नरहरि तया गंग की भाषा परम्परा में आती है। पृष्ठ २४

२. प्राकृत—कुछ ऐसे शब्दों की संख्या भी हैं जिन्हें हम शुद्ध प्राकृत शब्द कह सकते हैं। जैसे:--

दिट्ठ, तिट्ठ, पिट्ठ, विब्भल, अप्प, वच्छ अच्छरि, जुज्झ, जार, रूव, चाव, चउक्क आदि।

गाथा छन्दों में प्राकृताभास है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि आधुनिक शब्दों को प्राकृत रूप देने का प्रयत्न किया गया है।

गिद्धीण जाइ कहणौ, कहणो कविचन्द मूर सावंत।
प्राची हय रह वहणों, रहणो गत नै दावतं। ११-१९०

यहां रेखांकित शब्द - गिद्ध, कहना, ग्रहण करना, राह, बहना, रहना, आधुनिक हैं जिन्हें प्राकृत रूप दिया गया है। "दावत" शब्द फारसी का हैं।

२. अपभ्रंश—कुछ शब्दों की सख्या ऐसी है जिन्हे हम अपभ्रंश अथवा विकृत अपभ्रंश कह सकते हैं। परन्तु ऐसे शब्द १६ वीं शताब्दी में जायसी आदि कवियों ने भी अपनी रचनाओं में प्रयुक्त किए हैं। जैसे:—

त्रिलोयन, दिनियर, वयन, वैन. कन्ह. न्हान, न्हानु, नेह, नेहु, पुन्य, जुब्बन, सायर आदि।

इसके अतिरिक्त निम्नोक्त शैलों के, पद्धड़ी, नाराज, शाटक, तथा कवित्त आद्रि छन्दों में आधुनिक शब्दावली मिश्रित कृत्रिम अपभ्रंश—चारणी रूपात्मक शब्द मिलते हैं:—

कलि अत्थ पत्थ, कनवज्जराव। सब सील रत, धर धर्म चाव।
वर अत्थ भूमि, हय गय, अनग्ग। पट्टया पंग राजन सुजग्ग।

यहां रेखांकित शब्द अपभ्रंश भाषा के समझे जाते हैं, परन्तु वास्तव में ऐसे शब्द चारणी बनावट के हैं।

४. अपभ्रंशाभास—आचार्य शुक्ल जी के मतानुसार विक्रम की १४वीं शताब्दी में एक ओर तो प्राचीन परम्परा के कुछ कवि अपभ्रंश मिश्रित खड़ी बोली में वीरता का वर्णन कर रहे थे:—

चलिअ वीर हम्मीर, पाअ भर मेइणि कंपई।
दिग मगणाह अन्धार, धूलि सुर रह अच्छाइहि।

और दूसरी ओर खुसरो मियां दिल्ली में बैठे बोल चाल की भाषा में पहेलियां कह रहे के।

उपर्युक्त छन्द में आये रेखांकित अपभ्रंश शब्द रासो की प्रस्तुत प्रति में "चलिय,मेदिन्नि तथा "नाह" रूप में प्रयुक्त हुए हैं। इससे अनुमान ऐसा होता हैं कि रासो की भाषा १४ वीं शताब्दी से परवर्ती समय का विकसित रूप है। इसके अतिरिक्त अधिकतर भाषा का ऐसा रूप हैं जिसे हम सर्वथा आधुनिक कह सकते हैं। यथा:—

(क) भव भविष्य जानुं सकल। (१४-५१)

(ख) कियो फिरि रास, सु संदर स्याम। (१-६१)

(ग) मिलि जैन धर्मे सकल राजधानी। (५-२२)

(घ) लै आऊं जालंधराइ। (१५-२७)

(ङ) समुज्झि न परै। (१६-४३)

यहां पर ऐसे तत्सम अथवा तद्भव शब्दों की भी पर्याप्त संख्या है जिनमें छंद की तुकबन्दी अथवा अपनी आवश्यकतानुसार द्वित्व तथा परिवर्तन आदि कर लिया गया हैं। यथा: —

धरन्नि, करन्निय, श्रवन्नह, जुब्बन, कुँव्वन, तरुन्न, भुवन्न, दानव्व, अव्बिनासी आनन्न, कुसल्ली, पहिल्ला, वयन्न, नयन्त, मृद्दंग, नवल्ल, छयल्ल, अवन्नी, तुरक्की, अच्छेहं, निव्वीर आदि।

आवश्यकतानुसार व्यक्तिबाचक संज्ञाओं तथा अन्य संज्ञाओं के वर्णों को द्वित्व कर दिया है:—

काद्दम, बद्दाम, अजद्देव, जदुद्देव, कलिक्काल, गुरज्ज आदि।

५. व्रज (पिंगल)—आधुनिक ब्रज क्रियाओं के रूप अधिकता से पाये गये हैं—

चिढ्यौ, रह्यौ, सरक्यौ, बज्यो, छुट्यौ, मिल्यौ, किल्ल्यौ, विलग्गौ, तोर्‌यौ, बुज्झ्यौ, चढिव, पहिरि।

(क) मिल्यौ आय सूरं। (४-१६)

(ख) नेहु निबह्यो। (५-८५)

(ग) नयननि जब दिष्यौ। (७-६६)

आधुनिक ब्रज रूपात्मक भाषा देखिए:—

(१) मन वांछित विश्राम किय, सुरभि गोप बुलाइ।
मन वांछित दीनौ सु तिनि, सुर सुंदरि सुष पाइ। १-६४

(२) दियो दधि दुधू, त्रियानि पै दान। (१:६२)
(३) धरचौ कौनु रूपं। (१-१३०)
(४) हौं लज्जा करि का कहौं। (६-६७)
(५) पचिवे काज। (१५-४६)

बहुवचनान्त संज्ञाएं:—

सायरनि (१५-५२), कमलनि (६-१२६) गयंदनि (१२-२७) सावंतनि (६-१७२) एवं, गजेन्द्रानि, सिंगिनि, दिननि, रतननि, पानिन, अंषिनि, नृपतिन, छत्रन।

६—राज-थानी (डिंगल)

(क) म्हे म्हांके ढोलरै ढाल ढोरा ढ्रुंढारी। (१४-११३)
(ख) म्हे गामी गुज्जर गल्हिया। (१४-११४)
(ग) अम्ह उन्हां उन्हां कहि पंचनद मेरी मेरी। (१५-३०)

७—प्रस्तुत प्रति में दिल्ली प्रांत के आस पास हिसार प्रदेशीय बोल चाल की भाषा के शब्द भी पाए गए है :—

(१) बधौ सै जयचन्द विज पाल सुपुत्ता। (११-११८)
(२) घालै फिरै। (११-४६)
(३) पच्छै पहर। (१३-६३)
(४) सै पुच्छै सुरतांन, अबे तूं चन्दह नंदन। (१३-५४)
(५) तैं भूट जु कुन्नौ। (१३-५३)

एव—कुद्दै, गम्भरु, छग्गल, जकि, हलोहल्ल, जद्दिन, तद्दिन, घालन-कहै, (१७-३६) बोलहु घना (१४-७२)

८—पंजाबी—कुछ विद्वानों के मतानुसार रासो में पंजाबी भाषा के शब्द भी पर्याप्त संख्या में पाए जाते हैं। वैसे तो ऐसा होना स्वाभाविक ही है। क्योंकि जिस प्रदेश (राजस्थान) में इस काव्य की रचना हुई है उसकी सीमाएं पंजाब के मुल्तान आदि जनपदों से जुड़ी हुई हैं। ऐसी दशा में इस काव्य पर पंजाबी भाषा का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। परन्तु प्रस्तुत प्रति में पजाबी भाषा के शब्द नगण्य रूप में ही मिले हैं। यहां प्रायः ऐसे शब्द हैं जो प्राकृत काल से अपभ्रंश में होते हुए आधुनिक पंजाबी में प्रयुक्त हो रहे हैं। यथा—हत्थ, कम्म, कन्न, अज्ज आदि। इसी प्रकार सबै देव सद्दै। (१-२७)

रेखांकित शब्द आजकल पंजाबी बोल चाल में पर्याप्त प्रसिद्ध है। जैसे "सद्दा दे आउ—" अर्थात् निमंत्रण दे आओ। परन्तु यह शब्द प्राकृत के शुद्ध रूप—सद्द / शब्द—से शुद्ध क्रिया के रूप में प्रयुक्त हुआ हैं।

कप्पियौ वीर विजैपाल पुत्तं। (१२-७)

यह "कप्पियौ" क्रिया आजकल भी मुलतान तथा सरगोधा आदि प्रदेशों में साधारण बोल चाल में प्रयुक्त होती है। यथा—"ओहने ओहदा सिर कप्प् छडया=अर्थात् उसने उसका सिर काट दिया। 'कप्पियौ" क्रिया "क्लृप् छेदे" धातु से शुद्ध प्राकृतिक रूप है। इसी प्रकार—नप्पिय= नप्प लिया, दबोच लिया, संस्कृत "नप्तृ छंदे" धातु से है। टोरं=तोर= (संस्कृत-त्वरा) चाल गति। गुज्भ, (संस्कृत-गुह्य) उग्गाह—प्रसिद्ध (संस्कृत-उद्गम)। तथा:

१. जु कछु सद्ध मन में भई (१६७५), सद्ध=इच्छा=साध।
२. गहिय चन्द रह गज्जने १६ २), रह=(फा०) राह=मार्ग।
३. इम अष्षै चन्द वरदाई ६-१६६, अष्षै = संस्कृत-आख्या) कहता है।
४. अंत असि तुसि (संस्कृत-युष्मद्, अस्मद्) (१०-६८)
५. तक्कै वह पृथिराज (१६-३७, तक्कै=देखता है।
६. जित्या वे जित्या (४-२८, जित —संस्कृत, "जि" धातु से क्त प्रत्यय)
७. जे हुंदे दर हाल (४-३)—(होते-हिन्दी) आदि पंजाबी भाषा के शब्द प्रस्तुत प्रति में प्रयुक्त मिलते है।

६—फारसी अरबी—के शब्द भी कुछ मात्रा में यहां प्रयुक्त हुए हैं। परन्तु कवि ने इन शब्दों को भी अपनी चारणी भाषा के ढांचे में ढालने का प्रयत्न किया है। यथा:—

१. नागौर नरेस नृसिह सही (७-४३)।
२, सालह विहालह ७-६५)।
३. अंभोरूह मानन्द ६-१६)।
४. रोस के दरिया हिलोरे (६-३५)
५. किय मीर बंदा (६-३५)।
६. वंस छत्तीस आबेह कारे ६-३६)
७. धर हल्लै मौजे=(मौजमें, आनंद में) (१ -५)

८. जिरह जंजीर (१०-६)
९. साहियं बाग़ गट्ढे जिलारा (६-११४)
१०. मुहम्मं मुकामं सु हिंसार कोटं (१३-४३)
११. पूय पूय सुरतान कहि (१३-६०)
१२. हबह् दीपक जाल (२-५२)
१३. लटी लच्छी नूरं (१-१२)
१४. गुमान जिनि करहु (१५-४
१५. भिस्तहिं गयौ (१६-२०)
१६. दये मालिया आनि सो दाम दामं (१-४४)

इसी प्रकार :—

अजब्ब (२-१४)
वजीरं (५-२)
गिरिवांनह (१७-४८
बे अदबी (१४-१)
सायरी जिहाज़ (११-६४)
मसूरति (१५-५१)
मुजक्कं सु ताजी (१४-८०)
मुसाफ (१५-४८)
कहर ५-७७
अवाजं (५-८)
हजूरं (६-१६)
नजीक १३-६८)
षैरीदं दुसमन (१४-१४)
हूर (१५-४६)
षवास (१७-१)
मरद (१७-२५)
फुरमान (१४-२)
कुरांन (१५-५१)
सिलहदार (१६-४६)
आलम्म फौज ४-२०)
मिहिमान ६-१७)
अदब्बु (१६-४०)
फ़रजंद (१८-५५)
उम्मेद (१५-४७)
हसम (१३-२)
मालूम (१५-२४)
निसांन (१३-६६)
दोज़क (१५-४६)

१०—यहां कुछ ऐसे अनुरणनात्मक अथवा ध्वन्यात्मक शब्द भी हैं जो कि विशेष रूप से चारणी भाषा के द्योतक कहे जा सकते हैं :—

(क) धर धार धमंकि धमंक्कि रनं (८-८८)

(ख) डह डहति डम्मर डंकिनिय (१८-२७)

(ग) हय गय थल धसमसहिं, सेसु सलमलहि सलक्कहि (६-१०८)

(घ) रणंकि झंकि नूपुरं। ६-८१)

११—एक ही शब्द अनेक रूपों में मिलता है। अर्थात् एक ही शब्द विभिन्न रूपों में हैं। कुछ उदाहरण देखिए :—

१. पुहुमि, पृथिमी
२. सोवन्न, सुवन्न, सोवन
३. झीन, षीन, छीन (झीन=जीर्ण, षीन अथवा छीन=क्षीण से है)
४. सीह, सिंग, सिंघ।
५. असु, अंसु, अस्सह, अस्व, अश्व।
६. सेत, स्वेत, श्वेत।
७. छन, षन, षिन, षिन, छिन, छिनकु।
८. सेद, स्वेद, श्वेद।
९. गैन, गयन, गगन।
१०. रवनि, रवन्नि, रमणी।
११. रच्छस, रष्षस, राक्षस।
१२. नैर, नइरा, नयर, नगर।
१३. दीग्ध, दीह।
१४. मुद्ध, मुग्ध, मुगद्ध, मुगद्धह, मुगध।
१५. अष्षर, अच्छर, अक्षर।
१६. सद्द, सबद्द, सबद्दह, सबद, शबद, शब्द।
१७. विहु, विद्धु, विधु।
१८, तूरं, तुरियं, तूर्णं।
१९. दिट्ठ, दिट्ठि, डिट्ठ, द्रष्टि, दृष्टि।
२०. वाय, वाइब, बाव, वा।
२१. गैंवर, गयंद, गयंदह।
२२. गम्भ, गब्भ, गब्भह, गर्भ।
२३. लद्ध, लब्भ, लभ्भ, लभ।
२४. पुहु, पुह, पुहुप, पुहप।
२५. सहार, सहारु, सहकार।
२६. दुज, दुज्ज, द्विज।
२७. गेह, ग्रिह, घर, घ्घर, घरह।

२८. परतष्ष, परतिष्ष, परतच्छ, प्रत्यक्ष ।
२९. समुह, सम्मु, सम्मुह ।
३०. सम्मुहि, सामुहि, सुमुह ।
३१ महल, महिल, महिल्ल, माहिल्ल, महिलह, महलह ।
३२, जुद्ध, जुध, जुद्धह ।
३३. अच्छत, अच्छित, अष्षत, अक्षत :
३४: तिट्ठ, तिष्ठ, थित ।
३५. पष्ष, पच्छ, पष्षह, पक्ष ।
३६. भट, भट्ठ, भट्टह, भर, भरह ।
३७. भुम्मि, भुम्मिह, भुइं ।
३८. पायाल, पायालह, पाताल ।
३९. दुलह, दुलब्भ, दुलभ ।
४०. सब, सब्ब, सब्बह, सबै, सभ, सभौ, सभै ।
४१. अपुब, अपुब्ब, अपूरव ।
४२. इयं, इम, इमि, एमि ।

प्रस्तुत प्रति में तीन चार स्थानों पर गद्य का प्रयोग भी हुआ है। इस गद्य में ब्रज भाषा है। फारसी के शब्द हैं तथा हिसारी बोली का लहजा है। यह गद्य १३ वीं शती का नहीं माना जा सकता। यथा:–

"बहुत रोज भये, ढिल्लिय तैं षबरि न आइ। तब तत्तार षां बोल्या। सिरजनहार करै तौ जिहि हिन्दू पातिसाह सूं बे अदबी करी हैं। भी एक बेर दूत भेजिए। तबहिं दूत गज्जने कूं धाए। केतेक रोज़ दरवारि जाई षरै हुवै।" (चतुर्दश खण्ड)

१३. षट्भाषा--चंद बरदाई ने प्रस्तुत प्रति में कई[1] स्थानों पर छः भाषाओं का जिकर किया है। जैसे कविवर कालिदास को छः भाषाओं का समुद्र कहा गया है :–छटं कालिदासं छ माषा समुद्दं। १-१९६

नवम खण्ड में जयचन्द का दरबारी कवि दसौंधी भाट चन्द कवि को कह रहा है :–

क—रसं नौ छ भाषा, सुभाषा उधारौ। ९-१६

ख—नव रस भाष छ पुच्छन तत्ते।
कवि अनेक भाषा गुन मत्ते ।।९-१७

---

1. षट् भाषा पुरानं कुरानं च कथितं मया० आदि छंद इस प्रति में नहीं है।

कवि ने सरस्वती देवीं की स्तुति करते हुए उन्हें छः भाषाओं की ज्ञात्री देवी कहा है:—

इंदौ मद्धि सुबद्दिमान, बिहनोए रस्स भाषा छठो। ६-१६

जयचन्द भी छः भाषाओं का ज्ञाता है और वह उसी को उत्तम कवि मानता हैं जो छः भाषाओं का विद्वान् हो:—

नव रस सुनि अदिट्ठ रस भाष छ जंपि नृपाल।

वास्तव में बात ऐसी हैं कि मध्ययुग में छः भाषाओं का प्रयोग कविजनों में साधारण रूप से प्रचलित था। और जहां कहीं भी षट्भाषा प्रसंग उपस्थित हुआ वहां संस्कृत तथा प्राकृत के पश्चात् अपभ्रंश का नाम भी लिया जाता है। लोष्ठ देव-कवि की प्रशंसा में मंख ने कहा[1] था कि छः भाषाएं उसके मुख में निवास करती हैं। १५ वीं शती में रचित हम्मीर महाकाव्य के प्रथम सर्ग में छः भाषाओं का वर्णन मिलता है। सम्राट् पृथ्वीराज की प्रशंसा करते हुए जयानक कवि ने "पृथ्वीराज विजय" काव्य में छः[2] भाषाओं का निर्देशन किया है। मंख कवि रचित श्री कंठ चरित टीका से भी यही ज्ञात होता है कि छः भाषाओं में संस्कृत, प्राकृत शौरसेनी, मागधी पैशाची और अपभ्रंश हैं। चन्द कवि ने भी इसी प्रकार उपर्युक्त छन्दों तथा खण्ड ६ के १६-२४ छंदों में भारती सरस्वती तथा विष्णु की दासी लक्ष्मी के मुख से उक्त छः भाषाओं की उत्पत्ति बतलाई है। अतः इस युग में षट्[3] भाषा का प्रचार कवि गण में सर्वत्र प्रचलित था। कवि चन्द ने पृथ्वी राज रासो में उक्त छः भाषाओं को प्रयुक्त करने का प्रयत्न किया है। परन्तु इस प्रयास में उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई। यद्यपि प्रस्तुत प्रति में

1. देखो—का. ना. प्र. पत्रिका, वर्ष ५८ संवत् २०१० अंक ४, "अवहट्ट और उसकी विशेषताएं" लेखक—शिवप्रसाद सिंह।

2. प्राकृत संस्कृत मागध पिशाच भाषाश्च शौरसेनी च।
षष्ठोऽत्र भूरि भेदो देश विशेषादपभ्रंशः।

3. पुनु कइसन भाट, संस्कृत, प्राकत, अवहट्ठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी, छहु भाषाक तत्वज्ञ, शकारी, आभीरी, चण्डाली, सावली, द्राविली औतकलि विजातिया सातहु उपभाषाक कुशलह। वर्ण रत्नाकर, ज्योतिरीश्वराचार्य द्वारा रचित, रचनाकाल संवत् १४८०। डा० सुनीति कुमार चैटर्जी द्वारा सम्पादित।

संस्कृत, अपभ्रंश, तथा प्राकृतों (मागधी, पैशाची, शौरसेनी) के कुछ विकृत शब्द जहां तहां बिखरे पड़े है परन्तु ऐसे शब्दों की संख्या अधिक नहीं है। यहां तो ब्रज (पिंगल) राजस्थानी (डिंगल), अरबी-फारसी तथा आधुनिक खड़ी बोली का बाहुल्य है, और कुछ मात्रा में पंजाबी तथा हिसार प्रांतीय भाषा देखने में आई हैं। अतः इस लघु संस्करण की भाषा को यदि हम चारणी अथवा विविध भाषाओं का मेला कहें तो अनुचित न होगा।

रूप रचना

संज्ञा

लिंग—सिद्ध हेमचन्द्र ने अपभ्रंश व्याकरण में "लिंगमतंत्रम्" कह कर अपभ्रंश में लिंग विषयक अनिश्चितता प्रकट की है। प्राकृत में भी साम्यारोप द्वारा इकरान्त आदि विविध शब्दों के समान रूप देखे जाते है। रासो की प्रस्तुत प्रति में नपुंसक लिङ्ग तो लुप्त प्रायः हैं। आधुनिक विभक्ति चिन्हों तथा संस्कृत की विभक्तियों को छोड़ यहां उपर्युक्त सिद्धान्त ही लागू हो सकता हैं। एक और विशेषता यहां यह है कि अकारांत इकारान्त आदि शब्दों के आगे 'ह" प्रत्यय जोड़कर उन्हें पुंलिग रूप दे दिया गया है। यथा :—भुम्मिह, रतिपत्तिह, मग्गह, षग्गह, आदि। इसके अतिरिक्त ब्रज भाषावत् आकारान्त शब्द उकारान्त बना दिये गये हैं, परन्तु अकारान्त शब्दों की भी कमी नहीं है।

उकारान्त—छिनकु मनहिं धीरजु करहु। ७-७१

आदस करि आसनु दियो। ६-५

एवं—थानु (१५-१). तप्पु (७-५०) आजु (८-४८), हत्थु (६-३१) दीपकु (७-७) सिरु (१६-४३) फारसी-अरबी के शब्दों को भी उकारागत रूप दे दिया गया है दिलु (१६-७८) आलमु, अदव्वु (६-४०)

अकारान्त दस तीनि कबंध उठंत लरे। (१७-४६) लुट्ठि लिए पाषंड सब। (५-३३) कंचन मुहाल करि मज्झि वग्ग। (१६-४६)

एवं—दीपक (१५-१२) सुवन्न (१६३८), हत्थ (१६-४६) तिमिर तेज (१६-५१)

---

1. देखो—अध्याय ४, सूत्र ४४५।

फारसी-शब्द— हज्जूर (१६-७२, असम्मान (१६-५२) कम्मान (१६-५३) अरज़ (१६-७६) फक्कीर (१६-५२)

अकारान्त इकारान्तादि शब्दों के आगे "ह" प्रत्यय लगाने की यहां विशेषता है, परन्तु "ह" सम्बन्ध तथा अधिकरण विभक्ति चिन्ह का भी द्योतक है। यथा

१. जुग्गिनि पुरह (७-१)

२. तरु ताल तमालह साल टटी। (८-५४)

३. सुनि सद्दह (६-२७)

४. दासि कर कंतह (७-६)

एवं—वीरह (१५-६६) श्रोनह (१५-५६) चहुवांनह (७-५) संस्कृत के अक्प्रत्यान्त समस्त शब्द पुलिङ्ग में हैं :—

दर्प्पक (१५-५५), कंधक (१५-७३) कंगूरक (१५-२५) संस्कृत के 'इनि" प्रत्यान्त शब्दो को छोड़ शेष समस्त ईकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में है :—

१. मुष चन्द रवनी (६-४३)

२. भीन लंकी (६-४४)

३. युद्ध वत्तरी सपत्ती (६-२०)

४. रंगी रंग भूमी (१६-१८)

५. मिली सत्थ मत्थे अनी एकमेकं (१६-३)

एवं—वारुनी (१६-१, मुत्ती (१६-३४, जोगनी (१६-१७) नट्टिनी, वहिनी, संचनी (६-४३)

अपवाद—बंदी (१६-५७), अनंदीं (१६-५७) संस्कृत "इन्" प्रत्यान्त।

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

इ— पंगु पुत्ति (६-७२), गत्ति (१५-५८), कित्ति (१५-६५)

अपवाद—असपत्ति (१५-५६, नरपत्ति (१५-६८) वाजि (१६-३८)।

कदाचित् ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों को "इय" "इह" तथा "ईह" रूप दे दिया गया हैं :—

इय—पुत्रिय (११-८५, अच्छरिय (१०-३७), कनक लट्ठिय (८-८१) सुंदरिय (६-६४) देव्रिय (१५-३६, धरनिय (१६ ५८)

अपवाद—छत्रिय (१६-४), स्वामिय (१६-५), गोरिय=शहाबुद्दीन-गौरी (१६-१४)

इह --जो छंडे सी सुत धरनिह (७-५६)

ईह –थावर गत्तीह (६-५६)

पुल्लिग उकारान्त शब्द वकारान्त रूप में प्रयुक्त हुए हैं :—
विधुव (७-२७), मधुव (६-२२), गरुव (१३-६६),

परन्तु शुद्ध उकारान्त शब्द भी जहां तहां मिलते है :—

विधु (१६-४६), मधुर मधु (१५-२४), अश्रु (१५-१४, समस्त ऊकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में हैं :—

राज बधू (१७-४३) आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में हैं :—

१. कहे काया यह गंदी (१५-४७)

२. राज ! तू आग्या अवनि सेव (१६-५)

एवं—विथा १५-४, माया (१५-४०), कला (१५-२, लज्जा ।।१५-६।। अपच्छरा ।।१६-२५।।

अपवाद—गोवच्छा ।।१६-४१।। पिया पिय ।।१५-३१ अकारान्त शब्दों को स्त्रीलिंग बनाने के लिए "इनि" प्रत्यय :—

१. कुरंग कुरंगिनि कोकिल कीर ।।१-८८।।

२. सब ग्वारिनि ढुंढै फिरि ।।१-८४।।

३. दुत्तनि उत्तरु दिय । ।।६-७२।, सुलषिवनि ।।६-१५७।।

स्थावर वस्तुओं का लिंग निर्णय वस्तु के आकारानुसार है :—
(आधुनिक हिन्दीं में भी ऐसा ही नियम है)

१. तार (स्त्री०) वज्जी हरं ।।१३-३३।।

२. ढाल (स्त्री०) ढुंढी सुरतांनह ।।१६-४८।।

३. उठी श्रोन छिछ्छी ।।१६-५६।।

४. बड़ी जंग (स्त्री०) लग्गी ।।१६-२।।

५. हम दिय छत्र (पु०) जु छांह कौ । ।।१६-४१।।

पशु पक्षियों का लिंग प्रकरणानुसार ही ज्ञात हो सकता है :—

१. सुनौ तुम चंपक चन्द चकोर ।।१-८६।।

२. कहो कहं स्याम सुनौ षग मोर ।।१-८६।।

यहां "चकोर" तथा "मोर" का लिंग स्पष्ट नहीं है ।

वचन

रासो की भाषा में दों ही वचन हैं। साधारणतया व्रजभाषावत् बहुवचन के किये "इनि" और "अन" प्रत्यय जोड़ दिया जाता है, और कदाचित् बहुवचन सूचक विभक्ति लुप्त प्राय हैं :—

इनि—१. थके अंग अंगनि ताहि ।।१५-४।।

२. दुरे अवहि इनि कुंजनि मांहि ।।१-८७।।

३. लियो दधि दुधू त्रियानि पै दान ।।१-६३।।

एवं — दस मासनि ।।१-८६।। हस्तीनि ।।१४-११५।। शत्रुवनि ।।१६-४१।। अंषिनि ।।१५-१।।

अन १. सामंतन सूरन हन्नहं ।।११-८१।।

२. कवियन मन रंजहु ।।४-२०।।

३. नृपतिन छत्रन लगै न पारि ।।१०-४।।

४. महिलान कमलान ।।१३-६।।

बिना विभक्ति :—(निर्विभक्तिक शब्द आधुनिक हिन्दीवत् हैं)

१. सुक पिक पंषि असंषि वसहिं ।।३-३६।।

२. सट्ठ लक्ष परजंक कोटि दस पट पटंबर ।।३-३।।

रासो-भाषा में प्रत्येक प्रकार के शब्दों के आगे "ह" जोड़ने की विशेषता है। "ह" केवल एक वचन सूचक है, "हं" एक व० तथा बहु व० दोनों का सूचक है :—

एक वचन	बहु वचन
१. अति सुंदर सुंदर तनह ।।१-११३।।	२. दस तीन गयंदहं ।।३-२।।
	३. वर वरस पंच दंपति दिनह ।३-२

विशेषण — विशेषण शब्दों का लिङ्ग चिन्ह अनियमित है। कदाचित् विशेषण-लिङ्ग विशेष्यानुसार होता हैं और कभी नहीं : —

(हिन्दी आधुनिक में भी ऐसा ही नियम है)

१. थार गत्तिह ।।६-५६।।	२. रत्तल दिसह ।।२-१५५।।
३. जहां सेत दंतिनि ।।१८-४।।	४. कालीय साप ।।३-६०।।
५. रत्तलिय नन पिंगिय कुच नंगिय। ।।१८-२।।	६. कला सच्छ सीषै ।।२-६।।
७. पिछली पिरती ।।१५-२५।।	८. अच्छी सु रैन ।।१५-४७।।

कारक—डा० तगारे के कथनानुसार[1] अपभ्रंश में कारक चिन्ह सात की अपेक्षा तीन ही शेष रह गए, और कहीं पर दो विभक्तिएं पाई गई हैं। अर्थात् कर्ता और कर्म का एक ही चिन्ह है। इसी प्रकार करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण का भी एक ही विभक्ति चिन्ह है। रासो की प्रस्तुत प्रति में संस्कृत तथा आधुनिक विभक्ति चिन्हों को छोड़ कुछ उपर्युक्त ढंग के ही विभक्ति चिन्ह हैं :—

कर्ता—कर्ता सदा विभक्ति रहित है :—

१. हम कहि उरह दहंत ॥२-१०॥
२. चाइ चवै चालुक्कराउ ॥४-२॥
३. जा जुन्हाई चंदराज गोरी गुर वंध्यो ॥३-१॥

कर्म — १. मल्ल मारि पच्छारित कंसहि ॥१-१७॥
२. तहं सावंत मारि, दच्छिन कंधर धुक्कियौ ॥१०-६॥
३. लषितु सुनाइ सुनाइ ॥६-२६॥
४. कूरम्मां कूँ परै ढाग, ढिल्लिय उच्छारिय ॥१४-११३॥

करण — १. नागौरे गुरुवे गुर्नहि ॥२-३६॥
२. भट्ट वचन सुनि सुनि, नृप कार्नहिं ॥७-६०॥
३. चढिग सूर सांत सह ॥१०-१॥

पथक विभक्ति चिन्ह:—(भारतेन्दु युगीय खड़ी बोली के विभक्ति चिन्ह भी ऐसे ही हैं)

१. षुर सौं षुर षुंदइ ॥१२-१३॥
२. परि अरारि हिंदुवान स्यों ॥५-६०॥

सम्प्रदान— यह कारक अधिकतर पृथक विभक्ति चिन्ह के साथ प्रयुक्त हुआ है:—

१. काहे लगि जुज्झै ॥१५-३१॥
२. सुद्रन हेत ॥६-८॥
३. नृप तिहिं रष्षन काज ॥१२-२॥

---

1. See—Historical Grammer of Apabhramsa, by Dr. Tagare-Published-Daccan College Poona.

अपादान—पिभक्ति चिन्ह :—तै, ते, सौं, सुं ।
तै—आइ दूत ढिल्लिहु तै ॥२-२४॥
ते—मनौ देवता स्वर्ग ते मग्ग भुल्लै ॥८-४८॥
सौं—सावंता सौं यौं कह्यौ ॥१४-६५॥
सुं—बोल्यौ जु बोल चहुवांन सुं ॥१३-५५॥

निर्विभक्तिक—सैरंध्री उर जन्म, नाम वीरम रावत्ता ॥११-११८॥

सम्बन्ध— १. गंगह उदक ॥८-५८॥
२. पुंडीर राइ चंदह तनौ ॥६-११॥
३. पयाल जल उच्छलत ॥६-११॥
४. परनि पुत्ति जयचन्द की ॥६-१७५॥

अधिकरण— १. चषे अग्गि छद्दं ॥१-६॥
२. कंध अरोहण मग्गि ॥ १-८३
३. छिनकु मनहि धीरजु करहु ॥ ७-७
४. अंगुलि मुषह फनिंद ॥ ७-५७
५. एक थान दच्छिन दिसहिं ॥ ८-३२
६. पुच्छत चंद गयो दयवारहं ॥ ६-४

निर्विभवित:—१. तुवं हाथ दत्तं ॥१-३०
३. चढ़ि विमान जय जय करहिं ॥६-१२
३. भावति सषिसु ॥ ६-१३५

पृथक् विभक्ति चिन्ह—
मैं—उर मैं चित्त लज्जे ।
म्मै—ब्रज म्मै विहारं ॥१-२७
मांहि—कुंजनि मांहि ॥ १-८७
महि—सर महि द्रव्य अदिट्ठ ॥ २-३८
मध्य—रैनि मध्य ॥२-४१
मज्झि—रजनि मज्झि नरनाह ॥ ७-१५
मज्झु—महि मज्झु ॥६-५॥
मज्झार झंझा मज्झ रह ॥ ८-५१

सर्वनाम

उत्तम पुरुष—मैं (अहम्)

एकवचन	बहुबचन
हौं—(ब्रज) हौं लज्जा करि का कहौं। ॥६-६७	हम—हम गुरुजन तै कहहिं। ६-४५
हों—हों पुंडीर नरेस होत। १३-५०	हमहिं हमहिं गोरी घर लग्गि। १४-५२
हुँ हुँ जड़ तूं वड़ गिद्धिनि। १७-५५	वयं—वयं मेच्छ मत्तं। १-१८२
मैं—मैं भ्रम काज रिसाविय। ६-७	
मै न मै षग्ग संग्रह्यौ॥ १३-५५	
अहं—अहं बंदिनं देवि तो पास सेवं। ५-४३	

अन्य रूप

मुझ करौ मुझ आपं॥ १-१०६

मुहि—दूषन मुहि न विशेष॥२-३४

मोरे—मोरे दलिद्द तिनि कियो होम॥ २-२८

मोर—सगर मोर सिर मोर देह रषी अजमेरी॥ १२-६६

मो—मो पितु जुग्गिनि पुर धनी॥ ११-८८

मेरी—पंचनद मेरी मेरी॥ १५-३०

मध्यम पुरुष "तू"

एक वचन	बहुवचन
तू—तू क्यों राज अरत्त। २-१६	तुम—अप्पिय ढिल्लिय तुम। २-४७
तूं—तूं कवि देत असीसहि छुट्टहि।	तुमू—तुमू गल्हां लग्गै बुरी। १५-३३
तैं—तै झूठ जु कुन्नो। १३-५३	तुमुहि—तुमुहि वचन समान वन। २-११
तो—तो भुज उप्परि षिल्लिय।१४-७६	
तौ—तौ बुज्झहु अप्पन घरहु। ११-१०५	तुम्ह—हम तुम्ह दुसह मिलग्गि। १२-१७
तुहि—तुहि अप्पौ ढिल्लि तखत। ६-६६	तुम्हह—हम सु देषि तुम्हह अरति। १५-२५
तव—तब पुत्रह पुत्रबधू उरणं। २-२२	तुम्हारि—कहे जैत पंवार परी वग्गरी तुम्हारी॥ १४-१२६
तुवं—तुवं हाथ दत्तं १-३०	

तुअ—सो तुअ तात दल दव लित्तौ ।
६-१८
तोहि—नहि रष्षु कवि तोहि । ६-६१
तुज्झ तुज्झ विरद इमि कहहि ।
१३-५४
तोसों—ताते तो सों कहुँ । १४-११२

प्रथम पुरुष—वह

एक बचन

वह—बरस छत्तीस मास वह । ६-४३
वौ – जानि पंगु चहुवांन वौ,
मुष जंपौ यह वैन । ६-१०३
वा – दैव काल वा तूल मिलि ।
१५-२०
सो सो सुनंत सामंत मंत । १५-१२४
उंहि—इह उंहि दुहुँ मन इक्क है ।
उस—उस षिनि ।। १७-४३
ता - ता उप्पर तिहि दिवस राज ।
१४-८४
तं – नृप तं बल्लह संजोग । १४-१८
तामं-- दियं मुद्रि तामं ।। १-२३
ताम—रजु ताम नैनं ।। १४-८७
तिहु – तिहु समाधि ।। १२-६८
तसु—तसु कटक ।। १६-३४
तास—अंगन तास सहार ।। ६-१६
ताहि—धीर निहारौ ताहि । १३-८६

बहु वचन

वे—घर अंजुलि जल उठि ।। १२-१
उन—तज्यौ उन संग ।। १-८७
उनै—उनै हस्ति ठेल्यो, इनै सींह
दीनौ । १३-८०
उनहिं—उनहिं गनि तुज्झ गनि ।
६-१३
तै—तै कवि वरनि सत्ति ।। १४-७२
ते—ते बत्तीस हजार ।। १५-६०
वै – वै निसान समरत्थ रथ । ५-५६
उहे उहे वार रज्जी ।। ८-८६
तिहिं नमित कियो तिहि सीस ।
१४-६५
तिहि—तिहि दिवस पृथिराज कर ।
१४-४८
तिनि—मोरे दलिद्द तिनि कियो होम ।
२-२८
तिन—अस तिन बोलहु । ६-७
तिनह—तिनह दंतन तिन मंडिय ।
४-५
उन्हां उन्हां कहि ।। १५-३०

निर्देशवाचक सर्वनाम "यह" (इदम्)

एक वचन	बहुवचन
यह—कवियन यह कहै ॥ ८-६४	इनि—दुरे अब हि इनि कुंजन मांहि । १-८७
इयं—इयं जुद्ध हद्द ॥ १८-३	इन—इन पूजन जामन ईस गनं । ३-२४
इय इय कहि दासिय अप्पि कर । १४-४२	,, इन मैं को पृथिराज ॥११-१३२
इअ—इअ अग्गै तरी ॥ ५-८०	
इह—इह उंहि दुहुँ मन इक्क है । ६-६०	

यह (एतद्)

एक वचन	बहु वचन
एह—कहन एह कविचन्द सुरत्ते । ॥६-१८॥	ए - ए लच्छन छिति हैं न । ॥६-५३॥
एहि -एहि वानि चन्द सुनि, धुनिग सीस । ॥१६-६२॥	
एम—एमि-एम नाद उच्छरचो, एमि एमि सूर चढचो । गयंदहं ॥६-१०८॥	

एषह—एषह सुष सहाय कुंभ सहिता ।
एहा—एहा मत्त परट्ठयो । ॥ ४-६
एन—भ्रम्मियं एन लच्छि सु रत्थं ॥ १०-४

सब (सर्व)

एक वचन	बहु वचन
सब्ब सब्ब कुरुवंस रायं ॥१-६८॥	सवै—सवै सैन चन्द ॥८-२॥
सब्बह—वेर सत्ति सब्बह अग्गिले ॥६ ५३॥	सव्वै—असी मत्त सव्वै । ॥८-२॥
सम्भ—सम्भ धीर रत्ते सरस । ॥११-४८॥	सब्बै—सब्बै मुसाफ तुम । ॥१५-४८८
सभ—सभ धरा धाम निधाम । ॥१-१२४॥	सबरे—सबरे सौं संग्राम राजनह वा राजनि ॥१४-११३॥
सब्बु—सब्बु मन । ॥१०-६०॥	सव्वन—सव्बन तब विचारु करि । ॥६-१२६॥

अनिश्चय वाचक सर्वनाम-कौन (किम्)

एक बचन	बहु वचन
कौ -- कौ तूं पठान अंगवन पति ।	के के कोन गए महि मज्झु ॥६-६॥
को -- को मातु पिता, को तात तुम । ॥१४-८५॥	किन -- किन साइर थाहयो ॥१३-५७॥
केहु--केहु ना घर जरौ हत्थ ॥१४-११७	किनि -- रावण किनि गड्डुयौ ॥७-६७॥
कौन कौन सिंघ स्यौं ससा षेलि जीवत घर आयौ । ॥१४-५७॥	किनै--किनै न निरष्षहि राज । १४-३३॥
कौनु - सहै कौनु मार ॥४-१७॥	केवि--केवि रट रठति ॥६-४४॥
कौनि -- घरै कि लग्गि कीनि । ॥१४-७० ।	
कुण--अरि असि लष्ष कुण संग मैं ।	
कोइ--कोइ तष्षु इन्तउ सहै ।	

प्रश्न वाचक सर्वनाम क्यों (किम्)

कवन--कवन काज कवि अत्थयौ । ७-६०	काहे -- कहो काहे ते हल्ली ॥ १४-८५
किमि--किमि जग्य होइ ॥ ६-१५	किन्न -- लवि किन्त न कहता १०-४
किम-- गोरी किम रुक्कै ॥ १३-५६	क्यों -- क्यों तुमहिं सुहायौं ॥ ११-१०८
किहूँ--किहूँ बंध ब्रध्यौ ॥ १-३६	क्यौं -- क्यौं करे आज ॥ ४-४०
किधुं--किधुं रत्न सुं कनक मिलि कंज कोरे । ॥ १-१४३	काइ--ध्रम्म न काइ थप्पै ॥ ४-४०
किमै किम- किमै किम सेस सह भार डहियं ॥ १०-७	काइ - जै कांइ जुइयौ ॥ १४-५४
	केति--सामंत मंत केति कहौं । ॥ १४-५५

एक वचन

संबध वाचक जी (यत्)

जु - जु इह रहै । ॥ ४-६४

जौ--जौ घन सघन मिलंत । ॥ १३-५८

जै-- जै काम सुर सद्धन करै । ॥ १५-३०

जाके=जाके जकि ब्रह्मा न ब्रह्मंड लहियं ॥ १०-३

जिहि--सब्ब हत्थ जिहि हनहिं ॥ ६-४३

जिह—जिह सावंत सजि ॥ २-६८
जेन—जेन सिर धरि छत्र ॥१४-६३
जसु—जसु जुग्गिनि जय जय करहिं ॥ १७-२६
जासु—भुजाइ जासु तुंबरं ॥ ७-२६

बहु वचन

जे—जे संसार आदि सांइ ॥ १६-७
जिहिं—जिहिं सत्त फेर ॥ १३-४६
जिने—जिनै विश्व राष्यो ॥ १-१६६
जिन्नै—जिन्नै नाम एकं ॥ १-१६६
जिने—जिने हेम परवत्त ते सव्व ढाहे ॥ ६-३१
जिनके—जिन के मुष मुच्छरु मुच्छरिया ॥ १५-७१

निजवाचक आप

अप्पु—निजै अप्प लाहौर लुट्टी समाहं ॥ १३-७६
आपु—आपु कवि पत्ते ॥ ६-१७
आपं न लघुव आपं ॥ १४१
अप्पहि—अप्पहि अप्पा जुरिग ॥ ५-७
अप्पु—अलस नैन अलसाइत अप्पु किय ॥ ६-५३
अंप्पनै—आप आप्पनै भाग ॥ १४–७२
अप्पनु—गहि साहि हत्थु अप्पनु करचौ ॥ १३–५५
अपं—अपं आप गेहं ॥ १–६०
अप्पनि—अप्पनि सुष ॥ ३–१५
अप्पनो—मरण अप्पनो पिछान्यो ॥ १२–२५
आपने—घर वैठे आपने, बोल तुम बहु वोलह ॥ १३–४०
अपु—अपु अपु इच्छ साज ॥ ११–५६

संबंध वाचक सर्वनाम

जेम—चंद जेम रोहिनि उनहारि ॥ ३–६
किहिव—किहिव सूर संग्रह्यो ॥ १:–५७
जिविं—जरे जिविं ॥ ८–१०१
इसौ–जिसौ—इसौ राज पृथिराज, जिसौ हत्थहि अभिमानह ॥ ६–५३

इमि— इमि भार अट्ठार, वृच्छं सुहायं ॥ १-३६
जिम-तिम— जिम जिम सु सीह शिव, तिम तिम शिव शिव जप्पो ॥ १२-७४
इमि-जिमि—अभिलाष सुष इमि चंद, जिमि रुकमिनि रु गोविंद ॥ ३-४३

परिमाण वाचक सर्वनाम

इत्तनै—इत्तनै सहित भुवपति चढयौ ॥ ४-२४
इते— इते सकुन अति सच्छ ॥ ८-२८
इतो—इतो झूठ न तू कहै ॥ १३-५७
इत्तन—कवि इत्तन उत्त सुनै सुभवै ॥ १४-७५
इत्तै —'ब्रज) इत्तै चारु चरित्त ते गंग तीरे ॥ ६-४७
एति—दरबार भइ एति पुकार ॥ ६-५७
एतो - एतो वर मति हीन करो ॥ २-५०
इत्तउ—जो न सूर इत्तउ करत ॥ १८-४८
जित्तै (ब्रज)—जित्तै ग्वाल सत्थं ॥ १-५४
जतै—जतै नयर सुंदरी कहि ॥ ८-७०
जित-तित–जित रुधिर बुंद थल परहिं, तित कंदल हल उट्ठहिं भिरन १४-६३
जिके-तिके—जिके छैल संघट्ट वेशा सुरते
तिके द्रव्य के हीन हीनेति गत्ते ॥ ८-८६
तिते—तिते सज्जिए सूर सब्बै तुषारा ॥ १८-११५
इत्तनै—ति इत्तनै सहित सोर वाजित्र वज्जइ ॥ १०-११
केतन—निरषे तन केतन अच्छरिषा ॥ १ -७१

अव्यय

यहां प्राचीन तथा आधुनिक दोनों प्रकार के अव्यय देखने में आए हैं

अवर—अवर सावंत कियो ॥ २-४१
अरु—सामदान अरु भेद दंड ॥ ४-१०६
औरे—नृप वरु औरे निर्मवे ॥ ६-५१
आपुब्व—आपब्ब कवि चंद पिष्यौ ॥ ६-११६
अपुब्ब—प्रभु अपुब्ब ठट्ठहं अदिलु ॥ ४-६

अब्ब—करि जग्गु अब्ब ॥ ६-१७
अद्भुत—अद्भुत रस वीर रस ॥ १२-६२
अब—अब उपाउ सुझ्यौ इकु संचौ ॥ ७-७४
जहां-तहां—जहां तहां अंकुरि परिय ॥ ४-२१

समेव—गौ नृप वलह समेव ॥ ३–४
समान– दानौ समान ॥ ६–३०
समं – समं विज्जराजं ॥ ८–६
तत्र—सुविहान तत्र ॥ ६–२६
जत्र—सु जत्र जत्र धाम वाम ॥१–७२
इत्थ—इत्थ पुच्छै कहो जो गुद्दरे सुरतांन ॥ १६–२६

एवत्थ – एवत्थ परदार दिट्ठु ॥ १८–२३
ज्यौ—ज्यौ भौरे अंब धाइ ॥ १४–११५
यौं—दुहं राइ महाभट यौं मिलियं ॥ १५–६७

संख्या वाचक (Cardinals)

१. तूँ ही एक आदी ॥ १–६३
 एकह ॥ १०–५५ इक १–८०
 एकु ॥ १०-२३ यक ॥ १५-५०
२. वाचिज्जे वीअ नारद्द जेहा १६-६३
३. त्रै वार ॥ ३-१७ तीनी ॥ ११-६६
 तीनह ॥ २-४३ तीन ॥ १६-१०३
४. चारि ॥ १-५ च्यारि ॥ १०-५६
 वर वरस पंच दंपति दिनह ॥ ३-२७
६. छ छत्रिय छत्र ॥ १४-११०
७. सत्तह समय ॥ २-४१
८. अट्ठ ॥ २-४२ अठ ॥ २-७०
६. एवं-वीस तीस ॥ १६-५६
 त्रीस ॥ २-४२
 तेरह तीस ॥ १२-७४
 षंट्ठुवीय वरस ॥ ६-२४
 वत्ती सैं लष्षन सहित ॥ ६-४३
 अठताली सै चैत्र मास ॥ ४-१७
 चवसट्ठि सद्द जय जय करहिं ॥ १२-३०

१०. दस मासनि ॥ १-८६ दह ॥ ११ २१
११ एकदह ॥ ७-४२ एकादस ॥ ७-४३
१२.
१३. तेरह ॥ ११-४२ तेर १४- ८
१४.
१५. दह पंच २-५१
१६. सोरह ११-७१
१७. सत्रह २-११
१८ अट्ठारा १७-२६
 अट्ठार १-३६
 पंचशत ॥ १५-२७ सहस ॥ ६-८६
 पंच हज्जार
 दस सहस्त्र दुहं भुजा ॥४-७६
 सु पंची हजारं ॥ ५-४३
 पंचै हजारं ५-४३
 हजारहां ॥ ४-१२
 वेद लष्ष तरवारि ॥ १३-८७
 सवा लाख सेना ॥ ५-६५
 डेढ हजार ॥ १४-६८
 सुवर्ण भार लष्ष एक । ६-२४

संख्या वाचक (Ordinals)

१. भिरचौ अकिल्लौ ॥ १२-१३	२. इकल्लौ पुज्जे ॥ १३-५२
३. जानहु पहिलूना ॥ १५-३२	४. तुच्छै सहदे पहिल्लौ ॥ ७-६६
५. वियौ घट्ट थप्पै ॥ ५-२१	६. सज्जिया बंभ कैलास वीय ॥६-२२
७. इक्क राउ संभरो वियो ॥ ३-४५	८. दुवौ पष्ष गंभीर दुह ॥ १२-४४
६. ग्यारहु ससि तीजौ ॥ १६-११	१०. तियौ जाव जद्दौ ॥ ५-३८
११. त्रियत दिवस त्रिय जामिनिं ॥ ८-३८	१२. चवै सुवक देवं ॥ १-१६८
१३. नले रूप पंचम्म ॥ १-१६६	१४. छठं कालिदासं ॥ १-१६६
१५. सतं दंडमाली ॥ १-१६६	१६. संवत्सर वावना ॥ १३-३५
१७. ग्यारह सै इक्कावना ॥ ८-१	

क्रिया

अपभ्रंश में संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की तरह क्रिया को भी बहुत सुगम बनाने की प्रवृति रासो में दिखाई देती है। कुछ अनियमित से रूपों को छोड़कर संस्कृत के दस गणों में से एक ही शेष रह गया है यहां द्विवचन तो रहा ही नही। एक वचन बहुवचन दोनों का कार्य एक ही प्रकार की क्रिया रूप से चला लिया है। कहीं एक आध रूप को छोड लङ् लिट् और लुङ लकारों के रूप दृष्टिगोचर नहीं होता क्तान्त रूप का प्रयोग पर्याप्त रुप में मिलता हैं। आत्मनेपद का सर्वथा लोप है। लट् के रूप तुमुन्नन्त, त्कान्त आदि कृदन्ती रूप शेष रह गए। नामधातु क्रियाओं के रूप भी पर्याप्त संख्या में प्रयुक्त हुए मिलते हैं।

वर्तमान काल

१. अधिकतर वर्तमान कालिक क्रियाए "ह" प्रत्यान्त हैं। एकवचन तथा बहुबचन के रूप प्राय: समान रूपात्मक हैं। परन्तु कहीं कहीं बहुबचन रूप "हं" प्रत्यान्त भी देखा गया है :—

एकवच०	बहुव०
नर वीर दिवा दिव सु पुच्छह धूमंग धूप डंबरि किलकिलंति--डबरु करह ॥ ५-१६	वेद लष्ष तरवारि नेजा पसरंतह। अट्ठ लष्ष घोर धार, मेघ जिमि-सर बरसंतह ॥ १३-८७

२.एक वचन में "हहिं" तथा बहुवचन में "हिं"[1] प्रत्यय जोडने से:—

एकवच०	बहुव०
पुंडीर चंद इम उच्चरहि ॥ २-२७	धवल चढि निरष्षहिं नारि ॥ २-५४
लज्जहि वहल वज्जन भार ॥ २-५३	द्विजवर चवहिं आसिष वेद ॥२-६१

३. "ऐ" अन्तक क्रियाएं एकव० तथा बहुव० में समान हैं :—

इम जंपै चन्द वरद्दिया ॥ ७-५६	जगन्नाथ पुज्जै दिनहिं ॥ ३-१
चाइ चवै चालुक्क राउ ॥ ४-१	तहं टोप टंकार दीसै उत्तंगा ।१०-६

४. 'औं" तथा "उ" अन्त वाली वर्तमान कालिक क्रियाएं केवल मध्यम पुरुष में एक वचन की द्योतक हैं :—

सीसह धरौं ॥ १४-१२१	जे न जु इत्तौ करौं ॥ १४-१२
सामत मत केतो कहौं ॥ १४-५५	लै आउं जालंधराइ ॥ १५-१२

५. "इ" अन्त वाली क्रियाएं सदा एक वचन की द्योतक हैं ,—

क –विथा विथ कंपित, जंपइ सोई ।

क इक पुच्छइ, क इक उत्तरु देइ ॥ १५-५

ख –धर ठुट्टइ षुर तालन ॥ १२-१६

ग—दीपक जरइ सुमंदा ॥ ७-७

घ—सस्त्र छत्तीस करि, कोइ सज्जइ, ति इत्तने सोर वाजित्र वज्जइ

एवं— निब्भइ ॥ ७-७२, सिर टुट्टइ ॥ १२-२८ कोल करक्कइ ॥ १३-५६, कुल रष्षइ ॥ ११-१०६ गज कुंभ उपट्टइ ॥ १२-२५, निट्ढरइ ढाल ॥ १२-६

६. स्त्रीलिंग में आकरान्त एक वचन द्योतक क्रियाएं :—जीता, पीता ॥ १५-११५, और कदाचित् "ई" "न" तथा "न्नी" प्रत्यान्त हैं :—

क—दुवं जंग लग्गी ॥ ४-१४ | ख—जुद्ध वत्तरी सपत्ती ॥ १६-२०

---

[1] जायसी के पद्मावत से तुलना करिए :——

चमहिं (खण्ड ४२-२५) टूटहिं दांत माथ गिरि परहिं (४३-१)

लोटहिं कंधहि कंध निनारे (४३-११) लोटहिं टरहिं (४३-११)

आगे चल कर "रामायण" में तुलसी दास ने भी ऐसी क्रियाए प्रयुक्त की हैं ।

ग–मनौ मेनका नृत्ति ते ताल चुक्की ।। ८-६२

घ–चढ़ी चक्क चौकी हुइ जोरं सोरं ४-१५

ङ–किलकार गज्जी ।। ४-८६

च–धर थक्की ।। ५-६०

छ–जंगूरी विट्ठन्नी ।। १८-६

ज–मुट्ठी भिन्नी ।। १८-६

झ–मनिषी मही छीनी, तिस उप्परि-कीनी ।। १८-१०

७. संस्कृत के "शतृ प्रत्यय वत्" पुलिंगी क्रियाएं :–

क—पुच्छत चन्द गयौ दरवारह ।। ८-१६८

ख—झलकंत कनक दिष्षियहिं नारि ।। ८-८०

ग—दिपंत तुच्छ दिट्ठए ।। ७-११

वर्तमान काल में :—

१. दासी निशि विलसंत ।। ७-११

२. सुहंत जासु तुंबरं ।। ७-२७

३. विहुरंत रत्त विछुरंत छाति ।। ६-३६

एवं— कहंत, दहंत ।। २-२७, धरकंत ।। ४-२४, तुच्छत ।। ६-७४ चाहुँत ।। ४८-६०. उलत्थत ।। ५-६५

८. क्त प्र.यान्त :—(शतृ प्रत्यान्त क्रियाएं क्त प्रत्यवत् प्रयुक्त हैं)

१. कुच कंज परसत जंगली ।। १४-२१

२. भुव कंपत ।। ४-२३

३. विहरत विच्छुटित ।। १२-६४

४. संसा हरत ।। १५-४०

९. वर्तमान काल बहुवचन में "दे" अन्त वाली क्रियाएं पंजाबी क्रिया—कहंदे, जांदे, खांदे, आदि की तरह हैं :—

१. नीसान दियंदे ।। १७-२५

२. तुषषार चढंदे ।। १७-२५

३, वस्तर वासंदे ।। १४-१२

४. उप्परि गासंदे ।। १४-१२

५. आज हनंदे पाप ।। १४-६

६. कहकदे ।। ८-६०

भूत काल

१०. सामान्य भूत कालिक "ओ" "औ" तथा कदाचित् "उ" अन्तक

क्रियाएं एक वचन की द्योतक हैं :—

१ कनकनायो वड़ गुज्जर ।। १२-७
२. भयो तेन वादं ।। ५-२८
३. बाल्यो कुंभ कलक्कल वानी ।। ५-४
४. थाप्यो मंत कँवास सों ।। २-४८
५. रन जंग सिसिर जीत्यो वसंत ।। ६-३८

एवं— कीन्हो ।। १५-३३, गरव्वियो ।। ४-२, वयट्ठयो, परट्ठयो ।। ३-६
निम्र्यों ।। २-३८, बज्यो ।। ४-८

श्रौ :—

१. हुँ हुकार हुँक्यौ ।।५-२६
२. लग्यौ ग्रह कारौ । १८-४६
३. साकर पय दिन्नौ ।।६-२६
४, गुन अरथहं दिन्नौ ।। १४-५२

एवं— पल्लान्यौ ।। १२-२५, मंडचौ, षंडचौ ।। १-१०२ धरचौ ।। १-१३०,
किन्नौ, लिन्नौ ।। १६-१००

"उ"—

१. तहं जाउ जाउ ।। २-५ (लोट् ल०)
२. अचलेसर भिद्यउ ।। ७-३६
३. जियन मरन मिलि मन रह्यउ ।।१७-५०
४. संच्यउ ।। १७-५२

कदाचित् ऐसी क्रियाएं उपसर्ग सहित प्रयुक्त की गई हैं :—
संपेष्यौ ।। २-३७, सुपेष्यौ, प्रज्ज़ल्यौ, संहन्यौ आदि ।

११. "ए" अन्त वाली सामान्य भूत कालिक क्रियाएं एक वचन तथा बहुवचन की द्योतक हैं। कदाचित् "न्ने" भी :—

१. रहे वेद निंदे, दया देह वंदे ।।१-७५
२. सवै देव सद्दे ।। १-२
३. रथं आप रूढे ।। १-२८
४. वटी पंच वत्ते, मृगे चाप हत्ते १-१२६
५. दिपंत तुच्छ दिट्ठए, ।। ७-२६ बिंबी अनार फट्टए ।
६. संजोगि संपन्ने, ।। १४-५२ नग मुत्ति दिन्ने ।

एवं— जित्ते, मुक्के, निकस्से, विकस्से, ।। १-१४२, विद्दरे ।। ६-३५ हल्लिए ६-१३५, उन्नए ।। १५-५२, वर्तमानए ।। ६-२४ वित्तए, अप्पए ।। ६-२६

१२. "ग" अन्त वाली क्रियाएं सामान्य भूतकाल की द्योतक हैं :—

१. षंभ फोरिग विय चन्दह ।। १३-६६

२. हहं हंकारिग ॥ १-१६४

३. पाणि ग्रह उत्तिम करिग ॥ ३-२

एवं – गविग, भरिग, धरिग, धुंधरिग, हरिग, उट्ठिग, षरिग, भरिग।

कदाचित् उपसर्ग के साथ :—संचरिग, संघरिग, संकिग, विछंडिग, संक्रमिग। ४-१६

१३. संभव है आधूनिक सामान्य भूत कालिक क्रिया "गया" का आदिम रूप "ग" गोन अथवा "गौन" हो। "गया" के अर्थ में यहां ये ही तीन रूप प्रयुक्त हुए हैं :—

१. गौ नृप बलह समेव। सुनि सुनि नृप अग्ग गौ ॥ ७-५०

२ अप्प राउ चलि वन हि गौ ॥ ७-२६

३ पुहपंजलि अम्मर गोन ॥ १७-४०

४ सुर गौन वैन ॥ १५-५५

१४. भूतकाल में क्तान्त क्रिया कदाचित् आधुनिक पंजाबी की क्रिया– "चल्या" "जित्या" आदि के समान प्रतीत होती हैं :-

जित्या वे जित्या चहुवांन ॥ ४-२८, अन्य रूप "इयं" प्रत्यान्त हैं :— सुलष्षियं ॥ १-३४, जित्तियं ॥ १-७५, अम्मियं ॥ १०-४ डहियं, बहियं ॥१०-३ कंपियं ॥ १०-२ पूजतियं ॥ १-१४६, लियं ॥ ७-४०, कसियं, धसियं ॥ १४-६६ कदाचित् विना "इ" के :—

सुभागयं, लागयं ॥ १-७४, मनोहरयं ॥ १-१५१, हंहनयं ॥ १-४१ नृत्यतयं ॥ १-४२, सम्मरयं ॥ १-४२ कूहानयं ॥ १३-१३, पहिचानयं ॥ १४-२१ (वास्तव में ये "नाम धातु" क्रियाएं प्रतीत होती हैं। "आनं" प्रत्यान्त :— तुटितानं, मल्लानं ॥ १७-१२, विरुझानं, रिसानं ॥ १७-१३

१५. "इय" प्रत्यान्त क्रियाएं सामान्य भूत काल की द्योतक हैं :—

१. सौंपिय पूत्ति पुत्त नरेस ॥ ६-३०

२. अति आदर आदरिय ॥ ३-२

३. तात अप्पिय ढिल्लिय तुम ॥ २-४

४. तब पुच्छिय यह वत्त ॥ २-१६

एवं— फुल्लिय ॥ १-३२, दिय ॥ २-१६, डंडिय ७-३४, चंपिय ॥४-२३

कभी "आइया" प्रत्यय के साथ :—

१. सिंघनी सिंघ जु जाइया ।। १४-६३
२. सु ठट्ठा जु सुहाइया ।। १४-६३
३. राजन पौरि पधारिया ।। १४-५६
४. चाहर वीर विचारिया ।।१४-५६

एवं— अइया, जुझाइया ।। १४-११५

क्त प्रत्यय (Past Participal) भूत कालिक क्त प्रत्ययान्त क्रियाएं संस्कृत के क्त प्रत्ययवत् :—

१. मधु नैर दिष्टं, सुषं स्याम तिष्टं ।। १-१३२
२. हृदे प्रीति रातं ।। १-१०७
३. राजसं तामसं वे प्रकट्टं ।। १२-८

एवं— लिद्धं ।। १४-३, सुलग्गं ।। १०-१०७

क्रियार्थक संज्ञा

१७. मूल धातु के साथ "न" नं, ण, "न्न" प्रत्यय जोड़ कर हिन्दी में खेलना, "मरना" आदिवत् क्रियाओं का निर्माण किया गया हैं ।

१. हदफ षिल्लन चढ्यौ ।।१४-१३
२. संयोगि जोवन जमनं ।। १४-१८
३. तुम लिय छत्र मरन्न ।। १६-४१
४. सुनि धुनि राज गवन्न मवन्न । १५-१६
५. उप्पारण गज दंत ।। १५-६३
६. पति अन्तर विच्छुरण विपति । ६-१५२

१८. सहायक क्रियायें—"भू" तथा "अस्"

वर्तमान काल—

१. है हेम हेल ।। १४-१८
२. न को लोपि होहं (है) १४-१८
३, तिलु होइत भौन ।। १२-१३
४. हों पुंडीर नरेश होत । १३-५०

भूतकाल :—

भौ (१२-१३), भयो (१०-७१), भयौ (१२-१२२)
भउ (१२-३२). हुतं (१३-२८) हुव (१०-७२) हुवं (११-८०)
हेयं (११-१६)

स्त्री लिंग में भूत काल:—

१. तव प्रसन्न गिरिजा भइ (११-६०)
२. घंट घोर संक्रमक भइय (१४-७४)

भविष्यत्:—कुल चन्देल न होहि (११-८०)

अस् – वर्तमान काल में:—राजन अत्थि अवास। (७-४)

भूतकाल में :—

१. जदिन वंस पुंडीर वानी मुषहि त्थं ॥ १३-४६

२. थे गोरी सहावदीन ॥१४-३२

३. ब्रह्म कमंडल थी जल गंगे ॥८-५१

१६. सामान्य भूत काल में आधुनिक हिन्दी क्रियाएं भी देखिए:-

दीन (२-४६), कींन (२-२८), दींन्ह (१६-४८) कीन्ह (७-१४) कीनं, लीनं (१४-८५)

भविष्यत काल

२०. भविष्यत् कालिक क्रिया निम्नलिखित प्रत्यय लगा कर बनाई है :—

१. इहैं—अब न होइहै सहु कहै ॥१८-६३॥

२. इहि—होइहि सुरतांनह ॥१६-६१॥

३. हो—जै आज भाग, भूपति चढैहो ॥१४-१२६

४. हिं—हुइ होहिं आदि. हिन्दुव तुरक ॥ १७-१४

५. आंहि—हम माया पुज्जांहि ॥ १४-३७

६. हुगे—दिष्षहुगे काल्हि ॥ ६-७

अवधिवत् विधि सूचक (लोट्)

२१. विध्यर्थक क्रियाएं प्रायः एकवचनान्त हैं तथा "हु" प्रत्यान्त हैं,

१. रष्षहु इह सत्थ २-४०

२. सुवर विचारहु वत्त ॥ २-१०६

३. कहहु भट्ट धरि ध्यांन ॥ २-६७

४. कवियन मन रंजहु ॥ ६-२०

एवं—धरहु (६-१६), कहहु (६-७३) करहु (२-४२) बोलहु (६-१२)

प्रेरणार्थक—दिषावहु (१-८५)

कर्मवाच्य

२२. कर्मवाच्य क्रियाएं, ये, यै, ज्जै, "ज्जइ" प्रत्यय जोड़ कर बनाई गई हैं। कभी कभी ऐसी क्रियाएं विध्यर्थक भी होती है:—

१. मनौ दिष्षिये चंद किरनीन मंदा (८-३६)

२. मनौ पिख्खिये रूप रूव ऐराब इंदा (८-४४)

३. ते तो पास न मिल्लिये, तो भुज उप्पर षिल्लिये ।।१४-७८

४. दरै दानु दिज्जै, सुलीज्जै फकीरं ।। १६-१४

५. भृकुटि रवि मंडल लीज्जै ।।१६-१४

६. सो सहि अम्बर जु गलिज्जै ।।१६-१४

प्रेरणार्थक क्रिया

२३. साधारणतया प्रेरणार्थक क्रिया "आए" अथवा "आइ" प्रत्यय जोड़ कर बनाई गई है:—

१. ढिल्लीय पठाए ।। १४-२	२. कहि कहि समुझाए ।। १४-२
३. तै नो षीर षिवाइ ।। १४-६२	४. सिक्कार चढ़ाइ । १४-११५
३ अम्मह मुच्छन दुत्ति पतावहि । गुन अच्छे पच्छे करवावहि ।।६-१२८।	६. सु चित्त विचारौ, छ भाषा— उघारौ ।। ६-१६
७. बुल्यो बयठारिय (बैठालना) १४-१२१	८. दिषिष थवाइत थिरु नयन । ६-४

संयुक्त क्रिया

२४. साधारणतया संयुक्तक्रिया पूर्वकालिक क्रिया के योग से बनी है:-

१. सावंत परि रह्यौ ।। १०-६	२. पठि दिन्नौ ।। १४-३८
३. घालै फिरै १६-४६	४. करि रष्षौ ।।११-८६
५. रहि ठट्ढ़े घट तीन ।।११-१०६	६. लिन्ने रहे ।। ११-१०७
७. दिषषौ वदत ।। १४-४५	८. होत दीस ।। ०५-५२
६. कटि हु देषि रिहान ।।१४-१२८	१० बोलि रहैं ।। ११-१०७

२५. पूर्वकालिल क्रिया "इ" "इव" "इवि" प्रत्यान्त हैं:—

इ—१. अभिनव विरह विलप्पि ।। ११-२१

२. वंचि विचारि ।।२-३६ ।।

३. समप्पि (३-२२) चंपि ।। ४-८

इव—गहिव साहि गो धीर धर ।। १३-८८

इवि—बंधिवि भिरहि ।।१५-४६

मातु गर्भ वस करिवि जेम ।। ७-६५

एवं चिंतिवि (१८-३८), लग्गिवि (१४-४६)

२६. ब्रज भाषा की तरह "काज" पर सर्ग पूर्वक "वे" तथा "वै" प्रत्यय लगाने से तुमुन्तत क्रिया बनती है:—

१. फुनवै काज टारहिं ।। ६-१११

२. सामंत सिघ राव रचवै सुमति ।। १६-५

३. एस भय पचिवे काज, जाइ गौरी गुनहिं ।।१५-१६

२७. संस्कृत की अनुकरणात्मक "ति" प्रत्यान्त क्रिया एक वचन तथा बहुवचन में पाई गई है :—

एक व० — नट्टियति जाम इक ।। ७-६

बहुवचन = प्रकंति मद्धि, दुहुँ दल पगार ।। ११-३०

हाक वज्जंति राजन्ति सूरं ।। १२-५६

एवं = किलकंति (५-३१) चवंति (४-३२) चमकंति (१०-२२)

कभी कभी ऐसी क्रियाएं स्त्रीलिङ्ग शतृ प्रत्यय में प्रयुक्त हुई हैं—

१. सवै राग छत्तीस कंठे करंति ।। ६-६२

२. झरहिं मनि मुत्ति गच्छंति लष्षै ।। ६-४१

३. केवि (कोऽपि) रट रटति पिय पियहिं जंपै ।

४. उड्डंति टुट्टै ।। ६-४२।।

२८. संस्कृत की अनुकरणात्मक नाम धातु क्रियाएं अधिकतर साटक तथा अनुष्टुप छंदों में प्रयुक्त की गई है :--

दामिन्य दामायते, सलिता स समुद्रायते ।
सरदाय दरदायते, प्रावृट् सुप-श्यामिते ।
विरहन्नि तीरायते ।।१३-१११

उपर्युक्त उदाहरणों तथा विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि रासो के प्रस्तुत संस्करण की भाषा में विभिन्न शैलियों तथा भाषाओं का मिश्रण है। कुछ विद्वान् अभी तक रासो भाषा को अपभ्रंश अथवा विकृत अपभ्रंश की संज्ञा देते रहे हैं। परन्तु ऐसी भाषा को हम रूप तथा शैली की दृष्टि से अपभ्रंश अथवा विकृत अपभ्रंश नहीं कह सकते। हां इतनी बात अवश्य है कि अपभ्रंश तथा विभिन्न प्राकृतों के शब्दों की कुछ

संख्या यहां मिलती है। गाथा छन्दों की शैली अपभ्रंश मिश्रित प्राकृत शैली के समान है।

रूप तथा शैली की दृष्टि से इस प्रति की भाषा अधिकतर व्रज है। ऐसी शैली में जहां तहां खड़ी बोली का भी आभास मिलता है। ऐसी भाषा के उदाहरण विशेषकर कृष्ण लीला वर्णन, धनुष भंग यज्ञ, प्रकृति वर्णन शृङ्गार तथा करुण रस के चित्रण तथा सामन्तों के विचार विमर्श में दृष्टि-गोचर होते है। समरांगण में वीर योद्धाओं की वीर रस पूर्ण हुँकृतियों, शास्त्रास्त्रों की खनखनाहट में तथा वीर रस के चित्रण में भाषा उग्र रूप धारण कर लेती है। ऐसे स्थलों में शब्दों की विचित्र तोड़ मरोड़ हैं, विकृत अपभ्रंशाभास हैं तथा पश्चिमी राजस्थानी का पुट है। ऐसी शैली को हम डिंगल अथवा विशेष चारणी भाषा कह सकते हैं।

संस्कृत अनुकरणात्मक भाषा विशेष तथा साटक, अनुष्टुप, नाराच तथा कदाचित् दोहा छंदों में प्रयुक्त हुई हैं। इस शैली के विशेष प्रकरण हैं; देवी देवताओं की स्तुति, नैतिक उपदेश तथा शकुनादि विचार। अरबी तथा फारसी शब्दों का प्रयोग अधिकतर यवन पात्रों के मुख से करवाया गया है। इसके अतिरिक्त गजनी वर्णन तथा अन्य यवन पात्रों के चित्रण में कवि ने उर्दू फारसी के शब्दों का प्रयोग किया है। "हज्जार" वैरष्ष, "नजीक" आदि शब्द जो कि १६वीं शती में अन्य कवियों द्वारा भी प्रयुक्त किए गए हैं, समस्त स्थलों में पाए गए हैं।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि प्रस्तुत लघु संस्करण की भाषा अपनी चारणी विशेषताओं को लिये, रूप और शैली की दृष्टि से खड़ी बोली मिश्रित प्राचीन व्रज है। हम भाषा के कोमल रूप को पिंगल[1] तथा उग्र

---

1. Tessitary says :—It is a well known fact that there are two languages used by the Bards of Rajputana in their political composition and they are called Dingal and Pingal. The farmer being the local Bhasa of Rajputana and the latter the Braj Bhasa. (Vide-Journal of Asiatic society of Bengal, Vol. X Page 75.
George Grierson says :—The writer sometimes composed in Marwari and sometimes in Braja Bhasa; in the former case the language was called Dingal and in latter Pingal. Vide-Linguistic survey of India Vol. IX, Part II Page 19

रूप को डिंगल कह सकते हैं। और कहीं कहीं हिसार प्रांतीय तथा पंजाबी भाषा का प्रभाव भी देखने में आया हैं।

चन्द वरदाई

चंद वरदाई की जन्म भूमि तथा जीवन-सम्बंधी वृत्तान्त के लिए बाह्य तथा आन्तरिक ठोस प्रमाणों के अभाव में किंवदंतियों के आधार पर साधारणतया यही धारणा चली आ रही है कि महा कवि का जन्म लाहौर में हुआ और ये पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि थे। परन्तु निश्चित तथा प्रामाणिक तथ्यों के अभाव में यह कथन अत्यंत संदेहास्पद है।

कुछ समय पूर्व डा० ब्यूहलेर तथा ओझा जी ने अपनी ऐतिहासिक खोजों के आधार पर इस बात को प्रमाणित करने का प्रयत्न किया था कि चंद वरदाई सम्राट् पृथ्वीराज के दरबारी कवि नहीं थे अपितु १६वीं शती में इनका अस्तित्व माना जा सकता है। परन्तु रासो के प्रति एक विशेष मोह के कारण कुछ विद्वानों (डा० श्याम सुंदर दास तथा मोहनलाल विष्णुलाल पाण्डया आदि) ने इस मत का अनुमोदन नहीं किया। रासो के लघु संस्करण की पाण्डु लिपियों के अध्ययन से मेरा यह अनुमान है कि चन्द वरदाई न तो पृथ्वीराज का समकालीन था और न ही लाहौर में उसका जन्म हुआ अपितु वह दिल्ली के आस पास हिसार प्रदेश का निवासी एक साधारण चारण कवि था।

इस बात की पुष्टि के लिये रासो में एक कवि कल्पित घटना है— "जैत षम्भ भेदन" समारोह। यह समारोह सम्राट् पृथ्वीराज द्वारा अपने सामंतों की बल-परीक्षार्थ किया गया है। इस "षम्भ" का भेदन अन्य प्रबल योद्धाओं के होते हुये एक धीर पुण्डीर नामक युवक से करवाया गया है। यह युवक देवी का अनन्य भक्त हैं। (कवि चंद भी देवी का अनन्य उपासक है)। इसी युवक ने शहाबुद्दीन गौरी को युद्ध में जीवित पकड़ लाने की प्रतिज्ञा भी की। संक्षेपतः इस धीर पुण्डीर ने विधिपूर्वक देवी की आठ दिन तक पूजा करके शक्ति प्राप्त की ओर उस "षंभ" का छेदन-भेदन किया। पृथ्वीराज ने प्रसन्न होकर इस युवक को "हिंसार कोट" तथा हिंसार कोट से सम्बंधित पांच हज़ार गांव और मुलतान प्रदेश का कुछ भाग पारितोषिक रूप में दिया :—

क—मुहम्मं मुकामं सु हिंसार कोटं।

ख—पंच हज़ार ग्रामं सु स्थानम्।

ग—गौ धीर घर गोषिनि मुलितानम्।

यह युवक चन्द पुंडीर नामक सामंत का एक मात्र पुत्र है। ऐतिहासिक तथ्यों की खोज से यह ज्ञात नहीं हो सका कि यह चन्द पुण्डीर कौन है। इस चंद पुण्डीर का पृथ्वीराज के मुख्य सामंतों में एक महत्वपूर्ण स्थान है। जयचंद-पृथ्वीराज युद्ध में (संयोगिता हरण के समय) इस सामंत की मृत्यु हो जाने पर धीर पुण्डीर अपने पिता की पदवी ग्रहण करता हैं। रासो के प्रस्तुत संस्करण में इस युवक को अधिकतर "चन्द पुत्त" लिखा है। और वह स्वयं भी अपने आप को बड़े अभिमान के साथ चन्द का पुत्र घोषित करता है : —"हौं सुत चन्दह तनौ"

मेरे विचार में उपर्युक्त चन्द पुण्डीर स्वयं चंद वरदाई है जिसने अपने नाम के साथ "वरदाई" उपाधि जोड़ कर रासो की रचना की। यद्यपि इस चन्द वरदाई ने एक भाट होने के नाते कुल क्रमागत चारणी भाषा में रासो की रचना की परन्तु फिर भी वह अपनी जन्म भूमि हिसार की स्थानीय बोल चाल की भाषा के प्रभाव को अपनी रचना में दबा नहीं सका। चारणी भाषा तक संयत रहते हुए भी रासो में हिसारी बोली का प्रभाव सर्वत्र पाया जाता है। जैसे—

१. "तबल्लंत"=तब तक। "पांच हज़ार घाटि सौ"।

२. "तेह रज्जे रपट्टे निझिल्ले, चंपिए पानि ते मेरु ठिल्ले"।

रज्जे=रज गए-तृप्त हुए। रपट्टे=रपट गए-फिसल कर गिर पड़े) इसी प्रकार रल्ले=रल गये, जा मिशे। भल्ली=भली, सुंदर। झल्ली= पगली। घणो=अधिक, तथा "जदिन" "तद्दिन" आदि शब्द ठेठ हिसार प्राँतीय बोल चाल की भाषा के हैं। इसके अतिरिक्त हिसार वोली में प्रयुक्त संज्ञा तथा सर्वनामों का प्रयोग भी रासो में स्थान स्थान पर मिलता है। जैसे —

१. "पौंडी गुड मिट्ठो"। यह समस्त वाक्य ठेठ हिसारी बोली का हैं। वैसे भी "पौंडी" शब्द हांसी हिसार प्रदेश में गन्ना के लिये प्रयुक्त होता है और यह वहां का देशज शब्द है।

२. "छ्रगल"=जल एकत्रित करने के लिये एक भारी बर्तन।

३. "तैं झुठ जो कुन्नौ"। यहां "तैं"=तूने, हिसार तथा बांगर प्रदेश का प्रादेशिक सर्वनाम हैं। "कुन्नौ"=कान में धीरे से कहा, ठेठ हिसारी क्रिया है। इसी प्रकार हिसारी बोली का लहजा तथा देशज शब्द प्रस्तुत संस्करण में सर्वत्र उपलब्ध होते हैं।

हिसार प्रदेश अविभाजित पंजाब का (और अब विभाजित पंजाब का भी है) एक जिला था, अथवा कवि समस्त पंजाब में घूमता होगा। अतः पंजाबी भाषा के शब्द भी पर्याप्त संख्या में प्राप्त हुए है। यथा –'कप्पिउ ∠कप्पना–काटना संस्कृत कृलप् छेदे), नप्पो∠नप्पना=पकड़ना, सद्दें= सद्दा देना. बुला भेजना आदि। १६वीं शताब्दी में उर्दू का भी भारत में पर्याप्त प्रचलन था। अतः "म.लूम" "फवज्ज" सेना, सहर=शहर, हूर, नूर, मुहम्मद, मुकाव आदि शब्दों की रासो में पर्याप्त संख्या है।

ऊपर्युक्त कथन से ऐभा प्रतीत होता है कि चन्द पुंडीर नामक व्यक्ति ने "वरदाई" उपाधि धारण कर यशः प्राप्ति के लिये तथा रासो के अन्तिम छन्द–"लोकवेद कीरति अमर" के अनुसार अपने भाट वंश की ख्याति के लिए १६ वीं शताब्दी के लगभग रासो (ल० स०) की रचना की होगी और यह चन्द हिसार निवासी था।

साहित्य लहरी में एक पद है :
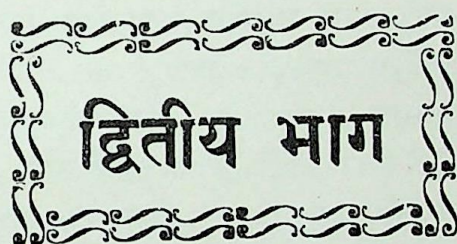
प्रथम ही प्रभु यज्ञ ते, भे प्रकट अद्भुत रूप,
ब्रह्मराव विचारि ब्रह्मा, राखु नाम अनूप।
पान पय देवी दियो, शिव आदि सुर सुख पाय।
कह्यो दुर्गा पुत्र तेरो भयो, अति अधिकाय॥
परि पायन सुख के सूर, सहित अस्तुति कीन,
तासो वंस प्रसंस में, भौ चन्द चारन वीन।
भूप पृथ्वीराज दीन्हें, तिन्ह ज्वाला देश।
तनय ताके चार, कीनो प्रथम आप नरेश॥
दूसरे गुलचन्द, ता सुत, सील चन्द सरूप,
वीर चन्द प्रताप पूरन, भयो अद्भुत रूप।
रणथंभौर हमीर भूपति, संग खेलत जाए,
तासु वंस अनूप भौ, हरिचन्द अति विख्यात॥

आगरे रहि गोपाचल में, रह्यौ ता सुत वीर,
पुत्र जनमे सात ताके, महा भट गंभीर।
कृष्ण चन्द उदार चन्द, उदार चन्द सुभाइ,
बुद्धि चन्द प्रकाश चौथे, चन्द भे सुख दाई ॥
देवचन्द प्रबोधचन्द, सुतचन्द ताको नाम,
भयो सप्तो नाम सूरजचन्द, मंद निकाम ॥

इस वंश वृक्षावली के अनुसार सूरज चंद को सूरदास समझ कर साहित्य लहरी को सूरदास की रचना समझा जाता है। और इसको चंद बरदाई का वंशज मान लिया गया हैं। परंतु सूरदास जी की प्रसिद्धतम रचना सूर सागर में सूरजचंद का कहीं नामोल्लेख नहीं मिलता। कई कारणों से जिनका यहां उल्लेख करना सम्भव नहीं। साहित्य लहरी की रचना सूरजचंद भाट ने संवत् १८५५ में की हैं। क्योंकि साहित्य लहरी के एक पद की टिप्पणी में भाषा भूषण ग्रंथ का उल्लेख हैं। और टिप्पणी रहित कोई भी साहित्य लहरी की पाण्डु लिपि प्राप्त नहीं हुई। भाषा भूषण ग्रंथ की रचना सं० १८५५ में जसवंत सिंह द्वारा हुई हैं। अत: साहित्य लहरी का रचना काल भीं यही हैं। इस पद के अनुसार सूरजचंद चंद बरदाई से छठी पीढ़ी में बैठते हैं। हरिचंद कोई "वीर सुत" गोपाचल तथा आगरा निवासी है। इस गोपाचल का वर्णन रासो के प्रस्तुत संस्करण में भी मिलता है-"गुरावये गोपाचले" अत: प्रतीत ऐसा होता है कि चन्द बरदाई सूरज चंद से लगभग ढाई अथवा तीन सौ वर्ष पहले हुआ है। इस दृष्टि से भी चंद का समय १६ वीं शती के लगभग बैठता है, और वह पंजाब के हिसार का निवासी था, लाहौर का नहीं। लाहौर से चंद बरदाई वरदाई का सम्बंध जोड़ना क्लिष्ट कल्पना है। और न मालूम किस विद्वान ने यह कल्पना किस आधार पर घड़ी।

❀ इति शुभम् ❀

द्वितीय भाग
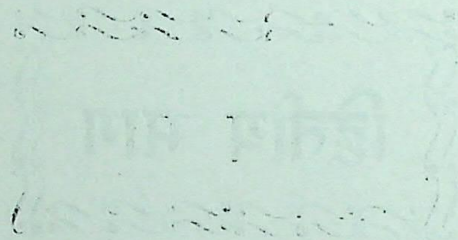
पृथ्वीराज रासो

प्रथम खण्ड

ओं नमः

श्री कृष्णाय परमात्मने। जय जय देवेश।
छत्रंजा मद गंध घ्राण लुब्धा, अलिभोर आच्छादिता।
गुंजा हार विहार सार गुणजा, रूंजापया भासिता।
अग्रेजा श्रुति कुण्डला करि करा, उदार उद्दारया।
सोयं पातु;गणेश सेवित फलं पृथ्वीराज काव्ये हितं ॥१॥
मुक्ताहार विहार सार सबुधा, अबुधा बुधा गोपिनी।
श्वेतं चीर शरीर नीर गहरी, गौरी गुणं योगिनी।
वीणा पाणि सुवाणिजा निदधिजा, हंसा रसा आसनी।
लबज्जा चिहुरार भार जघना, विघ्ना घना नाशिनी ॥२॥

छंद विराज

जटा जूट वंदं। ललाटेय चंदं।
भुजंगी गलेदं। शिरे माल लद्दं ॥३॥
सरोजाइ छंदं। गिरीजाय नंदं।
उरो सिंग नंदं। शिरो गंग हद्दं ॥४॥
रणो वीर मद्दं। करी चर्म छद्दं।
जरे काल कद्दं। जयं योगि सद्दं ॥५॥
प्रलेयद्द जद्दं। हरे तद्द भद्दं।
चषे अग्गि छद्दं। जरे काम तद्दं ॥६॥

जटा जाणि भद्दं । वचे दूरि दंदं ।
नटे भेष रिंदं । नमो ईश इंदं ॥७॥
करे मच्छ रूपं । सरे नार रूपं ।
वधे संष धूपं । धरे वेद रूपं ॥८॥
धरा पिट्ठ तिट्ठं । कणंजे गरिट्ठं ।
जले धार दिट्ठं । नमो ते कमट्टं ॥६॥
सुवं देव राहं । रदग्गे इलाहं ।
शशी शेष राहं । हिरण्यच्छ दाहं ॥१०॥
प्रहल्लाद पीरं । उठे षंभ चीरं ।
मृगाच्छस्य ऊरं । नषं तोरि चूरं ॥११॥
बजे दड्ढ पूरं । कुकंपी समूरं ।
धषी अंषी धूरं । लटी लच्छी नूरं ॥१२॥
स्तुती पाणि जूरं । दया दद्धि पूरं ।
नमो सिंह सूरं । .... ॥१३॥
वलेराय अग्गे । छले भूमि मग्गे ।
लुके बंभ तग्गे । मुखे वेद जग्गे ॥१४॥
ठगे रूव ठग्गे । अजद्देव अग्गे ।
त्रिलोकं त्रिडग्गे । नषे गंग लग्गे ॥१५॥
सुलोके सुभग्गे । .... ।
पिता वच्च मानं । हते गब्भ थानं ।
सहस्र भुजानं । रुधिद्रा धरानं ॥१६॥
निछत्रि छितानं । दई विप्र दानं ।
हरे राम ज्ञानं । सुरामं समानं ॥१७॥
रघुव्वीर रायं । दया सुद्ध कामं ।
सु वैदेहि रायं । सुमित्रे सखायं ॥१८॥
विश्वमित्र मष्षं । षरे दुःख रष्षं ।

सु पत्नी सहायं । तड़िक्काति हायं ॥१६॥
वटी पंच पत्ते । मृगे चाप हत्ते ।
रिछे वानरायं । भये सो सहायं ॥२०॥
दधी सीसि आयं । पषानं तिरायं ।
हनुमान रूढी । सुमुंद्दे सुवद्दी ॥२१॥
तिनै वीर हत्थं । संदेश सुकत्थं ।
जहां लंक गड्ढं । तहाँ वग्ग बड्ढं ॥२२॥
उहां सीय दिष्षी । हुंती दुष्ष मुष्षी ।
दियं मुद्रि तामं । सहं दान रामं ॥२३॥
दसान्नन आदं । मथे मेघनादं ।
कया कुम्भ पूरे । भरे बाण भूरे ॥२४॥
सत सीय लंभी । कियं काज वंभी ।
त्रिकूटं सनाथे । विभीषन्न हाथे ॥२५॥
प्रसूने विमानं । चढ़ा वेगी यानं ॥
अयोध्या संपत्ते । नमो राम मत्ते ॥२५॥

कृष्ण लीला वर्णन

वसुद्देव अहनी । वरी कंस वहनी ॥
वियं पाणि वद्धे । सवै दैव सद्दे ॥२७॥
जय जोगधारी । दियं दान भारी ।
रथं आप रूढे । समं कंस मूढे ॥२८॥
अकासे सुवाणी । श्रवणे सुज्ञानी ।
उठें षग्ग भारे । अषुत्तं प्रहारे ॥२६॥
वरं पाणी बंधे । सुवाले अवंधे ।
इयं गब्भ पुत्तं । तुवं हाथ दत्तं ॥३०॥
सिता स्याम दिष्णां । भये राम कृष्णां ।
प्रथम्मं सुभद्दं । तिथि पष्ष अद्धं ॥३१॥

नच्छत्रं सुरोही । बुधं जन्म सोही ।
चतुर्बाहु चारं । किरीटी सुहारं ।।३२।।
सतं पत्र नैणं । श्रुति कुण्ड लैनं ।
नियं मुत्ति वासी । अयं अव्विनासी ।।३३।।
मुखे मंद हासं । चतुर्वेद भासं ।
भृगु लत्त गातं । प्रभासी प्रभातं ।।३४।।
मणि न्नील सीतं । कटि प्पट्ट पीतं ।
सदा लच्छि वासी । चरत्रं निवासी ।।३५।।
स्वयं ब्रह्म देही । नियं नंद गेही ।
विषं पूतनायं । पियं च्यूतनायं ।।३६।।
सकट्टं प्रहारं । ब्रज्ज म्मै विहारं ।
तृणावर्त तानी । उदै आसमानी ।।३७।।
प्रभु ग्रीव लग्गे । तनं ताम भग्गे ।
नवनीत चोरं । कियं गोप सोरं ।।३८।।
गहि दाम पानी । यशोदा रिसानी ।
शिसू ऊष बंध्यौ । किहूं बंध बंध्यौ ।।३९।।
स्वयं ब्रह्म लष्यौ । अचिज्जं सुपेष्यौ ।
लघू दिग्घ इंदं । कला की गुविंदं ।।४०।।
ऋषि श्राप तापं । न लघूव आपं ।
दियं देह दारं । ब्रज ज्जाई धारं ।।४१।।
ऋषि रोस त्रासी । मुकत्ति सुवासी ।
सुतं जक्ख राजं । कियं उद्ध काजं ।।४२।।
द्रुमं कृष्ण पंची । परे ग्राम वंची ।
स्तुती[1] वद्ध पानं । पुरुष्षं पुराणं ।।४३।।
वरुन्ने[2] अवासी । गृहे नन्द गासी ।

---

1 BK2 स्तुति । 2 BK2 वरुने ।

जिते लोक पालं । व्रज उजाल[1] जालं ॥४४॥
बकं धेनु भारे । प्रलंबै पच्छारे ।
मुखे व्याल कालं । शिशू[2] बच्छ पालं ॥४५॥
काली उत्तवंगं[3] । किय[4] नृत्य रंगं ।
व्रज वारी[5] लोपं । मधुम्मेघ[6] कोपं ॥४६॥
परे व्रज्ज धाई[7] । गिरे[8] धार धाई ।
नषै सैल सारं । त्रिभंगी त्रिसारं ॥४७॥
पुलंद्री[9] पुलानं । वजे वा निसानं[10] ।
निसा अन्न[11] घोरं । कियं गोपि सोरं ॥४८॥
धरा[12] नील रैनं[13] । तज्यो दैव सैनं[14] ।
कच चक्र वेनी[15] । भमी भमर[16] सेनी ॥४९॥
श्रुति कुंडलीनं । द्रुति काम लीनं ।
चषे पुंडरीकं । वपे मेघ लीकं ॥५०॥
जसो मुत्ति[17] सारे । निसा मेघ तारे ।
धरा सुद्ध[18] हथ्थं । करे देव वथ्थं ॥५१॥
रद छद्द मुद्द[19] । नगं कोस नद्द[20] ।
ग्रीवा कंबु रेषं । भुजा क्रीट[21] शेषं ॥५२॥
वयज्जंति[22] मालं । उच्छारे सुलालं[23] ।
लियं[24] वेतसल्लं[25] । वने जाम[26] कल्लं ॥५३॥

---

1 BK2 जले जाल जालं । 2 BK2 शिशु । 3 BK2 उत्तमंगं । 4 BK2 कीयं । 5 BK1 वारी । 6 BK1 मेघ । 7 BK2 धाई । 8 KK2 गीरे थार धाइ । 9 BK2 पुलंद्री । 10 BK2 निसनं । 11 BK2 अंन । 12 BK2 धरे । 13 BK2 रेनं । 14 BK2 सेनं । 15 BK2 बैनी । 16 BK1 भ्रमर । 17 BK2 मुति । 18 BK2 सुध । 19 BK2 मुदं । 20 BK2 नंद । 21 कीट । 22 BK2 वयंजती माले । 23 BK2 सुलाले । 24 BK2 लीयं । 25 BK2 सलं० । 26 BK2 जानं कलं ।

जसोदा[1] जगाये । मृगे शृंग वाये ।
जिते[2] ग्वाल सथ्थं । दधिप्पात[3] हथ्थं ॥५४॥
वनेजा विहारी । सु गो वच्छ पारी ।
अगूं कन्न[4] मुंदे । दियं हेरि सद्दे ॥५५॥
नियं नेह चारी । हसै गोप भारी ।
सतं पत्र पूतं । अचिज्जं सहूतं ॥५६॥
नियं ताप गच्छे । हरे सब्ब[5] वच्छे ।
स्वयं साम चित्तं । धनो[6] धन्न हित्तं ॥५७॥
नियं नन्द पुत्तं । मलानं सुजुत्तं ।
कियं सोक कोपं । कहां वच्छ गोपं ॥५८॥
हरे ब्रह्म ग्यानं[7] । पुरुषं[8] पुराणं ।
रचे कृष्ण सोची । तपं तेम रोची ॥५९॥
तिनै रंग नेहं । अपं अप्प गेहं ।
तनं शंख चक्रं । चतुर्बाहु वक्त्रं ॥६०॥
पियं पट्ट वंधे । सह ग्वाल नंधे ।
अचिज्जं विहारी । नवो ब्रह्मचारी ॥६१॥
भ्रभै लोक पालं । वियापै[9] सुकालं ।
स्तुति[10] संमुरारी । सु ब्रह्मा विचारी ॥६२॥

छंद भुजंगी

न रूवं न रेषं , न सेषं न शाषा ।
न चंद्रं न तारा , न भूमा न भाषा ।
अविद्या न विद्या , न सिद्धं न साधी ।

---

1 BK जशोदा जग्गये । 2 BK2 जित । 3 BK2 दधिपात । 4 BK2 फंन सुंदे । 5 BK2 सव । 6 BK2 धरन । 7 BK2 ज्ञानं । 8 BK2 पुरुषं । 9 BK2 वियापं । 10 BK2 सुस्ती ।

तूंही[1] ए तूंही ए , तूंही एक आदी ।।६३।।
अनंभं न रंभं , न दंभं न दानं ।
न शत्रु[2] न मित्रं , न जग्यं[3] न ज्ञानं ।
न गेहं न देहं , न मुद्रा न माया ।
न रुद्रं न चूद्रं , न तद्रूप आया ।।६४।।
न शीलं न गीलं , न तापं न छाया ।
न गाहा न गीयं , न श्रोता न माया ।
न पच्छे न पालं[4] , म्रजादं न मादं ।
न तारी न वारी , न हारी न नादं ।।६५।।
निमेषं न रेषं , न भूरी न भारी ।
न तू[5] ध्यान मानं , न लग्गै[6] न तारी ।
न लोकं न सोकं , न मोहं न मोदं ।।६६।।
तूंहीं ए तूहीं ए , तूहीं एक सोदं ।
तहां[7] तू न तारं , न दारं न पारं ।
नयं डट्ढ डिट्ढं , धरानं धरानं ।
न हं जोति हस्तं , न वस्तं न रुषं ।।६७।।
तहां[8] तू तहां तू , तहां तू पुरुषं[9] ।
प्रकृति प्रथम्मं , तु तं[10] तत्व चौई ।
तहं लब्भते[11] ता , सरोजं सुसोई ।
प्रलै अंभ[12] अब्भं , जहाहं निवोधं ।
तमा मोहि अज्ञा , सु सृष्टिं समोधं ।।६८।।

---

1 BK2 तू । 2 BK2 शत्रं । 3 BK2 जग्य । 4 BK2 प्रति में "पालं" शब्द के पश्चात् ∠ चिन्ह देकर "न वृद्धं न बालं" पाठ हाशिए पर लिखा है । परन्तु यह पाठ प्रति BK2 में नहीं है । 5 BK1 तूं । 6 BK1 लग्गौ । 7 BK2 तहा । 8 BK2 तहा । 9 पुरुषं । 10 BK2 तु व्रतंत्व । 11 BK2 लम्भते । 12 BK2 अभं ।

छंद शाटक

किं सन्मानस सेव देव रजियं, दुष्टा निकुत्साशयं।
किं सुषानि दुषानि सेवित फलं, आयास भूमीमयं।
किं ईसं न सुरेसनं[1] ननु कयं, ब्रह्मा न ज्ञानं लहं।
कि रत्नं च्तितयाच्छितं न कमलं, बिंबूं सदा विप्पयं ॥६६॥

दोहा

नंद किसोर किसोर मग, निशि पुन्यौ[2] शशि अच्छ।
ब्रह्मा अस्तुति ब्रह्म की, गोनि मिलै गुन वच्छ ॥७०॥
काली[3] उत्तसंगं। कियं नृत्य रंगं।
ब्रज वारि लोपं। महा मेघ कोपं।
परि ब्रज धाई० ।

दोहा

ह्रिद उदंत सरद्द उद, मुद आनंद अनंद।
नंदन नंद सुवृंद ब्रज, वंसी वंस सुचंद ॥७१॥
नव रवनी[4] सुधुनि सुनत[5], श्रुति श्रुत[6] रुचि भेद।
निरषिं निमेष विवेक विधि, असम सरन[7] मन षेद ॥७२॥

छंद नाराज

त्रिभंगि[8] वंसियं वरं, श्रवन्न लग्गिए वरं।
रती रतेन[9] तेन, नीचती जहां मनोहरं।
सु जत्र जत्र[10] धाम वाम[11], काम कामिनी मनं।

---

1 BK2 सुरेसनं कयं ननु। 2 BK2 पुन्यो। 3 इस पाठ की प्रति BK2 में भी आवृत्ति हुई है। यही पाठ देखो खण्ड··· ··· 4 BK2 रमणी। 5 BK2 सुनित। 6 BK2 श्रुतिरिव। 7 BK2 सरण। 8 BK2 तृभंनी वंसीयं लयं। 9 BK2 रतेव तेव। 10 BK1 यत्र यत्र। 11 BK2 धाम।

ततः ततः सुरे सुरेसु , सुत्र[1] ज्यों मनि ग्गनं ।।७३।।
मुकुट्टयं मयूर चन्द्र , शीसयं सुलषियं ।
सुगोपिका हि गोपं[2] वाल , पाल सुसषियं[3] ।
पति व्रतं सुधर्म धाम , भामनी सुभागयं ।
आपत्ति इच्छ[4] इच्छियं , सपात कंस लागयं ।।७४।।
समोह मग्ग काम मग्ग , कामिनी कलप्पियं[5] ।
अमोह[6] मग्ग ओ अमग्ग , लोक नर्क जित्तियं ।
सुपत्ति सुपत्त छंडि , धाम वाम मारगे ।
कहंत वेद भेदयौ[7] , अकज्ज विप्प मारगे ।।७५।।

गोप्योवाच, छंद नाराज

त्वमेव धर्म धर्मयं , स्वधर्म धामयं सुनं ।
त्वमेव काम कामयं , सुकाम कामिनी मनं ।।
त्वमेव देह देहयं , सदेह हंस हंसनं ।
त्वमेव सर्व सर्वयं , जु[8] सर्वदा सुभेदनं ।।७६।।
त्वमेव लोक लज्ज भज्ज , भंजनं सदा हरी ।
त्वमेव सुष दुष मुष[9] , माधवे अहंकरी ।
त्वमेव इष्ट[10] दिष्ट मुष्ट[11] , सुष्ट रुष्टयं पती पते ।
त्वमेव सत्य सत्यवाद , गोपिका सहं गते ।।७७।।

गाथा

इत्तं सुताण गहणं[12] , णित्तं पती[13] मिक हण कारणयं ।
पत्ते पतंग[14] दीवह , जय माधव माधवे देव ।।७८।।

---

1 BK1 सुन्न ज्योति मग्गनं । 2 BK1 गोपि । 3 BK1 स सुष्यियं ।
4 BK2 अपति इच्छि इच्छयं । 5 BK1 कलप्पयं । 6 BK2 मार्गों ओ अमोह लोक नक्कं जत्तियं । 7 BK2 भेदयो । । 8 BK1 हु
9 BK2 मुष्यि । 10 BK2 इष्टं । 11 BK2 मुष्ट । 12 BK2 गृहणं ।
13 BK2 पत्वी । 14 BK2 पत्त ंग वहं माधवे देव । यहां, "दीवह जय" । पद्यांश छूट गया ।

छंद त्रोटक

ततथे ततथे ततथे[1] सुरयं।
तत धुंग मृदंग धुनि धरयं[2]।
उघट त्रिघटा हरि विक्रमयं।
भ्रमरी रस रीति अनुक्रमयं ।।७६।।
व्रज वल्लिनि[3] वल्लिनि अल्लिनियं।
इक इक्कति कन्ह विचं व्रजयं।
निज नित्य निवर्तित कन्ह मनं।
द्दग पाल मिले कल कौतुकनं ।।८०।।
पुह पंजुलि[4] अंजु सुरं गगनं।
वर बज्जत छंद विन घनयं ।।
निशि निर्मल चंद मयूख चयं।
घन घंटिक[5] नूपुर हंहनयं[6] ।।८१।।
धरनीधर नित्तंत[7] निद्धंरयं।
नव नाग कुली कुल सम्भरयं।
षट मास निशा नित नृत्यतयं।
तब गोविंद अन्तर ध्यान कियं ।।८२।।

दोहा

गच्छ गविग गोपिक मनह, कंध अरोहण[8] मग्गि।
द्रुम द्रुम वल्लिनि अल्लि मिलि, तौ हरी पुच्छे[10] अच्छि लग्गि ।।८३।।

छंद मोतीय दाम

सुनि केरि कदम्मु[11] कइथ्थ करीली[12]।
..............................।

---

1 BK2 ।थे। 2 BK1 द्धरयं। 3 BK2 में "वल्लिनि" शब्द छूट गया। 4 BK1 पुह पंजली। 5 BK1 घंटित। 6 BK हन हनयं। 7 BK1 नृतित। 8 BK2 अरोह। 9 BK2 त। 10 BK2 पुच्छे। 11 BK2 कदंम। 12 BK2 करीली।

............कसौंध्य केवट कोह।
करि कै सब ग्वारिनि, ढुंढै फिरि। } प्रक्षिप्त
एक परस्पर अष्षत............... }
करोंदिनि कान्ह, कहा कहों सोइ ॥८४॥
सुनि स्सुनि शोक, समीर सुगंध।
सकुंज निकुंज, निरष्षति रंध।
कहुँ[1] बल वंधु, बिज्जारिनि जांनि[2]।
कहुँ[3] वट हंस, दिषावहु आनि[4] ॥८५॥
सुनौ तुम चंपक, चंद चकोर।
कहौ कहं[5] स्याम, सुनौं[6] षग मोर।
लही ललिता वन, लोचन चंग।
कहौ कहं[7] कान्ह, जिहां[8] तुम संग[9] ॥८६॥
क्रियो[10] हम मान, तज्यो उन संग।
सह्यो नहीं गर्व, रह्यो नहीं रंग।
दुरे अब ही इनि, कुंजनि[11] मांहि।
गए ही कर कर, छीनि सुबांह[12] ॥८७॥
चली मिलि पुच्छति, पंच्छिनी भीर।
कुरंग कुरंगिनि, कोकिल कीर।
परी धर मुच्छि, गहै कर एक।
तिनै लगि[13] स्वास, उठै उठै[14] केव ॥८८॥
लीअ लीअ सुधारत, संगि निबड्डि[15]।
गहै दस मासनि, प्राणि निगड्डि।
डिगे डिग चालि, गिरै[16] गिर धाई।

---

1 BK2 कहु। 2 BK2 जानि। 3 BK2 कहु। 4 BK2 आन
5 BK2 कहु। 6 BK2 सुनै। 7 BK2 कहा। 8 BK2 जिहे। 9 BK2 संग। 10 BK2 कियो मान क्रियो उनमन्न हम संग। सह्यो नहीं गर्व तज्यो हम संग। 11 BK2 कुंजनि माह। 12 BK2 सुवाह। 13 BK2 लिगि। 14 BK2 उड़े। 15 BK2 निवद्दि। 16 BK2 गिरेधर धाइ।

गहै इक साहस , लेहि[1] उचाइ ।।८६।।
गइ जमुना जमु , जांनि कै तीर ।
करे सब कामिनि , स्याम सरीर[2] ।
करे[3] तन पूतन , नूप सु आप ।
गहै कर कन्हर , कालीय साप ।।६०।।
धरै कर पच्छय , गोप[4] सहाय ।
परै जल पार , तड़ित्त निहाय ।
धरै[5] त्रिय ध्यान , न लग्गहि नैन ।
परे पति पत्र , सुनै श्रुति वैन ।।६१।।
कहै नांउ कृपा निधि , भक्त सहाइ ।
भषै[6] तहां आनि , प्रगट्ट दिखाइ ।
कियो फिरि रास , सु सुन्दर स्याम ।
विचे विच कन्ह[7] , विचे विच वाम ।।६२।।
भयो[8] श्रम अंग , कलिंदीय तीर ।
छिरक्कति स्याम , कहै भुज भीर ।
करि जल केलि , चरित्र सुज्ञांन[9] ।
लियो[10] दधि दुधू , त्रियानि पै दांन[11] ।।६३।।
कियौ[12] रस रास , अकास प्रसून ।
अनंदीय अंवर , अंवुज सून ।।६४।।

दोहा

वंशी वट विश्राम किय, सुरभी गोप बुलाइ ।
मन वंच्छित दीनौ सु तिनि, सुर सुंदरि[13] सुष पाइ ।।६५।।

छंद विराज

मषं विष्ष भत्तं , सुयं स्याम पत्तं ।

1 BK2 लैहि । 2 BK1 2 शरीर । 3 BK2 कर ।
4 BK2 गौष । 5 BK2 धारे । 6 BK2 भष तहां आनि प्रग्गदि दिषाय ।
7 BK2 कान्ह । 8 BK2 भय । 9 BK2 सुजान । 10 BK2 लयो ।
11 BK2 दान । 12 BK2 कियो । 13 BK2 सुंदर ।

लियं ग्वाल सथ्थं , मघूनैर[1] तथ्थं ॥६६॥
सुनि योषि[2] कथ्थं । गृही नत्थ वथ्थं ।
परी भुम्मि तथ्थं । मिलि[3] कृष्ण सथ्थं ।
ओच्चिज्ज सुकथ्थं । ....।
ब्रज धाम धारी । सपत्त बिहारी ॥६८॥
मुखे मंड ओपं । वृषब्भे[4] सकोपं ।
कियं केसि मद्दं । सुनि कंस नद्दं[5] ॥६६॥
मतं मत्त सादी । धनुर्याग आदि ।
स्वयं साल मंडी । ब्रज ग्वाल दंडी ॥१००॥
गयंदी सपूतं । अक्रूरं पवीतं ।
कहं कन्नं[6] लग्गं । समं सोच भग्गं[7] ॥१०१॥
रथं हेम सज्जौ । ....।
सिरं क्रीट मंड्यौं[8] । उरं माल षंड्यौं[9] ॥१०२॥
नृपं वच्च[10] मानौ । यहै जीव ठानौ ।
जहां नंद रानौ । तहां जाइ आनौ ॥१०३॥
वियं पूत दीनं । वसुद्देव[11] ईनं ।
सित स्याम गातं । ब्रज ग्राम जातं ॥१०४॥
अजद्देव[12] अत्तं । ....
ह्रदे जज्ञ नद्धं । लै[13] आवौ विवंधं ॥१०५॥
करौ मुझ्झ आयं । तुरन्तं तुमायं ।
रथं जाति जायं । चितं चिंतितायं ॥१०६॥
भले भाग मातं । ह्रिदे[14] प्रीति रातं ।
ब्रजे ब्रज्ज[15] मग्गं । अक्रूरं सुलग्गं ॥१०७॥

---

1 BK2 नेरि । 2 BK1 योष । 3 BK2 मिले । 4 BK2 वृषभे । 5 BK2 निद्दं । 6 BK2 कंन लगं । 7 BK2 भंगं । 8 BK2 मंडौ । 9 BK2 षंडौ । 10 BK2 वच । 11 BK2 वसदेव । 12 BK2 अजदेव आत्तं । 13 BK2 ले । 14 BK2 ह्रदे । 15 BK2 व्रज ।

बने वृंद पथ्थं । सपत्ते समथ्थं ।
चितं चिह्न कृष्णं । मृगे तृष्ण दिष्णं ॥१०८॥
तत्यौ रथ्थ भूमि[1] । सिरे रेणु भूमी ।
धने वल्ली[2] वल्ली । चरितं[3] मुरल्ली ॥१०९॥
धने दीह आजं । धने किद्ध काजं ।
धने वृच्छ भारं । धने[4] पच्छि[5] सारं ॥११०॥
धने गोप लच्छी । मुरारी सुवच्छी ।
उडी रेणु संझं । अजुद्दे व मंझं ॥१११॥
वृषब्भान पुत्ती[7] । गवं दो दुहत्ती ।
कसुंभीय चीरं । तनं हेम भीरं ॥११२॥
करं हेम दोही । निकद्दं सुसोही ।
सिरे[8] स्याम सेली । गऊ दोही सेली ॥११३॥
दिठी दिट्ठि लग्गी । ततः[9] कंठ भग्गी ।
निधी रंक रासी । लही व्रज्ज वासी[10] ॥११४॥
चरणस्य मंडं । मनौ हेम दंडं ।
उठे कंठ लाए । मधु म्माधु[11] पाए ॥११५॥
चले नेह गेहं । जसोमत्ति[12] जेहं ।
कहें सुष दुष्षं । जदुद्दैव[13] रुष्षं ॥११६॥
असुधार नंदं । चरन्नस्य चंदं ।
कहे कंस जेहं । सहं धर्म छेहं ॥११७॥
उतप्पात[14] पत्ते । व्रजं लोक जित्ते ।
भयं[15] संझ मौजं[16] । करैं[17] भोग भोजं ॥११८॥
रथं चारु देष्यौ । गम्यौ गोप तोष्यौ[18] ।

---

1 BK2 भूरमी । 2 BK2 वल्लि वल्लि 3 BK2 चरत्रं । 4 BK2 यह चरण इस प्रतिन में छूट गया । 5 BK2 पक्षो 6 BK2 लक्षी । 7 BK2 पुत्री । 8 BK2 सिरं । 9 BK2 उतः । 10 BK वास । 11 BK2 माधु । 12 BK2 जसामात । 13. BK2 जददेव । 14 BK2 उतप्यात । 15 BK2 भयां । 16 BK2 मौनं । 17 BK2 कर । 18 BK1 सेन्यौ ।

विलप्यौ[1] सुमुख्यौ । दम्यौ[2] देह सुख्यौ[3] ॥११६॥
निसा[4] यग्य छंडी । उवं[5] चंड चंडी ।
रथं जोति जत्वं । वियं वंधु मत्तं ॥१२०॥
दधि[6] ग्वाल अल्ली । सभे नंद हल्ली ।
कियो वल्लभी चारु । चायं विचारं ॥१२१॥
मनौ[7] चित्त पुत्ती । निरत्ति[8] निहारं ।

दोहा[9]

अभिनव विरह विलप्पि त्रिय, दिष्षन नंद कुमार ।
निरगुन[10] गुन[11] बंधिय सकल, शुभ[12] पेच्छिय परिहार ॥१२२॥
टग टग नयन सुमग्ग मग्ग, विमग सुमुल्लिय भंग ।
रथ हित सुहित सुस्याम सम, चित्त लिय जनु संग ॥१२३॥
व्रज[13]जन हीय नहीं कुशल हुव, जसु तन कुशल न काम ।
विच्छु[14]रत नंद कुमार[15] वर, सभ[16] भये धाम निधाम ॥१२४॥

छंद विराज

व्रजं नाभि नैनी । चितं चाप वैनी ।
जमूंन्नीय कूले । चितं चाप वैनी ॥१२५॥
अयं[17] क्रूर न्हानं । रथंगू विहानं ।
चित्तं चित्त चढ्ढी[18] । दिषे वाल वढ्ढी[19] ॥१२६॥
वधे एम कंसं । लगै[20] दोष वंसं ।
जलं केलि ज्ञानं । लषे कृष्ण ध्यानं ॥१२७॥
रह्यो जोति साई[21] । भये भेष थाई ।
चतुर्बाहु चारं । किरीटीं सुहारं ॥१२८॥

---

1 BK2 विलच्यौ सुमूचयौ । 2 BK2 दम्यो । 3 BK2 सुचयौ । 4 BK2 निशा । 5 BK2 उठं । 6 BK2 दधी । 7 BK2 मनो । 8 BK2 निरति । 9 BK2 दूहा । 10 BK2 तिरगुन 11 BK2 गुण 12 BK2 विपक्षिय । 13 व्रज ही कुषल न कुशल हुव । 14 BK2 विच्छुरन । 15 BK2 कुमार विरु । 16 BK2 सब । 17 BK2 अय । 18 BK2 वट्टी । 19 BK2 वट्टी 20 BK2 लैगै । 21 BK सरई ।

पियं कट्टी[1] पट्टी । गदा चक्र ठट्टी[2] ।
नियं जानि[3] कंबं । सजन्नेस[4] अंबं ॥१२६॥
शिरं[5] सेष साई[6] । सुलच्छी सहाई[7] ।
हसे देषि मुष्षं । हरे पुव्व दुष्षं ॥१३०॥
अहो धीर भूपं[8] । धरचो[9] कौनु रूपं[10] ।
कला कंस केही । नियं ब्रह्म देही ॥१३१॥
गयो[11] चित्त वीरं । रथं[12] पानि तीरं ।
चले क्रूर संगं । हरे रास[13] रंगं ॥१३२॥
मधूनैर[14] दिष्ठं । सुषं[15] स्याम तिष्ठं ।

दोहा

वारी विद्रुम द्रुम द्रिगनि[16], लगि चकि नंद कुमार[17] ।
मनु विकास फुल्लिय कुसुम, इम कवि चंद उचार ॥१३३॥

छंद भुजंगी

कहं बागवारी निहारे विहारे ।
कहं कोइला बोल सोहै सहारे ।
मनो लाल पेरोज एकंत जोरे ।
किधुं रत्न सुं कनक मिलि कंज कोरे ॥१३४A॥
कहं जाइ जंभीरि तालं तमालं ।
कहं मालती सेवती पुष्प जालं ।
कहं वन्नरा[18] केलि कूदंत[19] जोरं ।

---

1 BK2 केट्टी BK3 केही । BK2 ठट्टी । 2 BK3 उद्वी । 3 BK2 यानि BK3 यानि । 4 BK2 सजन्नेश । 5 BK1 शरं BK2 शिरं । 6 BK2 शाई, BK3 शाई । 7 BK2 सरई, BK3 ससहीई । 8 BK2 भूप BK3 भूप । 9 BK2 धत्वौ, BK3 धय्यौ । 10 BK2 रूबं । 11 BK1 गव्यो BK2 गये । 12 BK2 रथ । 13 BK2 राम । 14 BK2 मधुने BK3 मधुरनैर । 15 BK2 सुष, BK3 सुष । 16 BK1 द्रगनि । 17 BK2 कुंवार BK3 कुंवार । 18 BK2 वन्नर । 19 BK2 कूएलंट योरं, BK3 कुल्लंत योरं ।

कहं वग्ग पप्पीह सोभंत[1] सोरं ॥१३४B॥
कहं मोर सावल्ल तावोल[2] षंडे।
कहं द्राष विज्जौर हालंति[3] मंडे॥
कहं नाग[4] वल्ली कहं फुल्ल भायं।
कहं मालती माल हाल्लंति[5] वायं ॥१३५॥
कहं केतकी कुंज[6] अरु वेल फुल्लं[7]।
कहं षूव गुल्लाब[8] केलाति हल्लं।
कहं मौर[9] झिंगोर लागं सुहायं।
इमी[10] भार अठ्ठार वृच्छं सुहायं ॥१३६॥

॥ इति वन[11] बाटिका वर्णनम् ॥

अथ नगर वाटिका वर्णनम

कहं अंब विद्रुम्म[12] साधर्म्म छायं[13]।
कहं[14] वृत्त बट्ट[15] सुहट्टं सुहायं[16]।
कहं केलि कोकिल्ल कल[17] भाव भीनं[18]।
कहं कीर कप्पोत कुहकंत[19] झीनं ॥१३७॥
कहं विज्ज[20] विज्जौर[21] पीयूष भारं।
लुठे भूमि[22] झुम्मे[22] मनौ[24] हेम नारं।
कहं दाडिमी सुव[25] चांचानि[26] चंपै[27]।

---

1 BK2 सोहंति । 2 BK2 तेबोल । 3 BK2 हेलंति । 4 BK2 नारी घेल्ली सुफुल्ली सुहायं । 5 BK2 हालंत्ति । 6 BK2 कुज । 7 BK2 फुलं । 8 BK2 गुल्लीव केली । 9 BK2 चोर सिरमौर । 10 यह समस्त चरण प्रति BK2, BK3 में छूट गया । 11 BK2 यह वाक्य प्रति BK2 में नहीं मिला । 12 BK2 विद्रुम । 13 BK2 छाया । 14 BK2 कहो । 15 BK2 वदं सुहटं । 16 BK2 सुहाया । 17 BK2 "कले भाव" छुट गया । 18 BK2 भीतं । 19 BK2 सो वोल BK3 सा वोल । 20 BK3 विज्जं । 21 BK2 विज्जौ । 22 BK2 भुम्मि । 23 BK2 झुमे, BK3 झुम्मौं । 24 BK2 BK3 मनो । 25 BK2 BK3 सूव । 26 BK2 चंचामि । 27 BK3 चांपै ।

मनौ[1] लाल माणिक्क पेरोज थप्पे[2] ॥१३८॥
कहं सेव देवं किरन्नं[3] कलापं ।
कहं पंषि[4] पारेव सारो आलापं ।
कहं नींब नालेर[5] केली षजूरं ।
कहं ताल तुंगं सुचंगं सुदूरं[6] ॥१३९॥
कहं काम लष्षै सुदृष्षै[7] बिहारं[8] ।
कहं काम रम्मै वसंतं अपारं ।
कहं चांप चंपी रू कंपी सुवातं ।
कहं जांम जंभीर गंभीर गातं[9] ॥१४०॥
कहं नाग वल्लीनि गल्ली निवेसं[10] ।
कहं मालती[11] टोरि[12] भूरि सुवेसं ।
कहं पंडुरी डार छीपे विहारं ।
कहं सेवती सेव कूजै[13] निहारं ॥१४१॥
कहं अष्षरोटं निहंट्ट[14] ति वेली ।
कहं वस्त्र वदाम[15] कादम झेली ।
कहं केतकी[16] कोरि[17] वेली निकस्से ।
कहं वंस विश्राम कंठी विकस्से ॥१४२॥
कहं चोर चंद्रा[18] सुपंषी पुकारं ।
कहं मोर टोरं[19] सुहारं[20] बिहारं ।
कहं सारसं[21] सारंगं सुभ्भ सोरं ।

---

1 BK2 BK3 मनो । 2 BK2 थप्पो BK3 थथ्थे । 3 BK3 किरस । 4 BK1 दंष । 5 BK2 BK3 षंजूरी । 6 BK सुषारं । 7 BK3 सुमष्वै । 8 BK2, BK3 निहारं । 9 BK3 गात । 10 BK1 निदंसं । 11 BK3 मालानि । 12 BK1 टोर BK2 ड्डोरी । 13 BK2 कूजे । 14 BK2 निकस्से । 15 वदाम कादंम । 16 BK3 केतुकि । 17 BK2 केरि । 18 BK2 चंद्री । 19 BK2 BK3 टेरं । 20 BK2 सहेरं । BK3 सहेरे । 21 BK2 BK3 स्सारसी सारंग सो राम ।

मनौ[1] पावसा मज्झि सादूल रोरं[2] ।।१४३।।
कहं सिषंडी[3] षंड वन षंड फुल्ली।
कहं लब्भ[4] लौंगी रहै वेली झुल्ली।
हसे स्याम श्रीराम[5] अक्रूर कूली।
जहां कूबरी रूप पिष्षति[6] भूली ।।१४४।।
दये मालिया आंनि सो दांम दांमं।
भये[7] रजक मै हाल[8] सो सुने[9] कामं।
रची मंडली[10] गोप व्रज लोक वासं।
गये[11] ज्ञग्य साला जहां धनुष त्रासं ।।१४५।।

दोहा

धनुष[12] भंग किन्नौ सु प्रभु , भृत भंजी कबह तीस।
विमल लोक मधुपुरी पुरीय , सहसित स्याम[13] सुदीस ।।१४६।।
मधु रिपु मधु रितु[14] मधुर सुष , मधु संगत[15] कति[16] गोप।
मधु रति मधु पुरि[17] महल[18] सुष, मधुरित नौतन[19] ओप ।।१४७।।
गोपति[20] गोप निरषि गुरू, गोधन गुन[21] विस्तार।
गो रुचि गो पति गुपित मन, रुचि[22] रोचन भरिथार ।।१४८।।

छंद त्रोटक

तति थाल तिथाल[23] तिथाप तियं।

---

1 BK2 BK3 मनो पव्व से पट्टि। 2 BK1 घोरं। 3 BK2 BK3 सीषडीनि फूल्ली। 4 BK2 BK3 लभ्य लौं रही वेली भूली। 5 BK2 BK3 वलि भद्र। 6 BK3 पिष्षंति। 7 BK1 भए। 8 BK3 मेहात। 9 BK2 सुन BK1 सुरन। 10 BK3 मंडा। 11 BK3 BK3 गए। 12 BK1 धनु। 13 BK श्याम। 14 BK1 ऋतु। 15 BK3 संवत। 16 BK2 "कति" छूट गया। 17 BK2 पुर। 18 BK2 महिल। 19 BK1 नैमनि। 20 BK3 गौप। 21 BK2 BK3 गुन्न। 22 BK2 BK3 रुचिरराचन। 23 BK2 तिथाला।

पुहपंजुलि[1] अंजुलि आप[2] तियं।
निजु नेह सनेह जु[3] नेह लियं।
अरु अच्छित[4] सुच्छित[5] पूजतियं ॥१४६॥
परप्पति[6] प्रकृति पुष्प[7] तियं।
निजु नेह निमेषनि[8] कंपतियं।
वृषभ[9] गंध सुगंध पुष्प जियं।
गुरू मातु पिता भय ना लजियं ॥१५०॥
अपि चंदन बंदन बंद तियं।
क्कल किंचित कंज मनोहरयं।
मधु रम्मनि माधुर[10] सोहरयं।
द्दग दासिय[11] कंस सुश्री षंडयं ॥१५१॥
हित श्रीपति श्री लखि मंडितियं[12]।
ग्रहि ग्रेह[13] संघट्टत दंद[14] तियं।
वसं वसुदेव सुकूज तियं।
.... ॥१५२॥

दूहा

अति सुंदर[15] सुंदर तनह, सुंदर भंति सनेह[16]।
सुंदर त्रिभुवन[17] पुरस पहु, निजु आवन[18] तुव गेह[19] ॥१५३॥
सकल लोक व्रज वासी जहं, तहं मिलि[20] नंद कुमार[21]।

---

1 BK3 पुहप अंजुलि। 2 BK1 माप। 3 BK3 "जू", छूट गया। 4 BK2 अभिति। BK3 आभिति। 5 BK2 सुभ्र। 6 BK1 पुरप्पति। 7 BK2 BK1 पप्पिनियं। 8 BK2 BK3 निमेषन। 9 BK2 BK3 वृषभ घघ सुघघ पुपजिथं। 10 BK3 माधुर। 11 BK3 दासियं। 12 BK3 मंडतियं। 13 BK3 सेह सव्व दंदियं। 14 BK2 द्वंदियं। 15 BK3 में यह चरण छूट गया। 16 BK3 सनिह। 17 BK3 त्रिभवन। 18 BK3 आव। 19 BK3 दिग्गाह। 20 BK2 मेखि। 21 BK2 BK2 कुंवार।

दधि तंडुल[1] मंजुल मुषह[2], किय वहु[3] विद्धि अहार ॥१५४॥
प्राची रवि रत्तल दिसह, वजिय[4] दुंदभी नंच।
अषिल अषार अषंड[5] सिद्धि[6], रचि सभ मंजुल मंच ॥१५५॥
प्रजा प्रसंसित भिंट[7] दधि, अरु सिर अच्छित पग्ग।
षट्ट गुन प्रभु बलि भद्र सम, हसि मिलि गोचर नग्ग[8] ॥१५६॥
राज सराज न मातुल[9] ही, मत्तहि[10] करन प्रहार।
कुवलय गज मुहलय[11] मुदित, विदित वली हर वार ॥१५७॥
दिषि[12] वल दिवि[13] वालक[14] विहसि, कुवलय कुशल विभग्ग।
सुत रोहिनि रोहित[15] रिसह, दिढि लग्गिय दिसि अग्ग[16] ॥१५८॥
व्रज सरनन[17] गति व्रज, व्रज[18] कहि मंग्यो मग्ग।
हय[19] गजु दिट्ठि निरष्षियो, निमिष उसारहु पग्ग ॥१५९॥

भुजंगी

मदं[20] झार झारंत गोरं सु रज्जं।
अहो[21] वाल[22] वालंत वज्जं वरज्जं।
अयं वाद[23] वद्दं पयं पीलवानं।
ढिलै[24] ढट्ठ नट्ठै जुधं जुजूवानं[25] ॥१६०॥
पटं पीत स्यामं सिरं स्याम सेली।
सिता नील वसनाय जसनाय केली ॥

---

1 BK2 तंदुल 2 BK1 मुषहि। 3 BK2 BK3 विहुवंध। 4 BK2 BK3 वजि। 5 BK2 BK2 अषंडलिय। 6 BK2 में सिद्धि छूट गया। 7 BK2 भिंड। 8 BK2 न्नग। 9 BK2 मतुलंहि। 10 BK2 मतहि। 11 BK3 मुहलय मुहल, BK2 सुहलय। 12 BK3 दिसि। 13 BK2 दिव। 14 BK2 BK3 वाल कित विहसि। 15 BK3 रोहित्ता रेसह। 16 BK1 अग्गि। 17 BK2, सरनत। 18 BK3 व्रजांत व्रज। 19 BK2 हम BK3 हमर दांजु। 20 BK2 मद्द झर झरंति। BK3 झर झरंति गौरं गारच्ज। 21 BK2 आहो। 22 BK2 वाबंति BK3 वालति वाता कहंज्ज। 23 BK3 न्नाद। 24 BK2 ढिल्ले। 25 BK2, 3 जुवानं।

....

..............................॥१६१॥

छंद

रम्मै[1] रासल्लं वाजत[2] भूल्लं, हस्त[3] विकुल्लं गयन[4] हूलं।
साकं जु[5] जल्लं नल्ल विहलं छत्ति हसल्लं जू जल्लं॥१६२॥

दोहा

हहंकारिग[6] भल्लनि सुभट[7], दल वल देवल[8] वीर।
सुर नर नाग निरषि' वर, भई[9] कुतूहल भीर॥१६३॥

छंद रसाला

उत[10] मल्ल भिरी । इत धारा[11] धरी।
हाइ[12] हाइ क्करी । धाइ बज्जी घरी॥१६४॥
जु गज[13] गह्यो धरी । ज्ञानि मत्तो[14] करी।
मंस फट्टै नरी[15] । धम्मधम्मा[16] धरी॥१६५॥
मल्ल हल्ले[17] हरी । चारु[18] सेदं[19] झरी।
मेघ लग्यौ[20] गिरि । हिय[21] तक्कौ तरी॥१६५॥
हैम[22] कंठे[23] ठरी । प्रान पत्ते परी।
डोरि थक्के[24] थरी । ओन उन्नं हरी॥१६७॥

---

1 BK2 रमै। 2 BK2 वाजते भूलं हास्ति व विकूलं। 3 BK3 हासि विकलं। 4 BK[1] गग्गा। 5 BK2 BK3 यूब जल्ले गल वल्लां छुत्ति हसल्लं कनि वहल्ल जू जल्ले। 6 हहकारेग, BK1 हलं हकारिग। 7 BK3 सुभर। 8 BK [3] वलि दिववल। 9 BK2 भइ। 10 BK2 उत्ति BK3 लत्ति। 11 BK[1] धारी। 12 BK2 होइ होई। 13 BK2 गज भह्रोधरी, BK3 गज गहोधरी। 14 BK2 मत्ते। 15 BK[1] फरी। 16 BK2 धेम धेम। 17 BK2 झले। 18 BK[1] चल्यौ। 19 BK2 स्वेदे। 20 BK2 BK3 लगौ। 21 BK2 BK3 हिय तकौ। 22 BK[1] हिम। 23 BK2 BK3 कंटे टरी। 24 BK[3] जरिध कैथरी।

भूरि भूम्मी[1] हरी । मुष्टि चुक्कं छरी[2]।
राम कामं सरी । मल्ल भूमी परी[3] ।।१६८।।
कंस त्रासं डरी । मंच[4] मुक्कै मरी ।
धाइ जद्दौ[5] दरी । केश षंचै करी ।।१६६।।

दूहा

रिस लोचन रत्त किय, रत[6] अंबर ब्रज पाल।
रति रत कंस उदंसि सिष, केस[7] षंचित जनु[8] काल ।।१६०।।

अडिल्ल

मल्ल मारी[9] पच्छारित[10] कंसहि।
वंध वहे रिपु के रिपु नंसहि।
जो सिष[11] सिद्ध पत्ति पति[12] छंडिय।
उग्रसेन क्षत्रिय[13] तिर मंडिय ।।१७१।।
जनम धाम[14] वसुदेव देवकिय।
किय[15] पय पान प्रसन्न अंस किय।
विप्र दान गृह गान सुमंडिय।
तब कवि चंद इदं[16] मुष मंडिय ।।१७२।।

दोहा

मधु मंडित पुरिय मधु, मधु माधुर सुष योग।
कवित्त रचौं[17] कछू स्वामी कौ, कह्यौ दसम कछु भोग[18] ।।173।।

---

1 BK2 BK3 भूमी। 2 BK छुरी BK3 क्षरी। 3 BK1 भरी। 4 BK2 BK3 मंच्च। 5 BK2 जद्धौ BK जधौ। 6 BK1 'रत' शब्द के पश्चात "भुमि" अधिक है। 7 BK2 BK3 क्रिस। 8 BK2 BK3 जन। 9 BK2 BK3 मरि। 10 BK3 पच्छरिउ। 11 BK3 सिंह पुत्ति पत्ति छंडिय। 12 BK2 पुत्तिय। 13 BK2 BK3 क्षत्रह। 14 BK3 ध्याम। 15 BK3 की पषि पान प्रसन सकीस BK2 कीय पान प्रसन। 16 BK3 पिंद। 17 BK2 BK3 रम्मौ स्वामि कै, "कछू" दोनों में छूट गया। 18 BK2 भोगु।

बुद्ध अवतार वर्णन

दोहा

उतति (उतपति) कोकटन[1] देस कलि, असुर जग्गि जय हारि[2]।
जय जय बुद्ध सरूप सों, जिहि[3] सुर सिद्धि संवारि ॥१७४॥

छंद विराज

जयौ[4] बुद्ध रूषं । धरतं अनूपं[5]।
रहे[6] वेद निंदे । दया देह वंदे ॥१७५॥
पशु हान[7] रष्षे । कियं भष्ष मष्षे[8]।
जयं जग्गि[9] लोपे । इयं दोषि रोपे ॥१७६॥
मृगज्जा बिहारं[10] । (सुरष्षेद यारं[11])।
असुरं अगत्ती[12] । षहं रषि पत्ती ॥१७७॥
कलि भंजि कालं । दया धर्म्म पालं।
गुरं ज्ञान मत्तं । प्रवर्त्ते[13] सुजत्तं ॥१७८॥
धरं ध्यान भूपं । नमो बुद्ध रूपं।

दोहा (कलि वर्णन)

कति कलिंग[14] उत्पन्न असुर, वरधेआ[15] धर्म धर भूप।
कर[16] करि वर सोहर निहर, कियो कलंक सरूप[17] ॥१७९॥

छंद विराज

भयं भू कलिंगं । अमित्तं उत्तंगं।
विपं निर्द्दयारं[18] । न धर्म्म विचारं ॥१८०॥

---

1 BK2 कोकट BK3 कोकटर। 2 BK2 हरि। 3 BK2 जिह। 4 BK2 जयो। 5 इन दोनों चरणों का स्थान प्रति BK3 में फटा हुआ है। 6 BK2 BK3 रह। 7 BK1 हंत, BK2 हांत। 8 BK2 भाषे। 9 BK2, BK3 जग्गी। 10 BK1 विहारी। 11 BK2 BK3 य्यारं। 12 BK1 अगत्ति। 13 BK1 प्रवत्तं। 14 BK1 कलंक। 15 BK1 वधिय, BK2 वधिअ। 16 BK1 करिकर। 17 BK2 BK3 रूप। 18 BK3 निर्दयारां।

कलिगं[1] सुकालं । वियापो[2] स - पालं ।
धरं धर्म लोपे । चवं एक लोपे ॥१८१॥
वयं मेच्छ मत्तं । चित्तं काल रत्तं ।
जुग वेद[3] धारी । न ज्ञानं विचारी ॥१८२॥
न ध्यानं न दानं । मुषं जानु मानं ।
न होमं न पूजा । न सूचं[4] अनूजा ॥१८३॥
न ग्यानं न जापं । सवै आप आपं ।
न देवं न सेवं । अहं मेव मेवं ॥१८४॥
न गाह्य[5] न गीयं । न पत्यं सुकीयं ।
न ग्रंथं पुराणं । धरी मन्न[6] ध्यानं ॥१८५॥
धरै ध्यान स्यामं । कियं ग्यान[7] तापं ।
कलंकी सरूपं । धरंतं अनूपं[8] ॥१८६॥
हयं स्याम रोहं । किरीटी ससोहं ।
जुवं वाह चारी । मनु जुव्व[9] तारी ॥१८७॥
कियं[10] पीत पट्टं[11] । महा विंभ भट्टं ।
करे षग्ग धारं[12] । विघट्टं[13] करारं ॥१८८॥
सुढी हेम[14] मेतं । मनौ[15] धूम केतं ।
करी मार धारं । असूरं सहारं ॥१८९॥
करी[16] षंड षंडं । धरं पूर मंडं ।
धरं धूव धारं । पवित्रं बिहारं ॥१९०॥
कियं हाव सत्यं । सच्छोनी पवित्तं ।
सुरे पुर वृष्टं[17] । सुचारं सुकिष्टं ॥१९१॥

---

1 BK2, BK3 कलंगं । 2 BK2 BK3 पोसा । 3 BK1 व्वेद । 4 BK3 त सूवं अनुज्ञा । 5 BK3 प्रति "गाह्य" से "अरूपं" शब्द तक त्रुटित । 6 BK2 मन । 7 BK1 ज्ञान । 8 BK1 अरूपं । 9 BK2 BK3 जुव । 10 BK2 कीयं । 11 BK2 पटं । 12 BK1 धारी । 13 BK3 विपटं । 14 BK1 हिम । 15 BK2 BK3 मनो । 16 BK2 कीरी । 17 BK1 पुर दृष्टं ।

किय सत्य युग्गं । कलि[1] क्काल भंग्गं ।
कृतं[2] सत्य भूपं[3] । नमो तास रूपं ॥१६२॥
कह्यौ[4] एम सुल्लाल । माली कवित्तं ।
जिनै उच्चरी वुद्धि[5] । गंगा पवित्तं ॥१६३॥
गिरा शेष वाणी । कवि काव्वि[6] वंदे[7] ।
[नाम[8] वषाणनं चंद छंदे] प्रत्तिप्र ॥१६४॥
प्रथम्मं भुजंगी । सुधारी गृहन्नं[9] ।
जिन्नै[10] नाम एकं । अनेकं कहन्नं[11] ॥१६५॥
द्रुति लव्भ[12] वंदे । सखा-ता[13] जीव तेसं ।
जिनै[14] विस्व राष्यौ । वली मत्त[15] सेसं ॥१६६
त्रीती भारथी[16] व्यास । भारथ्थ भाष्यौ ।
जिनै उक्ति पारथ्थ । सारथ्थ साष्यौ ॥१६७॥
चवै सुक्क[17] देवं । परिच्छित[18] रायं ।
जिनै उद्धरै[19] सव्ब, । कुरूवंस रायं ॥१६८॥
नले रूप पंचम्म । श्री हर्ष सारं ।
नलं[20] राज चरितं । सुकंठं स्सहारं ॥१६७॥
छठं[21] काली दासं । छभाषा समुदं[22] ।

---

1 BK2 BK3 कलि काल । 2 BK2 कंठ BK3 वानं सत्य रूपं । 3 BK2 नूपं । 4 BK2 BK3 में 'कह्यो एम' पद्यांश छूट गया । 5 BK2 वुद्ध । 6 BK2 कावि । 7 इस पद से आगे BK में पुरुपंति वाणी महाकव्वि-चंदे पाठ अधिक है । 8 BK2 BK3 में यह समस्त चरण नहीं है । 9 BK2 मेनं । 10 BK2 जिने । 11 BK2 मेनं । 12 BK2 लभ्य । 13 BK2 में या चरण छूट गया । 14 BK1 जिणै । 15 BK3 मत्ति 16 BK3 तृति भारती । 17 BK2 सूक देव । 18 BK2 परिच्छत । 19 BK2 उधरै । 20 BK2 नलैराय कंठं नैषध हारं BK3 नले राय किय कंठ नैषद्ध हारं । 21 BK2 छुठे BK3 छुठै । 22 BK2 समुदं BK3 समद्धं ।

[अनेकं[1] अगे अन्न । हूए अनद्दं] ॥१९९॥
सतं दंण्ड[2] माली । सुलाली कवित्तं ।
जिनै बुद्धिता रंग । गंगा पवित्तं ॥२००॥
कवि[3] एम रंच्यौ । जु अग्गे सुवंदे ।
तिनहु[4] पुच्छि कै [कच्छु] कबि चंद छंदे ॥

(प्रथम खंड समाप्त)

यहाँ प्रथम खंड समाप्ति सूचक पुष्पिका तीनों प्रतियों में नहीं दी गई।

1 BK यह समस्त चरण प्रति BK2 BK3 में नहीं। 2 BK3 दंडि। 3 BK2 में यह समस्त चरण छूट गया, BK3 में कवि एम-से-चंद छंदे तक जीर्ण है। 4 BK2 तिनैहिं।

द्वितीय खण्ड

(वशोत्पत्ति वर्णन)

छंद पद्धड़ी

ब्रह्मान जग्य[1] ऊपन्न[2] सूर ।
मानिक्क[3] राइ चहुवांन मूर ।
जिहि अंगराजन अनेव[3] ।
कलि अल्प भाव कित्तिय अच्छेव ॥ १ ॥
धर्मांधिराज रति भोग जोग[4] ।
षटु[5] षंड षत्ति षग्गह[6] ति भोग ।
तिहि तनय[7] भयौ[8] वीसल मदंध ।
सो पाप रत्त दब्बानि[8b] अंध ॥ २ ॥
कामंध अंध सुभयौ[9] न काल ।
हक अहक जोरि गिरि इक्क माल ।
धन मदन सदन गिरि इक्क माल ।
तिहि परत उठ्यौ[10] कृत्या कदम्म[11] ॥ ३ ॥
कृत्या कदम्म[12] उर असुर रज्ज ।
धर ढुंट नाम दानव उपज्ज ।
जुग जोग नैरि जुग्गनि[13] सुथांन ।
पुज्जहू सु आनि उग्गत विहांन ॥ ४ ॥
रथ चारि चक्र उत्तंग वाहु ॥

---

1 BK[1] जगा । 2 उत्पन्नो । 3 BK[3] मानिक । 3 BK2 BK3 अनेय । 4 BK2 योग । 5. BK2 षंडि BK3 षंडि । । 6 BK2 BK3 षंगह । 7 BK2 BK[3] तनै । 8 BK2 BK[3] भयो । 8B BK3 दब्बानि । 9 BK2 सुभयो । 10 BK2 उठ्यो, BK[1] उग्रौ । 11 BK[1] कदम्मा । 12 BK2 कदंम, 13 BK[1] जोगिनि ।

असि असिय[1] हथ्थ मुषि अग्गि दाहु ।
संभरि भर धरन हियैं[2] ठारु ।
पुक्कारयौ नर तहं[3] जाउ जाउ ॥ ५ ॥

अडिल्ल

संभरि सूर श्रवन्नह संभरि ।
पंथ प्रजाय सुरे[4] रसजं बरि ।
रम्य अरम्य करी सु धरन्निय[5] ।
रहे भट काट सुफोट करंन्निय[6] ॥ ६ ॥

दोहा

गो[7] रावल रण[8] थंभ गिरि, सारंग सांचौ राह ।
प्रजा पुलंदी महम धर, आनल[9] भग्गौ राह ॥ ७ ॥

छंद भुजंगी

गृहं गौरि जम्यो[10] सु आनल्ल राजा ।
बसे देश ग्रामं दूनी छत्र साजा ।
तहां संभरी बात मुक्के सुनित्तं[12] ।
धरै ध्यांन देषे अजम्मेरि[13] चित्तं ॥ ८ ॥
कला सच्छ सीषै, महामल्ल तीरं ।
गमै मग्ग आमग्ग, सो मत्ति[14] धीरं ॥
.... ।
.... ॥ ६ ॥

---

1 BK3 आसिय, BK1 आसि । 2 BK2 हिय ठातु, BK3 हिय ठरसु । 3 BK2, BK3 में "तहं" छूट गया । 4 BK3 सुर । 5 BK2 BK3 धरनिय । 6 BK2 करनिय, BK3 कर निज । 7 BK3 गौ । 8 BK3 रन । 9 BK आन लग्न भयी, BK3 पन्ना जीर्ण है । 10 BK1 जम्यौ । 11 BK1 वाल । 12 BK1 सुमित्तं । 13 BK3 अजमेरि । 14 BK2 मत्तधारं ।

गवरी मात सुमंत कहि[1], हम कहि उरह दहंत।
ढुंढा[2] नर ढुंढे भषे, नव सेवनह कहंत ॥१०॥

कवित्त

सेव देव रंजियहि, सेव सिद्धनि मन मान बन।
सेव सिंह पत्तियहि, सेव रंच्चे[3] चतुरानन।
सेव[4] स्वामि मन्नियरि, सेव हुई[5] पतित पावन।
सेव अवस वस होहि[6], सेव सिव[7] सक्ति सुहावन।
हौं[8] सेब भेव रक्षस[9] करौं, जियन मात तन जान वन।
उनमत्त[10] ढुंढ धावो भषन, तुमुहि[11] वचन सुमानं[12] वन ॥११॥
गवरि मातु सिंषवै, पुत्त[13] आनल इह सिष्षिय।
मानव सौं मानव[14] भिरंत, दानव नहि दिष्षिय।
बहुत काल बहि गये[15], भरिग जंगल घर पूरन।
मृग मयंद षंडियहि, छंडिय छत्रिय पति[16] सूरन।
जंजीवहिं जोयि मातुल्ल धर, भंजि न घट भग्गिहि करहिं।
जिय[17] धरि सुरत्ति रहहि, पुत्त न रष्षस डर भरहिं ॥१२॥

दोहा

गवरी मात सुमन्त यह, जीवन मरन सुद्धि[18]।
दुहुँ विधि[19] घर-वास हि करौ, आराधै कि विरुद्ध[20] ॥१३॥

---

1 BK2 कह्य, BK3 कह्यउ। 2 BK2 ढुंटा न ढुंटे भषे। 3 BK3 रच्चै। 4 BK3 सवि। 5 BK2, BK3 पतित पति। 6 BK3 हौहि। 7 BK3 सिवं। 8 BK3 हो सौव। 9 BK2 BK3 रकस। 10 BK1 उन। 11 BK2 तुमहि, BK3 तुम रहि। 12 BK2, BK3 'सु' नहीं है। 13 BK3 पुत्र। 14 BK3 मनव। 15 BK1 गए। 16 BK2 BK3 पत्ति। 17 BK3 "जिय"—से "जीवन"—तक जीर्ण है। 18 BK2 BK3 सुधि। 19 BK3 विध। 20 BK2 विरुध।

मात वरज्ज सुरत्त[1] हुव, सत्रह सेव असेव।
जहं अजब्ब अजमेरि वन, असुर निरख्यौ भेव ॥१४॥

छन्द त्रोटक

जहं सिद्ध न मृग्ग, न पंषि वनं।
दिसि सुन्नि भइ, डरि जीव विनं।
नर देखि अचंभ, कियो[2] सुहियं।
विधि आजु सही, भलु[3] भष्षु दियं ॥१५॥
दिष्षौ सुवीर, कंदलह गेह।
सौ पंच हथ्थ, ताडंव[4] देह।
असि असिय हथ्थ, झान्यौ झनंकि[5]।
मन सहस पाय, टोडर षनंकि ॥१६॥
उर चांप्पि[6] बग्ग, सिर नाय राज।
थहराइ[7] ढुंढ, दानव सग्गज[8]।
..................................।
..................................॥१७॥

साटक

किं दारिद्र सदुष्ष[9] कुष्ट तन सासत्रानि किं घर हरं।
किं नारिय वियोग दैव[10] विहिता दुर्भाषितं किं न्नरं[11]।
किं जम्मानस रुठ्ठ[12] झुठ्ठ जगतं विस्वासनो[13] सगुरं।
किं मत्ता सुगंध सीस सरसा आलिंगिता सुंदरी ॥१८॥

दोहा

आलिंगन दिय हथ्थ धरि, तव पुच्छिय यह बत्त।
जिहि जीवन रत्तौ जगत, तू क्यों[14] राज अरत्त ॥१६॥

---

1 BK3 सुर सहु। 2 BK1 कियो। 3 BK2 BK3 भल्ल भष्ष, 4 BK2, BK3 तावंव। 5 BK 1 जनंकि। 6 BK1 चंपि। 7 BK2 थहर। 8 BK2 BK3 सगाज। 9 BK3 दुष्ष। 10 BK3 देव। 11 BK2 नरं। 12 BK2 तुट्ठ। 13 BK1 विश्वासनो। 14 BK2 क्यौं।

छंद साटक

राजा—नो दालिद्रं,[1] न कुष्ट रुष्ट तनया[2], शत्रु मे धर हरं।
नो[3] नारिय वियोग, दैव[4] विपदा, नो[5] भासितं नो नरं।
नो सन्मानस रुष्ट जिष्ट जगतं, विश्वासितो सगुरं।
नो[6] मत्ता न सुगंध रंग सरसा, नालिंगिता सुंदरी।

दोहा

नो दालिद्र न कुष्ट तन, न जन मुग्ध रस भेव।
न अन रत्त संसार सुष, तू परमेसर[7] सेव ।।२१।।

छन्द (त्रोटक

सु प्रसन्न[8] देषि दाइत्तं[9] मनं।
नर रूप धरं न कियौ[10] सुमनं।
तव पुत्रह[11] पौत्र वधू उरणं।
मनु मानस राज करं धरणं।।२२।।
असि[12] हथ्थ लिये असमान गयौ[13]।
सोई[14] टोडर कंदल ही जुठयौ[15]।
तिहि पूजन कौ रविंवार कियौ[16]।
चहुआन सुआन हि राज दियौ[17] ।।२३।।

छन्द पद्धड़ी

आना नरिंद अजमेरि वासि[18]।

---

1 BK2 दलिद्र । 2 BK2 तन सासत्रानयं धरा हरं । BK3 नो दालिद्रं……………से वियोग—तक पन्ना जीर्ण है। 3 BK2 न। 4 BK3 देव। 5 BK3 न। 6 BK3 न, BK2 न माता न मृयंग रंग सरिसा। 7 BK परमे BK3 पर मरतौ। 8 BK2, BK3 प्रसन्नो। 9 BK2 BK3 दैयत। 10 BK2 BK3 कीयो। 11 BK2 पुत्र। 12 BK2 BK3 असिय हथ लीपे। 13 BK2 BK3 गयो। 14 BK2 BK3 सो। 15 BK2 णायो, BK3 जुठयो। 16 BK2 BK3 कियो। 17 BK2 BK3 दियो 18 BK1 वसि।

म्भरि सुकीय सोवन्न रासि[1] ।
ग्रामाणि ग्राम तोरण उत्तंग ।
वन[2] घाट वाट निधि रस सुरंग ॥२४॥

पसु पंषि सद्द श्रुति मंडलेस ।
जल ध्यानं ग्यान विप्रह सुदेस[3] ।
आरम्य रम्य कीनी सु लोय[4] ।
दालिद्द दीन दीसै न कोय[5] ॥२५॥

तिहि तनै भयौ[6] जै सिंघ देव ।
निधि लई[7] वीर वीसल षनेव ।
सब दई देवता विप्र हस्त[8] ।
भंडार धरी धर धर्म[9] वस्त ॥२६॥

तिहि तनै भयौ[10] आनन्द मेव ।
बाराह रूप दिष्यौ[11] सुदेव ।
धरनी विहार आकास सद्द ।
मंडें सुराय पुहकर प्रसद्द ॥२७॥

सौ वरस राज पति[12] अंत कीन ।
छिति छत्र सोम पुत्र हि सुदीन ।
आनंद राज नंदन सुसोम[13] ।
मोरे दलिद्द तिनि कियो होम ॥२८॥

---

1 BK2 BK3 रास । 2 BK2, BK3 समस्त चरण स्थान में "वनवटहि निधि पुरंग" पाठ है । 3 BK2 BK3 सुदेश । 4 BK2 BK3 सुलोइष । 5 BK1 कोइ । 6 BK2 भयो । 7 BK2 BK3 लीई । 8 BK3 हस्तं । 9 BK3 धर्म—मेव—तक खण्डित 10 BK2 भयो । 11 BK2 BK3 दिष्यो । 12 BK2 BK3 पत । 13 BK2 BK3 सुसोमा ।

नइरा[1] पुर सर लगी व्योम[2]।
आनंद केलि[3] अजमेरि भौमि [भौनि]
..............................।
..............................॥२६॥

दोहा

सोमेसुर[3] तौंवरि घरनि, अनंगपाल पुत्तीय।
तिहि[4] गर्भ पृथिराज धरि, दान कुली[5] छत्तीय ॥३०॥
विक्रम राज सरीर भौ, बुधि वंदन कवि चन्द।
भूत भविष्यत वर्तमान, कह्यो[6] अनूपम छंद।
जिहि सुहाइ असुरति सुभट[7], सत सावंतर[8] सूर।
तिहि कित्ति[9] प्रग्गट्ट करन[10], कह्यो[11] चंद कवि सूर[12]॥३२॥
छंद प्रबन्ध कवित्त रस, शाटक गाह दु अथ्थ।
लहु गुर मंडित षंडिय[13], पिंगल भरह भरथ्थ[14] ॥३३॥
सहस सत्त नष सिष सरस, आदि अंत सुनि देषु।
घटि वढि मत्तहि को पढै, दूषन मुहि न विशेष ॥३४॥

शाटक

राजं जा अजमेरि केलि कलयं[15] बृंदं नृतं[16] सुंदरी।
दुद्धारा धर भार नीर वहनो, दहनोपि दुर्ग[17] अरी।
सो सोमेस्वर नंद दंग[13] गहिला, वहिला वनं वासिनं।

---

1 BK2 BK[1] नइ। 2 BK2 BK3 धौम। 3 BK[1] केसि। 3 BK1 सोमेसर। 4 BK1 तिही। 5 BK2 BK[3] कुल। 6 BK[1] कह्यौ। 7 BK2 BK3 सुभट्ट। 8 BK 1 सावंत। 9 BK3 सुकित्ति। 10 BK1 करण। 11 BK3 कह्यो। 12 BK3 मूरं। 13 BK[3] षंडिया। 14 BK भरंव। 15 BK[1] कलदां। 16 BK1 नतं। 17 BK1 दुर्ग BK[3] दुर्गा।
18 BK2 BK3 द गहिला, 'वहिला' शब्द BK2 में छूट गया।

निर्मानं निधिनां सुजानि कविना, दिल्ली पुरं वासिनं ॥३५॥

दोहा

पट्टु आषेटक रवन महा, मुरस्थल थांन।
नागोरै[1] गरुवे गुनहि, मति निर्मल परधांन[2] ॥३६॥
इहि[3] आचार आषेट नृप, पति पुर षट्ट[4] पास।
पाहल पक्व[5] पषांन मैं, संपैष्यौ[6] कैंवास[7] ॥३७॥
उरधांगुल[8] सत[9] त्रिसठि, तिर्यक्कह[10] चवसट्ठि[11]।
तह अच्छर निर्म्यो सु इम[12], सर महि द्रव्य अदिट्ठ ॥३८॥
वंचि विचारि सुमंत्र यह, सर महि मप्पिय छांह।
छंडिय[13] मंडि सु[14] अंगुलह, द्रव्य निरष्षिय तांह[15] ॥३९॥
थांन[16] निरष्षिय राज जदि, अच्छर द्रव्य सु अथ्थ।
सबै[17] सूर सावंत वदि निशि रष्षहु इह सथ्थ ॥४०॥

कवित्त

सथ्थ तथ्थ निशि रषि[18] दीप, वासर गृह थानह।
अवर सब्ब सावंत कीयो[19], पार सबे रामह।
रैनि मध्य विन चंद जग्गि, सावंत सामि[20] सह।
निंद सयल हुव सेन षनिज, सभ राज द्रव्य थह।
षोदंत[21] पुरस एकहं प्रकट, सिला धात सत्तह समय।
तहं[22] सुभय अंकु लिष्यो[23] सु, पर वंचि राज कैंवांस तथ ॥४१॥

---

1 BK3 नागौरं । 2 BK3 परधानं । 3 BK1 इह, BK3 इति । 4 BK2 BK3 षट्ट । 5 BK2 BK3 पकपयांन । 6 BK2 संपेष्यो, BK3 संपष्यो । 7 BK2 BK3 के वास । 8 BK2 BK3 उरध अंगुल । 9 BK1 सन । 10 BK1 तिरज । 11 BK3 'गहै' अधिक है । 12 BK1 इह । 13 BK3 छंडिय छूट गया । 14 BK2 BK3 शु । 15 BK2 BK3 तहं । 16 BK2 थान निरष्षि । 17 BK2 सावे । 18 रेषि । 19 BK2 BK3 कीय । 20 BK2 BK3 स्वामि । 21 BK3 षोदंतु परस । 22 BK2 त्तहं । 23 BK1 लिष्यौ ।

दोहा

साक सविक्कम एक दह, त्रीस सु अट्ठ[1] सपत्त[2]।
चहुवान नृप सोम सुत, पिरथीराज[3] निमित्त[4] ॥४२॥

कवित्त

वंचि राज कैंवास सोइ, यंतर सिल नीलह[5]।
द्रव्य ताम उद्धरिय तेर[6], कर हासे[7] तोनह।
एकादस गज पूरि पंथ, संभरि पुर थांनह[8]।
वासर सत संक्रमिग, भरिग, भंडार विधानह[9]।
संचरिग राज मृगया बहुरि, पुर[10]षट्टु पारस रमन।
कर पत्र[11] आइ दिद्धो तहां, राज दूत भिंद्यौ सुजन ॥४३॥

दोहा

दिय पत्री कैंवास[12] कर, अनंग पाल कहि दूत।
नर बंचै सावंत सौ, अच्छर निमित्त[13] अभूत ॥४४॥

साटक

स्वस्ति श्री अजमेरि[14] द्रोन दुरग[15], राजाधिपो राजनं।
पुत्री पुत्र पवित्र ध्यायत[16] धनो, छत्री सव[17] सावनं।
मा वृध्याय भवं तपस्वि सरनं, वद्री निमित्तं तनं।
आभूमीय हय गयं सु सकलं, तावार्पितं संपदं ॥४५॥

दोहा

वांचि पत्री कैंवास नृप, सदि सावंत सुसंत[18]।
आइ दूत दिल्ली हु तै[19], सुवर विचारहु वत्त ॥४६॥

---

1 BK2 अट। 2 BK3 सुपत्ता। 3 BK2 BK3 प्रिथीराज। 4 BK2 BK3 निमंत। 5 BK3 नीलहा। 6 BK2 BK3 भेर। 7 BK2 BK3 हासै तीन हन। 8 BK3 थ्थानह। 9 BK3 विधानहा। 10 BK3 पुरुषय। 11 BK2 BK3 पवित्तु ढजढ जूट तह आइ राज भिंद्यो सुजन। 12 BK3 कौवास। 13 BK1 निमित। 14 BK3 अजमेर। 15 BK2 BK3 दुर्गं। 16 BK2 BK3 ध्याय धनो। 17 BK3 सवं। 18 BK3 सु संत। 19 BK2 BK हुते।

कवित्त

बंचि पत्र सांवत बैठि, सब सत्त मत्त नर।
कैवासह चामुंडराइ, रामह बड़ गुज्जर।
हाहुलि हमीर सलष, पंवार जैत सम।
कहहि राज यह बात तात, अप्पिय ढिल्लिय तुम।
पुंडरीय चंद इम[1] उच्चरहि, करहु अब्ब आदर सुधर।
उप्पाय[2] अनंत महि लिज्जियै[3], आदि धर्म देवह असुर ।।४७।।

दोहा

थाप्यो मंत कैंवास सौं[4], मन धरि घर तिय तत्त।
चढि चहुवांन सु संभरि, पुर ढिल्ली संपत्त ।।४८।।
पितु मातुल भिंद्यो[5] सु पहु, मिलि अति उच्छह कीन।
वासर सुर रवि इंद वल, लषि वर ढिल्ली पत दीन ।।४९।।

कवित्त

अनंगपाल चक्कवै बुद्धि, जोइ सिउ[6] किल्ली।
एतौं वर मति हीन करी, किल्ली ते[7] ढिल्ली।
कहै व्यासु[8] जग जोति, अगम आगम हौं जानौं।
तौंबर तैं चहुवान होइ, पुनि पुनि तुरकानौं।
तौंबर अवट्टि मंडव घर हि[9], एक साहि महि भुग्गवै।
नव सत्ता अंत दिल्ली सवर, एक छत्र सोइ चक्कवै ।।५०।।

---

1 BK2 इमि उच्चारे, BK3 इमि उच्चरै। 2 BK2 उप्पायि, BK3 उयि।
3 BK3 लिज्जिये। 4 BK2 BK3 सोईघर तिय तत्त। 5 BK3 भिंद्या।
6 BK2 BK3 सीउ। 7 BK2 त, BK3 ते। 8 BK1 व्यास सज्जग।
9 BK2 BK3 'हि' छूट गया।

छंद उधोर

[लहु[1] रजि अंत पय[2] दह पंच। मत्त हंस कल सट्टिय[3] संच।]
[मासति चंद छंद उधोर[4]। प्रति पग कहिय पन्नग जोर।]

लिषि वर घटिय महूरत मंत। द्विज घन वेद चवै वरसंत।
आसनहं हेम पट्टय टार। मनि गंन कनक[5] मुत्तिय उज्यार ।।५१।।
मंडित कलस विप्र विनोद। राजन मानित सु[6] मन मोद[7]।
धुनि वर विप्र मंडित वेव। माननि सकल सज्जित[8] गेव[9] ।।५२।।
बज्जहि बहुल बज्जन भार। गान हि मांन ग्रांम सु तार।
नंचति पत्र भरह सुभाव। गांनहि सिद्ध विक्रम साव ।।५३।।
सज्जित सकल सिंधुर दंति। छत्रह[10] पुहमि[11] सोहति पंति।
धवलहं चढ़ि निरषहिं नारि। गौषनि[12] रंध्र राज कुमारी ।।५४।।
मांनहु तडित अभ्र[13] समाज।.........................।
वसनह राजन रजित घोर[14]। साजित[15] धनुष वासव जोर ।।५५।।
राजत श्रवन रवनि तटंक। राका मानों उभय मयंक।
सोहति लाल कुंडल कंति। वधुव ति इंद्र इंदु[16] मिलंति ।।५६।।
मंडित विप्र वेदिय[17] वेद। जाना आहुति भेदिय[18] भेद।
पाटह पुत्ति[19] पुत्त अरोह। विजुति नृप धा भरति सोह ।।५७।।
मंडि मुकुट्ट[20] उत्तम मंग। रचितहु धातु सुल्प सुरंग।
दुति[21] अति दलक क्रीटिय तास। मनु मारीचि इंदु[22] उहास ।।५८।।
ध्रुव समौ मंडिय छत्रव जोर। मनु हरि वाल विचि सुमेर।
तिलक नग रंग जटित भाल। हुब वहु झलक्क दीपक जाल ।।५९।।

---

1 BK2 BK3 लहू। 2 BK3 पयं। 3 BK3 सढिय। 4 BK2 उद्धारे, BK3 उद्धार। 5 BK2 BK3 'कनक' छूट गया। 6 BK2 BK3 'सुमन' छूट गया। 7 BK2 र मोद, BK3 तर मोद। 8 BK2, BK3 सजित। 9 BK2 ग्रेव। 10 BK1 छत्रं। 11 BK2 BK3 पुहिमि। 12 BK2 BK3 गवषनि। 13 BK2 BK3 आभ्र। 14 BK2 BK3 'घोर' छूट गया। 15 BK2 BK3 "साजित" छूट गया। 16 BK2 इंद, BK3 इंदं। 17 BK3 विप्रे। 18 BK3 भेदहि। 19 BK3 पुत्रि पुत्र। 20 BK2 मुकुट BK3 मुकट। 21 BK3 दुत्ति। 22 BK2 यिंद।

चरवहि मुत्ति, कुन्दन थाल । पूरित पुहप, पूजहि वाल ।
चरवहि सु-कर, अनंग पाल । सोहति कंत, मुत्तिय माल ।।६०।।
द्विजवर चवहिं, आसिष वेद । मानिनि गांन, तान अषेद ।
हय गय अथ्थि, ढिल्लिय देस । सौंपिय पुत्ति पुत्त नरेस ।।६१।।
षोडश दांन, पूरन मांन । अप्पिय विप्र, वेदहं गान ।
गहन सतप्प, तप्पिय ध्यांन[1] । धरिय सुवद्रि नाथहं धांम[2] ।।६२।।
तजिय सुगेह, माया जाल । सविग सुजोग[3], वंचिय काल ।
रचिय सुवानु[4], प्रस्थ सरूप । क्रसित हर हित, जोवन[5] भूप ।।६३।।
हय गय तरुनि[6], द्रव्य सुदेस । तृन[7] वर तजि[8], तुंबर नरेस ।
.... ।।६४।।

कवित्त

एकादस[9] संवतहं, अठ्ठ, अग्गह ति तीस भनि ।
प्रथमु रित्तु तहं हेम, शुद्ध मागसिर मास गनि ।
सेत पष्व पंचमी सकल, वासर गुरु पूरन ।
शुभ मृग सिर सम्मुही[10], यो[11] साधहि सिधि चूरन ।
इमि अनंगपाल अप्पिय महि, पुत्तिय पुत्त पवित्त मन ।
छंड्यौ सुमोह गृह सुष तरुणि, पति वद्रिय सज्यो सरनं ।।६५।।

दोहा

जुग्गिनि पुर चहुवांन दिय, पुत्तिय[12] पुत्त नरेस ।
अनंगपाल तोंबर तिनै, किय तीरथहं प्रवेस[13] ।।६६।।

---

1 BK2 BK3 थान । 2 BK1 ध्यांम । 3 BK3 सुयोग । 4 BK1 सुवांन । 5 BK2 BK3 योवन । 6 BK1 तरुणि । 7 BK1 तृण । 8 BK2 चरि तजिय । 9 BK2 BK3 येक्कादस । 10 BK2 समुहि, BK3 संमुही । 11 BK1 योग सिद्धि व्याधहि चूरन । 12 BK2 BK3 पुत्रिय पुत्र नरेश । 13 BK2 प्रवेश ।

अनंगपाल पुच्छहि[1] नृपति, कहहु भट्ट[2] धरि ध्यांन।
किहि संवत मेवार पति, वंधि लियो सुरतान ॥६७॥
सोरहि[3] से कटि गहित, विक्रम साक अतीत।
ढिल्ली धर मेवार पति, लेइ षग्ग वर जीति ॥६८॥
सत[6] अग जिह सावंत सजि, वजि न्निघोष[7] सुनंद।
सोमेसुर[4] नंदन अटल[5], ढिल्लिय[8] नृपति[1]″ नरिंद ॥६९॥
एकादस[9] सै तीस[10] अठ, विक्कम साक अनंद[11]।
तिहि पुर रिपु जय हरन कौ[12], भयौ[13] प्रथिराज[14] नरिंद ॥७०॥

"इति श्री कवि चंद विरचिते पृथ्वीराज राशे वंशोपत्पत्ति-
द्रव्वलाभ-राज्याभिषेको नाम द्वितीय षंडः ॥

---

1 BK2 BK3 पुच्छै। 2 BK2 BK3 भट। 3 BK1 सोरह सै तेसठि। 4 BK1 सोमेसर। 5 BK2 BK3 अट्टल। 6 BK1 सत्र अगंज। 7 BK1 निर्घोष BK2 निरघोस। 8 BK3 ढिलिय BK2 ढिलो। 9 BK2 BK3 येकादस। 10 BK2 सय पंच दह। 11 BK2 आनंद। 12 BK2 कुं। 13 BK2 BK3 भयो। 14 BK2 प्रिथिराज। 15 BK2 सुचिर नरिंद।

तृतीय खण्ड

कवित्त

सास वंश राजाधिराज, मुकुंद देव प्रभु।
सरित समुद्द सुठट्ठ[1] कटक, बाणार नैर प्रभु।
सहस वीस तुष्षार लष्ष, गैंवर गल गज्जहिं[2]।
सत्त लष्ष पैदल पुलंत, दश छत्रति रज्जहिं।
दिव दिवस रीति मंत्रहि जपै, जगन्नाथ पुज्जै[3] दिनहिं।
दिग विजय करत विजै पाल नृप, सु सप्त कोस विंग्यौ[4] जनहिं ॥१॥
अति आदर आदरिय सहस, दस[5] दीन गयंदहं।
धन[6] असंष घन मुत्ति रवन, सुमनि[7] हि मनिंदहं।
सठ्ठ[8] लत्त परजंक कोटि, दश पाट पटंबर।
बहु विलास जन[9] बहुति देत, अड आड अडंबर।
परिषय सु पुत्त जय चंद लिषि[10], सोभ[11] जुन्हाई[12] सुभ[13] वरिग।
वर वरस पंच दंपति दिनह, पानिग्रह[14] उत्तिम[15] करिग ॥२॥

दोहा

अति ललित[16] सरूप विय, रमहि त राजन संग।
एक थाल भोजन करहिं, अति सुष नृपति प्रसंग ॥३॥
षिरिग देव दच्छिण दिसह, अग्ग भयौ[17] सुभ देव।
सेतु वंध अनुसरिय मग, गौ नृप[18] बलह[19] समेव।
[तोरन[20] तिलंग (तलक) सुवंधि, मिवल फेरि श्रिकूट]

---

1. BK2 BK3 सुतट्ट। 2 BK2 गुजहि। 3 BK2 पुंजै। 4 BK2 भिंग्यो। 5 BK2 दश। 6 BK2 BK3 धनु। 7 BK2 BK3 सुमन। 8 BK2 BK3 सुप्त जंक रजकंति। 9 BK2 जननिय बहति, BK3 जनमिय वहति। 10 BK2 लिषे। 11 BK2 सुभ। 12 BK2 BK3 जुन्हाइय। 13 BK2 BK3 सुव। 14 BK1 पाणिग्रह। 15 BK3 उन्निम। 16 BK2 BK3 लालित्य। 17 BK2 BK3 भयो। 18 BK2 नृपु। 19 BK3 क्लहा। 20 BK2 यह पाठ लिखकर हड़ताल से काट दिया है, अतः BK3 में भी यह पाठ छूट गया।

छंद नाराच

कर्णाट संकलापने , अनेक भूप राजनं।
समुद्द[1] इष्ष भूप[2] वद्ध , मैंथली[3] सुभाजनं।
सुचित्र कंट[4] मच्छरी , सुरंग राइ कुंकनं।
फिरंग देस लिंग[5] वंग ; अंग[6] जीति सिष्षनं[7] ।।५।।
असेर जीत षांनजं[8] , गंभीर गुज्जरी[9]धरं।
जमंडवी मलेच्छ नत्थी , गुंड देश सो धरं।
मागधं मवील मुष्ष , चंद्रिका सुपट्टुयं[10]।
गोपाचले[11] गुरावयं , प्रकास सोभ नट्टयं ।।६।।
सु पर्वते प्रकार साय , कास कग्गलं[12] मिलं।
अयं समत्थ[13] सिद्धि भूमि, पंगु पुत्त सथ्थलं[13]।
....।
....।। ७ ।।

दोहा

मंडि जग्गि विजय पाल नृप, भूत न तुंग विनास।
तव जैचंद विरद्द वर, हठि लग्गौ इतिहास ।। ८ ।।

चौपाई

अति वर जोर जुन्हाई नारि। चंद जेम रोहिनि उन्हारि।
अति सुष वरषहु अट्ठ प्रमानि। तिहि गब्भ[15] सुभ संजोगिय जानि ।।९।।

दोहा

षंट[16] वंट केकलि कलिंग, अवर[17] देस कहुँ केत।
कनवज्जह दीपक समिति, चंद जुन्हाई जोति ।।१०।।

---

1 BK1 समुद्र। 2 BK2 BK3 भूप्प वध। 3 BK2 BK3 मैथाली। 4 BK2 BK3 कट। 5 BK2 BK3 [illegible]ंग पिलंग। 6 BK2 में यह शब्द छूट गया। 7 BK3 सष्षः। 8 BK2 BK3 षानयं। 9 BK2 BK3 गुजरी। 10 BK3 नु पट्टुयं। 11 BK2 BK3 गोपावले। 12 BK2 BK3 कग्गल। 13 BK2 BK3 सामथ्या। 14 BK2 BK3 सथ्थिलं। 15 BK2 BK3 गभ। 16 BK2 BK3 चंटि वंटि। 17 BK2 BK3 में "कलिंग" तथा "अबर देस कहुं केत" पद छूट गया।

कवित्त

जा जुन्हाई चंद राज , गोरी[1] गुर बंध्यो।
जा जुन्हाई चंद तुंग , तिरहुति विप्पानिय।
जा जुन्हाई चंद कट्ट , कढे[2] सुभ[3] वांनिय।
जा जुन्हाई चंद अट्ठ , दिसि पर्वत[4] लिध्यौ।
जा जुन्हाई पंग दल , असी लष्ष हैंवर षढ़िग।
जै चंद राय जुन्हाई वर , वर वैनी अंगह[5] धरिग ॥११॥

दोहा

सुभ संजोगि[6] समप्पि सुष, दै सुभ भोजन राइ।
अति हितु नृप नित नित्त किय, निय[7] रैनीन विहाय ॥१२॥
सुहठ आरि अपनी[8] करै, सरि न सीस हित तात।
पटन केलि कलि काल रस, सुवर अपूरव बात ॥१३॥
सदन वृच्छ बंभनिय गृह, पढ़न कुंवारिक वृंद।
बार बार लोकन करै, जिमि नच्छत्र विचि चंद[9] ॥१४॥
बालप्पन अप्पनिक सुष, सुष कि जुवप्पन मैन।
सुभर अवनि सिसु नित रहुव, दुरि दुरि पुच्छै[10] वैन ॥१५॥
अतिविचित्र मंडप सुरग, अंगन तास सहार।
आद रसाल कुंवारि पढ़ि, शहस[11] उद्दिम मार ॥१६॥
नेवज पुहप[12] सुगंध रस, बाजत सद्द सुठार[13]।
सुरति काम पूजा मिलै[14], एक समै त्रैवार ॥१७॥
सकल पद्धि बंभन[15] सकल, सकल सुजुवति चरित्तु।

---

1 BK2 गौरी। 2 BK1 कट्टे। 3 BK2 "सुभ" छूट गया। 4 BK2 पर्बतु। 5 BK2 अंगहण। 6 BK1 संयोग। 7 BK2 BK3 नियै। 8 BK2 BK3 आपनी। 9 BK2 BB3 यिंद। 10 BK1 अच्छै। 11 BK3 शहश। 12 BK1 पुप्प। 13 BK2 BK3 सुटार। 14 BK2 मिले। 15 BK2 BK3 बंभनि।

विनय विनय बंभनि कहै,[1] विनय सुमंगल चित्त ।।१८।।
मुगध मध्य प्रौढ़ा प्रक्रति, सुवर वसीकर चित्त ।
सुनि विचित्र वाला विनय, श्रवन[2] सवद्दह जित्त[3] ।।१९।।

छंद त्रोटक

प्रथम उठि प्रात, मुषं दरसं ।
उत्तमंग सुमंग, पयं परसं ।
विनया गुन तुच्छ, विमुच्छ मनं ।
हरहं जय काम, सुतांम तनं ।।२०।।
गृह ग्नियरैंण[4], पियं दरसं ।
प्रकृति प्रति चारू, चषं दरसं ।
भय कामिनि काम, मन[5] व्रत लो ।
सषिना सषिया, निज वंच्छ तजो[6] ।।२१।।
मन वृत्ति सुगत्ति, मन गहनं ।
रह रत्त सुवृत्त, वनं बहनं ।
जिय जीय रसे[7], रसनं रसना ।
भय भार उवृत्त, किए कसना[8] ।।२२।।
परि प्रेमहि प्रेम, सबक्कि[9] सुको ।
जहीं जहीं द्दष्टि, तहीं तहिं सो ।
भुगतं जल अन्न, वरं विननं ।
पथतं निज काम, गृहं गमनं[10] ।।२३।।
भव भूपति भूप, तनं लहनं ।

---

1 BK2 केहै । 2 BK1 श्रवण । 3 BK2 भित्त, BK3 भित्र । 4 BK2 निथंरण पयं, निया रण पयं । 5 BK2 मन्न, BK3 मत्त । 6 BK1 तला । 7 BK2 BK3 रसं । 8 BK2 कसनं, BK3 कसनां । 9 BK2 BK3 सबकि । 10 BK2 BK3 गगनं ।

इन ईसनि सीस, सभं[1] चह्नं[2]।
इन पूजन जापन, ईस गनं।
पति पूजि मनोरथ, वद्ध मनं ॥२४॥
पिय देषहि[3] देषि, मुगद्ध[4] मुधं।
वय वंधिय ताम, सुवाम बुधं।
वसनं रुचि पीय, सुकीय अधं।
तन मंडन भूषन[5], ताम करं ॥२५॥
गह्नं रस सार, सिंगार वनं।
गति गंठिय गंथ, सुकाम मनं।
इति गत्ति[6] चरित, सुधाम धरै।
जीतैति कयंज, अधीन करै ॥२६॥

दोहा

जौवनेन विनयं विनति, सषिना मंगल माल।
सषि आग्रह मानै ग्रहन, पिय छंडै तिहि काल ॥२७॥
उव निशि वसि दुत्तिय गृहन, सिषिनि विन्नंबन लज्ज[7]।
प्रिय प्रियनि अंतरन करि[8], है[9] हिति सुभग अभग्ग ॥२८॥

रड्डु

प्रथम संचरिग[10] दृष्टि दव भंग।
रंग नेह निज निति[11] हिताहित। अनहित सहचरि चरित्त[12]।
सव[13] कि सव्वद्धह विभष।

---

1 BK3 ससमं। 2 BK2 BK3 वहनं। 3 BK1 देष। 4 BK2 BK3 मुगध। 5 BK1 भूषण। 6 BK3 गति। 7 BK2 लम्भ। 8 BK2 कारहि। 9 BK2 में है" नहीं है। 10 BK2 BK3 संचरि। 11 BK2 BK3 नित्य हित अनहित—रेखांकित पाठ के स्थान में इतना ही पाठ है। 12 BK3 चरित्तं। 13 BK सव्व।

धंधीर जु धीर जु बहन । आत मेति अप सिद्धि ।
तंत न मन मानहि धरै । करहि सुकामहि वंधि ॥२६॥

छंद मोदक

तूं धनयं सनयं तुव पत्तिय, तूं हियं जिययं तुव[1] गत्तिय ।
तूं वरयं धरयं तुव मत्तिय, तूं पिययं तिययं[2] गृह[3] रत्तिय ॥३०॥
तूं गृहयं नरयं नृप नत्तिय, तूं गतयं[4] जपयं जक जंत्तिय[5] ।
तूं हसयं वसयं घन घत्तिय, तूं दिययं छिययं[6] छुवि हत्तिय ॥३१॥
तूं सुहयं पुहयं[7] दुह कत्तिय[8], तूं विनयं दिनयं दिन गत्तिय[9] ।
तूं तपयं अपयं[10] अपनत्तिय[11], तूं नथयं हथयं सथ सत्तिय[12] ॥३२॥

कवित्त

विवसि भाय भामिनी अवर, सामिनि न जांनै ।
विलसि कांम कामिनि तांम, लामस अप्रसानै ।
हौं सु बंभ बंभनी रंभ, रंभनी सिषावन[13] ।
है सु दमक दामिनो जांमिनि, जामिनी जगावन[14] ।
तनु तुंग उग्र दुस्सह हिम सु सुनि, सुवाल वल्लह रवन ।
अस[15] हासु चंद चंदन कुसुम, तनु त्रिगान त्रिगुनह पवन[16] ॥३३॥

छंद रासा

सुनि संजोगि सिषावन सांवन संझ हिय ।
तत्तानी षीरन[17] पावचैई .... झरिय ।
गुरु गुह्य ति कन्नज माथ[18] निजु गुझव ।

---

1 BK1 तुवि । 2 KK2 "तिययं" छूट गया । 3 BK2 BK3 "गृह" शब्द के पश्चात् "तिज" अधिक पाठ है । 4 BK2 BK3 गत्तयं । 5 BK2 BK3 जद्रियं । 6 BK3 "छिययं" छूट गया । 7 BK2 BK3 दुहयं । 8 BK2 BK3 कत्तियं । 9 BK2 BK3 गतियं । 10 BK2 BK3 "अपयं" छूट गया । 11 BK2 BK3 अपनत्तिं । 12 BK2 BK3 सत्तियं । 13 BK2 सेषावन, BK3 सिषावन । 14 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया । 15 BK2 BK3 असह सुचंद । 16 BK2 BK3 पवनं । 17 BK3 "षी" छूट गया । 18 BK1 माप ।

अच्छर अच्छ प्रमान विरामहि मंद[1] ध्रुव ।।३४।।
सिंधुल सिंधुतात रन रत्तिय ।
दुज्ज[2] दुज्जानिय बत्तारि मास्ताय ।
प्रयोग प्रिया रज राजन मंडिय ।
जहां[3] जहां जाम उभै निशि षंडिय ।।३५।।

कवित्त

मदन वृद्ध बंभनिय मार, मानिनी मनो वस ।
काम साल संजोग विनय, मंगल तिय षट[4] रस ।
सह[5] सहार तरु इक्क अंग, अंगनि घन मौरिय ।
सुक पिक पंषि असंषि वसहिं, वासर निसि घरिय[6] ।
इक बात[8] द्विजी द्विज सौं[7] कहै, सुनह कंत[9] सु अपुब्ब कथ ।
उत्कंठ वढ़ै मनु उल्हसे[10], रहसि निंद आवे सु तथ ।।३६।।

दोहा

सज्जन[11] अंषि निरष्षि जहं, तहं[12] तरु इक्कु[13] सहार ।
गंध्रब गंध्रबि[14] केलि सुनि, जिहि रस उद्दिम[15] मार ।।३७।।

कवित्त

मति प्रमांन गंधर्व[16] देब, दिव राज बुलायौ ।
कलि हंक्कारयौ[17] भरथ[18] मत्ति, अप्पनी[19] बढ़ायौ ।
भुम्मि भार[20] उत्तारि कलह, कित्ती बिरतारै ।
चाहुआंन कमधुज[21] वीर, विग्रह जग्गारै[22] ।

---

1 BK2 BK3 मद्धि । 2 BK2 BK3 दुज़ । 3 BK3 जेहा जाम उभै निशि षंडिये, BK2 षंडिये । 4 BK2 BK3 पटय । 5 BK3 तह । 6 BK2 BK3 घेरिय । 7 BK2 BK3 वार । 8 BK2 BK3 सां । 9 BK3 कृत सो अवु कथं । 10 BK2 उल्लासे, BK3 उललसैं । 11 BK2 BK3 सज्जनि । 12 BK3 "तहं" छुट गया । 13 BK3 इकु । 14 BK1 गंध्रव । 15 BK2 BK3 उदि्म । 16 BK3 गंधर्व्व । 17 BK3 हकारौ । 18 BK3 भारय्थ । 19 BK3 अप्पनिप । 20 BK2 BK भारि । 21 BK1 कमधज्ज । 22 BK1 जग्गोर ।

करि रूप कीर कनवज्ज गौ[1], दिवस उभय दिषी[2] पुरी ।
बंभनिय मदन अंगन सु तरु, निसि[2] वासर तहं उत्तारी ।।३८।।

अनुष्टुप

सत्य युगे कासिका जुद्ध[3] त्रेतायांच अयोध्यया ।
द्वापरे हस्तिना वासं, कलौ कनवज्जिका[4] पुरी ।।३६।।

छंद पद्धड़ी

संयोगि नांम सुवांनि जिहि, तात विजय कि आनि[5] ।
इय लच्छिने तव तीर इह, पष्ष छत्र विदीर[6] ।।४०।।
तव[7] दिट्ठ गेह[8] समांन भू, राह नीच नयांन ।
इह काम राज सुजग्य मिलि, राय सहस विभाग्य ।।४१।।
कलहंत काज सरूप छिति, रत्त श्रोनित भूप ।
इह[9] द्विजनि विन कहि व्याह दुइ, नयर[10] मंगल धाय ।।४२।।
अभिलाष सुष इमि चंद[11] जिमि, रुकमिनि[12] रु गुविंद ।
सुक सुकिय केलि विभाग सुनि, श्रवन[13] भौ अनुराग ।।४३।।
चित विलषि तर्लपि[14] कुंवारि लगि, पटन केलि धमारी ।
अस[15] सिसर रितु जु अतीत, पतिता गृहे[16] छिति जीत ।।४४।।

कवित्त

इक्कु राउ[17] संभरो वियो, जुग्गिनि पुर भूपति[18] ।
तेज मौज अमजेज्ज उरद्द, उद्दार[19] अनूपति ।
बाए मध्य वय मध्य महीय[20], जन दुष्ष विमोचन ।

---

1 BK3 गो । 2 BK2 दिष्षिय, BK3 दिष्षेय । 3 BK2 BK3 निशि । 3 BK2 BK3 जुद्दे । 4 BK2 BK3 कनवर्जिका । 5 BK3 अनि । 6 BK2 BK3 विदीस । 7 BK2 BK3 "तव दिट्ठ" छूट गया । 8 BK2 BK3 ग्रेह । 9 BK3 इहि । 10 BK2 BK3 नैर । 11 BK2 BK3 यिंद 12 BK2 BK3 रुकिमिनि । 13 BK1 श्रवण । 14 BK2 BK3 तउर्लपि । 15 BK2 BK3 अस सिरति तु जु अतीत । 16 BK2 BK3 गृह । 17 BK2 BK3 राव । 18 BK2 BK3 भुपिति । 19 BK3 उद्दारति । 20 BK2 माहीयन BK3 "महीय जन" छूट गया ।

[सूर वीर गंभीर धीर, त्त्रिय मन रोचन[1]]!
नर देव दिवस मंडली[2], सभा, इषु अछिष[3] अषंडलिय।
रत्तान सुद्धि षुरसांन मिव, पंषि अल षिसि मंडलिय ॥४५॥

अनुष्टुप

अन्यथा नैव पिष्षंति, द्विजस्य वचनं यथा।
प्राप्ते च जुग्गिनि नाथे, संयोगिता तत्र गच्छति ॥४६॥

दोहा

सुनत[4] कथा अच्छि वत्तड़ी, गइ[5] रत्तड़ी विहाय।
द्विजी कहै द्विज संभरै, जिहि सुष श्रवन सुहाई[6]।

इति कवि चंद विरचिते पृथ्वीराज रासे संयोगिता उत्पत्ति सकल कला।
पाठनार्थं द्विज द्विजी गंधर्व गंधर्वी संवादो नाम तृतीय: षंड ॥

1 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया। 2 BK3 मंडलि। 3 BK3 "अछिष" छूट गया। 4 BK1 सुनित। 5 BK2 BK3 गयि। 6 BK2 BK3 सुहाइ।

चतुर्थ खण्ड

कवित्त

अठताली सै चैत्र मास, पष्षह सु उजारी।
भोरे राइ भीमंग सोर, शिव पुरी प्रजारी।
आरजराइ[1] सलष्षराइ, संभरि संभारिय।
चाहुवांन सांमत मंत[2], कैंवास पुकारिय।
धर जात पंवारह पट्टनह, बोले बच कै सुदूत वल।
कै वार कथन हत्थह तनी, षंडोराइ क्रियवान[3] षल॥ १॥
सो[4] निगरौ संघरौराउ[5], सामंत सीवानौ[6]।
[होला राइ हमीर धीर कहि, कहूँ वषानौ[7]]।
चाइ चवै चालुक्कराउ, भोरो भुवपत्ति[8]।
कवि अ॰षौ पम्मारि[9] जंग, छंडी[10] इह[11] मत्ती।
आइ लग्यौ[12] धाइ सुमंडली, गुज्जर राइ गरव्वियो।
प्रिथिराज[13] संभरि[14] तपै, तरै[15] तुरक्क सुवंधियो॥ २॥

दूहा

चालुक्क चहुवांन सौ, बद्धा तोरन माल।
ते कवि चंद प्रकाशियो, जे हुंदे दर हाल॥ ३॥
सलष कुंवरि जैतह अनुज[16], मंगै भोरो[17] राउ।
अब्बुतर उप्पर करौं, कै इंच्छनि परनाउं॥ ४॥

---

1 BK1 अरज। 2 BK2 BK3 मंति। 3 BK1 कियवान। 4 BK1 सौ 5 BK3 संघरो। 6 BK2 सिवानौ, BK3 सीवानै। 7 BK2 BK3 कोष्ठ गत पद छूट गया। ८ BK3 भुवपत्ती। 9 BK2 पुंमारि। 10 BK1 छुड्डी। 11 BK2 BK3 इहि। 12 BK2 लग्यो। 13 BK1 पृथ्वी राज। 14 BK2 BK3 अंभर 15 BK2 BK3 "तरै" छूट गया। 16 BK2 अनुजि। 17 BK3 भौराराउ।

कवित्त

जरिय जैत पम्मार[1], सलष नंदन यह कत्थिय[2]।
रे भोरा भीमंग राज, प्रिय जन मुष पत्थिय[3]।
हम सुभोज भुवपत्ति, कुलह कुंडल कल मंडिय।
सत्र सत्थ करि नस्त्र तिनह, दंतन[4] तिन षंडिय।
गुज्जरिय गच्छ गोप्प रहगे, हरि गब्बू[5] नंच न कहै।
च्यालुक्क भग्ग[6] गब्बह तनौ, किम प्रकट्ट[7] इंछनि गहै॥ ५॥

नील अनीनी जूह धाइ, लग्यौ[8] चालुक्का।
हक्कारि हाकंत सत्त, सत्तरि[9] विझुक्का।
गोम[10] गज्ज उच्छरिय धोम[11], धर कंपि धरक्किय।
नाग भाग सत जीह नीय, कूरम्म सलक्किय।
प्रज्जाल माल हम चाल हलि, कलि[12] कलाप कलि उल्लटिय।
चिहुराय पंथ हूत्रं गच्छत, तीनि अंग सु अच्छरिय॥ ६॥

दोहा

जीति[13] धर चहुँवान की, ताई ताइ तुषार।
पट्टी[14] पट्टनवै परत, मग्गा दांन संचार॥ ७॥

कवित्त

चहूँवांन सामंत मंत, कैवास उपाई।
सामंता हक्कारि बुद्धि, बंधान उचाई[15]।
दह[16] गुना दल दिष्षि, सिष्षि सद्धनह सुधंगह।
दुह मुष्षाही लग्गि चंपि, बज्यो सु मंदगह।

---

1 BK2 BK3 पमार। 2 BK3 कथिय। 3 BK3 पथिय। 4 BK2 BK3 दंतनि। 5 BK2 BK3 गच्चू। 6 BK2 भग्गग्व्बह। 7 BK2 प्रिगद्दं। 8 BK2 BK3 लग्यो। 9 BK2 KK3 सत्तिरि। .0 BK3 गाम। 11 BK3 घाम। 12 BK3 कला। 13 BK3 जातां 14 BK2 पट्टा पट्टान। 15 BK3 उबाई। 16 BK1 देह।

गोरी दल गुज्जर धणी, दुहूँ बीचि[1] संभरि परिय।
हज्जार ऊन द्वादश भरह, मनहु वज्जि[2] दुहुं दिसि घरिय ॥ ८॥
सारौ[3] लै साहाबदीन, सुरतांन[4] विलग्गो।
सोझती भर भीमराउ, लष्षण[5] सो जग्गौ[6]।
नागोरै[7] सावंत[8] मंत[9], कैंवास पियाई।
असपति गुज्जर पतिय, जानि मृदंग[10] बजाई।
दुहुं वीचि[11] हजारहं अट्ठतिय, एहा मत्त परट्ठयो।
कैंवास राव चामुंड[12] मिलि, षीची षग्ग वयट्ठयो ॥ ९॥
पहिलै[13] भंज्यो भीम बोल, वग्गरी विचारौ।
महन सीह परिहार देव, गुज्जर कर झारौ[14]।
रा जद्दौजा[15] जाह वीय, जद्दौजा[16] मानी।
अट्ठा[17] ही संगदेव, पट्टो परमानी।
चालुक्क चंपि धूनी धरा, सो सुरतानहं[18] संभरी।
[जो चढ़त दलहं बद्धयौ सुबल, धरा धुंधु मिलि धर[19] हरी] ॥१०॥
रा प्रिथीराज[20] प्रसंगराउ, बौलै[21] बड़ गुज्जर।
तिहिं तोली तरवारि, साहि उप्पर दल दुज्जर।
कैंवाहं गढ़ सौंपि, कही कोटरा रष्षन।
तूं मंत्री तूं शस्त्रधार, भारी भर भष्षन।
आलोकि अचारी संभरी, मत्त विहत्त[22] जुवत्त हुव।
आरीह हजारी पंच सै, चाहुवांन षलवत्त तुव ॥११॥

---

1 BK3 वीच। 2 BK1 वज्ज। 3 BK3 सारो। 4 BK2 BK3 सुरितांन। 5 BK2 BK3 लष्ष। 6 BK2 BK3 जगौ। 7 BK3 नागोरे। 8 BK1 सामंत। 9 BK2 BK3 मंति। 10 BK2 BK3 मद्दंग वाजाई। 11 BK2 BK3बीच। 12 BK2 BK3 चावंड। 13 BK1 पहिले। 14 BK2 BK3 झारै। 15 BK2 BK3 जदोजा। 16 BK2 BK3 जद्दोजा 17 BK2 अद्धा। 18 BK2 BK3 सुरितानह। 19 BK2 कोष्ठ गत पद नहीं। 20 BK1 पृथ्वी राज। 21 BK3 बोले। 22 BK3 रेखांकित पद्यांश के स्थान पर दृष्टि विभ्रम से तृतीय चरण का 'कहीं कोटरा रष्षन' लिखा गया। और चौथे पांचवें चरणों की आवृति हो गई।

लौहानौ भय अग्ग सुतौ, सै पंच हलक्किय[1]।
पंज हजारहं[2] सोम पूत, कटि तो न षलक्किय।
गो डंडानी सान एक दह, अट्ठह भेरिय।
उच्छंगी[3] सन्नाह[4] फौज[5], चहुवानह फेरिय*।
[गय थट्टह हयां हेषारवां, पालियार हज्जारहां[6]]।
उत्तंग ढाल की वैरषह, पंज राग[7] सुढारहां ॥१२॥

दोहा

उनंगी सुरितांन[8] दल, सारो लै चतुरंग।
देह दु घट्टिय रन[9] मिलि, सो सावंत किय जंग ॥१३॥

छंद भुजंगी

दुवं जंग लग्गी, हलक्की स सूरं।
ढलक्के सुनेजा, चढ्यौ[10] साहि पूरं।
नियं नंद नीसांन, वज्जै विहानं।
परी ऐल[11] आलम, हुवं जान थानं ॥१४॥
चढी चक्क चौकी[12], हुई सोर[13] जोरं।
मनो मेघ घोरं, करै मोर सोरं।
कहै षांन जादे, अवस्सो[14] विहानं।
चढ्यौ साहि सज्जै, अरे चाहुवानं ॥१५॥
भरक्के वराहं, उनाहं[15] सुनद्दं।
भए चंद हीनं, घने मेच्छ अद्धं।
असुरा अच्छेहं, भगे मेच्छ फौजं।

---

1 BK3हलक्कियं। 2 BK2, BK3 हजारह। 3 BK2 BK3 ओच्छंगी। 4BK2 BK3 संन्नाह। 5 BK2 BK3 फोज। * BK2 BK3 फरिय। 6 BK2 कोष्ट गत चरण छूट गया। 7 BK3 रागु। 8 BK1 सुरतांण। 9 BK2 रेन BK1 रान। 10 BK3 चढ्यो। 11 BK1 BK2 यैल, BK3 येल। 12 BK2BK3 चोकी। 13 BK3 सार। 14 BK2 BK3 अलसो। 15 BK2 दो बार "उनाहं" है।

मिल्यौ[1] आय सूरं, सलष्षं सु सौजं ॥१६॥
उत्तंगंति[2] गातं, भरं वाथ घातं।
सनेहं सभिटे[3], मनो सिंघ सातं।
अलग्गं सुलगो[4], उच्छारे सुमेच्छं।
उडे पत्त गातं, बब्बूरे सपच्छं।
कला एक सूरं, असूरं सुचौकी।
सहे कौनु मारं विसूरं सुसाकी ॥१७॥

कवित्त

ढंढोरिय हित[5] ढाल, मुरहि गोरिय दल अविहर।
अविहर[6] दल चालंत सही, सिल्ली नर असि हर।
असिहर[7] भौ[8] भग्गियौ, मलिकु दावानल लग्यौ[9]।
दावानल प्रज्ज्वल्यो[10], पीठि सूरिवा विलग्यौ[11]।
सूरि वाहक्क संभरिग[12] ती गिनित सुदल[13] प्रलय[14] जु हुव।
दल प्रलय[15] हुं तन हि अंगवै, पष्षर इक्क सलष्ष तुव ॥१८॥
ति गिनि तास पावांर भिरिग, चौकी[16] चक्काइम।
चकावूह अभिमन्न मनहुँ[17], जैद्रथ सौदाइम।
धर[18] धारा धर धार, धार धारहं आवट्टिय।
आरुट्ठी मनु सिंघ[19] एक, एका मन फट्टिय।
जज्जरिग गात आघात उठि, प्रभु अपुव्व ठट्टहं[20] अदिलु।
धर[21] एक स्वामि संम्भर[22] सुभर, नर विअ[23] तन विय नट्टिलु ॥१६॥

---

1 BK2 BK3 मिल्यो। 2 BK3 उतंगं। 3 BK1 समिटे। 4 BK2 BK3 सुलग। 5 BK2 BK3 हिति। 6 BK3 दो बार है। 7 BK2 BK3 असिर 8 BK2 BK3 भो भाग्यो। 9 BK2 BK3 लग्यो। 10 BK3 प्रज्ज्वल्यो। 11 BK2 BK3 विलग्यो। 12 BK2 BK3 संसंभरिय। 13 BK3 संदल। 14 BK2 प्रलंव। 15 BK2 BK3 प्रलंव। 16 BK2 BK3 वौकी वक्काइम। 17 BK2 BK3 मनहु। 18 BK2 BK3 धर धार धारार धारहं। 19 BK2 दो बार है। 20 BK3 ठट्टहं। 21 BK2 BK3 घर। 22 BK2 BK3 संमर। 23 BK2 BK3 विद्यातनं विनय ट्टिलु।

लोहानौ आजान वाहु, वाहनि हिं विलग्यौ[1]।
ति गिनि तास त्रासियो, संनाह[2] भारी भर भग्यौ[3]।
तव जंपै सुरितांन षांन, पग्गह षंधारी।
वाह वाह आलम्भ फौज[4], भग्गिय कहिं सारी।
विस्तारिग वहसि हिंदुव तुरक, करिय कंक भंजन करिग।
संचरिय घरिय सम्मर तनिय, ससि कवि मुष अस्तुति[5] धरिग ॥२०

दोहा

जहां[6] तहां अंकुरि परिय, तहां तहां पृथिराज।
मेच्छ सयन इक्कत करिग, जनु कुलह किक्कट्टिय[7] वाजु ॥२१॥

अडिल्ल

नागोरहं मंत्रिय मनु मिल्यौ[8]। भोरे राइ भुवंगम किल्यौ[9]।
सारौ[10] लै सम्मुह सुरतांनह। चच्चरि पग्गु कियौ[12] चहुवांनह ॥२०॥

छन्द दुमिला

चहुवांनउ डिंडिम चंडिम चंपिय, साहि सु संधिय[13] बंधि धरे[14]।
हाकंत हनंत सु सोम सुनंदन, वंदिन बंदित दुरि धरे।
भुव कंपत[15] संपत गोरिय लुत्थि, उलत्थि पलत्थि भरथ्थ[16] भरे।
पल एक ह जीत किये तिलमह, भरियानक भुम्मिहं[17] भूम्मि[18] ढरे ॥२३॥

---

1 BK2 लग्यो, BK3 वहि लाग्यो। 2 BK2 BK3 सिनाह। 3 BK2 BK3 भाग्यो। 4 BK3 फोज। 5 BK1 असुत। 6 BK2 BK3 जाहा ताहा। 7 BK2 BK3 किकट्टिय। 8 BK2 BK3 मिल्यो। 9 BK2 BK3 किल्ल्यो। 10 BK3 सरौ। 11 BK1 फग्गु। 12 BK2 BK3 कियो। 13 BK2 BK3 संथिय। BK2 BK3 थरे। ध, थ में अभेद प्रतीति है। 15 BK2 कंपत के पश्चात "जंपत" अधिक है। 16 BK2 BK3 "भरथ्थ" छूट गया। 17 BK3 भुम्मिहं" छूट गया। 18 BK2 "भुम्मि" छूट गया।

सामंत सि तुंग तुरंग[1] तुरावध, आवध आवध अंग हरे[2]।
धरकंत सुमीर गभीर[3] गह ग्गह, ग्रभमान गुमाननि वीर परे।
नर वीर दिवादिव देव सुपुच्छह, गच्छ गुह्य वनि तुंग टरे।
जय पत्तज संपत भ्रमंतिय, जुग्गिनि श्रोन सुषप्पर चंपिकरे ॥२४॥
तुर आतुर तांन प्रमान कमान, न सुहिय[4] न भान अरे।
जुध जित्तिय पत्थ सुसाइय, अत्थनि[5] बात नियं दलबंधि लरे।
जित्यौ[6] चहुवांन गह्यौ सुरतांन, हयौ[7] तुरकान कृसान[8] जरे।
....॥२५॥

कवित्त

छत्रधार सुविहान तत्र, पारिय लौहानौ[9]।
पत्र धार जुग्गिनिय कलि, लग्गिय आसन्नौ[10]।
मंत्र धारि पांवार सलष[11], भंज्यौ मेच्छानौ।
ज्यों[12] गुवाल गो डंड सेन, हंक्यौ[13] सुरितानौ।
जित्यौ[14] सु आन चहुवांन करि, मुरिग बैर बलि वंड बल।
धरि[15] गवरि नाह रषिय रहसि, गह्यौ[16] साहि मंझि सुषल ॥२६॥
कहि जित्यौ[17] चहुवांन, गरुव गोरिय दलु[18] भंज्यौ।
कहि जित्यौ[19] चहुवान, ईस सीसह व्वरु रंज्यौ[20]।
कहि जित्यौ[21] चहुवांन, चंद नागौर सुनंतौ।
कहि जित्यौ[22] चहुवान, सूर सामंत दुभंतौ।
जित्यौ[23] सुसोम नंदन[24] कहिय, सहिय[25] सद्द सुर लोक हुव।

---

1 BK3 तुरंग छूट गया। 2 BK2 झरे, BK3 दूर। 3 BK2 गभीराह ग्गाह गत्न, BK3 गभीर गह गत्न। 4 BK1 सुहीय। 5 BK2 BK3 अत्थनि। 6 BK2 जित्यो। 7 BK2 BK3 यो। BK3 कृसान दो बार है। 9 BK2 BK3 लौहानै। 10 BK2 BK3 आसानै। 11 BK1 सलध। 12 BK2 BK3 ज्यौ। 13 BK3 हंक्यो। 14 BK3 जित्यो। 15 BK3 धर। 16 BK2, BK3 गह्यो। 17 BK2 BK3 जित्यो। 18 BK1 दल। 19 BK2 BK3 जित्यो। 20 BK2 BK3 रंज्यो। 21 BK2 BK3 जित्यो। 22 BK2 BK3 जित्यो। 23 BK2 BK3 जित्यो। 24 BK2 नंद। 25 BK2 BK3 सहि।

पांवार परष्ष सलष्षनह, धरनि काज धर कंपि ध्रुव ॥२७॥

अरिल्ल

जित्या वे जित्य। चहुवांन, भाग्यौ[1] सेन सुन्यौ[2] सुरितानं।
तेरहि[3] षांन परे मुलितानं, सारौ लौं[4] तोरयौ[5] तुरकानं ॥२८॥

दोहा

भै[6] भग्गा[7] सुरतांन दल, लै लग्गा[8] चहुवान।
ताप तेज तुंगिय भरन, प्रिथीराज[9] फिरि आंन ॥२९॥

कवित्त

साहि डंड डंडियौ[10], नेहु मंड्यो[11] नागौरी।
भट्टारा भटनेरी राव, सिद्धा तन तोरी।
जारानी जग हत्थ मंडि, मंडोवर पासह।
जै जै जै प्रिथिराज[13] देव, सह कोहै अयासह।
आरज्ज कज्ज सुरितान[14] गहि, करि मिलान[15] ढिल्लिय पुरह।
जो कत्थ सत्थ कैंवास किय, चालुक्का सोहत घरह ॥३०॥

इति श्री कविचंद्र रचितं पृथ्वीराज रासे सामंत सलष पामार हस्तेना गोरी सहाबदीन निग्रहो नाम चतुर्थ षंडः ॥४॥

---

1 BK2 BK3 भाग्यो। 2 BK2 BK3 सुन्यो 3 BK2 BK3 तेर 4 BK1 ल्यौ। 5 BK2 BK3 तोन्यौ। 6 BK3 सौ। 7 BK2 BK3 भगा। 8 BK2 BK3 लग्या। 9 BK1 पृथ्कीराज। 10 BK1 डिंडियो। 11 BK2 BK3 मंडयो नागोरीं। 12 BK2 मंडोव। 13 BK1 पृथ्वीराज। 14 BK1 BK2 सुरिताहि करि। 15 BK1 मिल्यानही।

पंचम खण्ड

चौपाई[1]

भिन्यो[2] भट्ट, सु बंभण[3] लीला। चारण चंद्रा, नंद सवीला।
महात्मा अमरसी ज्ञाता। साम दान करि[4], भेद विधाता ॥१॥
मावस चंदा इनी[5] प्रकास्यौ। जैनै जैन धर्म अभ्यासौ[6]।
सींगी हेम जरयौ नग जास्यौ[7]। लच्छि प्रसन्न जुदा रिपु नास्यौ[8]।
भोरे राइ भीमंग बजीरं[9]। साई[10] प्रसन्न सरस्वती नीरं।
वादी[11] जीति सिर विप्र मुंडाए[12]। कुंभ थापि जिहि[13] साषि भराए[14] ॥३
वोल्यो[15] कुंभ कलकल वानी। नीर मध्य दुर्गे जु समानी।
इष्ट गंठि तिहिं दृष्टि पंसारी[16]। उथपे वेद करी[17] अवीचारो ॥४॥
रथ षट्ट[18] धातु हेम सिर छत्रं। चढि नागौर गयौ इहि मंत्र[19]।
वर चौरासी सत्थति अस्सं[20]। छीनन राज[21] मंति कैमस्सं[22] ॥५॥
दुरि दुज रित लील[23] पढि मंजर। रत्न हेम नग स्तुत्ति[24] सु पंजर।
रघुहं कै कुंस कीर प्रकाशै[25]। सुनतह वीर धर्म धर[26] नासै ॥५॥
जै धर भर चालुक्क पजाए[27]। ते अस महातम बुद्धि रजाए[28]।
इह विधि नर नागौर संपत्ते। रैनि दीह करि दिन दिन रत्ते ॥७॥
छल छंदे बंदे करि भूपं। लच्छि करी करनी कर रूपं।
दल कैमास भई[29] सु अवाजं[30]। भोरा राय[31] वसीठनि साजं ॥८॥
चंटक[32] चंचल सुनै जु कानं। सो सुभट्ट देषे[33] सहिदानं।
भिंटि[34] भट्ट कैमास कलापं। आदरु अधिकु कियो सु अलापं[35] ॥६॥
मुत्ती लाल माल कंठ बानिय। भोरै[36] राय इहै सह दानिय ॥१०॥

---

1 BK2 चोपई BK3 चउपई। 2 BK1 भिन्यौ। 3 BK2 BK3 सो बंभणु। 4 BK2 BK3 कर। 5 BK2 BK3 येनि प्रकास्थौ। 6 BK3 अवभास्यों। 7 BK2 BK3 जन्यो। 8 BK2 BK3 नास्यो। 9 BK2 BK3 व्वेजीरं। 10 BK2 सै। 11 BK1 बाद। 12 BK3 मुंडावो। 13 BK2 BK3 जिह। 14 BK3 भराये। 15 BK1 तोल्यौ। 16 BK3 पसारी। 17 BK3 थाप्यौ निरकारी। 18 BK1 सट। 19 BK2 BK3 मतं। 20 BK2 BK3 अंसं। 21 BK1 रात। 22 BK 3 कोमस्सं। 23 BK1 लल। 24 BK2 सुति। 25 BK2 BK3 प्रकाशे। 26 BK2 BK3 धर नार नासे। 27 BK2 BK3 बजाये। 28 BK3 रजांये। 29 BK2 BK3 भयी। 30 BK2 BK3 आवाजं। 31 BK3 राइ 32 BK2 चेटक। 33 BK1 देष। 34 BK2 BK3 भिंटी। 35 BK2 BK3 आलापं। 36 BK3 भोरिराय इई।

शाटक

स्वस्ति श्री भीमंग भूपति, भयं भीमं भुवं वर्त्तते।
पायालं वलिवर्त्त देव षनयं[1], मंत्राणि महि वर्त्तते।
हेमं कूट कुठार षग्ग षलयं, षग्गा मुषं वंधये।
दारिद्दं[2] सदयाननं सु सकलं, द्दष्टा न सा अंधयं ॥११॥

गाथा

इंदो वारिधि वंधं, वारिधि मथयोसि अंधनं।
द्दष्ट्वा वारिधि अचवन, इंभो सा भीमं भूमयं भूयं ॥१२॥

छंद नाराज

कलप्पि केलि मेलि मंत, चारु चारु पट्टनं[3]।
तमेव दुर्ग सुर्ग सुभ्र, उभ्र वंध कट्टनं।
नरिंद निंद सील संच, वंचयं भुवप्पती[4]।
[गज त्थटं हय त्थटं, नर त्थटं नरप्पति[5]] ॥१३॥

छंद त्रिभंगी

संचारी देसं, कुंजर भेसं, करि षेडस्सं [षोढस्सं] सिंगारं।
आकर्षी[6] मंत्रं, राक सुवस्त्रं, दर्प्पन कर्त्तं[7] कर्त्तारं।
कर्बरि कर्त्तारं, कज्जल सारं, हार सुधारं निर्धारं।
मुष मंडन नीलं कर[8] नष, कींजं, नेवर नीलं सुदारं ॥१४॥
घन घंट किसोरं[9], मुष तम्मोरं, कल अंभोरं जू जोरं।
आवर्दी[10] लर्जा, सम्मर[11] रंजीनं ननंजी[12] अनघोरं।
चल चंचल नैनं, मधुरति वैनं, भंभर तैनं[13] वनि एनं।

---

1 BK2 षनायं। 2 BK2 BK3 दायद्दं। 3 BK2 BK पटनं। 4 BK3 "भुवप्पती" शब्द के पश्चात् "छन्द त्रिभंगी" लिखा है। 5 BK2 BK3 कोष्ठगत समस्त चरण छूट गया। 6 BK3 अकर्षी। 7 वृहद् संस्करण में यहां "हस्तं" पाठ है जो कि ठीक बैठता है। 8 BK1 लीलं कर्मष की रन वरनलं मुदकं। 9 BK2 BK3 क्रसोरं। 10 BK2 आवार्दी। 11 BK3 संमर रंजानं। 12 BK1 नंनंजी। 13 BK2 B3 मेनं।

पर्यंक गंधं, नव नव गंधं, सषिना वंधं हरि होरं ॥१५॥
अद्रिजं[1] रसयं, किंकनि कसयं, हं हं हसयं[2] दुय दोरं।

अडिल्ला

साषि भरे घर, सोइ प्रकासे[3]। सुर नर नाग सु कौतिग हासे[4]।
सव भूत सिहरि सिहरि सिर मिल्यौ[6]। नटवत एक अचंभम षिल्यौ ॥१६॥

छंद त्रिभंगी

घननंकि घटंतो[8], भजि भजि मंतो, यह कलि तंतो गुनवंतो।
सा क्रिस तनि[9] सुंदरि अमरनि संचर, मे सुनि मंजरी[10] रति अंतो।
लव लै पहु पंजुरीं[11] करकिय षंजरी, मिलि मिलि नंजरि जुग जंतो।
वैछत सिर[12] मंडिय[13], हो प्रभु मंडिय, जग[14] जस मंडिय सुभ संतो॥१७॥

दोहा

वदु सदि वदि वर विप्र सौ, जैन धर्म अभिलाष।
श्रवण मंडि कैंवास सुनि, अमर मंत्र तन लाग ॥१८॥

कवित्त

आन फिरि भीमंग नैर, नागौर घर द्धर।
वसह करिग दाहिमौ धरनि, हुव कंप थर[15] थ्थर।
सुपन वीर वरदाइ[16] भरकि, उठि सुठि संचरितहं।
जहं मंत्रिय कैमास, अमर वस करिग देव जहं।
धूमंग धूप डंबरिय, किलकलंति[17] डवरू करह।

---

1 BK3 अद्दिजं। BK2 BK3 हस्ययं। 3 BK2 BK3 प्रकासै। 4 BK2 हासै। 5 BK2 BK3 सिहर सिह सिर। 6 BK1 मिल्लौ। 7 BK2 षिल्यो। 8 BK2 BK3 घट्टंतो 9 BK2 BK3 तनं। 10 BK2 मंजरि। 11 BK1 पंजरी। 12 BK1 सिरि। 13 BK2 BK3 पंडिय। 14 BK2 BK3 जग जस मंडिय सुभसंतो पद्यांश का स्थान रिक्त (त्रोटक) है। BK2 BK3 घरद्धर 15 BK2 BK3 वरदायि। 17 BK3 किलंति।

दानवन देव नग वस करन, कितिग वात वुद्धिय नरह ॥१६॥

छंद भुजंगी

कहै चंद चंडी, अहो भट्ट भैरों।
तुवं अतिथिए, विप्र लहै लच्छि जैरों।
अहो वारनं चंद, वहै निसानं।
घटं[1] मंडि काली, घटा[2] किलकिलानं ॥२०॥

मृनमयं[3] घटं, तुव मंडि जोरं।
षुलै देव बोलं, दुवै होइ सोरं।
वियौ घट्ट थप्पै[4], थरं थर हरानं।
जयं जैन भग्गे[5], भये भर हरानं ॥२१॥

घनं थापि थानं, वियं घट्ट मंडे।
वजे सद्द दोनौ[6], जिनै[7] अस्व छंडे।
दुगे धम्म धम्म[8], घटं पट्ट पानी।
मिली जैन धम्मैं, सकल राजधानी ॥२२॥

फिरै[9] मत्र[10] अस्त्रं, महामंत्र मंत्री
हरे[11] सैव पाषंडनै, सव सस्त्र छत्री।
मिटि[12] राज मरजाद, नै लाज छुट्टी।
उमा सत्ती सावंत, की सत्ति षुट्टी ॥२३॥

निरालंब लंबी, वियं वीर वाहं।
त्रिषा सद्ध पूजी, नही रत्त राहं।

B2[1] घटा। 2 BK2 BK[3] घटं। 3 BK2 BK[3] 'मृन' छूट गया। 4 BK3 थप्पे। 5 भगये। 6 BK2 दोनों। 7 BK[3] जिने। 8 BK2 BK[3] धमाधाम। 9 BK फिरे। 10 BK[3] अस्त्र मन्त्रं। 11 BK2 BK[3] हरि षड पांडव सब सव सस्त्र छत्री। 12 BK2 BK[3] मिट्टी राजज्जादरज्जाद।

बिथा जत्थ लग्गी, तथा तं प्रसादं।
कथा काल[1] जैनं, भयो तेन वादं ।।२४।।
जहां देव वानी, सती सत्य पाटं।
जहां जैन जंपे, सु कंपै सुथाटं।
कहै कौन[2] आरंभ, जित्यो[3] सुजैनं।
वजी हाक चंदं, गल्यों[4] सद्द गैनं[5] ।।२५।।
हुं हुंकार हुंक्यौ[6], घटं[7] घाट ऊद्यौ[8]।
छलं छेद भेदं, धुवं द्योम पुद्यौ[9]।
धरं धार हारं, धरा कंप ठानी।
मिटी बुंद माया, सु आकास वानी ।।२६।।
दुवं दोइ उड्डे, छुटं[10] सग्ग[11] मग्गै।
घटं[12] घट्ट फुट्टै[13], भ्रमं धाम भग्गै।
छदं छत्र मोहं, महा मुल्ल टुट्यौ।
परं[14] पैषि कै जैन, नै धर्म लुट्यौ ।।२७।।
महा मंत्र देवी, दिठी माउ मानी।
कवि[15] चंदं मंत्रं[16], सुसिद्धि समानी ।।२८।।

शाटक

चामुंडा वर षग्ग[17] मंडित कहूं, हुंकार सद्दाधरा।
प्रभा[18] सा सह सद्य सद्यत्करा, मुंडाल माला उरा।
लग्ना[19] हस्त मुषी प्रचंड नयना, पायातु दुर्गेश्वरी।

---

1 BK1 कोल। 2 BK3 कोन। 3 BK1 जीतूं। BK1 गिल्यो। 5 BK3 गेन। 6 BK2 BK3 हुंक्यो। 7 BK2 BK3 घटं। 8 BK2 BK3 उद्यो। 9 BK2 BK 3 पुद्यो। 10 BK3 छुदं। 11 BK3 सुगा। 12 BK2 BK2 BK3 घाट। 13 BK2 BK3 फुट्टे। 14 BK3 BK2 परा पेष भै जैग धी धर्म लुब्यो। 15 BK3 कवी। 16 BK1 मंत्री। 17 BK3 षरगा। 18 BK1 प्रभासर। 19 BK1 लग्नो।

काली काल कराल कंज बदना, अंगानि अंगाजया ।।२६।।
मातंगी अरविंद माल कलया, जाता जया ब्रह्मनी[1] ।
माया त्वं ही महेश्वरी जह कहं, अगोचरं गोचरं ।
संग्रामे सुष वेष्टनं चतवसा, हिंगोलि हुंहुंकरं ।
सा हुं हुं हुंकार हंक सुनयं, दुर्यात दुर्जन दलं ।।३०।।
षगी हामति हाम हम महा[2], महं की जस्यासि मंत्रं मुषं ।
सा मंत्रं उच्चार धार धरमं, भय भंग भंगा अरिं ।
जग्गानं जय जोग पत्र सकलं, जा षंड षंडायनं ।
कालीलं किलकंति तिंति तिपुरा, जस्या पिधानं धनं ।।३१।।
तस्या वाहुं चवंति चारु कमलं, संतुष्टनं सा धुनं ।
जैनं वद्ध[3] सवद्धजा हि चरणं, जै जै सुजैनं[4] घनं ।

चूर्णिका

अयं मंत्र स्तुति संग्रम काले जयाय भुपाल द्वारे, विजयाय स्मरणं कृत्वा गच्छेत् ।

दोहा

वद्धा[5] जैन[6] सु जैन लगि, अम्मर[7] चंद चरित्त ।
भामी भट्ट[8] सुमित्त करि, जीवन मरनह[9] हित्त ।।३२।।
लुट्टि लिए[10] पाषंड सब, छुटि मंत्री कैंवास ।
हर हरंति आयास लगि, चंद न छंडे पास ।।३३।।

छंद भुजंगी

महं[11] देवि देवान, चालूक्क चंपै ।
करंतु सहायं, भरं राज जंपे ।

---

1 BK[1] ब्रह्मणी । 2 BK[1] मम हाहं कीज मत्रं मुषं । 3 BK2 BK[3] वव । 4 BK2 सुजै भाष नं, BK[3] सुजै भाषनं जैन । 5 BK[1] वद्दे । 6 BK2 BK[3] जेनि । 7 BK2 BK[3] जित्या चंदि चरित्त । 8 BK2 BK[3] भट्टु सुमित्तु । 9 BK 1 मरणह । 10 BK[1] लियो भिध्यात । 11 BK3 देव ।

निसा एक रत्ती, अर्जौं संग धावो[1] ।
पलं श्रोन[2] वे वीरु, भुवि अधावो ।।३४।।
हुँ हुँकार सद्दौ, मयमंत[3] सत्थै[4] ।
सदा दुर्ग[5] देवी, अनाथानि नत्थै[6] ।
सवा लाष सेना, गज वाजि[7] पूरं ।
अगैवान कम्मान, सज्जंति जोरं ।।३५।।
हमं हंढ[8] नेजा, सिता छत्र पत्रं ।
महा गव्वं सर्व, वलं मंत्र जंत्रं ।
धरा धार बंडे, सुमंडे[9] विशेषे ।
परी धार पाइक्क, काइक्क लेषे ।।३६।।
विना स्वामि सेना, सुपंची हजारं ।
तिनै सांहि सावंत, पच्ची संभारं ।
तुषे मंत्री कैंबास, देवी सुवीरं ।
वियौ[10] वग्गरी राइ, स्वामी सवीरं ।।३७।।
तियौ[11] जांम जद्दौं, लहू बंधजा[12]जा ।
धरें लज्ज गुज्जर, धरा राम राजा ।
षट्ठ षग्ग[13] रत्तो[14], न जय जैत मत्तं ।
गरूराय[15] गोइंद, सत्तं सरत्तं ।।३८।।
स्वयं सिंघ सन्नाहियो, अष्ट काली ।
जिने दुर्ग देहं, समं तेक हाली ।
दसं गोर[16] गाजीव, साजीव स्वामी ।

---

1 BK1 धावौ । 2 BK1 श्रौन षे वीर । 3 BK2 BK3 मात । 4 BK3 सथै । 5 BK2 दुर्गा । 6 BK3 नथै । 7 BK2 BK3 वाजि । 8 BK3 हांड । 9 BK2 सुमेडे । 10 BK3 वियो । BK2 BK3 तियो । 12 BK2 BK3 बंधे । 13 BK3 षग । 14 BK2 BK3 रतो । 15 BK1 राइ । 16 BK3 गार ।

सुनी संभरी देव, स्वामित्त स्वामी ।।३६।।

अषाराव हाडा; वचै चंद देवं।
जिनै द्वादसी[1] धाल, एकाह[2] सेवं।
तनं तुङ्ग लग्गा[3], अभंगा विचारं ।
जिनै भेरिया[4] सेन, गंगै[5] पच्छारं ।।४०।।
वली राइ वंकौ, बिरद्दाति वंके।
जिनै ढाहियं ढाल, मै मंत हंक्के[6] ।
कहर राइ कूरम्म[7], राजंग सूरं।
जिने पत्ति पातक्क, मांहे[8] लंगूरं ।।४१।।
नियं राइ नाहर, तनौ[9] रत्थ[10] सत्थी ।
जिसौ राइ संजम, तनौ भीष रत्थी[11] ।
महा मल्ल सज्जै, वियौ[42] मल्ल भीमं ।
चढो राइ चंपै, न को तास सीमं ।।४२।।
अहं वंदिनं देवि, तो पास सेवं।
स्तुति मंत्र मुष्षे, ततू देहि देवं।
हुं हुँकार हुंकी, सती सा विचारं।
चढ़े सत्त[13] अग्गै, सुपंचै हजारं ।।४३।
महा सेन सत्तरि, तनौ लाष साइ।
सुनौ राइ कित्ती, दियौ[14] रत्ति वाइ ।।३४।।

---

1 द्वादशी । 2 BK2 BK 3 एकाहं । 3 BK BK2 BK3 लंगा । 4 BK2 BK3 भोरि । 5 BK3 जंगे । 6 BK2 KK3 हंको । 7 BK2 BK3 कूरंम । 8 BK2 BK3 मंहे । 9 BK2 तनो । 10 BK3 रथ सथी । 11 BK3 रथी । 12 BK2 BK3 वियो । 13 BK2 सत आग्गै सुपंचं । 1! BK2 BK3 दियो ।

कवित्त

वंधे जेन वसीठ ढीठ[1], पाषंड निवारे।
धारे हरे[2] ग्रामानि सेन, संन्नाह संभारे।
वीती रैंनि त्रिजाम जाम, बोलैं जह्रौनी[3]।
हो जा जारन राइ गस्त, चौकी[4] भीमानी।
हिला हलकि सैं[5] पंच दति, सनाम हिंदू[6] रान रण।
सी लंघने जु नेजह भिरै,, वंजी[7] जानि क्रिसान[8] वन ।।४५।।

छंद भुजंगी

महा सेन भीमंग, भीमंग रज्जं
मनौ मेघ माला, सु कालाय रज्जं।
हमं हाम हामंति, हालानि[9] जानि।
चढ़ि[10] चक्कि चौकीं[11], चवट्टी सुभ्रानी ।।४६।।
सयं सेसने एम[12], कैंवास अग्गै[13]।
सयं तीनि सत्थी, छयं जानु[14] लग्गै।
सयं पंच जद्दौ, सुजामानि नाच्छे[15]।
सयं अट्ठ सज्जे, रयं राम पच्छे[16] ।।४७।।
दुहूं बाहुं सेनां, वर व्वीर बांही।
मनौ[17] कुंडली छाछी, सामुद्र थांही।
अहम्मेव सामंत[18], स्वामित्त लग्गौ।
मनौ[19] सेनिका देव, दानौति भग्गौ[20] ।।४८।।
भए ऊन[21] दूनौ, दिठा नट्ठ चौकी।

---

1 BK1 धीठ। 2 BK1 हरे। 3 BK2 BK3 जह्रोनी। 4 BK2 BK3 चोकी। 5 BK1 'सैन' अधिक है। 6 BK2 BK3 हूदु। 7 BK1 वंसी। 8 BK1 क्रियान। 9 BK1 हालांन। 10 BK3 चडी। 11 BK2 BK3 चोकी। 12 BK2 BK3 येम। 13 BK3 अग्गौ। 14 BK2 जाञ्जु। 15 BK2 BK3 ताच्छै। 16 BK2 BK3 पच्छै। 17 BK2 BK3 मनो। 18 BK2 BK3 सामित्त। 19 BK2 BK3 मनो। 20 BK2 BK3 भग्गो। 21 BK2 BK3 उन दूनै।

मनौ अंकुरी दृष्टि, उभै नारि सौकी।
मनौ धरे हत्थ षग्गे[1], भिरे हल्ल भल्ले।
घरी एक भग्गी, नह दोइ हल्लै ॥४६॥

कवित्त

कलह अग्ग सामंत काम, कैमास कुसल्ली।
गजू अनुजा[3] जु अजुनु, भिरि पत्यो दुसल्ली।
हालानीधर फुट्टि छुट्टि, छक्का[4] सामंता।
परि पहार पारा रिंधीग, लगो[5] धावंता।
अंसुमान हल्लि भूमी ढरिय, थाइ धमंकि धमंकि धर।
बंदियै[6] बाहु बाहुर्य दल, प्रिथिराज[7] राजंग भर ॥५०॥

दोहा

भिरि भिरि चौकी चपंति बलि, हिलि ढिलि जहं दल राइ।
सभर जुद्ध दरबार सौ[8], चढि चालुक्क[9] रिसाइ ॥५१॥

छंद भुजंगी

धमं[10] धाम धम्मं, निधामं निसानं।
निसा[11] मज्जि वज्जी, सुभेरी भयानं।
त्रिगं तथ्थ ताजी, हिनं हिन हिनानं।
छुटी अंदु हस्ती, मदंजा जुरानं ॥५२॥
हुवं हाइ हायं, हलं हिंदु रानं।
महा बीरू जग्यो रू, दुर्गे हसानं।

---

1 BK2 षग्गो। 2 BK1 न हिंदे लहल्लै, BK2 नहं दोइ हल्लैं। 3 BK1 अजु जाज अजु तु। 4 BK3 छका। 5 BK2 BK3 लग्गो धावंत। 6 BK2 BK3 BK3 "वं दियै" से छन्द संख्या 71 "चालुक" तक पाठ प्रति BK1 के अनुसार छठे खण्ड में मिला। यहां प्रति BK2 में पृष्ठ गलत लग गये। 22, 21 चाहिए था और 21, 22 प्रति BK2, BK3 की नकल है अतः BK3 में भी यही अशुद्धि पाई गई। 7 BK1 पृथ्वीराज। ८ BK2 भौ। 9 BK3 चालुक। 10 BK1 धम। 11 BK2 निस्या।

गिरे रत्त रावत्त, टुट्टे वितानं।
परी हूल हक्के[1] जु. सामंत पानं ॥५३॥
कथा कच्चभारी, सुभारथ पुरानं।
सुनै धर्म वट्टै, सु मर्मं विहानं ॥५४॥

कवित्त

चंडी देवी पसाई हस्ति, तोरै मदमंत
चढयौ राइ भीमंग, चौर[2] मोरह सिलहंता[3]।
का आपानी रारि काइय, हवाइय[4] डंडूरी[5]।
कै छुटयौ संग्राम सिंह[6], संकर निडूरी।
कै वीर धाम धूजी धरा, कै उलाल[7] कलपंत हुव।
यौं जंपि जंपि राजन कहै, कंपि राइ भीमंग भुव ॥५५॥
मा अप्पानि रारि नांइय[9], हवाइ डंडूरी।
ना छुटयौ संग्राम सिंघ, संकर निसहूरी[10]।
है[11] हक्का धर कंप चंप, उत्तर तै लषी।
चोकी[12] गस्त गुराइ कोट, ओटह[13] इत अषषी।
सा दुर्ग[14] देव सत्तरि पती, पती पुहार पिल्यौ[15] करी।
आहन्न हन्न हंते वहत, निसि निसांन सदहं भरी ॥५६॥

दोहा

सद सद सुह हद्द[16] हुव, जब जाव ज्जन लग्ग।
जूना जंजरिं वैरवर, भई[17] सुरा सुर लग्ग ॥५७॥

---

1 BK2 BK3 हक्के। 2 चोर मोरह। 3 BK2 सिहलंता। 4 BK3 हवाइ। 5 BK2 BK3 डंडरी। 6 BK2 सिंध। 7 BK2 BK3 उलाल। 9 BK2 नाइय। 10 BK2 निहरी। 11 BK3 हि। 12 BK2 वोकी। 13 BK1 BK3 आटह। 14 BK2 BK3 दुग्गर। 15 BK2 BK3 पिल्यो। 16 BK2 BK3 हद। 17 BK2 BK3 भइ।

कवित्त

चड गुज्जर राजैत, छत्र देषै पट्टनवै।
वै निसान[1] समरत्थ रत्थ, गै धर घट्टन वै।
अधरा[2] षंडन पग्ग रुक्क, डोरी पांवारह[3]।
जनु सारौली जंग पान, कट्टै गांवारह[4]।
…रा राम देव देविति पति, जा जा[5] जोर जु[6] हुत्थ किय[7]।
नर नाग देव देवी विहसि, अंजुलि पुंज[8] प्रसाद दिय ॥५८॥
निजि थक्या नरदेव मार, थक्की[9] मातंगा[10]।
धर थक्की[11] धर भार भार, थक्यो शिव संगा।
कर थक्या तुरियाना[12]……………………………
थक्क्या न जैत जैजरिबला, झलै न राम गुज्जर परै।
चालुक्क राई गुज्जर पती हाइ हाइ अप्पनु करै ॥५६॥

दोहा

परि अरारि हिंदुवान स्यों, सो सोझती वाह।
दिल लग्गा वरदाइ वर, जो हुंदे हथवाह ॥६०॥

छंद भुजंगी

हुवं रारि सेरंग, सारंग सोरं।
प्रजालं सुवीरं, निसानं थि भोरं।
मयं मत्त कैंवास, नै भंजि भीरं।
कहीं चंद चंडी, वरंजा सु पीरं ॥६१॥

छंद (मोतीयदाम)

प्रमाद प्रमाउद आधव संबरि। वीर वरं भिरि सुवि रनंचरि[13]।

---

1 BK3 नीसाना मारथ गै घर घटनवै। 2 BK2 अघरा। 3 BK2 BK3 गांवारह। 4 BK2 BK3 पांवारह। 5 BK2 BK3 जा जजोर। 6 BK2 BK3 जु.हथ्या। 7 BK3 किया। 8 BK1 सुंज। 9 BK3 थकी। 10 BK2 BK3 मातंगी। 11 BK3 थक्यो। 12 BK2 BK3 'तुरियाना' शब्द के पश्चात्—करि वार वाण थक्या कम्माना। मुह थक्या मुहमार घाण थक्या तुरियाना॥ पाठ अधिक है। 13 BK1 वरि।

पंच सौ पंच, सन्देह मिलै[1] धरि। सिद्धियराई सुधार सुधंभिरि ।।६२
ढिल्लिय फौज भिरे दल सुंदर। दृष्टि अलग्ग भए[2] ससि सुन्दर।
आपुहिं आपु मिले[3] भरि भिंभर। पार अपार निसाधर धुंधर ।।६३।।
रूप निषेध बजी हर सौहर। क्षत्रिय राज रति पिय बंहर।
सौं[4] हथवाह सयंभर[4] सिंभिय। गोहिल जूह परै पेरंभिय ।।६४।।
तुंडति मुंड परे दर वारिय। जांन[5] कि कूर किकट्टक[6] बारिय।
लुत्थ[7] उलत्थत नप्पिय मत्थिय। हुंकति देबि सिर प्पर पंषिय[8] ।।६५।।
हथिय हंकि भिर्यौ प्रभुभीमिय। लष्षु सवाउ जिहिं दल जीपिय।
उत्तरि[9] उत्त तुरंगति[10] छंडिय। जद्दौ[11] षग्ग वियौ[12] कर मंडिय।।६५।।
सै[13] हथि हत्थजु[14] पर पारिय। जानु कुषाइ चल्यौ[15] षग कारिय।
गै[16] गुर मत्त सुजा महि चंपिय[17]। सौ[18] दल राम सु गुज्जर नंषिय ।६७।
तो निसु तुंग किए तुर कुंजर। मंडित अस्व मिले भुज पंजर।
तीनि निमेष जग्यौ जदु मुच्छिय। जय जय सद्द पटौ कर तिच्छिय ।।६८
चंपिय[19] पांव हयो गज पुष्षिय। राइ समेत पर्यौ[20] धर धुक्किय।
प्रांन उडे[21] गज गुंजि दहारिय। स्वामि गुरु जन[22] चंद्र पहारिय ।।६९।।
भुम्मि परे गय भीम भयानक। भीम कि भीम गजा धरि जानक।
षग्ग टुटै कर काढि कटारिय। सै कैंवास भर्यौ[23] अङ्कवारिय ।।७०।।
राइ षनो निरयो निज चालुक[24]। कंठहं दंत लग्यो जनु कालुक[25]।
कंध धर्यौ कैंवास उचाइय। पट्टन राइ सु सिद्ध दुहाइय ।।७१।।
कान परी मुर गुज्जर रामहिं। जैत पंवार तुमो हिल रान हि।

---

1 BK3 मिलंधरी। 2 BK2 BK3 भयो। 3 BK1 सले, BK3 सिले। 4 BK3 भर भंभर। 5 BK2 BK3 जानि। 6 BK2 BK3 किं कढक। 7 BK2 लुथि उलत्थित। 8 BK1 पंथिय। 9 BK1 उत्तर। 10 BK3 तुरंत गति। 11 2K2 BK3 यद्दौ। 12 BK2 वियो। 13 BK1 हंथि। 14 BK2 हथ्य। 15 BK2 BK3 चल्यो। 16 BK3 गे। 17 BK3 वंपिय। 18 BK2 सै। 19 BK2 BK3 वंचिय। 20 BK2 BK3 पऱ्यो। 21 BK2 BK3 उड। 22 BK2 BB3 जन। 23 BK2 भऱ्यो। 24 छंद संख्या 50 के "वंदिये" शब्द से 'चालुक' शब्द तक पाठ BK2, BK3 के छठे खंड में मिला। 25 BK2 BK3 कालकु।

तीनि लगे तन चालुक पान हि .... ॥७२॥

हंकि हमीर हंस्यौ[1] मुष दिट्ठिय। तुम सावंत किनै मुष पट्ठिय[2]।

फिरि कर[3] वाहि नरिंद कटारि। सै मुष मल्ल हमीर निवारि ॥७३॥

गो भजि भूप जहार जपत्तिय। श्रोनहरै षल ज्यों[2] गिरि गत्तिय[4]।

...5.. ॥७४॥

दोहा

दरिसि राज पतनी सुपति, गति फिरि फारस लग्गि।

मानहुँ[6] इंदिय दिय चरन[7], मुष मुष झंकन लग्ग ॥७५॥

दस सहस्र[8] दुहुँ भुजा[9], परित[10] रहि दरबार जुहार।

इह सम सहित है वर समित, वानक तिन[11] र्निसि राइ ॥७६॥

लुत्थि रही दरबार गुथि, घरिय पंच[13] असि रीस।

तिन महि कहि[14] कैंवास सथ,रहिय अग्ग[15] रह वीस॥७७॥

अप्पा ही अप्पा जुरिग, भग्गा धर भर धाइ।

मुवान मृत को जा कहर, कट्ठी कट्ठ नषाइ[16] ॥७७॥

कवित्त

आयो कट्ठी स्वामि काय[17], साहब सावंता।

वारह सै वानैत सु भृति, ढुंढन[18] धावंता।

है वा लग्गी हत्थ षग्ग, भोरे रा कज्जै[19]।

जो वित्त कुवित्तियौ[20], देव दरबार सु छज्जै[21]।

---

1 BK2 हस्यो। 2 BK2 BK3 क्कर। 3 BK2 BK3 ज्यो। 4 BK2 BK3 गतिय। 5 BK2 BK3 ''गहि ग्गल भीम हमंकि हिलोन्यो। अंब चरित्त ज्यो जानि भहोन्यो। अधिक है। 6 BK मनहु। 7 BK2 BK3 वरन। 8 BK2 BK3 सहश्र 9 BK2 BK3 भुज। 10 BK पार हि परि, BK3 परि परहि। 11 BK तनि। 12 BK1 राई। 13 BK1 BK3 पंथ। 14 BK कहि' दो बार है। 15 BK2 BK3 अग 16 BK1 नषाई। 17 BK1 काइ। 18 BK2 BK3 ढुंटन। 19 BK3 कजौ। 20 BK2 BK3 यो। 21 BK3 छजै।

संग्राम लगै संकट स पहु, पहुप[1] हास पिंगिय पहरु।
टुट्टिय जु सस्त्र छत्रिय सिर, नु गनत[2] होइ ब्रह्मह[3] गहरु ॥७८॥

छंद रासावला[4]

हिंदु हिंदु ररी, लोह उड्डी[5] हरी।
मुष्ष उक्कै वरी, मुक्क सासै सरी ॥७९॥
इग्र[6] अग्गै तरी, भीर भग्गौ परी।
हल्ल हल्लै टरी, ढल्ल केलि ढ्ढरी ॥८०॥
कढ़ी चोटं फरी, अम्म[7] अम्मर अरी।
भीम लग्गौ धरी, राइ तुंग प्परी ॥८१॥
गोम[8] गो हिल्लरी, आ इच्छा उव्बरी।
कंज कूरं भरी, दंत भग्गौ धरी ॥८२॥
हाय मानै घरी, जद्दु[11] कट्टे करी।
षेरि वज्जै घरी सेन सेन ट्टरी ॥८३॥
लुत्थि[12] पाथत्थरी[13], कौन जंभै जरी।
केनि केनि छरी, जैत बोपं भरो ॥८४॥

कवित्त

कर कड्ढी जुज्झयो[14] रह्यौ, रानिंग देव हर[15]।
जेन सिर द्धरि छत्र मंत्र, छंडयौ[16] जु मंडि सिरु[17]।
गरुव राव पेरंभ रह्यौ, ग्यारह सै संभर।
पहरिय[18] राइ पंवार नेह, निव्वह्यौ[19] सुनि व्वर[20]।

---

1 BK2 BK3 'पहु' अधिक है। 2 BK3 ध गनत। 3 BK2 BK3 ब्रह्महि। 4 BK1 साला, BK3 रसाला। 5 BK2 BK3 उडो। 6 BK2 BK3 इ अग्गैं। 7 BK2 BK3 अमं अमर। 8 BK2 BK3 गौम। 9 BK2 BK3 भगौ। 10 BK3 व्वरि। 11 BK2 BK3 जद्दु। 12 BK2 BK3 लुथि। 13 BK2 BK3 थरी। 14 BK3 जुझ हयो रह्यो। 15 BK2 BK3 दर। 16 BK2 BK3 छड्यो। 17 BK2 BK3 सिर। 18 BK2 पहरिया। 19 BK3 निव्वह्यो। 20 BK1 वारं।

जानी न चंद आनंद मन, सहस तीनि तेरह परिग ।
गुज्जरि गेह संदेह मन, सह सावंत दह निब्बरिग ।।८५।।

छंद भुजंगी

परौ अंषि अष्षर, हयं[7] हाहु[1] षंडी ।
लरी लोह भीमं, जिनै छत्र[2] मंडी ।
परी[4] पंथ मारा, उसो राउ[3] पाली ।
जिनै ब्रह्मचारी, चित्तं कित्ति चाली ।।८६।।
परयौ[5] माह मोहिल्ल, मांही नव्वल्ली ।
जिनै देह रत्ता करी, सस्त्र ठिल्ली ।
निभै जैत बंधं, परयौ[6] धार नाथं ।
मही राउ भोगै, नही जासु हाथं ।।८७।।
सहद्देव[7] सोनिंग, चाहत्थ[8] सत्थे ।
रही रंभ ढिल्ली, गनै[9] कौनु गत्थे ।
असारी असंभी, जयं जोग[10] ध्यानं ।
कवी चंद कित्ती, कहैं कै वषानं ।।८८।।
रति धाह बीत्यौ, जयं जीति पूरं ।
बहे गेह सावंत, तत्तै ति सूरं ।
गज व्वाजि लुट्टे, सुछुट्टे पचारं[11] ।
दियो राज आबू, सुदुग्गं अधारं ।।८९।।

---

1 BK2 हहु । 2 BK1 छत्त । 3BK2 BK3 "मारा"—के पश्चात् "उ" लिख कर "सो राउ पाली" का स्थान रिक्त है और यह पाठ छूट गया । 4 BK2 BK3 परौपंथ । 5 BK2 पर्‌यो । 6 BK2 BK3 पर्‌यो । 7 BK3 सहदेव । 8 BK2 BK3 चौहथ्थ सथे । 9 BK2 गने कौन । 10 BK1 जोज । 11 BK2 पवांर ।

परै स्वामि कज्जै जि, सावंत सत्थी[1] ।
प्रकासे सुचंदं, दसा मुत्ति पत्थी[2] ।
जयं अच्छरी जैति, सोमेस पुत्तं ।
धन्यो संभरी राज, ति सिर छत्र हित्तं ॥६०॥

दोहा

बोला बंध नियाह धन, पांवार[3] चहुवांन।
[धर धक्यौ लीनी धरा, जित्यौ भीम परांन[4]] ॥६१॥
अरिसु आरज सलष हित, इंच्छनि इच्छा पूरि[5] ।
भुव मंडल मंडिल[3] हि सिर, दधि अच्छितहं[7] हजूरि ॥६२॥

इति कवि चंद विरचिते पृथ्वीराज रासे कैवास मंत्रिणा भीम देव पराजयो नाम पंचमः षंड ॥ ५ ॥

1 BK3 सथी । 2 BK2 BK3 पथ्यी । 3 BK2 पावारा । 4 BK3 में कोष्ठगत चरण छूट गया । 5 BK1 पूर । 6 BK2 BK3 "दिनह" अधिक है । 7 BK3 जू, "हजूरी" छूट गया । 8 BK1 पृथीराज ।

छटा खण्ड

छंद पद्धड़ी

कलि अत्थ पत्थ[1], कनवज्ज राव।
सत सीलरत, धर धर्म्म चाव।
वर अत्थ भूमि, हय गय अनग्ग।
पट्ठया पंग, राजन सुजग्ग ॥१॥

सो धिग[3] पुरान, बलि वंस वीर।
सुव बोल[4] लिषित, दिष्षे सहीर।
छिति छत्र बंध, राजन समांन।
जित्तिया सकल, हय बल प्रमांन ॥२॥

पुछ्यो सुमंति, परधांन तत्थ।
अब करहि जग्गु, जिहि लहहिं कव्व।
उत्तरु तदीय, मंत्रीय सुजांन।
कलि जुग्गु नहीं, अरजुन समांन ॥३॥

करि धर्म देव, देवर अनेब।
षोडसा दान दिन, देहु देव।
सो सीष मानि, प्रभु पंग जीव।
कलि अत्थि नही, राजा सुग्रीव ॥४॥

हंकि पंग राइ, मंत्रिय समांन।
लहु लोभ ....अबुल्यो नियांन ॥५॥

गाथा

के को[5] न गए महि मभू, ढिल्ली ढिल्लाय दीह हो हाय।

---

1 BK1 BK3 रथ्थ। 2 BK3 आनग्ग। 3 BK2 BK3 भुजंगा। 4 BK1 बोलि। 5 BK2 BK3 केन। 6 *Emend* सो धिग *for* सोधिय, *ed.*।

बिहुरत[1] जासु कित्ती, वंग[2] यान हि गया हुँति ॥६॥

छन्द पद्धडी

पहु पंग राइ, राज सु जग्ग ।
प्रारंभ अङ्ग, कीनो सुरग्ग ।
जित्तिया राइ, सब सिंधवार ।
मेलिया कंठ, जिमि मुत्तिहार ॥७॥
जुग्गिनि पुरेस, सुनि भयो[3] षेद ।
अवै[4] न माल, मझ इह अभेद ।
मुक्कले दूत, तब तिहिं समत्थ ।
रिसाइ[6] उतरे अग्गि[7], दरवार तत्थ ॥८॥
बुल्यौ न वयन[8], प्रिथिराज[9] ताहि ।
संकल्यौ सिंघ, गुर जन निव्याहि ।
उब्बरिय गरुव[10] गोविंद राज ।
कलि मध्य जग्ग[11], को करै आज ॥९॥
सति जुग्ग कहहि[12], बलि राज कीन ।
तिहि कित्ति काज, त्रिय लोक दीन ।
त्रेता तु किन्ह, रघुनन्द राइ ।
कुव्वेर[13] कोपि, वरष्यो[14] समाइ ॥१०॥
धन धर्म्म पूत, द्वापर सुनाइ ।
तिहिं पत्थ[15] वीर, अरु अरि सहाइ ।
कलि मझि जग्गु, को करए जोग ।

---

1 BK3 BK3 विहूरंति । 2 BK2 BK3 तंग यान ही गये हुंति । 3 BK2 BK3 भयउ । 4 BK2 BK3 अवे न । 5 BK2 BK3 असमत्थ । 6 BK2 BK3 रिसाइ के पश्चात् "कै" अधिक है । BK2 BK3 अग्गि । 8 BK2 BK3 वैयन । 9 BK1 पृथ्वीराज । 10 BK2 BK3 गरूव । 11 BK2 BK3 जग । 12 BK2 BK3 कहिहि । 13 BK2 BK3 कुबेर । 14 BK1 वरख्यौ । 15 BK2 BK3 पथ्य ।

विग्गरै[1] बहु विधि[2], हसइ[3] लोग ॥११॥
दल दव्ब गव्ब, तुम अप्रमांन।
बोलहु त बोल, देवनि समांन।
तुम्ह जानु नही, क्षत्रिय हैंब कोइ।
निव्वीर[4] पुहमि, कबहुँ[5] न होइ ॥१२॥
हम जंगलह वास, कालिंदि कूल।
जान हि न राज, जैचंद मूल।
जान हि न एक, जुग्गिनि पुरेस।
जरासिंध वंस, पृथ्वी[7] नरेस ॥१३॥
तिहुँबार साहि, बंधिय जेन[8]।
भंजिया भुवप्पति, भीम सेन[9]।
संभरि सुदेस, सोमेस पुत्त।
दानव ति रूप, अवतार धुत्त ॥१४॥
तिहि कंधि[10] सीस, किमि जग्य होइ।
पृथिमी[11] नहीय, चहुवांन कोइ।
दिषिष हि सव्ब[12], तिहिं[13] संघ रूप।
मांन हि न जग्गि, मानि आंन भूप ॥१४॥
आदरहं मंद, उठि गो वसिट्ठ[14]।
गामिनी सभा, बुधि जन उविट्ठ।
फिरि चलिग सव्ब, कनवज्ज मंझ।
भए मलिन कमल, जिमि सकलि[15] संझ ॥१६॥

---

1 BK2 BK3 विगरइ। 2 BK1 विधि। 3 BK1 हसै। 4 BK3 निव्वीर। 5 BK2 BK3 कबहु। 6 BK3 जुग्गिन। 7 BK1 पृथ्वी। 8 BK2 BK3 जेनि। 9 BK2 KK3 सेनि। 10 BK1 कंध। 11 BK3 प्रिथी नरेश। 12 BK2 BK3 सब। 13 BK2 BK3 तहं। 14 BK2 BK3 गयो। 15 BK2 BK3 सकिलि।

तिहिं दुरित दूत, एक हि वयन्न।
अति रोस कियै[1], रकते नयन्न।
बुल्यो सुमंत, परधांन तब्ब।
कनवज्ज नाथ, करि जग्गु अब्ब ॥१७॥

जव जग्गि गहहि, चहुवांन चाहि।
तब लग्गि तहां, ढरि काल जाहि।
तसु आ-समुद, नृप करहिं सेव।
उच्चरहु कास, सो करहि देव ॥१८॥

सोवनी[2] प्रतिमा, प्रिथिराज[3] वांन।
थप्पहु ति पौरि, करि दारवांन।
स्वयंवर संग, अनु जग्य काज।
विद्वजन बोलि, दिन[4] धरहु आज ॥१९॥

मंत्रियनि[4] राज, परबोधि जांम।
घुम्मिया वार, नीसांन तांम।
सुनि सद्दनि[5], बंधि बंदनवार।
कट्ठहि सुहेम, गृहि गृहि सुनार ॥२०॥

भूषनहं दान, सुर सम अचार।
आनंद इंद्र सम, किय विचार।
धवलेह धम्म, देवर सुवीय।
तम हरहिं कलस, कल बिंबलीय ॥२१॥

धज मगनि सोभ, मनु मधुव छीय।
सज्जिया बंभ, कैलास वीय ॥२२॥

---

1 KK3 केयै। 2 BK1 सोवन। 3 BK1 पृथि। 4 BK2 दिनि, BK3 दिने धराहु। 4 KK1 मन्त्रीय वीरज। BK2 BK3 सद्दन।

अनुष्टुप

प्राप्तं च पंग गेहे[1], जग्य जापाय मोहनं ।
तत्र बंधि डंड देहा, राज मेधा महा तव ।।२३।।

छंद नाराज

हियंत सोधि राज सू, जु राज[2] जोग्य जग्ययं ।
सकल राइ साम दंड, भेद बंधि भोगयं ।
सर्वत्त वर्तमानए, अनेक निद्धि सोधयं ।
सुवर्ण भार लष्ष एक, मुत्ति भार संच्चयं ।।२४।।
तुरंग लष्ष, लष्ष एक, इंद गेह हृष्षयं ।
रजक्क भार कोटि एक, धातु भार भट्टयं[3] ।
पटंबरं सु अंबरं, सजे अवास संबरं ।
सुगंधने सु बंधए, सु धूप धूम डंबरं ।।२५।।
संव्रत्त रष्षि चारु वास, दास नेस[4] अंतरं ।
समंत्रिना मनोदरे, प्रजा प्रसंसि[5] सीसनं ।
षटान अंस भाग विप्र, संभ्रने सुतर्पने[6] ।
विरम्भ गर्व्व दर्व्वने सुमंत्र मंत्र भग्गए ।।२६।।
विचारि वीर राज सू, जयंत जोग जग्गए[7] ।।

छंद रासा

नव अंकुरि करि पांनि, चरावै वच्छ मृग ।
मनु मानिनि मिस इंद, अनंदित[8], देषि द्दग ।

---

1 BK2 BK3 ग्रेहे । 2 BK2 BK3 योग्य जग्गयं । BK2 BK3 नट्टयं । 4 BK1 'नेस' दो बार है। 5 BK1 केवल 'प्रसंसिनं" है। 6 BK2 BK3 सुतर्पनं। 7 BKT में 'जग्गये' के पश्चात्—जाय जाय आरम्भ कियं, संवर सहित संजोग। मिलि मंगल मंडप रच्चिय, जिहि विधइ विधि जोग ।। दोहा अधिक है जो कि प्रक्षिप्त है। 8 BK2 अनंदे ।

सहचरि चरित[1] चरित्त, परस्पर वत्त किय।
सुभ संजोगि संजोगु[2] मनौं, मनमत्थ किय ॥२७॥

छंद पद्धड़ी

राजन अनेक, पुत्रिय संग।
षट्ठ वीय वरष, नव सत्त अंग।
कवि जन जुवत्ति, संगह सुरंग।
मिलि षिलहिं भूप, भामिनि अनंग ॥२८॥

संजोगि संग, जुवती प्रवीन।
आनंद गान, तिनि कंठ कीन।
भु वंक लंक, अति सम सषीन।
अधचषन लिषन, छिति नषह कीन ॥२९॥

कोमल कुरंग, किंचित किसोर।
अधरनि अदिष्ट[3], अत्थइत मोर।
सुभ सरल वार, वलया सुथोर।
जुव जन जुवत्ति, रचि कहहिं वत्त।

श्रवनन्नि सीर, नकु नैन रत्त[5]।
मुक्के न लीव, लज्जा सुरत्त।
विद्धनिय मनहुँ, धनु गह्यौ[6] हत्थु[7] ॥३१॥

अधर रत्त, पल्लव सुवास।
मंजरिय तिलकु, मंजरिय पास ॥

---

1 BK1 छूट गया। 2 BK2 संजोगि, BK3 'संजोगु' शब्द दो बार है।
3 BK1 अदष्ट। 4 BK2 मध्य। 5 BK3 रत्ता। 6 BK1 BK2 BK3 गह्यो।
7 BK3 हथ्थ।

अलि अलक कंठ, कलयंठ[1] मंत।
संजोगि जोग वरु, भौ वसंत ॥३२॥
परसप्पर पीवति[2], पियनि[3] कंत।
लुट्टहिं[4] ति भंवर, सुभ[5] गंध वास।
मिलि चंद कुंद, फुल्यौं[6] अकास।
वनि वग्ग मग्ग, अलि अंब मौर।
सिर ढहहिं[7] मनुंहुँ, मनमत्थ[8] चौर ॥३३॥
तरु[9] झरहिं फुल्ल, इह रत्त नील।
हलि चलहिं मनहुं, मनमत्थ[10] पील।
कुहु कुहु करत, कल अट्ठ जोटि।
दल मिलहिं मनहुं, आनंग कोटि ॥३४॥
कुसुमेषु कुसुम, नव धनुति सज्जि।
भृंगी सुपंती, गुन[11] गरुव सज्जि।
रज्जर सुवांन, सुव नाह नेह।
विद्दरे[12] वीर, जुव[13] जननि देह ॥३५॥
उष्षिलिय कलिय, चंपक समीप।
प्रज्जलिय मनहुं, कंदर्प दीप।
करवत्तु केतु, क्रिय[14] किंसुकाति।
विहुरंत रत्त, विच्छुरंत छाति ॥३६॥
झंकुलिय झल्लि, अभिराम रम्य।
नहि करहिं पीय, परदेस गम्य।

---

1 BK3 कलयट्ठ। 2 BK1 पीथाति। 3 BK1 पियन। 4 BK2 लुट्टिहि, 5 BK2 BK3 सुगंधवास। 6 BK2 BK3 फुल्यो। 7 BK2 BK3 ढहि। 8 BK3 मनमथ। 9 BK2 BK3 तर पल्लहि रत्तहि रत्त नील। 10 BK3 मनमथ। 11 BK1 गुण। 12 BK1 विड्डुरे। 13 BK2 हुव। 14 BK2 BK3 'क्रिय' छूट गया।।

परि अंत अनिल, कदलो समांन ।
सिर धुनहि सरिस, सुनि जानि तान ।।३७।।
दिष्षिय हिं पंथ, जिनि कंत दूरि ।
थकि वोल लोल, जल रहे पूरि
कुल्लिग पलास, तजि पत्त रत्त ।
रन रंग सिसिर, जीत्यो[1] वसंत ।।३८।।
रवि जोग पुष्षि, ससि तीय थांन ।
दिनु धरिग देव, पंचमी प्रमांन ।
पर उच्छह दिषन, कौ भय मिलान ।
विंत्रहन देश, चढ़ि चाहुवांन ।।३६।।

छंद पद्धड़ी

चंपि[2] रिपु सीस, बैठ्यौ नरिंद ।
प्रथम अरि जूह[3], षंडे षिषंद[4] ।
बालुक्क[5] राइ, दानौं समान ।
गंजिया इक्क, धट चाहुवांन ।।४०।।
गज्जनै[6] देस, विच्छोह जोरि ।
तजहिं पिय कंठ, एकंत गोरि ।
नीर[7] नीचाल, उच्छाल[8] हुष्षै ।
झरहिं मनि मुत्ति, गच्छंति लष्षै[9] ।।४१।।
वीर सम्मीर[10], उड्डंति[11] टुट्टै ।
मनहुं ऋतु राज, द्रुम[12] पत्र छुट्टै

---

1 KK1 जीत्यौ । 2 BK1 चंपि । 3 BK2 BK3 जूहं । 4 BK2 षिषंदं । 5 BK3 वालुका राइ । 6 BK2 BK3 गुज्जनै । 7 BK2 वीचाल । 8 BK2 उच्चाल, BK3 उव्वाल । 9 BK3 लष्षौ । 10 BK3 समीर । 11 BK2 BK3 उडंति । 12 BK1 दुम ।

ग्रीव नग ज्योति, रहि फुट्टि[1] पव्वै[2]।
मनहुं गिरि शिबिर[3], दव दीह[4] लग्गै ।।४२।।
धूम प्रज्जार[5], मिटि मग्ग गवन्नी।
चलहि तिहि[6] तेज[7], मुष चंद रवनी।
बिंब[8] फल जानि, घन कीर धावौ।
दसननि[9] भय बाल, वसननि छिपावै ।।४३।।
सबद सी रोस, सोहे सशंकी।
थरहरित थकि रही, भीन[10] लंकी।
केवि रट[11] रटति, पिय पियहि जंपै।
एम[12] रिपु रवनि, पृथीराज चंपै ।।४४।।

दोहा

गय मंदा चष चंचला, गुर जंघा कटि रंच।
पिय[13] प्रथिराज जु रिपु कियौ, विपरीत कीन विरंचि[14] ।।४५।।
जीति जगतु जय पत्तु लिय, दिसि मुर धर उपदेश।
छिति रच्छन[15] छिति परसपर, सुनि पंगु[16] नरेस ।।४६।।

छंद पद्धड़ी

कर षग्ग मग्ग, अंगह सुवार।
सुर सुक्कि मुक्कि, सहसन[17] पहार।
सुनि येन[18] सद्द, नीसान[19] भार।
दरबार भई[20], एति पुकार ।।४७।।
थकि वेद भेद, विप्रनि सुजांन।

---

1 KK2 BK3 फुटि। 2 BK1 पव्यै। 3 BK1 शिषरि। 4 BK1 दीह। 5 BK3 पज्जा। 6 BK2 BK3 तिह। 7 BK3 दो बार है। 8 BK2 विवं। 9 BK2 BK3 दशननि। 10 BK7 कीन। 11 BK2 रटि। 12 BK2 BK3 एमि। 13 BK1 प्रिय। 14 BK2 BK3 विरंच। 15 BK2 BK3 रष्बन। 16 BK2 पंगुर, BK3 पंगुरे। 17 BK2 BK3 सहमन। 18 BK1 यैन। 19 BK1 निरसान। 20 BK2 BK3 भयी एनी।

आनंद सकल[1], सुनियै न कान[2]।
कर चंपि राई, मुक्के उसास।
विग्गरयौं[3] ज्ग्य[4], मंत्री विसास ॥४८॥
सुनियै न पुत्रि, सभ मंडराइ।
यूवती जन-जुव[5] जन, करिग साइ।
संजोगि[6] जोग, वर व्रतमु आजु।
व्रतु लियौ[7] वरन, पृथिराज काज ॥४९॥

दोहा

तिह पुत्री सुनि गुनय इत, तात वचन तजि काज।
कै वहि गंगहि[8] संचरौं, कै[9] पाणि गहूँ प्रिथिराज[10] ॥५०॥
सुनत[11] राइ अचरिज्ज[12] किय, हिय मान्यौं[13] अनुराउ।
नृप वरु औरे[14] निर्मवे, देवहिं अवर सुभाउ ॥५१॥

छंद नाराज

परठ्ठि पंग राइ[15] दुत्ति पुत्ति, आलि मुक्कनै।
ति सांम दांन भेद दंड, सार[16] सै विचछनै।
सुग्रीव ग्रीव कंठ ताल, नैन सैन मंडहीं।
वचन्न विद्धि निद्धि सब्ब, ईस ध्यान षंडही ॥५२॥
अनेक बुद्धि बिद्धि सब्ब, काम मूर्च्छ[17] जग्गवै।
ते प्रचारि वारि जाइ, अंगनास मज्झवै[19]।

छंद रासा

अलस नैन अलसाइत, आदर अप्पु किय।

---

1 BK2 BK3 शकल। 2 BK1 BK काल। 3 BK2 BK3 विग्गन्यो। 4 BK2 BK3 जग्गि। 5 BK2 BK3 युव। 6 BK2 BK3 संयोगि योग। 7 BK2 BK3 लीयो। 8 BK2 गंगैह, BK3 गंगेहि। 9 BK2 BK3 'कै' दो बार है। 10 BK1 पृथ्वीराज। 11 BK2 BK3 उनति 12 BK2 BK3 अचिरज्ज। 13 BK2 BK3 नान्यो। 14 BK1 अरे, BK2 औरै। 15 BK2 BK3 रायि। 16 BK2 सारासे। 17 BK2 BK3 मूर्च्छि। 19 BK3 मझवे।

किम बुद्धी अयं तातः सक्किल्लिव, इक्क[1] जिय।
हे वाले! तव तात सकिल्लिय, राइ लिय।
किहिं वर वर उत्कंठ सुपुच्छै, अच्छ तिय ॥५३॥
मो मन मज्झ[2] गुज्ज न गुज्झ[2] जु, तुम कहै।
जंपत लज्जै जीह न अछर, लहु लहै[4]।
षट्ठ दह जिहिं सावंत पृथ्वी, प्रिथिराज[5] कोइ।
दान षग्ग भय मांनि न मुक्कइ, तात सुइ[6] ॥५४॥

दोहा

अथवा राजन राज गृह, अथवा माइलु हांनि।
विधि बंधिय पट्टल सिरह, मुष कहि मद्दौ[7] जानि ॥५५॥

शाटक

आरन्नि[8] अजमेरि, धुम्मि धवनी, कए मंडि मंडोवरं।
मोरी रा मुर, मुंड दंड दवनो, अग्गी उचिष्टं करं।
रन थंभं[9] थिर, थंभ सीस अहरं, निजल जुष्ट कलिंजरं।
क्रिपान चहुवांन जानि[10] धनयो, धर्नोपि गोरी धरं ॥५६॥

गाथा

मांणीय देहि वाले! पुत्तलिका पाणि गहणाय।
एकंत सेज सहवास लज्ज, विया आसि विमुहायं ॥५७॥
वज्जाह गाह श्रवण[11] नयणा, चित्तेहि[12] दिट्ठि लग्गायं।
प्रामाणि धांम लज्जा, अनंगजा अंकुरि वाला ॥५८॥
चंचल चित्त प्रचारी, चंचल नयणाइं चंचल वैणी[13]।

---

1 BK2 BK3 इक। 2 BK3 मझ। 3 BK2 BK3 गुझ। 4 KK3 लहौ। 5 BK1 पृथिराज। 6 BK2 BK3 प्रतियों में "सुइ" शब्द के पश्चात् एक गाथा छंद—[प्रक्षिप्त] असुद्ध रसाइ उच्चरियं, वयण भिंन रसगायं। लहु वाल हुवाय पुत्त, तं पुत्ति राज घर आयं॥ अधिक है। 7 BK2 BK3 मदौ। ८ BK2 न्नी। 9 BK3 रथंभं। 10 BK1 जानं। 11 BK2 BK3 श्रवण। 12 BK1 BK3 ठि। 13 BK3 वयणी।

थावर चित्त संजोइ, थावर गत्तीह गुज्झ[1] गामाहि ॥५६॥

शाटक

जा पुत्ती मरहट्ठ थठ्ठ सबले, निद्धीय[2] वैरागरे।
कर्नाटी कर नीर चींर गहनो, गुंडीं गुरं गुज्जरं।
निर्माली हथ मेलि मालव धरा, मेवार मंडोवरं।
जाता तस्य सदैव सेव नृपयं, आन नतं किंवरं ॥६०॥

अनुष्टुप

न मे राजन ! संवादो, न मे गुर जन नागरे।
नरं येकं स्वयं देह, सर्वथा प्रिथिराजए[3] ॥६१॥

शाटक

इंदो कि इंदो लिए न अमिए, चक्की भुजंगा सिरे।
चच्छी[4] छीर विचार चामि[5] भंवरे, बिंबान बंका करे।
तस्थाने कर पाद भुव पल्लव, रसावल्ली वसंता हरे।
चतुरे किं चतुराइ जांनतु रसा, सा जीव मदनावरे ॥६२॥
जेने मंजरि दारु[6] चारु पंकस्य कलया, कंदर्प्पं दीप प्रभा।
झंकारे[7] भंवरा उडंति बहुला, फुल्लानि फुल्लद्रुया।
सायं तोइ संजोगिताहि सुभरे, पत्तो वसंतोत्सवे।
....॥६३॥

दोहा

सा जीवन रष्षै वयन, वयन गए[8] मृत होइ।
जो थिरु रहै सु कहहु[9] किन, हौं पुच्छौं[10] तुम सोइ ॥६४॥
थिरु वाले ! वल्लभ मिलन, जो जुव्वन दिन होइ।

---

1 BK2 BK3 गुझ्झ। 2 BK2 निव्वीय। 3 BK1 पृथिराजए। 4 BK1 चच्छी वीर, BK2 वत्थी छीरं अथवा चत्थीच्चीर। 5 BK1 वामि। 6 BK2 BK3 दातु चातु—वातु। 7 BK2 BK3 झंकारं। 8 KK3 गये। 9 BK1 हू। 10 BK2 BK3 पुछ्यौ।

गै जुव्वन[1] कुव्वन तनह, को मंडै रति जोइ ॥६८॥
तुब सम मात न तात तन, गात सुर भरियाहु ।
जुव्बन[2] धन थिरु नां रहै, अंसुकि अंगुरियांह ॥६६॥
ताहि अनुग्रह[3] तुम करहु, जो तुम सषी समान[4] ।
हौं लज्जा करि का कहौं, तुम्ह[5] मो तात प्रमान ॥६७॥

गाथा

हा हंत सा सषिन्ना, हे सुंदरिय ! कथं वर वरयं ।
बालीय विद्धि विहिणा, संजोइ जोगिना पाणिं ॥६८॥

दोहा

पुच्छन हारि सुपुच्छियो, धाइ सु उत्तरु देइ ।
जिमि द्विज वृद्ध सुपंजरै, घट घट उत्तरु लेइ ॥६६॥
स्वस्थं राज सु स्वस्थ चित्त, स्वस्थ विलंबन धीर ।
पुरषु[6] जु क्रम क्रम संचरै, नयन सु तप्पन पीर ॥७०॥

अनुष्टुप

संवादेय विनोदे च, देव देवति रच्छति ।
अन्य प्रानैव प्रानेस, सो मे दिल्लीस्वरः ॥७१॥

दोहा

दुत्तिनि उत्तरु आनि दिय, पंगु पुत्ति परवांनु[7] ।
नृप आग्या वद्दिय न कछु, मानु न मुक्कै आंन ॥७२॥
तब झुकि किय गंगा तटहं, रचि पचि उच्च अवास ।
बांहि गहहु चहुवांन कहुँ, मिटै वाल उर आस ॥७३॥

---

1 BK2 BK3 जुवन । 2 BK2 BK3 जुव वव्वन अथि न रहै । 3 BK1 तनुग्रह । 4 BK3 समार । 5 BK3 तुम । 6 BK1 पुरष । 7 BK2 BK3 परवांन ।

अडिल्ला

सुनि सुनि वचन, राइ जब जंपै।
थर हरि धर ढिल्लिय, पुर कंपै।
सूर तेज तुच्छत, जल मीनह।
पंग भयय दुर्जन, भए[1] षीनह ॥७४॥

इति श्री कविचंद विरचिते पृथ्वीराज रासे यज्ञ विध्वंस, पृथ्वीराज वरणार्थं संयोगिता कृत नियमो नाम षष्ठः षंडः ॥६॥

1 BK3 भये षीन।

सप्तम खण्ड

दोहा

तिहिं तप आषेटक भयौ[1], थिरु न रहै[2] चहुवांन।
वर प्रधान जुग्गिनि पुरह[3], धर रष्षै परधांन ॥ १ ॥

कवित्त

जिहिं कैंवास सुमंत[4] षोहि, षट्टुब धनु कढ्यौ।
जिहिं कैंवासु सुमंति[5] राज, चहुवांन चढ़्यौ।
जिहिं कैंवास सुमंति पार[6], परिहार मुरस्थल।
जिहिं कैंवास सुमंत मेच्छ[7], बंध्यौ[8] सबल ब्बल।
भीमंग राइ गुज्जर धणी रा, तिहिं[9] जित्यौ रिण[10] [रण] सुभर।
बाराह[11] जेम दुहुँ वाघ विच, सुबस वास जंगल सुधर ॥ २ ॥

शाटक

राजं जा प्रतिमा स वीन[12] धरमा, रामा रमा सा मती[13]।
निवीरे[14] कर काम ताम वसना, संगेन सेज्या[15] गती।
अंधारेन[13] ज़लेन छिन्न[17] तड़िता, तारा विधारा रती।
मंत्री सा कैंवास बुद्धि हरनों, देवी[18] विचित्रा गती ॥ ३ ॥

दोहा

करनाटी दासी सुवनं, राजन ! अत्थि[19] अवास।
काम रत्त कैंवास तनु, दिट्ठिय तुट्ठिय अवास ॥ ४ ॥
निसि भद्दव कद्दव[20] कह्ल, आषेटक प्रिथिराज।
दाहिम्मौ दहि काम रत, काल रैनि किय काज ॥ ५ ॥

---

1 BK3 भयै। 2 BK1 हहै। 3 BK1 पुरहं। 4 BK2 BK3 सुमंति। 5 BK2 BK3 मंति। 6 BK2, BK3 पारि। 7 BK1 म्लेच्छ। 8 BK2 BK3 बध्यो। 9 BK2 BK3 तिरि। 10 BK2 BK3 'रिण' छूट गया। 11 BK2 KK3 बारह काब्व वाघह्न विचै। 12 BK2, BK3 चीन। 13 BK2 BK3 सा मतो। 14 BK2 नितीरे। 15 BK1 सिज्या। 16 BK1 अंधारेण। 17 BK3 छित्र। 18 BK2 दैवो, BK3 देवा। 19 BK3 अथि अवास्त। 20 BK3 "कद्दव" छूट गया।

कवित्त

चल्यौ महल कैमास रैनि, नक्षियति जाम इक।
तं बोलै[1] सषि साष पट्टर, ग्गिनि उलंघि[2] सिक।
दिय दिपकु सपूरि भ्रमिय, भय रत्ति पत्तिह[3]।
अति सरोस लिषि भेज[4] दियो, दासी कर कंतह।
पल अस्वहं[5] कित षिन षवरि, अवधि दीन दुइ घरिय कह।
पल गयनि वयन वन[6] संचरि, नैन सैन प्रिथिराज[7] जहं ॥६॥

गाथा

भू भृत सुचित सुनिंदा, संगे सारयनि जग्गि जिय वद्धा।
दीपकु जरइ सुमंदा, नूपुर सद्द भानि यजंते ॥७॥

शाटक

भू कंपै[8] जयचंद राइ कटकेशं, कापि न ज्ञायते।
तादृक् साहि साहाबदीन सकलं, इच्छामि जुद्धाइने।
सिद्धं चालुक राइ मंत्र गहने, दूरे सु जानाइते[9]।
अग्यानं चहुवांन जांनि[10] रहियं, दैयोपि रच्छा[11] करं ॥ ८ ॥

अनुष्टुप

पंग जग्गो[12] जितो वैरी, ग्रहि मोच्चं सुरितांनयो।
गुज्जरी गेह दाहानि, देव देवानि रच्चतु[13] ॥ ९ ॥

छंद रासा

छत्तिय हत्थ धरंत नयन्न, निवाहियउ[14]।
दासिय दच्छिन हत्थ[15] तवं, बिसुनाइउ।
वानावरि दुंह बांह रोस रिस, दाहयउ[16]।

---

1 BK1 बौलौ, BK3 बोलौ । 2 BK2, KK3 उलंब्वि । 3 BK2 BK3 पतह । 4 BK3 भोज । 5 BK1 अस्त्थह । 6 BK1 वचन । 7 BK1 पृथिराज । 8 BK2 कांपे । 9 BK3 जानईत । 10 BK1 जांन । 11 BK1 रक्षा । 12 BK3 जगो । 13 BK3, BK2 रच्छितु । 14 BK2 निवाहियउ । 15 BK1 हत्थि, BK3 हथ । 16 BK1 दाहयौ ।

मनौं नागपति नारि सु अप्पु, जगावयउ[1] ॥१०॥

दोहा

अह निसि सै[2] अच्चै सुरसु, अहिर समै रस कंत।
दनु कि देव गंधर्व जच्छ, दासी निशि विलसंत ॥११॥

छंद रासा

संग सयन्नन सत्थ नृप, तिन जानयौ[3]।
दुहुं विच है इक दासि, सु संग समानयौ[4]।
इंद फनिंद न चंदन, अत्थि सुभानयौ[5]।
धरी इक्क दुहुं मज्झि[6] तं, तच्छिन जानयौ[7] ॥१२॥

दोहा

नव तन वै निसि गलित, घन[8] घुम्मौ चहुं पास।
पानिन अंषिन संचरै, महल कहल कैंवास ॥१३॥
देव जु मै देवरु अत्थै[9], प्रभु मनुष्य बल चिन्ह।
सुरस पंवारिग वारिकहं, प्रौढ़ मुगध मति कीन्ह ॥१४॥
रमण पिष्षि रमणि विलषि, रजनि[10] मझि नर नाह।
चित्र दिषावत चित्रीणी[11], मौन विलग्गी वांह ॥१५॥
निमिष चित्र दिष्यौ[12] दुचित, सलष तणी लषि[13] नैंन।
सुहृदस्थ कीय सु सुंदरी, दुहथ पयंपि[14] सबैन ॥१६॥
नज जुवानिनी चह जनी, बिहत अभग्ग[15]।
सुगुण[16] रूप सुमुत्ति कर, दानव रावत्त कग्ग ॥१७॥

---

1 BK1 जगावयौ। 2 BK1 नै। 3 BK2 BK3 जानयउ। 4 BK2 BK3 समानयउ। 5K2 BK3 सुमानयउ। 6 BK1 मज्ज। 7 BK2 BK3 जानयउ। 8 BK2 BK3 धन थम्यौ। 9 BK2 BK3 अच्छै। 10 BK2 भयानक, BK3 रजनीकं नाह। 11 BK1 चित्रणी। 12 BK3 दिष्यो। 13 BK1 लषी। 14 BK2 पदं पिय वैन। 15 BK3 अभग। 16 BK2 BK3 सरूप सगुण सरूप।

तं वंछरि[1] को वंड छिन, बिसरै दानव जोइ ।
चरि सु कग्ग तर वर वसै, हसन हंस कहुँ होइ ।।१८।।
रति पति मुच्छि अच्छि तन, तरुणि पान वय काजि ।
तडित[2] करिग अंगुलि करह, बांण भरिग पृथिराज ।।१९।।

अनुष्टुप

अर्जुनो नाम नास्त्येव, दशरथो नैव दृश्यते ।
स्वामिनो आषेटक[3] वृत्ती, तीन बाण चतुरं नरः ।।२०।।

कवित्त

भरिग बाण चहुवांन जानि, दुरि देव नाग नर ।
मुट्ठि दिट्ठि रस डुलिग चुक्कि[4], निक्करि गइ इक्क सर ।
उभय आनि दिय हत्थ पुट्टि, पंवारि पचारयौ ।
वनि[5] वरत्त वर कंत छुट्टि, धर धर आधारयौ ।
इय कव्व सब्बु सरसै गुनित, पुनित कत्तौ कविचंद मति ।
इम परयौ अयास अवास[6] तैं, जिम निसि[7] धसित नछत्र[8] पति ।।२१।।

गाथा

सुंदरि गहि सारं गो दुज्जन[9], दवनोपि पिष्षि साइक्कं ।
किं किं विलास करियं, किं किं दुष्षाय[10] दुष्षायं ।।२२।।

दोहा

षनि गडयौ[11] नृप अनुधरहं, सम दासी सुर याति ।
दैव धरनि जल घन अनिल, कहिग चंद कवि प्रात ।।२३।।
अप्पु राउ चलि वनं हिगौ[12], सुंदरि सौंपि सुहाइ[13] ।

1 BK2 BK3 तंव करि कर । 2 BK3 तडित्त । 3 BK1 आखेठकस्य । 4 BK1 चुक्किगइ प्रथम इक्क सर । 5 BK2 वानि वरत्तर, BK3 वनिवरत्तर । 6 BK3 अठवास । 7 BK2 BK1 नसि । 8 BK2 BK3 क्षत्रपति । 9 BK2 BK3 -ण । 10 BK1 दुष्षाइं । 11 BK3 गड्यो । 12 BK2 BK3 वनह । 13 BK3 सुहोइ ।

सुपनंतर कवि चंद सौं, सरसै वदि (देवी) आइ ।२४॥
जोतिक तप गति उपय विनु, सुनिय न दिषि[1] अंषि ।
तौ मानौं स्वामिनि सकल, जो सु होइ परतिष्य[2] ॥२५॥

अडिल्ल

भइ परतष्पि, कवि मन आई ।
उकति कंठ[3], सुट्ठिहिं समुहाई ।
वाहन हंस, अंस सुषदाई ।
तब तिहिं रूप, चंद कवि गाई ॥२६॥

छंद नाराच

मराल वाल आसनं, अलित्त छाइ तासनं ।
सुहंत जासु तुंबरं, सुराग राज धुम्मरं ।
क इंद केस मुक्करे, उरग्ग वास विट्ठरे ।
विधूव जूव षंजए, कलंक राह बंचए[4] ॥२७॥
कपोल रेष गातए, उठंत इंद प्रातए ।
श्रवन्न तट्ट पिक्कए[5], अनंग रत्थ[6] चक्कए ।
उच्छाहि वारि खंजए, तिरंत रूव[7] रंजए ।
सुवाल कीर सुद्धए, त किंत विंब रत्तए ॥२८॥
दिपंत तुच्छ दिट्ठए, विंबी अनार फट्टए ।
सु ग्रीव कंठ मुत्तए, सुमेर गंग पत्तए ।
भुजाइ[8] जासु तुंबरं, सुरत्ति लागि अंतरं ।
निषाध आध रच्छिनं, धरंति सीस लच्छनं[9] ॥२६॥

---

1 BK2 BK3 दिष्षिय । 2 BK2 BK3 परतिष्षि । 3 BK2 BK3 कंठह ।
4 BK1 BK3 चंचए । 5 BK2 BK3 पिषए । 6 BK3 रथ । 7 BK1 तुव ।
8 BK1 भुसासुभास तुंबरं । 9 BK2 BK3 लच्छिनं ।

कनंक सा विट्टया, सुराग सीस रट्टया।
विचीच रोव रिंघयें, मनौ पिपील रिंगये।
सुसोभितानि रूपयें, अनंगजानि कूपयें।
हरंति छिन्नि जामिनी, कट्टित्त हीन कामिनी ॥३०॥
अभाष होष बंबही[1], सुमंत देव संबहि।
अपुव्व[2] रंभ जातुए, अदेव बंभ मातुए[3]।
सुरंग चंग पिंडुरी, कली सु चंप अंगुरी।
सवद्द बद्द नूपुरा, चलंत हंस अंकुरा ॥३१॥
बहंति चंद रेहए. कलंक हीन सोहए।
सभाइ पाइ रंगुजा जु, अद्ध रत्त अंबुजा ॥३२॥

अडिल्ल

अंबुज विगसि[4], वासु अलि आयौ[5]।
स्वामि वचन, सुन्दरि समुझायौ।
निसि पल पंच घडिय, दुइ धायौ[6]।
आषेटक झंषै, नृप आयौ ॥३३॥
मध्य पहर[7], पुच्छे, तिहि पंडिय।
कहि कवि विजय साहि, जिहिं डंडिय।
सकल सूर बोलिब, सभ मंडिय।
आसिष दियौ[8], जाइ कवि चंडिय ॥३४॥

छंद रासा

कनक दंड पृथिराज विराजै, सीस पर।
राज सिंघासन शासन सूर, सावंत भर।

---

1 BK2 बंवहि। 2 BK2 आपूब्ब। 3 BK2 KK3 मानए। BK1 BK3 विगसि। 5 BK2, BK3 आयो। 6 BK2 BK3 धायो 7 BK2 BK3 पहार।
8 BK2 दियो।

राजस तामस सत्त त्रयो गुण, किन्न वर।
मनु मंडी सभ बंभ, विच, छिन अप्पु कर ॥३५॥

छंद त्रोटक

भुज दच्छिन लच्छिन, कान्ह हुवं।
रण भूमि विराजति, जानि धुवं।
विहि मीर महम्मद, मान हन्यो[1]।
अरि अव्वुव छत्र, पंवार घन्यौ[2] ॥३६॥
हर सिंघ नृसिंघ, सु[3] वाम भुजं।
उडु मध्य विराजित, जानि दुजं।
नर नाह सनाह सु[4], स्वामि हुवं।
जब चालुक भीम, गयंद भुवं ॥३७॥
वर विंज विराजित, राज दलं।
चालुक्क चरित्त, नछत्र हलं।
धर माल चंदेल, सु सच्च चवै।
रिपु जाइ पुकारत, होहु[6] परै ॥३८॥
वर वीर सुबाहर, राइ तनं।
अचलेसर[7] भिद्यउ, जाइ रनं।
कर वीर[8] सिंघा[9] रस, जासु चपै।
नर नीडर एक, निसंक तपै ॥३९॥
धर विग्रह जास, जिहान जपै।
जिहिं कुप्पत गज्जन, देस[10] कंपै।
लरि लष्षन देस, चंदेल[11] लियं।

---

1 BK2 BK3 हन्यो। 2 BK2 BK2 घन्यो। 3 BK2 BK3 सू। 4 BK3 स्व। 5 BK3 सब्व। 6 BK3 होइ। 7 BK[1] अचलेस भिद्यौ। 8 BK2 नीर। 9 BK2 सिंघार जासू। 10 BK[3] 'देश' दो बार है। 11 BK2 BK3 वन्देल।

मुह मारि मुरस्थल, हत्थ कियं ।।४०।।

सनमान सवै दिन, चंद लहै ।
पुच्छै जुध बात सु, आनि बहै ।
चावंड रिसाइ, सुलोह जुरयो[1] ।
मद गंध गजेन्द्रनि[2], सौं जु लरयौ ।।४१।।

गुहलोत गरिच्छ[3], जु राज वरं ।
भुज वोट सु जंगल, देस धरं ।
मुह मुच्छति अल्ह, नरिंद मुषं ।
सह[4] पट्ठिय साहि, सहाव रुषं ।।४२।।

वड़ गुज्जर वीर, कनंक वली ।
जिहिं षोडस जुग्गिनि[5], वीर झली ।
नागौर नरेस, नृसिंह सही ।
जिहिं रिद्धि सावंतनि[6], मद्धि लही ।।४३।।

पंवार सलष्षरा, लष्ष गणं ।
इक पुट्ठिय[7] पुंगल, देस जनं ।
दस पुत्तनि[8] मानिक; राइ तनं ।
कहि को तिन की, उतपत्ति भनं ।।४४।।

जिहि जुष्ट विराजित[9], वीर हियं ।
सर संभरि जिहिं, उत्पन्न कियं ।
नव निक्करि के, नव मग्ग गए ।
नव देस अपुब्ब, लजाइ लए ।।४५।।
तिहिं पाट पृथीपति, राज तपै ।

---

1 BK3 BK3 जत्यो । 2 BK2 BK3 गजिंद्रनि । 3 BK2 BK3 गरिष्ट ।
4 BK2 BK3 स । 5 BK3 जुग्गिन । 6 BK1 सावंतन । 7 BK2 पट्ठिय ।
8 BK1 पुत्तित । 9 BK3 विराजत ।

कलह[1] द्दिन जो निसि, जाप जपै।
करि सिंगिन टंक, पचीस गहै।
गुन जंघनी तीस, जंजीर लहै ॥४६॥
सर संधि सवै[3] तनु, तेज लहै।
सब दच्छल[4] होत, अनन्त बहै[5]।
गुन तेज प्रजापति, वर्नि कहै।
दिन पंच प्रजंपिन, अंतु लहै[6] ॥४७॥
सभ मंडन मंडित, चित्र कियं।
नृप अग्गै अप्पु, हंकारि लियं।
.... ॥४८॥

गाथा

हक्कारि चंद कवी देवी वरदाइ, वीर भट्टायं[7]।
तिहिं पुर पराग गवनी अग्गे, आएस आएसं[8] ॥४९॥

दोहा

आइ सुनि सुनि सु[9] अग्ग गौ, दियौ मानु कर अप्पु।
सहि न जाइ कविचंद पहि, निकट नृप तिहिं[10] तप्पु ॥५०॥

अडिल्लु

पृथिमि सूर पूच्छै चहुवांनह।
है कैवास[11] कहां कहु जानह।
तरुनि छिपंतु[12] संझ सिरु नायौ[13]।
प्रता देव हम महल न पायौ ॥५१॥

दोहा

उद अगस्ति रितु रवन दिन, उज्जल जल ससि कास।

---

1 BK1 वल हट्टिनि। 2 BK2 BK3 कर सिन गिन। 3 BK2 BK1 सवे। 4 BK2 BK3 दच्छर। 5 BK3 वंहै। 6 BK2 BK3 लहौं। 7 BK1 भट्टायं। 8 BK2 BK3 अऐसं। 9 BK2 'सु' छूट गया। 10 BK2 BK3 त्तिहि। 11 BK2 BK3 कइवास कहहु कहु जानहु। 12 BK2 छिपंत। 13 BK3 नायो।

मोहि चंद इह विजय मन, कहहु कहां कैंवास ॥५२॥

गाथा

कहां[1] नाभि चंद चित्तं नर भर सह, राज जोइयं नयणं।
अच्चिज्ज मूढ़ मत्तं प्रगट्यो[2] अदिष्ट सरिष्टं[3] ॥५३॥

दोहा[5]

नाग-प्पुर नर-प्पुर सकल, कथि सुदेव पुर साज[4]।
दाहिम्मो दुल्लह भयौ, कहि न जाइ पृथिराज ॥५४॥
कहि[6] भुजंग कहं देव नर, कर न कछू कवि षंडि।
कै[7] बत्तावहु[8] कैंवास मुहि, कै[9] हरि सिद्धी वर छंडि ॥५५॥
जौ छंडे सी[10] सुत धरनिह, तु[11] छंडे[12] विष कंदु।
रवि छंडे तप ताप कौ, वर छंडै कवि चंदु[13] ॥५६॥
हठि लग्यौ चहुवांन नृप, अंगुलि मुषह फनिंद।
तिहुँ पुर तुव मति संचरै, कहै वनै कवि चंद ॥५७॥
सेस सिर प्पर सूर वर, जौ पुच्छहि नृप एस।
दुइ बोलह मंडन मरनु, कहहु त कछु कहेस[14] ॥५८॥

कवित्त

एकु वांन पुहमी नरेस, कवासहि मुक्कौ[15]।
उर उप्पर सर हन्यौ[16], वीरु[17] कष्षंतर[18] चुक्कौ।
वियौ वांन संधान हन्यो[19] सोमेसुर[20] नंदन।
गह्यौ करि निग्रह्यौ[21] षन्यौ, रज्यौ संभरि धन।
धर छांडि न जाइ वप्पुरौ, गारै गहै गुन परौ।
इम जंपै चंद वरदिया, कहां नविट्टै यह प्रलौ ॥५९॥

---

1 BK2 कह। 2 BK3 प्रकट्यो। 3 BK2 BK3, भारष्ट। 4 BK3 साजा। 5 किसी भी प्रति में दोहा शब्द नहीं लिखा। 6 BK2 कहे। 7 BK2 BK3 'कै' छूट गया। 8 BK2 BK3 वतावहि। 9 BK3 'कै' छूट गया। 10 BK2 BK3 सै। 11 BK1 तुह 12 BK2 छांड। । 13 BK1 चंद। 14 BK2 हेस। 15 BK2 BK3 मुक्कउ। 16 BK2 हन्यो। 17 BK2 वीतु। 18 BK2 BK3 कष्षहतर चुक्कउ। 19 BK2 BK3 हन्यो। 20 BK1 सर-सर। 21 BK2 BK3 निगहौं।

अडिल्ल

भट्ट[1] वचन सुनि सुनि, नृप कांनहि[2] ।
अप्पु अप्पु गए[3] गेह, परानं हु ।
जुग्गिनि पुर ज ग्यौ, चहुवांनह ।
भइ निसि चारि जाम, इक्क[4] वांनह ।।६०।।

कवित्त

राज महल संप्रति[5] उपट्टि, दरवांन परट्ठिय[6] ।
बहुरि राउ[7] सावंत सनहुं, लग्गिय सिर लट्ठिय ।
रह्यौ[8] चंद वरदाइ विमुष, सुष गुन सरक्यौ[9] ।
गिंभ तेज वर भट्ट रोस जल, षिन षिन मुक्यौ[10] ।
रत्तरी कंत जागंत रह, चल्ली घर घर वत्तरी ।
दाहिमौ दोसु[11] लग्यौ षरौ[12], मिट्टै[13] त कलि सौ उत्तरी ।।६१।।

गाथा

झंझा मझार लग्गि संझा, चंदाणि जाणि वचनायं ।
बुज्झामि[14] हाणि कोइ षिम्मा, दम्भ रष्षियं राजन ! ।।६२।।
उग्गिया[15] भांन पायार पूरं, बज्जियं देव दर संष तूरं ।
कलत कैंवास चढिव रन साला, देइ[16] वरदाइ वर मंग्गि वाला ।।६३।।

कवित्त

जा जीवनु[17] कारणहिं[18] धर्म पाहिं, मृत टालहिं ।
जा जीवन कारण हिं अत्थि, सो[19] चितु उवारहिं ।
जा जीवन कारणे दुर्ग रषे, स्रबु[20] अप्पै[21] ।
जा जीवन कारणे दुर्ग होम करि, नव ग्रह जप्पै ।

---

1 BK1 भट । 2 BK2 BK3 कानह । 3 BK2 BK3 गय । 4 BK2 BK3 जम । 5 BK2 BK3 संप्रत्य उप्पट्ट । 6 BK3 परिट्ठिय । 7 BK2 BK3 राबु । 8 BK2 BK3 रह्यो । 9 BK2 BK3 सरक्यु । 10 BK2 BK3 मुक्यउ । 11 BK2 BK3 दोस । 12 BK2 BK3 षरउ । 13 BK2 BK3 BK2 BK3 मिट्टै । 14 BK3 वुझामि । 15 BK2 BK3 उग्गिय । 16 BK2 BK3 देवी । 17 BK1 जीवन । 18 BK2 कारने, BK3 कारने । 19 BK2 BK3 सौ । 10 BK3 स्त्रबु । 21 BK3 अवै ।

जा जीवन सै अप्पने नृपति बहुत, जव्वहिं सभौं।
सुक्यो[1] सरोवरहं[2] सुगौ[3] कलि, वुड्डै[4] अंधियार भौं ॥६४॥
मातु गर्भ वस करिवि जेम, मुक्कइ[5] सुर सालहं।
षन लग्गइ[6] घन रुद्दइ, षन षन हंस विहालहं।
वपु विसिष बढ्ढियउ[7] अंत, दट्ठइ डर डरियौ[8]।
किंचित चंद जु रार धार करि, किम उव्वरयौ[9]।
मनु भ्रम्म गम्म हक्कइ सकल, लिषतनि मुष्षुजन ष्षिहइ।
पर कज्ज अज्ज मंग्यौ[10] नृपति, सकइत[11] प्रमानप मुक्किहइ ॥६५॥
रषि सरनि सह गवनि, मरण मंगल अपुव्व किय।
दारुण पिषि दरवांन रुक्कि, सक्यउ[12] न मग्गु दिय।
दिषि जलन[13] पृथिराज नयन, नयननि जब दिष्षौ[14]।
अंतक कर वर धम्मु कम्मु त्रिय, गुन सम लिष्षौ[15]।
बुल्लियौ वयन तव दीन हुइ, कवन काज कवि अत्थयौ।
तबहिं देव कित्तिय कलिय, धरनि तरुनि[16] तन मुक्कयौ ॥६६॥

गाथा

वाला संग सिंवरयो को आवासं ति, भट्ट सिर आइ।
ना मुष गति संभरइ संभरि, वेराइ[18] राएसं ॥६७॥

दोहा

बढिय कित्ति बुल्लिय बयन, दिल्लिय पुरह[19] नरिंद।
दाहिम्मो दाहन गहर, को कढ्ढे कविचंद ॥६८॥

---

1 BK2 BK3 सुक्यउ। 2 BK1 सरोव रुहं। 3 BK3 सगौ। 4 BK2 BK3 वुडे अंधियारु। 5 BK1 मुक्कै। 6 BK1 लग्गै। 7 BK1 वट्टियौ। 8 BK2 BK3 डरियउ। 9 BK2 BK3 उव्वरयउ। 10 BK2 BK3 मंगाउ 11 BK1 सकत। 12 BK1 सक्यौ। 13 BK2 BK3 ज्वलनी। 14 BK2 BK3 दिष्षउ। 15 BK2 BK3 लिष्षउ। 16 BK1 तरनि। 17 BK2 BK3 ओवांस। 18 BK2 BK3 वेराय रायेसं। 19 BK3 पुरहं।

कवित्त

रावण किनि गड्डुयौ, क्रोध रघुराय वांन[1] दिय।
वालि किनै गड्डियौ[2], सुनि[3] सुग्रीव तीय[4] लिय।
चंद किनै[5] गड्डियौ, गुनह गुरवार सकिल्लौ।
रवि न पंडु गड्डुयौ[6], तुच्छ सहदेव पहिल्लौ।
गड्डुयौ न इंद्र गौतम रिषहि, बहु सराय छंड्यौ ननि।
इह दोस रोस प्रथिराज सुनि, नन गड्डुहि संभरि धनि ॥६८॥

दोहा

तौ अप्पौ कैंवास[7] तुहि, मिट्टहि उर अंदेस।
दि॰षावइ पहु पंगुरौ, जइ जइचंद नरेस ॥७०॥
छिनकु[8] मनहिं[9] धीरजु[10] करहु, अरि दिष्षत[11] तिहिं काल।
अति वरु वरु वुल्लहु बहुत, किय चल्लहु भुपाल ॥७१॥

अडिल्ल

चलौ चंद सत्थहं[12] सेवक तुअ[13]।
जो वल्लउ त अथि डुल्लइ[14] धुव।
जब वह जांनि मोहि सम्मुह हुइ।
तव अंगवउं समर सह नित्भइ ॥७२॥

दोहा

दुवे कंठ लग्गै गहन, नयन गल ग्गल न्हानु[15]।
अब जीवन वंछहि अधिकु, कहि कवि कौनु[12] सयांन[17] ॥७३॥
अब उपाउ सुझौ इकु संचौ, सुनि कवि मरनु मिटै नहिं रंचौ।

---

1 BK3 वान। 2 BK2 BK3 गड्डुयो। 3 BK2 BK3 सुन्निय। 4 BK2 BK3 जीव। 5 BK2 कियो BK3 किनै। 6 BK2 गड्डुयो। 7 BK2 BK3 कइवास। 8 BK3 छिनक्क। 9 BK2 BK3 मनह। 10 BK3 धीरज। 11 BK2 BK3 दिष्षित। 12 BK3 सत्थह। 13 BK2 BK3 तुव। 14 BK1 मुल्लइ। 15 BK1 न्हारु। 15 BK1 न्हारु। 16 BK2 BK3 कौन। 17 BK2 BK3 सयांनु।

सम रति या गंगा जल षंच्यौ[1], अवसर अवसि पंग वृहि नंच्यौ[2] ।।७४।।

दोहा

आनंद्यौ[3] कवि सुनि वयन, नृप किय संच विचार ।
मरम गरूव सिर हरुव हरु, जीवन हरु सिर भार ।।७५।।

छंद रासा

अत्थौ कवि कैंवास सती, सरु संबर्यौ[4] ।
मरन लगन विधि हत्थ तत्थ, कवि उच्चरयौ ।
धर वंर पंग प्रगट्ट तुछ, कवि हंढहिं[5] ।
इत उपहास विलासन[6], प्रानन छंडहिं[7] ।।७६।।

अनुष्टुप

गमनाय कृतं राज्ञा, दूरं[8] सामंत मेव च ।
प्रस्थान काले संप्राप्ते, राज मध्ये[9] गतं तदा ।।७७।।

(यहां सप्तम खण्ड समाप्ति सूचक पुष्पिका नहीं दी गई)

1 BK3 षंच्या, BK2 षंच्यो । 2 BK2 BK3 नंच्यो । 3 BK2 BK3 आनंद्यउ । 4 BK3 संबस्यो । 5 BK2 BK3 हंडिहै । 6 BK2 BK3 विलासत । 7BK2 BK3 छंडिहौं । 8 BK2 पूर । 9 BK2 मध्य ।

अष्टम खण्ड

दोहा

अथारह से इक्कावना[1], चैत तीज रविवार।
कनवज्ज दच्छिण कारणैं[2], चल्यौ सु संभरिवार ॥१॥

छंद भुजंगी

गुरु अंत मंतापयं, पाय पायं।
असी मत्त सब्बै, जगन्नं सुठायं।
लहूं षोडसं गो, चवस्सट्ठि सायं।
वदै[3] चंद छंदं, भुजंग प्रयायं ॥२॥

क्रम्यौ जंगली राव, कन्नौज वत्थं[4]।
चले सूर सामंत, छ सौ सु सत्थं।
चल्यौ सत्थ सावंत, कान्ह समत्थं।
जिनै वंदिया सूर, संग्राम हत्थं ॥३॥

विरुद्धं नरं नाह, उग्गाह साहं।
कुलं चाहुवांन, चपं पट्टरोहं।
गुरू राव गोविंद, बंदंति इंदं[5]।
सुतं मंडलीकं, सवै[6] सैन[7] चंदं ॥४॥

धरं धर्म स्वामित्त, साराइ लंग्गा[12]।
सुतं राइ संजम्य, रम्मं अभंग्गा।
चल्यौ स्वामि सन्नाह, सादेव राजं।
जुझं[8] वागरी राइ, सामंत जाजं ॥५॥

रनधीर[9] झुझार[10], सत्थं सलषं।
चल्यौ जैत[11] संगं, सु कंकं अलषं।

---

1 BK2 इक्यावना। 2 BK3 कारणि। 3 BK2 BK3 वंद वंद। 4 BK2 बथं। 5 BK1 वंदंदि इंद्रं। 6 BK3 सवौ। 7 BK2 सेन, BK3 सन। 8 BK2 जुम्भं। 9 BK1 रणधार। 10 BK3 "झुझार" छूट गया। 11 BK1 ज्यौत BK3। 12 BK2 लुंग्गा।

भरं जाम जद्दौ र, षीची प्रसंगं।
सरं कछवाहं, सु पज्जून संगं ॥६॥
बलि भद्र कूरम्म[1], पालन्ह भट्टं।
करं कच्छवाहं, सुजुद्ध अकत्थं।
सदा ईस सेवै, सुरं अत्तताई।
चले हड्डु[2] हम्मीर, गंभीर भाई ॥७॥
नरसिंह दाहिम्म, जंघार भीमं।
नही को सु चंपै, वरं तासु सीमं।
सज्यौ[3] वाह पागार, ऊदिग्ग सत्थं।
चल्यौ[4] चंद्र पुंडीर, संग्राम पत्थं ॥८॥
वरं चाहुवानं, वर स्सिंह वीरं।
हर स्सिंह संगं, सु संग्राम धीरं।
सज्यौ[5] राउ चालुक्क, सारंग संगं।
समं विज्ज[6] राजं, सु वंधं अभंगं ॥६॥
सथं जांगरा सूर, सागौर गौरं।
वरं वीर रंसीह, सादूल धौरं।
चल्यौ[7] माल चंदेल[8], भट्टी सुभानं।
समं सीम[9] उल्लं, सामलं सूर रानं ॥१०॥
वलि वारनं रैन, रावत्त रामं।
दलं[10] दाहिमा रूव, संग्राम ध्यानं[11]।
बड़गुज्जरं कंकराजं कनंकं।
सहं सूर सावंत, वंदै सु अंकं ॥११

1 BK1 कूरम्ह। 2 BK3 हड। 3 BK2 सज्यो। 4 BK2 BK3 चल्यो।
5 BK2 सज्यो, BK3 संज्यो। 6 BK2 BK3 विफ्र। 7 BK2 BK3 चल्यो।
8 BK2 चंदैल। 9 BK2 BK3 "सीम उल्लं" शब्द छूट गये। 10 BK2 BK3 दालं। 11 BK2 धानं।

निरब्बान वीरं, सु नारैन वीरं[1]।
समं सूर चंदेल, सोहैं सुधीरं।
वरं सैंगरं वीर, मोहिल्ल वग्घं।
नृपं राइ वंधं, सु रत्नं सु सिंघं ॥१२॥
दलं देव रा, देवराजं ससोहं।
महा मंडली राइ, साथे अरोहं।
धरं धावरं धीर, पांवार संघं।
चल्यौ तोंवरं पार, सौं साहि वत्थं ॥१३॥
सज्यों[2] ज्यावलौ[3] जाल्ह, चालुक्क भारौ।
लषं वाघरं बाभ्फ, षैतं षंगारौ।
वलिराइ वीरंम, सरंग गाजी।
परिल्हार राना, दलं रूव राजी ॥१४॥
वरं वीर जद्दौ, भरं भोज राजं।
समं सांवरा रूप, सांवल्ल साजं।
कमधुज्ज[4] विक्रम, सादूल भोरी।
जयं टाठरी[5] टाक, सारम्म तोरी ॥१५॥
जय सिंघ चंदेल, वासू कठेरं।
भरं भीम जद्दौ[6], अरी गौड जेरं[7]।
सुतं नाहरं, पारिहारं महत्तं।
समं पीप संग्राम, साहं गहन्नं ॥१६॥[8]

---

1 BK2 वीरं । BK1 सज्यौ । 2 BK2 BK3 ज्यावलो । 4 BK1 कमधुज्झ ।
5 BK2 BK3 टाट्ठरी । 6 BK2 BK3 जद्दो । 7 BK2 जीरं, BK3 जारं ।
8 BK1 गहत्तं ।

वरं वार मंडानयं[1], देवराजं ।
रने अच्चलं राइ, अच्चल्ल्य[2] साजं ।
चल्ल्यों कच्चरौ राइ, चालुक्क बीरं[3] ।
..............................॥१७॥

गनं लष्षनं लष्ष, वघेल एकं ।
सुतं पूरनं सूर, वंदै सुतैकं ।
परिल्हार तारं न, तेजल्ल ढोडं[4] ।
अचलेस भट्टी, अरि स्साल सोढं ॥१८॥

वड गुज्जरं, चंद्रसेनं सधीरं ।
सुतं कट्टिया सेन, संग्राम वीरं ।
विजै राज वाघेल, मोहिल्ल[5] वच्चं[6] ।
लषन्नं पंवारं, नलं क्रूर सच्चं[7] ॥१९॥

भरं रंवरं धम्र्म, स्वामी पुंडीरं ।
भिरै सूर भग्गे, नही सूर भीरं ।
कमधज्ज जैसिंघ, पंडं पहारं ।
भरं भारथं राइ, भारत्थ भारं ॥२०॥

सुतं सांगरं केहरी, मल्हनाथं ।
विधं तोरवां[8] कट्ट, संग्राम वासं ।
चल्यौ टाकु चायं, सु रावत्त राजं ।
हरी देव ती राइ, जादव्व जाजं ॥२१॥

---

1 BK2 BK3 मंडनं। 2 BK2 BK3 अच्चल्ल। 2 BK2 में इस चरण के पश्चात् अधिक पाठ—"सुतं भीम संगं सदा सेव सिंभं। कमधुज्ज आरज्ज, आहु कुमारं। भरं भीम चालुक्क वीरं च वीरं। ये तीन चरण अधिक हैं और प्रक्षिप्त हैं, BK3 ये तीनों चरण नहीं हैं। प्रतीत ऐसा होता है कि इस प्रति के लिपिकार की दृष्टि संख्या १७ के तृतीय चरण "वीर" शब्द से 'वीरं च वीरं" पर जा अटकी अतः दृष्टि विभ्रम से ये तीनों चरण छूट गये। 4 BK2 ढोडं। 5 BK2 BK3 मोहिल। 6 BK3 ब्घाचं। 7 BK2 कूर राचं, BK3 सचं। 8 BK2 BK3 न्तोरवां।

वली राइ कत्थं, सुहट्ठं हमीरं ।
हुवं हाहुली राइ, संग्राम भीरं ।
पहुकरं[1] राइ[2], कनवज्ज राजं ।
दलं दाहिया, जंगली राइ साजं ॥२२॥
सुषं पंच पंचाइनं चाहुवानं ।
सुतं पारिहारं, रणव्वीर रानं ।
रसं सूर सामंत, सत्तं सुलष्षं ।
वरं लिष्षियै एक, एकं सुलष्षं ॥२३॥

कवित्त

कनवज्जह जयचंद चल्यौ[3], दिल्लियसुर दिष्षन ।
सत्थ चंद वरदाइ बहुत, सावंत सूर घन ।
चाहुवान राठौड ज़रब[4], पुंडरी गहिल्ला ।
वड गुज्जर पांवार चले, कूरम्म मुहिल्ला ।
इत्तनै सहित भुव पति चढ्यौ[5]; उडी रेनु छिन्नौ नभौ ।
इक्क इक्क लष्ष वर लिष्षिए, लिए साथ सामंत[6] सौ ॥२४॥

[दोहा[7]]

अतिलक बंभन श्याम असु, जोगी हीन विभूति ।
सनमुष राज निरष्षिये, गवन वरज्जै[7] नीति ॥२५॥
रासभ उभै कुलालकर, सिर विध नारि सवारि ।
वासु दिसा सम्मुहि मिलै, अवसि होइ प्रभु रारि ॥२६॥
सिर पच्छी दच्छिन रवै, वांए[8] रवै सियाल ।

---

1 BK2 BK3 पहूकरं । 2 BK1 राज । BK2 BK3 चल्यो । 4 BK2 BK जारवो । BK2 BK3 चढ़्यो । 6 BK2 BK3 रजपूत । 7 किसी भी प्रति में "दोहा" शब्द नहीं लिखा । 8 BK2 BK3 वावें उगे श्रृगाल ।

मृतक[1] रथी समुह मिन्नै, कीजै गमन[2] नृपाल ॥२७॥
कलस कमल[3] उज्जल वसन, दीपक[4] पावक मत्थ[5] ।
सुनि राजा वरदाइ कह[6], इते सकुन अति सच्छ[7] ॥२८॥
तून बंधि भूपति उभै, अरु कवि चंद अनूप ।
जमन उतरि नावहिं निकट, मिलि इक महिल सरूप ॥२६॥

कवित्त

पाणि[8] नालि दाडिमी हास[9] मुष, नैन रोसु निय[10] ।
उरसि माल जा फूल कमल, कणयर सिर सिरंजिय ।
वाम हेम आभरण[11] लोह, दच्छिन दिस मंडिय ।
अद्ध केस सल वंधि अद्ध, मुकलंत ति छंडिय ।
विय रत्त पीत अंबर[12] पहिरि, दिष्षि राज अच्चिज[13] करि ।
किहि महिल किहिं सुघर, किहिं[14] सुनर किहि सुराज अरधंग धरि[15] ॥३०॥

दोहा

इह विधि नारि पयान मिलि, मुष कलयत्त फनिंद ।
उद्दिम आदर बलिय नृप, तब हि न बुज्झि नरिंद ॥३१॥
वन विडाल घुग्घू[15] घरह, परत परेव पंडुक्क ।
एक थान दच्छिन दिसहिं[16], हिनह सौन सस मुक्क ॥३२॥
सुनि कराल सद्दौ[17] समूह, हंसि नृप वुज्झयौ चंद ।
इक रवि मंडल भिंदिहै[18], इक्क करहि गृह दंद ॥३३॥
रत्त सीस सारस सबद, उभय सबद्दल भांन ।
परांन भंजि प्रतिहार सौं, करहुत कज्ज प्रमांन ॥३४॥

---

1 BK1 मृतक रथौ । 2 BK2 गवन, BK3 गवना । 3 BK2 BK3 केसर । 4 BK2 BK3 दीवक । 5 BK 1 मच्छ । 6 BK2 BK3 कहि । 7 BK2 अच्छ । 8 BK2 BK3 पानि । 9 BK2 BK3 हासि । 10 BK3 निया । 11 BK3 भालरण । 12 BK2 पहरि । 13 BK2 अच्चिजु । 14 रेखांकित पद्यांश छंद की दृष्टि से अधिक है । 15 BK1 धर । 15 BK1 घुग्घू । 16 BK2 दिसह कहहि नसौ नस मुक्क । 17 BK2 BK3 सघउ । 18 BK1 दिसि दिहै ।

राज सकुन सम्मुह हुवौ, ध्रुवतर सिंह दहार।
मृग दच्छिन दच्छिन[1] षरह, चलहि न संभरिवार ॥३५॥
त्रियत दिवस त्रिय जांमिनी, त्रियत जांम चलबुन्न।
जोजन इत इक[2] संचरिग, पृथीय[3] राज संपन्न ॥३६॥

छंद पद्धडी

उत्तरिय चित्त चिंता नरेस, विस्तरहिं सूर सुरलोक देस।
इक करहिं सूर अस्नान दान, वर भरहिं सूर सुनि निसान ॥३७॥
इक करहिं लेहु[4] वर इंदिराज[5], जस जियन मरण पृथिराज काज।
सवरिय सल्ल बंछहि ति भान, विधु बाल जेमि गंगहि विहान ॥३८॥
गुर दयित उदित मृग मुदित अत्त, झलमलिग तार[6] तहं हलिग पत्त।
दिष्षिये चंद किरनीन मंद, उद्दिमह हीन जिम नृपति चंद ॥३९॥
ढर हरिग सीत रस मंद मंद, उपज्यौं[7] जुद्ध आवद्ध दंद।
पहु फटिग घटिग सव्वरि सरीर, झलकंत कनक[8] दिष्षियहि नीर ॥४०॥
नृप भ्रमण जांनि पहु पुव्व देस, अरि नैर नीर उत्तर कहेस।
वर सिंघ हिंदु कनवज्ज राउ, तहं चढचौ[9] सुर्ग धरि धर्म चाउ ॥४१॥

दोहा

रवि नम्महि सम्मुहि उयौ, है नहि[10] मग्ग समुज्झि[11]।
भूलि भट्ट पुव्वहि[12] चल्यो, कहि उत्तर कनवज्ज ॥४२॥
कंचन फुल्लिग[13] अर्क सम, रतननि किरण प्रकार।

---

1 BK2 BK3 दक्षिन। 2 BK1 इग। 3 BK3 पृथीव। 4 BK2 लेहि। 5 KK3 इंदीराज। 5 KK3 तारत हलिग। 7 BK2 BK3 उपज्यउ। 8 BK3 कनदिष्षियम वीर। 9 BK2 BK3 चढ्यउ। 10 BK2 BK3 तुहि। 11 BK2 BK3 समुझ। 12 BK2 BK3 पुव्वह BK1 चल्यौ। 13 BK1 फुल्लिक।

उदय कलस जयचंद गृह, संभरि संभरिवार ॥४३॥

छंद भुजंगी

कहूं संभरे नाथ, उठै गयंदा ।
मनौ दिष्षियै[1] रूव, ऐराव इंदा ।
कहूं फेर ही फेरहि भूप, अच्छे[2] तुरंगा ।
मनौ पिष्षियै[3] चाइ, चढ्ढै[4] कुरंगा ॥४४॥
कहूं माल भू डंडने, सार संधै ।
कहूं पिष्षि पाइक्कने[5], नैति बंधै ।
कहूं विप्र ते उट्ठिहि[6], प्रात चल्यै[7] ।
मनौ देवता स्वर्ग ते, मग्ग भुल्लै ॥४५॥
कहूँ जग्य ते[8] पुन्य ते[9], राज काजं[10] ।
कहूं विप्र ते[11] उट्ठि, कुरंग[12] साजं ।
कहूँ तापसा तापते, ध्यांन लग्गे ।
तिनै देषते रूप, [पाप] संसार भग्गे ॥४६॥
कहूँ षोडसा राइ, अप्पंति दानं ।
कहूँ हेम सन्मान, पृथ्वी प्रमाणं ।
इते चारु चारित्तु[13] ते, गंग तीरे ।
तिनै[14] देषते[15] पाप, नट्ठे सरीरे ॥४७॥

दोहा

हो सावंत सु मंतु कहुँ[16], सुहर चिंत तजि वाजि[17] ।

---

1 BK2 BK3 दिष्षिये । 2 BK2 अच्चे । 3 BK2, BK3 पिष्षिये । 4 BK3 वठ्ढे । 5 BK2 BK3 पाइवानैति । 6 BK1 उट्ठे । 7 BK2 BK3 चल्लै । 8 BK1 तै । 9 BK1 तै । 10 BK3 कांजां । 11 BK1 तै । 12 BK3 में "कुरंग साजं" छूट गये । BK2 में "कहूँ विप्र०" आदि समस्त चरण छूट गया । और—"कहूँ देव देवाल तै क्रित्ति साजं" चरण प्रक्षिप्त दे दिया है । 13 BK1 चारित्त । 14 BK2 BK3 तिने । 15 BK1 तां । 16 BK3 कहूँ । 17 BK1 वाज ।

त्रिपथ लोक पृथि राज सुनि, नमसकार करि[1] आजु[2] ॥४८॥
कहां महत्तु दरिसन तनह, कहां महत्तु[3] त न्हान।
कहां महत्तु गम्भीर तन, कहि वनि चंद गियांन ॥४६॥

मुडिल्ल

तं तं न्हान महत्तु न जानौ। दरिसन तत्तु महत्तु वषांनौ।
सुमिरन पाप हरै हर गंगा। दरसन राज भयो दिठि संगा।
ब्रह्म कमंडल थी जल गंगे। सो प्रभु आजु परस्सह अंगे ॥५०॥
तामस राज धरयौ उर पारह[4]। सत्तु उदिक्क[5] गंग मज्झारह ॥५१॥

शाटक

बंभे कमंडले[7] कलि मले, कांति हरे कं बहे।
संतुष्टे त्रय लोक तुंग गवने[8], त्वंगीय सेसांभवी।
अर्धं[7] विश्व समागते सुविमले, अस्पृष्ट कोलाहले।
जंजाले जगतीर पार करनी, दर्शाय सा जान्हवी ॥५१॥

छंद त्रोटक

त्रिपथ ग्गति गंगति अंगसिता। मनु मज्जन नीरजु[10] अंग हिता
टट कमंडलजा भमरं[11] भमरं। भव भंग करे[12] अमरा[13] असरं ॥५३॥
गण गंध्रव[14] नीति[15] सुनी निसुनी[16]। दिवि भुम्मि[17] पयालहं दिव्य धुनी
तरु ताल तमालह साल टटी[18]। विच अंबज भीर गंभीर वटी ॥५८॥
कल केलि[19] सु जंबु वनि वंवरा। गत पाप संताप समै सियरा।
सुभवारि तरंग सुरंग धरै। उर हार सुमुत्तिय जांनि हरै ॥५५॥

---

1 BK2 करे। 2 BK2 BK3 आजि। 3 BK2 BK3 मतु। 4 BK1 धरि उत्तर पारह। 5 BK1 उदिक्क। 6 BK2 BK3 मझारह। 7 BK1 कुंड-मडले। 8 BK1 भवने। 9 BK2 BK3 अर्धं पिश्रु। 10 BK1 नीरज। 11 BK2 KK3 भमरे भमरे। 12 BK2 BK3 करै। 13 BK3 अमरै। 14 BK3 गंध्रुव। 15 BK2 "ति सुनी" छूट गए। 16 BK3 "नि सुनी" छूट गए। 17 BK2 भुमि। 18 BK1 टरी। 19 BK2 BK3 केल।

दिन दुल्लभचा वरनं वरनं। भइ बंभ कमंडलु आभरणं।
सुर ईस स दीस सु सादरनं। मिलि अंभ सुरंग सु सागरणं ।।५६।।
सुभ उद्दिय[1] मग्ग[2] जु मग्ग जलं। जसु[3] दरसन जंबुव दीप मलं।
....।।५७।।

दोहा

रहस केलि[4] गंगह उदक, सम नरिंद किय केलि।
तिरन त्रिभंगो छंद पढी, चंद सु पिंगल मेलि ।।५८।।

छंद त्रिभंगी

हरि तरल तरंगे, अब कृत भंगे, कृत चंगे।
हर सिर परसंगे, जटनि विलंबे, अरधंगे।
गिरि तुंग तरंगे[5], विहरति दंगे, जल जंगे।
गन गंध्रव छंदे, जय जय बंदे, सुव छंदे[6] ।।५६।।
मति उच[7] गति मंदे, दरसित नंदे, गति दंदे।
वपु अपु विलसंदे, जस भूत जंदे, कहकंदे।
छिति मति उर मालं, मुकति विसालं, सय सालं[8]।
सुर नर टट बालं, कुसुमित लालं, अलि जालं।
हिम रिम प्रति पालं, हरि चरणालं[9], विधि बालं।
दरसन[10] रस राजं, जय जुग काजं, भय भाजं।
अमरच्छरि[11] करजं, चामर वरजं, सुभ साजं।
अमलत्तनि[12] मंजरि, जनम पुनंकरि, सासंकरि[13] ।।६१।।

---

1 BK2 BK3 तुट्टिय। 2 BK3 मग्गंगा। 3 BK2 जस दरिसन। 4 BK2 BK3 किलि। 5 BK2 BK3 विरंगे। 6 BK2 BK3 चंदे। 7 BK3 BK3 उच्छ। 8 BK2 शालं। 10 BK2 BK3 दरिसन। 11 BK1 अमच्छरि। 9 BK2 BK3 चरनाल। 12 BK2 BK3 अमलचन। 13 BK2 BK3 में—निय तन जंजरि, चत्रयं जरि, करुना रस नंजरी अधिक पाठ है जो संदिग्ध है।

कलि मल हरि मज्जन, जन हित रंजन, अरि गंजन्न ।
1..॥६२॥

[मालिनी[2]]

उभय कनक सिंभं, भिंग, कंठीय लीला ।
पुनर पुहप प्रजा, वदति[3] ति विप्रराज ।
उरसि मुत्तिहारं, मध्य घंटीय शष्टं ।
मकति भीर अनंगं, ...अंगं त्रिवल्ली ॥६३॥

छंद रासा

दिषिष तनै रस भावित[4], कवियन यह कहै ।
है मनु अच्छि[5] पुरन्दर इदं जु इह रहै ।
चष चंचल तनु सुद्धति, सिद्धनि[6] मनु हरैं ।
कंचन कलस झकोरति, गंगा जल भरै ॥६४॥

छंद नाराज

भरंति नीर सुन्दरी, तिपा तिपत्ति अंगुरी ।
कनंक बंक जेजुरी ति, लग्गि कट्टि जेजरी ।
सहज्ज सोभ पिंडुरी[6], ति मीन चित्त ही भरी ।
सकोल लोल जंघया, ति पीन कच्छ[7] रंभया ॥६५॥
कटित्त सोभ सेषरी, वन्यौत[8] जानि केसरी ।
अनेक छब्धि छत्तियां[9], कहंत चंद रत्तियां ।
दुराइ कुच्च उच्छरे, मनौ अनंग ही भरे ।

---

1 BK[1], BK2 BK[3] तीन चरण न्यून हैं। 2 BK1 BK2 BK3 मेंनहीं दिया । 3 BK2 प्रजा वदति रति विप्प्रराज, BK[3] प्रजा वदं तिनि विप्रराज । वैसे भी इस छंद के अन्तिम तीन चरणों में छंदो भंग है। 4 BK[1] भबित । 5 BK2 BK[3] अच्छि । 6 BK2 सिद्धनु । 6 BK[1] पिंडरी । 7 BK2 BK[3] कत्थ । 8 BK2 BK[3] वन्योत । 9 BK[3] छत्तीयां । 10 BB[1] उच्चरे ।

रुरंत हार सोहए, विचित्त चित्त मोहए ॥६६॥
उठंत हत्थ अञ्चले, रुरंति मुत्ति सुज्जले।
कपोल उत्थ उज्जले, हयंत[1] मोह सिंघले।
अधर रत्त रत्तए[3], सकीर क्रोड बद्धए।
सुहंत दंत दामिनी, कहन्त वीज दाडिमी[3] ॥६७॥
महग्ग कंठ नासिका, विना न राग सारिका।
सुभाइ मुत्ति सोहए[4], दुभाइ गंज लग्गए।
दुराइ कोइ लोचने, प्रतष्ष काम मोचने।
अबद्ध[5] ऊंच भौंह ही, चलंति ऊँह[6] सौंह ही ॥
लिलाट आड लग्गये,, सरद चंद लज्जए ॥६८॥

दोहा

ढिल्लिय गुहि अलकैं लता, श्रवन सुनहि बहु बांन।
जनु भुजंग समुहं[7] चढै, कंचन षंभ प्रवांन ॥६९॥
रहहि चंद मत गव्बु[8] करि, कहहि न कछु विचार।
जितै नयर सुन्दरी कहि, सब दिष्षिय पनिहारि[9] ॥७०॥
जाहन्नबि टट पिष्षियै, रूव रासि ते दासि ॥
नगर ति नागर नर घरनि, रहहिं अवास[10] अवास ॥७१॥
दिनियर[12] दरिसन दुल्लहि, निज मंडन[13] भरतार।
सुष कारन विधि निम्मई[14], दुष कर्त्तरि करतार ॥७२॥
कुवलय रवि लज्जह रह, न रहि न भजि भृङ्ग सरंग।
सरस बुद्धि वर्णन कियौ, दुल्लह तरुणि तरुन्न[15] ॥७३॥

---

1 BK2 BK3 हंत। 2 BK1 रत्नए। 3 BK2 BK3 दाडमी। 4 BK2 BK3 सोभए। 5 BK2 BK3 अबद्धि। 6 BK2 BK3 औंह। 7 BK1 सम्मु। 8 BK2 BK3 गव्बु। 9 BK2 BK3 पनीहारि। 10 BK2 BK3 एक "अवास" छूट गया। 12 BK2 KK3 दिंनियर। 13 BK3 मंडल न। 14 BK2 BK3 निम्मई। 15 BK3 तरुंन।

छंद [पद्धड़ी]

पुनर्जनमे जते, जानि जग्गे।
रहे सष सेषते, (सव सेवते) पुट्ठि लग्गे।
मांन मोहन्न लय[1], मुत्ति वांनि।
मनौ[2] धार आहार कै, दुद्ध तानी ॥७४॥
तिलक नग निरषि, जग जोति जग्गी।
मनौ[2] रोहिणी रूष[3], उर इंद लग्गी।
रूव भुव देषि, अवरेषि दग्यौ।
मनौ काम करवाय, उडि आपु लग्यौ ॥७५॥
पंगुरे नैन ते, ऐन दीसं।
वचै जोति सारंग, निर्वात दीसं।
तेज ताटंकता[4], श्रवन[5] डोलं।
मनौ अर्क राका, उदै अस्त लोलं।
जल जंजमी हीर, भय मध्य लोलं[6]।
दिव्य दरसी तहां, दिलवलं[7]।
अधर आरत्तता, रत्त साई[8]।
मनौ चंद वंबीय, अरुनै वनाई ॥७७॥
कपोलं कलंगी[9], कलि दीय सोहं।
अलक्कं अरोहं, प्रवाहेति भोहं।
सिता स्वाति वुंदं, सिता हार भारं।
उभै ईस सीसं, मनौ गंग धारं ॥७८॥
करं कोन कंट्रून, कंवू समझ्झं।

---

1 BK1 में "लय" छूट गया। 2 BK1 मानौ। 3 BK2 BK3 रूप।
4 BK1 भारंकता। 5 BK1 श्रवण। 6 BK2 लोल। 7 BK2 BK3 दीलवल्लं। 8 BK2 BK3 स्पाई। 9 BK1 कलिंगी।

मनौ तित्थ राथा, तृवल्ली उरज्झं[1] ।
उप्पमा पानि, अंगूनि लब्भं[2] ।
लज्जि दुरि केलि, कुल मद्धि गब्भं ॥७६॥

नषं निम्मॅलं दप्पॅणां, भाव दीसं ।
समीपं सुकीयं[3], कियं मान रीसं ।
नितंबं उतंगं, जरेवे गयंदं ।
मधे[4] रिप्पु षीनं[5], रष्षौ है[6] मयंदं ॥८०॥
साष सोवन्न, मोहन्न थंभं ।
सीत उर त्तेह रति, दोष रंभं ।
नारिंग रंगीय, पिंडी छुछंडी ।
मनौं कनक लट्ठीय, कुंकुम्म लुट्टी ॥८१॥
रोहि आरोहि, मंजीर सद्दं ।
मंद मृदु तेज, प्राकार वद्दं ।
पिंडिया[7] डंबरं, श्रोन बाणी ।
मनौं कच्चं[8] रच्चीनि, भै रत्त पांनि ॥८२॥
अंबरं रत्त नीलंत पीतं ।
मनौ पावसे[9] धनुष, सुरपत्ति कीतं ।
सुगीयं सुकीयं, जियं स्वामि जानं ।
षग रव हरंस, अरविंद मानं ॥८३॥

दोहा

हय गय दल सुंदरि सुहर, जै वन्नंउं वहु बार ।
यह चरित्त कब लगि कहै, चलि संदेह दुबार ॥८४॥

---

1 BK2 BK3 उर ं । 2 BK1 लज्झं । 3 BK2 स्सुकीयं । 4 BK2 BK3 मद्धि । 5 BK2 BK3 क्षीन । 6 BK2 BK3 "है" छूट गया । 7 BK2 BK3 पंडिया । 8 BK1 कब्ब रब्बोनि । 9 BK2 BK3 पावसै ।

छंद [पद्धड़ी]

दिष्षिय जाइ, संदेह टोहं[1]।
अर्क साकोटि, सम्पन्न देहं।
मंडपं जासु, सोवन्न सोहं।
मुत्तियन[2] छित्त[3], दीसै न छेहं ॥८५॥
महिष सत एक, वहु श्रोत रत्ती।
प्रतब्बे[4] ज्ञतन्नैर, नै नैन मत्ती।
पिंडे[5] भार रछौ[6], उहे वार रज्जी।
देषि चाहुवांन, किलकार गज्जी[7] ॥८६॥
वयन आकास, सहलौं[8] विराजं।
होइ जय पत्त[9] पति, प्रथिराज राजं।
वंछिनं अङ्ग, करि नमसकारं।
मध्यता नैर,[10] किय[11] हौ विचारं ॥८७॥

छंद [अडिल्ल]

जिलंगरी जूथ, जिनकै प्रसंगा।
दिष्षियहि कोटि, कोट निनंगा।
तिजू[12] एक चौपै, सुवे पैजवारी।
ति उच्चरे सोंह[13], आनन्न[14] पारी ॥८८॥
जिके साधि संभारी, षेलंत लष्षे।
तिके दिष्षियै भूप, दानब्ब पिष्षे[15]।
जिके छैल संघट्ट, वेशा[16] सुरत्ते।

---

1 BK2 BK3 गेहं। टोहं–ढुंडना। 2 BK1 मुत्तियांन। 3 BK1 छित। 4 BK2 BK3 प्राप्त जंत नर नैर मत्ती। 5 BK2 BK3 पंड। 6 BK2 BK रच्छउहि। 7 BK2 BK3 गजी। 8 BK2 सहभौ। 9 BK1 पत्तिपति प्रथ्वीराजं। 10 BK1 नैन, BK3 नै। 11 BK2 कीनौ, BK3 में समस्त पद स्थाने "मध्यता नै विचारं" है। 12 BK2 तिजू पकै चौप वो पेजुवारी, BK3 तिजू एकै चौप वो पैजुवारी। 13 BK1 सौंहं। 14 BK2 BK3 आनन। 15 BK3 पिष्षौ। 16 BK2 BK3 वेश्या।

तिके द्रव्य के हीन, हीनेति गत्ते ॥८६॥

जिनै दरसि कै[1] आस, लग्गै[2] सरूपा।
मनौ मीन चाहुँत, बग मध्य कूपा।
ना इका दिष्षि, नर नैन डुल्लै।
रहे सुर लोक, मनु इंद्र भुल्लै ॥९०॥

उच्चरहि वैन, निसि कै उजग्गै।
मनौं कोकिला, भाष[3], संगीत लग्गै।
तहां उडै[4] अब्बीय, सज्या संवारे।
मनौं[5] होइ वासंत, भूपाल द्वारे ॥९१॥

कुसुंभ[6] सा चीर, ता कीर सोभा।
मध्य ता कांम, कंदली सुगोभा।
सुवै (सबै) राग छत्तीस, कंठे करंती।
वनै वीन बाजंत, दाद्धै[7] धरंती ॥९२॥

सु दिष्षि[8] अभिमान, मृगी ठठुक्की।
मनौ मैनका, नृत्ति तै ताल चुक्की।
बर्नतइ[9] भाइ लग्गै[10], ति भारे।
ति पट्टनय गेह, दिषषे संवारे[11] ॥९२॥

दोहा

सुमग हट्ट पट्टक नयर, रत्तन मुत्ति मणि हार।
हाट कपट धनु धात रस, तुच्छ तुच्छ दिरके सवार ॥९३॥

---

1 BK1 कौ। 2 BK2 BK3 लग्गौ। 3 BK[1] षांन, BK3 षा। 4 BK2 BK[3] उडि। 5 BK2 BK3 मनो। 6 BK1 कुसुम। 7 BK2 तथै, BK3 तदथै। 8 BK2 दिष्षिय। 9 BK1 वर्णतें। 10 BK2 BK[3] लग्गइ। 11 BK2 BK में छंद ९२ के पश्चात् निम्नलिखित पाठ अधिक है :—

छंद मोती दाम

अमग्गति हट्टन[1] पट्टन मंझ । मनौं[2] द्दग देषत फुल्लिय संझ ।
सुनष्षहि मोरि तमोर सुढार । उलचंन कीच[3] सुहोइ उगार ॥९४॥
सुमालय[4] पुह्प द्रवे दल चंप । सुसीत समीर मनौं[5] हिम कंप ।
सुवेलि सेवं त्रिय गुंथहि जाइ । दिवै इव दासिय लेहि ढहाइ ॥९५॥
सुवुद्धि बजाज सुविच्चहिं सार । छुवंत न वासर सुझइ[6] तार ।
सु दिष्षहिं नारि संजे[7] पटोर । मनौ ।द्रुज इच्छनि[8] लग्गहिं घोर ॥९६॥
सु मुत्ति जराव जरै सुभाइ । सु कट्टहिं कोर कहै सुन गाइ ।
जु लै तन सुष अपुब्ब सुभाइ । सु सेज सुगंध रहै लपटाइ[9] ॥९७॥
लहै लह ठांनक तांन सुवांम । वनी त्रिय दिष्षियै पूरन काम ।

दोहा

सो पट्टन रा व्योर पुर, उज्जल पुण्य प्रविच्छ ।
कोटि नगर नागर घरनि, धज वंधिय तिनि लच्छि ॥ १ ॥

छंद नाराच

जो लष्षु लष द्रव्य जासु, नृत्य इंद्र उट्ठवै ।
सुगंध तार साल गान, सा मृदंग सुठभए ।
समस्त छिती मस्त रूब, साव अंग सुठभए ॥ २ ॥
जि चन्द वार धूव, सेस कंठ गावही ।
उपंग वीणा तासु वाली, वाल ता वजावही ।
गमन्न तेय अंग रंग, संगए परच्चए ।
सवीर सद्द अरथ, अंग, पंषि पात नच्चए ॥ ३ ॥
सबद्द सोभ उद्धरैइ, कित्ति काब थानिए ।
नरिंद इंद इत्तने जु, कोटि इंद जानिए ।

1 BK हानहि । 2 BK2 BK3 मानौ । 3 BK3 BK3 कीब । 4 BK1 सुमालइ पुम्मइ वे । 5 BK2 मानौ । 6 BK1 सुज्झै । 7 BK3 संकुज । 8 BK3 इच्छि । 9 BK2 BK3 लपट्टाइ ।

जराव जरंत कनंक कसंत[1] । मनौ भय[2] वासर जामिनि जंत ॥९८॥

कसि क्कसि हेमहिं, दिनेस कट्ढति तार।
उवंत दिनेस, किरन्नि[3] प्रकार।
करि कर[4] कंकण, अंकहि लोभ।
मनौं द्विज हीन, सद्दहि[5] सोभ ॥९९॥
जरे इमि नग्ग, प्रकारति लाल।
मनौ[6] ससि तार, रवि बिंब रसाल।
तुलंत जु तन्नु, तराजु न जोप।
मनौ घन मद्धि, तड़ित्तहं ओप[8] ॥१००॥
जरे जिविं नग्ग, सुरंग सुघट्ट।
ति सुंदरि सोभ, पुहा वहि पट्ट।
दु अंगुलि नारि, निरषहिं हीर।
मनौ फल विंबहि, चंपै[8] कीर ॥१०१॥
नषं नब बाहइ[9], मुत्तिय अंसु।
मनौ भषु[10] छंडि, रह्यौ गहि हंसु।
दिसि दिसि पूरि, हय गय भार।
सु पुच्छत चंद, गयो[11] दरबार ॥३०२॥

इति श्री कवि चन्द विरचितं पृथ्वीराज रासे[12] जय चन्द द्वारे संप्राप्तो नामाष्टमः षंडः ।

---

1 BK1 कसंन्न । 2 BK1 नय । 3 BK1 BK3 किरत्ति । 4 BK1 क्कर । 5 BK3 सदहि । 6 BK2 BK3 समस्त पद स्थाने—"मनौ ससि तारं विसाल । 7 BK2 BK3 वोप । 8 BK2 BK3 चंपइ । 9 BK2 KK3 बाहहि । 10 BK1 नषु । 11 BK2 BK3 गयो । 12 BK2 BK3 रासौ ।

नवम खंड

दोहा

कौतूहल दिष्यौ सकल, अकल अपूरव वट्ट।
पत्तधार छग्गल छलह, राज गही वर भट्ट ॥ १ ॥
निसि नौवति गत[1] प्रात मिलि[2], हय गय दिष्यो साज।
विरचि सुहर करि वर गह्यौ, किनिम[3] कह्यौ पृथिराज ॥ २ ॥
कहहि[4] चंदु दंदु न करहु, रे सावंत कुमार।
तीनि लच्छि निसि दिनु रहहि, इह[5] जयचंद दुवार ॥ ३ ॥

मुड़िल्ल

पुच्छत चंद[6] गयौं[7] दरवारहं। जहां हेजम[8] रघुवंस कुमारहं[9]।
जिहि हर[10] सिद्धि सदा वरु[11] पायौ। सु कवि चंदु ढिल्ली हु तैं आयौ[12] ॥४॥

दोहा

आदरु करि आसनु[13] दियौ, पालक पंगु[14] नरिंद।
छिनकु विलंब सुहितु करि, जब लगि कहि कवि चंदु ॥ ५ ॥

अनुष्टुप

मग्गिवान[15] कि वारतां, संधिवानं कवि[16] अहान्।
युद्ध[17] वानक पंगु राजेन, न भूतो न भविष्यति ॥ ६ ॥

दोहा

अस तिन[18] वोलहु हेजमन:[19], गव्बू करहु जिनि आलि।
जु कछु सुमर चित्तै वरनयहु, दिषहुगे[20] काल्हि ॥ ७ ॥

---

1 BK1 गति। 2 KK2 BK3 मिल्लि। 3 BK2 BK3 किनि। 4 BK2 BK3 कहौ। 5 KK2 BK3 इहि। 6 BK2 BK3 चंदु। 7 BK2 BK3 गयो। 8 BK1 जहि। 9 BK1 कुमारहि। 10 BK2 BK3 हार। 11 BK2 BK3 वर प्पायो। 12 ते आयो। 13 BK3 आसन। 14 BK3 पंग। 15 BK2 BK3 मग्गवान। 16 BK2 BK3 किवि। 17 BK2 BK3 युद्धवान। 18 BK1 तन। 19 BK2 BK3 हेजमनि। 20 BK2 BK3 दिष्ष गे कालि।

सुनन हेत हेजम उठित, दिषित चंद वरदाइ ।
नृप अग्गौ[1] गुद्दर गयौ, जहां पंगुरौ सुराइ ॥ ८ ॥
आदरु करि हेजम कविहिं, नयौ[2] सु जहां नरिंद ।
ढिल्लिय पति चहुवांन कौ[3] कहि असोस कवि चंद ॥ ६ ॥

छंद रड्डा[4]

तव सु हेजम सुजसु जंपि कहि, सीस नाइ दस वार,
से तुच्छ भूपति नहि, सु दिट्टउ ॥ १० ॥
तव सु कियौ परिणाम तहं, यह कहि तिहिं प्रतिहार ।
जिहिं प्रसन्न सरसै कहहि, सु कवि चंद दरवार ॥ ११ ॥

गाथा[5]

सिर नवाइ बुल्यो[6] वयन, अवसर पसाव राज राजेसं ।
कवि जु जुग्गिनि मुख सौ, सोई उट्टो[7] द्वारि नरेस ॥ १२ ॥

दोहा

वैन सुन्यौ रघुवंस को, भौ साहस भा अनंद[8] ।
तिन दसबंधि[9] सौं कह्यौ, बोलि विष्षहं चंदु ॥ १३ ॥

मुडिल्ल

आयस भय गुनियन तन चाह्यौ[10] । तिन परिणाम कियौ[11] सिरु नायो ।
किधौं डिंभ कवि, कव्वु प्रमांनिय । सरसै वरु उच्चारहु[12] जांनिय ॥१४॥

छंद भुजंगी

डंडिया डंबरं भेष धारी । सु कव्वी[13] कु कव्वी प्रकारं विचारी ।
सुनै राय पंगं सुनौ कव्वी सच्ची । परष्यौ सु पत्तं कु पत्तं गुनच्ची[14] ॥१५॥
अहित्तं सुहित्तं सुचित्तं विचारो । रसं नौ सु भाषा सुभाषा उधारौ ।

---

1 BK2 BK3 अग्गइ गुदर । 2 BK3 गयो । 3 BK2 BK को । 4 BK2 BK3 रट्टु । यहां रड्डा घटता नहीं है । दोहा के लक्षण घटते हैं । 5 यहां "गाथा" के लक्षण भी ठीक नहीं घटते । 6 BK1 बुल्यौ । 7 BK1 सोइ उभ्भौ । 8 BK1 आनंद । 9 BK2 BK3 दसबंधी । 10 BK2 BK3 चाह्यउ । 11 BK3 कियो । 12 BK3 उब्बरहु । 13 BK3 कुकवी । 14 BK2 BK3 गुनव्वी ।

परं मान ग्यानौ विन्यानी विरूरं। लहौ बुद्धि विद्या त आजौ हजूरं ॥१६॥

अडिल छंद

तिहं ठां आवि आपु कवि पत्ते[1]। गुन व्याकरण कहहिं रस रत्ते।
थकि प्रवाह गंगा मुष भत्ते। सुर नर श्रवण मंडि रहि वत्ते ॥१७॥
नव रस भाष छ पुच्छन तत्ते। कवि अनेय[2] वहु बुधि गुन मत्ते।
इक कवि भाष छत्री सह सुवत्ते[3]। कहन एह कवि चंद सुरत्ते[4] ॥१८॥

साटकु

अंभोरुह मानंद जोइल रिमो, दाडिम्म लोवीय लो।
लोयन्नु चंलिचालु [चंचलु] अरु कलउ, बिंबाय की योग हो[5] ॥
की सीरी को साइ[6] वीनी रसो, चौकी[7] मृगी नागवी।
इंदो मद्धि सुविदिमान विहनोए, रस्स भाषा छठो[8] ॥ १६ ॥

मुडिल्ल

सब रूपक हि कहि कहि, कवि जित्ते[9]। नव रस भाष छ, पुच्छन रत्ते।
गज पति गरुव गेह, गुन गंजहु। सब विधि सब कवियन मन रंजहु ॥२०॥
श्रीपति श्रीधर, श्रीकर सुंदर। सुमिरन किय[10], कवि चंद गोपिवर।
रवि[11] तल विमल वैन, वसु धावन। द्रुपद[12] पुत्ति चिरु, चीर बधांवन ॥२१॥
ग्राह गरुव, गंधर्व गयंदहं। रष्षन मान, सुमान गयंदहं[13]।
तुव चिंतति सत्तहं, सव मित्तिय। विष दातहि[14] निर्विष[15], जिहं कित्तिय ॥२२॥
अर्जुन जव कोवंड, धरिय कर। तब संघरिय सकल, षोहिनि सर।
जब पंडव मन, मोह उपायौ। भव भारथ मुष, मद्धि दिषायौ ॥२३॥

---

1 BK2 ति कवि आद कवि पहि पत्ते, BK3 ति कवि आद्द कवि पत्ते। 2 BK1 अनेक भाषा। 3 BK2 BK3 में यह समस्त चरण छूट गया, और दोनों प्रतियों में यहां त्रोटक है। 4 BK1 इक वाइते कहन चंद सुरत्ते। 5 BK2 BK3 लोयनु चलु चालु आरा बिंबारि कीयो गहो। 6 BK1 की सी राइ। 7 BK2 BK3 चको। 8 BK2 छयो, BK3 छ०गो। 9 BK1 सब कहुँ कहि सब, रूपहं जित्ते। 10 BK2 BK3 कीय। 11 BK2 रवी। 12 BK2 द्रुपद। 13 BK2 BK3 गयंदहि। 14 BK2 BK3 दातव्वि। 15 BK2 विष त्तिय लद्धिय।

है हरता करता अविनासी । प्रकृति पुरुष भारति श्रिय दासी ।
सा भारति मुष मद्धि प्रसन्नी । नव सहं साटक भाषा[1] छन्ती ॥२४॥

साटक

सीसं साच वरेन सेव छत्रुजा[2], किं किं न अंदोलिता ।
सस्त्रै सस्त्र समस्त मत्त दहियं, सिंधु प्रजा ता षलं ॥
कंठं हार रुलंत आनि अंतक समो, पृथीराज हालाहलं ।
.... ॥२५॥

मुडिल्ल

गुन उचार[3] चारु तिनि किन्नौ[4], जनु भुष्षै साकर पय दिन्नौ[5] ।
कवि देषत कवि कौ मनु रत्तौ[6], न्याय नयर कनवज्ज संपत्तौ ॥२६॥

दोहा

नव रस सुमिरु अदिट्ठ रस, भाष छ जंपि नृपाल ।
सुनि सद्दह भल[7] पत्त लिषि[8], त्रिगुन[9] दरस्सि त्रिकाल ॥२७॥
पंगु पयंप्पौ[10] कवि कमलु, अमल सु आदर दैन ।
पुछ प्रवेस निवेस दिठि, सभ जंपियौ[11] नृपेन ॥१८॥
मंगल बुध गुरु शुक्र शनि[12], सकल सूर उद दिट्ठ ।
आतपत्र ध्रुव[13] तमतमै, सुभ जैचंद[14] वइट्ठ ॥२६॥

छद [अडिल्ल]

आसनं सूर वट्टै[15] सनाहं । जीति छिति राइ किन्नै सुराहं ।
धर्म दिगपाल धर धरनि षंडं । ढरहिं सिर सोभ दुति कनक दंडं ॥३०॥
जिनै सज्जनै सिंधु गाही सु पंगं । तिमिर तजि नेज[16] भज्यौ कुरंगं ।
जिने हेम परवत्त तै सब ढाहै । इक्क दिन अट्ठ सुरतान साहे ॥३१॥

---

1 BK2 BK3 भाषण । 2 BK1 सेवछ रुजा । 3 BK2 BK3 उचारु । 4 BK2 BK3 किन्नउ । 5 BK2 दिन्नउ । 6 BK2 BK3 रत्तउ । 7 BK2 BK3 "भल" छूट गया । 8 BK2 BK3 लषि । 9 BK1 त्रगुण । 10 BK2 BK3 पयंप्पो । 11 BK2 BK3 जंपियों । 12 BK2 BK3 सनि । 13 BK7 ध्रुवं तमै, BK2 ध्रुव तमै । 14 BK' जयचंद । 15 BK2 ठट्टे । 16 BK2 तिमिरत जिनै मेज ।

जंपियों संच सो चंद चंडं । थप्पियो[1] जाइ तिरहुत्ति पंडं ।
दच्छिनं देस अप्पे विचारं । उत्तरयौ[2] सेतु बंधे पहारं ।।३२।।
कर्णाडा हाल दुहुं वान वेध्यउ । जिनै सिंधु चालुक्क कइ[3] वार पेद्यउ ।
तीनि दिन जुद्ध भीर रुंड मुंडं । तोरि[4] तिल्लिग गोपाल मुंडं ।।३३।।
छंडियो चंपि इक गुंड जीरा । जिनै[5] लिये[6] वैराग रा[7] सव्व हीरा ।
गज्जने[8] सेन सा बाव साही । सेवतैं बंधिनि सुरत्ति पाही ।।३४।।
भूलि भभीषन[9] जाइ रोरे । रोस के रोस दरिया हिलोरे[10] ।
वंधि षुरसांन किय मीर बंदा । सुतौ[11] राठौर विजै पाल नंदा ।।३५।।
वंस छत्तीस आबेह कारे । एक चाहुवांन पृथिराज टारे ।
....।।३६।।

दोहा

सुनि नृपत्ति रिपु कौ सबद[12], तम तम नैन सुरत्त ।
दर दलिद्द मंगन मुषह, को मेटै[13] विधि पत्त ।।३७।।

कवित्त

प्रथम परसि संदेह भयौ, आनंद सव्व जन ।
अरु गंगा जलु[14] न्हाइ पाप परिहरे, तत षिपन[15] ।
गयौ चंद दीवांन अनी, वांनीय फुरंतौ ।
सुफल[16] हत्थ सुष तत्थ राउ, भिद्यौ सु तुरंतौ ।
श्रुति सुनिय विरद पुच्छिय, तुरत सच्च[17] पयंपहि भट्ट सुनि ।
जिमि[18] जिमि अचार ढिल्लिय नृपति, तिमि तिमि, जंपहि पुनहि[19] पुन ।।३८।।

दोहा

आदरु नृप तास को, कह्यौ[20] चंद कवि आउ ।

---

1 BK2 BK3 थप्पियं । 2 BK2 BK3 उत्तरयउ । 3 BK1 कै । 4 BK1 भोरि ।
5 BK2 BK3 "जिनै" छूट गया । 6 BK2 BK3 लीये । 7 BK2 BK3 रे ।
8 BK2 BK3 गज्जरइ भूत । 9 BK1 भम्भीषनं । 10 BK2 हिलौरे । 11 BK2 BK3 सुतै । 12 BK2 BK3 सबदु । 13 BK2 BK3 मिटै विध । 14 BK1 जल
15 BK2 BK3 षषन । 16 BK1 सफुल । 17 BK2 BK3 सब्व्र । 18 BK2 BK3 जिम जिमि । 19 BK2 BK3 पुनइ पुनि । 20 BK2 BK3 कह्यउ ।

ढिल्लिय[1] पति जिहिं विधि रहे, सुनौ कहहु समुझाउ[2] ॥३६॥
कितकु[3] सूर संभरि धनी, कितकु देस कुल चंद।
कितकु रनह[4] हत्थ ग्गलौ, पुछयौ[5] राइ सु चंद ॥४०॥
सूर जु सौ गैनह हुवै, कौल[6] दल बल आस।
जब लगि नृप कर[7] उठवै, तब लग देह पंचास[8] ॥४१॥
मुकुट बंध सब भूप हैं, लच्छन सब संजुत्त
वरनि जेनि उनहारि वह, कहि चहुवांन संजुत्त ॥४२॥

कवित्त

बत्ती सै लष्षन[9] सहित, बरस छत्तीस मास बह।
इम दुर्जन संग्रहै राह, जिमि सूर चंद गह।
कै छट्टै महि दानहु, द्रवन छुट्टैति दंड कहि।
इक्क कहहि गिरि वंद, इक्क अनुसरहि चरन गहि।
चहुवांन चतुर चिहु दिसहिं[10] वलिद[11] वन, सव्व[12] हत्थ जिहि[13] हनहिं[14]।
इमि[15] जंपै चंद वरद्दिया, पृथ्वीराज रनहार हिं[16] ॥४३॥

दोहा

दिष्षि थवाइत थिरु नयन, कहि कनवज्ज नरिंद।
नैन नैन बंधुर परै, मनु थह उभे मयंद[17] ॥४३॥
सोमेसुर[18] पानि ग्रहन, जब ढिल्लिय पुर कीन।
हम गरु जन बत्तैं कहहिं, वहु धन मांगि सु लीन ॥३६॥
जौ मोमनि[19] सुद्रा हनौ[20], तौ सुत विजै नरिंद।
सब सेवहि हम कौनु पति, तुम जानहु कवि चन्द ॥४६॥

---

1 BK1 दिल्लिय। 2 BK1 समझाउ। 3 BK3 जितकु। 4 BK2 BK3 रन। 5 BK2 BK3 पुछयउ। 6 BK2 BK3 "कौल" छूट गया। 7 BK2 BK3 अरि। 8 BK2 BK3 पंचास। 9 BK2 BK3 लष्षिन। 10 BK2 BK3 दिसहु। 11 BK1 वज्रंद। 12 BK2 BK3 सब। 13 BK1 हि। 14 BK2 BK3 "हनहिं" छूट गया। 15 BK2 BK3 इम। 16 BK2 BK3 इहि। 17 BK2 BK3 मइंद। 18 BK1 सोमेसु पाणि। 19 BK2 BK3 मामनि। 20 BK3 हतौ।

छंद पद्धति

अवसर पसाव[1] करि पंगु राव। सुत तात साथ दिग विजय वाव।
तुम देव लग्गि दच्छिनहिं[2] देस। तब लग्गि मेच्छ इच्छहं प्रवेस ।।४७।।
सावंत राज तपितो न बंधि। संग्रह्यौ[3] सब सैन संधि।
दामिन्न रूप छत्रिय कुलांह[4]। सामंत सूर दुहं विधि दुबांह ।।४८।।
उन मत्थि[5] गृह राज काज। कुल पंड छत्र चहुवांन लाज।
सिंगिनि समत्थ सर सद्द[6] वेध। जिनि करहु राज उन मिलन षेद ।।४६।।
हिंदवान जानि लग्गो न धाइ। उहि उच्छत कौनु दिग विजय कराई।
मानिक्क राइ[7] दुंहुं हुव समुद्ध। रघुवंस राइ जिम निकत दुद्ध ।।५०।।
मुक्कल्योति[8] तोहि दिषन वराति। राज[9] सू जेणि मंडयौ[10] ववाति।
.... ।। ५१ ।।

दोहा

बहुत चंद बोलहु वयन, ए लच्छन छिति है न[11]।
सब्ब समूरति लच्छनह[12], सोव दिषावहु नैन ।।५२।।

कवित्त

इसौ राज पृथीराज जिसौ, हत्थहिं अभिमानह[13]।
इसौ[14] राज पृथिराज जिसौ[15], हंकारह[19] रावन।
इसौ राज पृथीराज राम, जिम अरि संतावन।
वेर सती सबह अग्गिले, लच्छन सब संजुत्त भनि।
इम जंपै चंद बरद्दिया, पृथ्वीराज[17] उनहारि[18] इनि ।।५३।।

दोहा

रतन बुंद वरषत नृपति, हय गय हेम सुहद।

---

1 BK3 पंसाव। 2 BK2 BK3 दच्छनहि। 3 BK2 BK3 संग्रह्यो। 4 BK3 कुलाहां। 5 BK2 BK3 मुत्थि। 6 BK2 BK3 सब्द। 7 BK3 मानिक राइ। 8 BK2 "ति" छूट गया। 9 BK1 राज सूर। 10 BK3 मंडयो। 11 BK1 हीन, BK3 छिन। 12 BK3 BK3 लच्छिनह। 13 BK1 अभिमानहिं। 14 BK2 BK3 इसउ। 15 BK2 BK3 जिसउ। 16 BK3 हंकारा। 17 BK2 BK3 पृथियराज। 18 BK2 BK3 उनहरि।

श्रवन[1] वुंद मंगन तनह, सिर छत्रह सु दलिद्द ।।५४।।
कछुक सैन नैननि करिग, कछु जीव वचन वषांन ।
कछु लषि उलषि विचार किय, अति गंभीर सुजान[2] ।।४४।।

खंद त्रमांनिक

विहंग भृंगजा पुरा, चलंत सोन नूपुरा ।
अनेक भांति सादुरं, असाढ़ मोर दादरं ।
सुधा समान मुषहि, उठंत इंदु[3] सम्मुहि ।
नितंब तुंग श्याम के, मनौं[4] सयन्न काम के ।।५६।।
लवन्न भृंग गुंजहि, सुगन्ध गंध हत्थहि ।
दिपंत डोर कंकरणे, कटि प्पमान[5] बंकुरे ।
सुवन्न मुत्ति तारए, अलक्क बंक आरए ।
सबद्द सोभ तंगुले, रहंति[6] लज्जि कोकिले ।।५७।।

अडिल्ल

चाहुवांन दासी, रिस कंपिय । पुर राठौर रहै, दिसि[7] नंषिय ।
विगलि केस पुरुष त कोइ अष्षिय । पृथ्वीराज देषत सिर ढंकिय ।।५८।।

दोहा

भव कि भूप अनूप सह, पुरुष जि कहि प्रथिराज[8] ।
सुमतु भट्ट सत्थहं अच्छे[9], तिहि करंत[10] तीय लाज ।।५६।।

---

1 BK2 BK3 स्रवन्न 2 BK2 में निम्नलिखित दो दोहे अधिक हैं जोकि स्वीकृत पाठ समझना चाहिये :—

त्रियन पुरुष रस परस बिनु, कहिग राइ सुरसान ।
धवल ग्गृह ते अनुसरिग, भट्टहि अप्पुन मान ॥ १ ॥
षोडस वरष सुमुक्कि गृह, ले सब दासि सुजान ।
मनहु सभा सुर लोक ते, चली अच्छरी समान ॥ २ ॥

3 BK1 इंद । 4 BK3 मनो । 5 BK1 प्पमाण । 6 BK2 BK3 रहत । 7 BK1 दिस । 8 BK1 पृथ्वीराज । 3 BK1 अच्छ । 4 BK1 करत ।

इक्क कहहि विट्टहि सुभट, इह न सत्थ प्रथिराज[1]।
इह उंहि दुहुं मन इक्क है, तिहि करतत[2] यह लाज ॥६०॥
अप्पिग पान समान करि, नहि रष्षु कवि तोहि।
जु कछु इच्छ करि मंगि[3] है, कालिह समप्पौं तोहि ॥६१॥
छत्र सरद बज्जन बहुल, बहुल वंस विधि नंद।
सत्त सहस संषह धुनिय, महल जाय जय चंद ॥६२॥

हंक्कारयउ रावण नृपति, कुंकुम कलस सुवास।
जो[4] पश्चिम जय चंद पुर, तिहिं लै रष्षि अवास ॥६३॥

आइस सवन सत्थ चलि, असिय सह सभट सत्थ।
जि भर भुम्मि ढिल्लन कहै, मेर भरहिं उठि वत्थ ॥६४॥

सकल सूर सावंत घन, मधि कविता[5] किय चंद।
प्रथिराज सिंघासनह, जनु उय पर पुर इंद ॥६५॥
भइ तनु सा दिन मुदित मन, उड नृप तेज विराज।
कथित कत्थ कथहित सब[6], मुष सयमू प्रथिराज ॥६६॥
तब सामंतउ सूर मिलि, सब पुच्छी नृप वत्त।
जु कछु सत्ति संवाद भौ[7], नीडर राइ सुतत्त ॥६७॥

मुडिल्ल

तत्तु[8] कहे नृप नीडर पुच्छिय।
राज सचंद[9] महा सभ मुच्छिय।
आदि दए कमधुज्ज सुरायह।
दासिय मेत कहे, सब मुक्कि नृपानह ॥६८॥

सेवत सेव करै कर जोरं। छत्र धरे सिर कौनु[10] निहोरे।
फेरि कहि कवि चंद सुवत्तिय। पंग प्रतीप गयो तव छिप्पिय ॥६९॥
पत्त[11] सुतत्थ तुमे घर घल्लिय[12]। भट्ट कहै कर छग्गल भल्लिय।

---

1 BK1 पृथ्वीराज। 2 BK2 करंत। 3 BK1 मंग। 4 BK2 जो छूट गया। 5 BK2 कवित्त। 6 BK1 सथ, BK3 सब्ब। 7 BK2BK3 भउ। 8 BK1 तत्त। 9 BK1 सबंब। 10 BK1 कौन। 11 BK2 BK3 पत्र। 12 BK2 घलिय।

संभरि राइ तमक्कि रिसाविय । भै भ्रम काज धम्म पाविय[1] ।।७०।।
काल्हि सुभेष धरै भुवपत्तिय । कंपन तोहि धरद्धर[2] छत्तिय ।
भट्ट सौ कन्ह निपट्ट रिसांनौ । तूं सावंतनि तोरन थानौ ।।७१।।
तूं कवि देत आसीसहि छुट्टहिं । सूरनी सीस सुसस्त्रनि तुट्टहिं ।
तौ लगि भोजन भष्ष सपज्जै । हास करै उर मै चित लज्जै ।।७२।।
हैं सब सत्थ मैनत्थ[3] सयानौ । सूर कहै जिनि होइ विहांनौ ।
....।।७३।।

दोहा

आद[4] रस दिनियर दिष्ष करि, तब नृप प्रवृत्ति प्रजंक ।
मनहु राज जुग्गिनि पुरहं, सुर भ्यौ[5] सैन निसंक ।।७४।।
एकाकी बुल्यौ सु कवि, अवसर दच्छिन राइ ।
स्वामी निंद मुक्यौ करत, पौरि सपत्तौ जाइ ।।७५।।
मृदु मृदंग धुनि संचरिग, अलि अलाप सुध छंद ।
तार[6] तंति मद्दल झनक, पंग सु पंग परिंद ।।७६।।
जलन दींप दिय अगर रस, फिरि घनसार तमोर ।
जम-निकट उच्च महिल किय, सरद अभ्र ससि कोर ।।७७।।
तत्तु[7] धरा महि मत्तु यह, रत्तह[8] काम सुचित्त ।
काम विरुद्ध[9] न विधि न विधि कियौ, नित्त नितंबिनि[10] चित्त।।७८।।

छंद

दर्प्प कांगी नेत्र[11] चंगी, को काच्छि कोकिला नीरागमे[12] ।
भागवानी अंगसे[13] लो डोलं, एक बोले[14] अमोल ।
पुष्पांजली पंग सिर नाइ, जयति तुव काम देव[15] ।

---

1 BK2 BK3 पानिय । 2 BK1 तुट्टहिं । 3 BK1 मैनच्छ । 4 BK2 अद रस । 5 BK2 BK3 सुम्यौ । 6 BK2 BK3 तार त्रिगम्य उपंग सुर, पंग··परिद । 7 BK2 BK3 तत्त । 8 BK1 तच्छहं । BK2 BK3 बिरद्ध । 10 BK2 BK3 नितुंबिनि । 11 BK2 BK3 बंगी कुरंगी । 12 BK3 नीरंगने । 13 BK2 BK3 अंगाले । 14 BK2 BK3 बोल । 15 प्रक्षिप्त ।

दोहा

पुहपंजुलि[1] सिर[2] मंडि प्रभु, फिरि लग्गी गुरु पाइ।
तरुनि तार सुर सुर धरिय-चित्त, धरनि निष्षिय वाइ ॥७६॥

छंद नाराच

ततथेई[3] ततथेई, ततथे सुमंडियं।
तत थुंग थुंग थुंग, राग[4] काम मंडियं।
सर गिग म प्पि ध न्नि धा, धनु द्धनि त्ति रष्षियं।
भवंति जोति अंग तान, अंगु अंगु लष्षियं ॥८०॥
कलक्कला सुभेद[5] वेद, भेदनं मत्त मनं।
रणंक्कि झंकि नूपुरं, बुलंति तोरनं झनं।
घमंडि थार[6] घुटिका, भवंति भेष वेषयो।
तडित्त जुत्त केस पास, पीत स्याह रेषयो ॥८१॥
जति ग्गति स्सु तारयो, करि सुभेद सुंदरी।
कुसुम्म सार आवधं, कुसुंभ उड नंदरी।
उरप्प रंभ भेष रेष सेष, किंकिनी[7] कस।
तिरप्प[8] तिष्ष सिष्षयो सुदेश दष्षिनं दिसं ॥८२॥
सुरादि संग गीतने, धरंति सास ने धनी।
लजाइ[9] जोग कट्टनी, त्रिविद्ध[10] नंच संचनी।
उलट्टि पट्टि[11] नट्टिनी, फिरक्कि चक्की चाहनी।
निरत्तते निरष्षि जानि, बंभ मुत्त वाहिनी[12] ॥८३॥
विशेष देश धुर्यदं, वदन्न चंद्र राजयो।
शुक्र[13] भेष वालना, विराज[14] रोज राजयो।
उरु द्र मुद्ध[15] मंडलरी[16], अरोहि रोहि चालनं।

---

1 BK1 पुहपंजलि। 2 BK1 सिरि। 3 BK2 BK3 ततत्तथे। 4 BK2 BK3 विराग। 5 BK2 BK3 सुभेद भदेनं मन मनं। 6 BK1 धार। 7 BK1 किंकिनि। 8 BK2 तिरपा। 9 BK1 लज्जाइ। 10 BK2 BK3 त्रिविद्धि। 11 BK1 लट्टि पट्टिनि। 12 BK2 BK3 वाहनी। 13 BK3 सुक्र सेर। 14 BK3 विसांजयो। 15 BK1 मुट्ठ। 16 BK2 मंडली।

ग्रहंति मुत्ति उत्तिमांगनौ[1], मराल चालनं ।।८४।।
प्रवीण वाण अद्धरं, सुविंदु मुत्ति[2] कुंडली ।
प्रतच्छि भेष यो धरयौ, सु भूमि लो अषंडली ।
तल[3] तलस्सु तालना, मृदंग धुंकनो धुनि ।
अपां अपां भनंति भेजयंति, जानयो जने ।।८५।।
अलष्ष लष्षने नयन्न, वैन भूषणे पने ।
नरे नरिंद मास मेव, काम········मुष्षने ।
·······································।
·······································।।८६।।

दोहा

जाम एक छिन दाच्छ घट, सातिहूं[4] सत्ति निवारी ।
किहुं कामिनी सुष रति, समर नृप निय नियं विसारी ।।८७।।

शाटकु

सुष्षं सुष्ष मृदंग ताल जयतो, रागं कला कोकनं ।
कंठं कंठ पिता गुना हरि हरो, सुभ्रीय पना पिता[5] ।
एसह सुष्ष सहाय कुंभ महिता, राजाय रात्र्यं गता ।
क्कांति भार पुनर्मद गजे, साषा न गंड स्थली ।।८८।।
उच्चं तुच्छ तु रास पुष्प कमलं, कलि कुंभ निद्दा टलं ।
मधुरे साष सकाइता अलि कुलं, गुंजार गुंजा रवा ।
तर्नो[6] स्रान लटा पटः, पग पगः जै राइ संप्रापता ।
·······································।।८९।।

दोहा

प्रात राउ संप्रापति गजह, दर देव अनूप ।
सयन करि दरबार जहं, साज साहस जहं भूप ।।९०।।

---

1 BK3 उत्तिमा गानौ । 2 BK2 मंति । 3 BK1 भलत्त लत्त लस्सु तालना मूदंचनो धने । 4 BK2 स तिहूँ । 5 BK2 पवना । 6 BK2 तर्न्यें ।

मिस वज्जहि गंगा न दिन, कन्नि[1], पत्ति भ्रांति मूह।
चढ़त सुषानस संमुहौ, जह सांवत समूह ॥६१॥
दस हत्थिय मुत्तिय सघन, सत तुरंग बहु भाइ।
दव्वु दरसु बहु संग लिय, भट्ट समष्ष न जाइ ॥६२॥

कवित्त

क गयउ राज मिल्लान चंद, वर दियहि समप्पनु।
दिष्षि सिंघासन ठयउ इह, जु बैयठौ[2] इंद्र जनु।
बहुत कियौ[3] आलापु, आपु कनवज्ज मुकट मणि।
यह ढिल्लिय सुर दत्त विय, उनहि गनौं तुज्झ[4] गनि॥
थिरु रहे थवाइत थिरु नयन, छंडि सिंकारं हि।
[षिषनकु रह जिहि]
असिय लष्ष पल्लानिय हि पान देहि दिढ़ हत्थ गहि ॥६३॥

सुनित भूल स पिट्ठि किय, वर उट्ठि दिठि बंक।
मनु रोहिणी यमुन मिल गमनु, दुइ उदित मयंक ॥६४॥

दोहा[7]

राजा पान न अप्पहिं, पंगु न मंडै हत्थ।
रोष देषि नृप चित महि, कहि चंद तब गच्छ ॥६५॥

अनुष्टुप

तुलसी विप्र हस्तेषु, विभूतिरपि योगिनां।
ताबूलं चंडि पुत्रस्य, त्रीणि[5] देयानि सादरं ॥६६॥

दोहा

भुव बंकिय करि बंक नृप, अप्पिय हत्थ तमोर।
मन हु वज्र पति वज्ज गहि, सहि अप्पियो सज़ोर ॥६७॥

---

1 BK2 BK3 कन्निय। 2 BK2 BK3 वयठत। 3 BK2 BK3 कियउ।
4 BK2 BK3 तुझ। 5 BK2 त्रीष्या।

कवित्तु

पहिचान्यौ जय चंद यह, न ढिल्लिय सुर लिष्यौं[1]।
नहीय चंद उनहारि, दुमह दारुण अति पिष्यौं[2] ॥
करि संठहु करि वार कहइ[3], कनवज मुकट मणि[4]।
हय गय दल पष्षर रह, भाजि[5] प्रुथिराज जाइ जिनि।
इतनो कहत भुवपति चिढ्यौ[6] सुनि नीरं ? किन्नौ नम्रौ।
सावंत सूर हसि परसपर, कहहि भले रजपूत सौ ॥६८॥

दोहा

सुनहु सब्ब सावंत, हो कहै प्रुथिराज।
जो अच्छह[7] षिन षिन भई, दष्षिन नयर विराज ॥६६॥
बुल्लि कन्ह अयान नृप, मति मंडप असमत्थ।
जौ मुक्कै सत सत्थियनु, तौ[8] लिन्हे कत सत्थ ॥१००॥
जौ मुक्कउ[9] सत सत्थियनु, तौ संभरि कुल लज्ज।
दष्षिन कर कनवज्ज हुं, सुनि सम्मुह मरनज्ज ॥१०१॥
जांनि पंगु चहुबांन वौ, मुख जंप्पौ यह वैनु।
बोलि सूर सामंत स्यौं[10], करौं एक ठौ सोनु ॥१०२॥
भई समंक दिसि विदिसि मिलि, वहु पष्षर भहराव।
मनु अकाल टिड्डिय सघन, पावस छुट्टि प्रवाह[11] ॥१०३॥

कवित्तु

पब्बेसुर प्रिथिराज[12], सोमेसुर नंदन।
लग्गे[13] लंगर राइ संज[14], संजम सुव जंबर।
वारह हत्थह भुल्लि वग्गु, उठ्यौ लोहानौ।
पारद्धी चंपिया द्वार, चंपौ चौहानौ।

---

1 BK2 BK3 पिलष्ष। 2 BK2 BK3 ष्षउ। 3 BK1 कहै। 4 BK1 म्मणि। 5 BK1 भाज। 6 BK2 BK3 चढ्यौ। 7 BK1 BK2 अच्छ हु। 8 BK1 भौ लै हौ कत सत्थ, BK3 भौ लिहौ कत सत्थ। 9 BK1 मुक्कौ। 10 BK1 सौ। 11 BK2 प्रवाह, BK3 प्राहाह। 12 BK1 पृथीराज। 13 BK2 लंगा। 14 BK2 BK3 "संज छूट गया।

वर वीर बराहां उप्परे, केहरि बट्ढा वर बढन।
इक अंषिक इक इक्कहं, पग इक्क सु मुष लग्गा नरन ॥१०४॥
अद्धा देस सुभेस एक, अद्धा तमूला।
अद्धा आसन अद्धराज, आदरं समूला[1]
संगाने दीवांन गयो नहि, रह्यो तिन सत्थे।
कया तुंग सो कन्ह देव, साह्यो भुज वत्थे।
गुरवार रत्ति गोचर कियौ, प्रात प्रगट्टत[2] छुट्यौ।
दरबार राइ पहु पंग दल, चौकी चौरंग जुट्टयौ ॥१०५॥
मंत्रीं राइ सुमंत्र हंत, वज्यौ[3] सु चढंतौ।
दु जाइ ढिल्लीय कोस, कुंजरहं बढंतौ।
हल्लो हल कनवज्ज मज्झि[4], केहरी कुकंदी।
संजम राइ कुमार लोह, लग्गा लूसंदी।
चहुवान महोवै जुद्ध हुव, गेहा गिद्ध उड़ाइया[5]।
रन भंग राउ नेवर विरद, लग्गै लोह उचाविया ॥१०६॥
पल्लान्यौ जय चंद मरद, सुरपति आकंप्यौ।
असिय लष्प तुष्षार भार, फण पति फण संक्यौ।
सोरह सहस निसांन भयो, कुहराब भुव भर।
ढरि समाधि तिहुँ लोक नाग, सुर असुर[6] नाग नर।
पाइक्का[7] धके धर को गिनै जेहि[8] असीय सहस गैवर गुरहिं।
पंगुरो कहै सामंत सह लेहु[9], राज जीवन धुर हिं।
हय गय दल धसमसहि, शेसु सलमलाहिं[10] सलक्कहि।
महि कूरम अहि डरहि मेर, भर भार हलक्कहिं।
शृंग ककुभ दिग डरहि, साहि कलमलहि कलक्कहिं।
सहस नैन जलु[11] झरहि, रेणु[12] पल रइ पलक्कहि।

---

1 BK2 BK3 संमूला। 2 BK1 घट्टत। 3 BK2 BK3 बज्यो। 4 BK2 BK3 मझि। 5 BK3 उड़ा विया। 6 BK2 BK3 देव। 7 BK2 पाईकी। 8 BK3 जेहि। 9 BK1 लीहु। 10 BK2 BK3 सलसलइ। 11 BK1 जल। 12 BK2 BK3 रैणु पल पलरइ पलक्कहि।

पायान राज जय चंद कौ, भार झल्लक्को अंगवै ।
हय लार वहत भीजंत थल, पंक चिहुट्टहिं चक्कवै[1] ॥१०८॥

बिजय नरिंद इतनौ[2] सुदल, धरि धर पर चल्यौ ।
इमि हय षुर षुदंत एमि, पायालह डुल्यौ[3] ।
एम नाद उच्छरयौ एमि सूर चडयौ गयंदह ।
एमि कुलाहल भयौ, एमि मुंदिग रवि इंदह ।
एम लष्ष पष्षर परि, भुवन आकंप है ।
पंगुरौ चढ्यौ कवि चंद कहि, विनु प्रथिराज को सहै ॥१०९॥

डर दुग्गम थरहरहिं अढर[4], ढरहि गरुव गिर ।
तर वन घन[5] टुटंत धरनि, धसमसहि हयनि भर ।
सर समुंद षरभरहिं डढ़[6], दिढ दाढ करक्कहिं ।
कमट पीठि[7] कलमलहि पुहमि मैं प्रलौ पलट्टहि[8] ।
जयचंद पयानौ संभरत पुनि, ब्रह्मंड न छुट्टि[9] है ।
नन चलहिं नन चलहि रे, चल हित प्रलोपलट्टि[10] है ॥११०॥

कबित्त

राज नभो मिलि भज्जि अट्ठ, दिग्ग करि वरु करहि ।
करि वरंत दिग अट्ठ मुरहिं, डाढहि वाराह हि ।
हरि वराह[11] डिढ डट्ठढ करत, फुनवै[12] फन टारहि ।
फनबै फन विढरंत कुंभ, षप्पर जल भरहिं ।

---

1 BK2 BK3 चक्कवइ । 2 BK2 BK3 रोपु धरि इस करि चलयउ । 3 BK2 BK3 डुलयउ । 4 BK1 अडर टाग्यि । 5 BK2 घनन । 6 BK1 डड्ढ ददा डाल । 7 BK2 BK3 पीउ । 8 BK2 BK3 पलट्टहि । 9 BK2 BK3 निछुट्ट है । 10 BK2 में निम्नलिखित दोहे अधिक हैं—

जल थल मिलि दुव पंक हुव, टुटि तरवर भर मूल ।
दिष्षि सयन सावंत बलि, छल नकि वा वन फूल ।
सज्जत पंग नरिंद कहु, विजय सुच्छोणी वग्ग ।
मुकता ग्रह सु कवित्त कहि, जल थल मग्ग अमग्ग ॥२॥

11 BK2 BK3 डाढ़ वराह हरिहि । 12 BK2 फनवै ।

भार हिंति कुंभ षप्पर जलहिं, तहं उच्छलहिं।
पयाल जल उच्छलत होइ तहं, जुग प्रत्तै न चढि चढि-
जयचंद दल ॥१११॥

दोहा

न डरि न डरि छोणी सु तिय, सतु करु छिनकु छयल्ल।
छत्र पत्ति जीरन भषिग, तूं नित नित नवल्ल ॥११२॥

छंद भुजंगी

प्रवासे न[1] नाजी न लाजी प्रहारं। मनौ रवि रत्थ[2] आनै प्रहारं।
स्वामी संग्राम झिल्लै दुधारै। तिनै उप्पमा चन्द दिज्जै छिकारै ॥११३॥
साहियं बाग गट्टे जिलारा। कंठ भूमंत गज गाह भारा।
मनौ आवझे हत्थ बज्जंति तारा। छुट्टियं तेज बट्टे जिकारा ॥११४॥
तिते सज्जिए सूर सब्बै तुषारा। तहां पष्षरे प्रांन ते मार मारा।
बहै वाय वेगै नहि भूमि भारा। तिवै टुट्टिपं जानि आकास तारा ॥११५॥
घटे[3] औघटे घट्ट फंदे निन्यारा। किते लोह लाहोर बज्जै तुरक्की।
तिनै[4] धावते दीसै न धरचौ षुरक्की। सजै पच्छिमा सिंध[6] जांनैं न थक्की[5]।
तिनै साथ सिंधी[6] बले जक्क जक्की ॥११६॥
पवन पंषी न ग्रंषी मनीषी। जितै सास कट्ढ़े न चंपै न नंषी।
राग बागै न सुकी उरक्की[7]। उप्पजै उंच आदे धुरक्की ॥११७॥
अरब्बी विदेसी लरै लोह लच्छी। गणौ[8] कोक कंठील कंठानि कच्छी।
धरा षित्त षुंदंत सद्दंत वाजी। किते विष्षियहिं एक एकंत ताजी ॥११८॥
इते पंडु वेषं गुरे राय सज्जी। तबहिं दल[9] दुवन देषंत लज्जे।
तहां आपुव्व[10] कवि चंद पिष्यौ। तरनि द्विज राज सम तेज दिष्यौ ॥११९॥

दोहा

फिरे राइ कनवज्ज महि, जानि संजोग हिं वत्त।

---

1 BK2 BK3 तता जीन लाजी। 2 BK2 BK3 रथ। 3 BK2 घट औघट। 4 BK2 तिने। 5 BK1 थक्के। 6 BK1 संधी। BK3 संध। 7 BK2 तुरक्की। 8 BK2 BK3 गणौ को कंठ कंठील कच्छी। 9 BK2BK3 दुवन दल। 10 BK2 अप्पुब्ब।

चढि विमान जय जय करहिं, देव सुरंग निकृत्त[1] ॥१२०॥
करिंग देव दषिन नयर, गंगा[2] तुरंग अकिल्लं[3]।
जल छंडै[4] अच्छहिं करहिं, मीन चरित्तहं भुल्ल ॥१२१॥

रासा (दोहा)

भुल्लो रंग सुमीन नृप, पंग चढ्यौ हय पुच्छि।
सुनि सुंदरि वर वज्जनै, चढी आवासहं उट्ठि ॥१२३॥
दिषित सुंदरी दलबलनि, चमकि चढंत अवास।
नर कि देव किधुं कामहर, किधुं कच्छु गंग विगास ॥१२४॥
इक्क कहहि दुरि देव इह, इकु कहहि इंद फनिंद।
इक्कु कहै[5] अस कोटि नर, इक पृथ्वीराज नरिंद ॥१२५॥
सुनि रव सुंदरि उब्भ हुव, स्वेद कंप सुर भंग।
मनु कमलनि कुल संहरिय, अमृत किरनि तरंग[6] ॥१२६॥
सुनि रव पिय पृथिराज कौ, उभय रोम तन रंग।
स्वेद कंप स्वर भंग भौ, सपत भाय तिहि अंग ॥१२७॥

मुडिल्ल

गुर जन गुर दहइ नहि सुंदरि। राज पुत्रि पुच्छइ कहु दुंदरि।
अम्हह पुच्छन दुत्ति पतावहि[7], गुन अच्छे पच्छे करवावहि ॥१२८॥

रासा

पंग राइ सा पुत्तिय, मुत्तिय थाल भरि।
जुवती जौ पृथिराज, न पुच्छै[8] तोहि फिरि।
जो इन लच्छिन[9] सव्वन, तव्व विचारु करि।
है व्रत मोहि नृ जीव तलै, उस जीव वरि ॥१२९॥
सुंदरि आइ सधाइ, विचारित नांउ लिय।
जहं जल गंग हिलोरे, प्रतीर प्रसंग लिय।

---

1 BK2 BK3 निक्रंत। 2 BK2 गंग। 3 BK1 अविकल्ल। 4 BK2 BK3 छंडइ अच्छइ करह। 5 BK2 BK3 कहइ। 6 BK2 BK3 तम रंग। 7 BK1 पतावहु। 8 BK2 BK3 पुच्छइ। 9 BK1 लच्छन।

कमलित कोमल हस्त[1] केलि, कुल अंगुलिय।
मनौं दान दुज अंध, समप्पति अंगुलिय ॥१३०॥

छंद नाराच

अपति अंजुलीय[2] दांन, जांन सोभ लग्गए।
मनौ अनंग तरंग अंग, रंभ इंदु पुज्जए।
जु पानिहार चाहुवांन, थार मुत्ति वित्तए।
मनो पिहत्थ कंठ तोरियो, ति पुंज अप्पए ॥१३१॥
निरष्षि नैन टोरिवैं, न, ता नृपत्ति बाहियं।
तरप्पि दासि पास पंक, सक्क एन साहियं।
अनेक रंग अंग रूप, जूप जांनि सुंदरी[3]।
उवत्ति जम्मु छांडि, ढिल्लिनाथ साथ आचरी[4] ॥१३२॥
सावंत सूर चाहुवांन, मान एम जांनए।
करन्न केहरी न पीन, इंदु मीन थांनए।
प्रतष्षि हीर जुद्ध धीर, जोस वीर संबही।
चरंत प्रान मानिनी, चलंत देत गंठि ही ॥१३३॥
सुनंत सूर अश्व फेरि, तेज, तामहं कियौ।
मनौ दलिद्द रिद्धि पाइ, जाइ कंठ लग्गियौ।
कनक कोटि अष्ट धात, रास भास मालसी।
रुनंति सौंर झौंनि स्याह, छत्र काम कामसी ॥१३३॥
सुधा सरोज मौज मंगलि, करंग हल्लिए।
मनौ मयंक फंद पासि, काम काल बल्लिए।
करस्सि केम कंकणंति, पांन पत्त बंधए।
भावती[5] सषीसु लज्ज, जुझ्झ[6] रज्ज बज्जए ॥१३५॥

---

1 BK3 हस्ते। 2 BK1 अंजुलिय। 3 BK2 में निम्न लिखित पाठ अधिक है :—
उच्छंग जटन गंग मध्य, सुरिंग-पत्ति अच्छरी।
ति अच्छरी नरिंद नाहि, दासि गेह पंगुरे।
सु जीवु फुल्लनि ....।
4 BK2 BK3 आचरे। 5 BK2 भावरीस। 6 BK1 जुझु।

अवार वार देव सद, दूव पष्ष जंपही।
सुगंठि ढिट्ठ एक चित्त, लोक कोक चंपही।
अनेक सुष्ष मुष्षसार, जुद्ध संधि लग्गियं।
कंति कंति अंत वंत, तमोर[1] मोरि अप्फियं ॥१३६॥

दोहा

बरि चल्यो[2] ढिल्लिय नृपति, जहां जैचंद कुंवार।
गरव[3] छोडि दष्षित्र करिग[4], प्रान करिग मनुहारि[5] ॥१३७॥
पय पियंग पृत्तीयं जप्पति, जयति जुग्गिनि पुरेस।
सर्व विधि निषद्धये......, तांबुलस्य समादाय ॥१३८॥

गाथा

सणि यंणो अणा रावो दिट्ठी रिझाइ सब्ब सो अप्पाय।
दै हत्था बिछोड़ा, हा हंजे ! वज्जणे हियडे ॥१३६॥
हंजे ! हिया हणप्पी कंपी, तणयाहि[6] काम संजोए[7]।
णिद्धा[8] अंधार विणाया हा वाले ! जीवणं कुणए ॥१४०॥

दोहा

रेणु परे सिर उप्परहं, हय गय गुंज उच्छार।
मनहुं ठग्ग ढग[9] सूरि दे, रहेति सत्थ मुच्छार ॥१४१॥
मनहुँ बंध अजहुंति भर, है तिन जानत थट्ट[10]।
वचन स्वामी भंग न करै, सब जोवहिं नृप बट्ट ॥१४२॥
अवलोकी तन स्वामी मन, मो सावंतनि सुष्ष।
हसहिं सूर सावंत बहु[11], काइर मन हति दुष्ष ॥१४३॥
धरि त्तनु धरि ढाल सिर, बाहु दंत उत[12] रोभ।
नृपति यत्र विय अंकुरिग, मनहुं मद गज सोभ ॥१४४॥

---

1 BK1 तमोरि। 2 BK1 वर चल्लियो नृपत्ति सुत। 3 BK2 BK3 गबि। 4 BK2 BK3 किरिग। 5 BK2 मनुहरि। 6 BK2 BK3 तणयाह। 7 BK2 BK3 संजोइ। 8 BK2 BK3 णिद्धा। 9 BK2 वग सूरि है। 10 BK1 BK2 BK3 तव। 12 BK3 ऊत रोस।

हरषवंत नृप नृत्य हुव, मन[1] मझहं जुध चाव।
मिलत्त हत्थ कंकण लषौ[2], कहइ[3] कंकमह काव ॥१४ ॥
गगन रेणु रवि मुंदि[4] लिय, धर सिर छंडि फनिंद।
यह अपुब्ब धरित्त मुहि, कंकन हत्थ नरिंद ॥१४६॥

चौपई[5]

चरिय वाल सुत पंगुराइ। उहिं ब्रत रषि मिल्यौ[6] तुम आइ।
तजि सुद्धहिं अब जुद्ध सहाइ। छंडिय कन्ह अबासह आइ ॥१४७॥
सोभंत मज्झि इक्क मात होइ। त उन[7] सुंदरि मुक्कै कोइ।
सो रजपुत्ति सुंदरिय एक। मुक्कि जाइ बद्धहिं[8] ति किं तैक ॥१४८॥
यह नृपत्ति वुज्झियै[9] न तोहि। सुंदरि तजे जिय तक्यौ[10] मोहि।
जौ अरि थट्ट कोरि मिलि साजहिं। ढिल्लिय तपत देउ पृथिराजहिं ॥१४९॥

अनुष्टुप

धर्मार्थे यज्ञार्थे च, काम कालेषु सोभिता।
सर्वत्र बल्लभा बाला, संग्रामेषु च मोहनी ॥१५०॥

दोहा

चलि मिलि सूर सु सत्थ हुव, रन निसंक मन भौन[11]।
सह अचार मुष मंगहि, मनहुँ किया फिरि गौन ॥१५१॥
पति अंतर विछुरण विपति, नृपति सनेह संजोगि।
सुनौ भयौ सुषि कौन विधि, देय[12] जिवावन जोगि[13] ॥१५२॥

मुडिल्ल

पानि परस अरु द्दष्टि विलग्गिय।
सा सुंदरी काम अग्गनि जग्गिय।
षनन लाप लाप मनु कीनउ[14]।
ज्यौं वर वारि गयौ तन मीनउ[15] ॥१५३॥

---

1 BK3 मेन। 2 BK2 लष्षो। 3 BK1 कहै। 4 BK1 मुंद। 5 BK3 चोपइ। 6 BK1 मिल्यौ। 7 BK1 ऊन। 8 BK2 BK3 बंधहि "ति किं" नहीं हैं। 9 BK2 BK3 बुझिये। 10 BK2 तक्ये। 11 BK2 BK3 भोन। 12 BK2 दैय। 13 BK योगि। 14 BK1 कीनौ। 15 BK1 मीनौ।

अडिल्ल

फिरि फिरि बाल गवाष्षिनि अष्षिय। ता साषि[1] देहि वयन वर सष्षिय।
चित्तु उत्तर मोहन मुष रषिय। जिमि चात्रिक पावस रितु नष्षिय ॥१५४॥

मुडिल्ल

अंगन अंगन चंदन वावहि। अरु लाजन राजन समुझावहि।
दै अंचल चंचल द्दग[2] सुंदहि। कुल सुभाइ तुरियां जिमि षुंदहि ॥१५५॥
बहुत जतन संजोगि समाए। सोम कमल अमृत दरसाए।
उझकि झंकि दिष्षउ[3] पन पत्तीय। पति देषत[4] मनु महि[5] अनुरत्तिय ॥१५६॥
तोहि नाथ संजोगि सुलष्षिनि। जो तुम वरसाह्यो कर दष्षिन।
सो तुअ तात दल[6] दव लित्तौ। सरण तोहि सुंदरि संपत्तौ ॥१५७॥

दोहा

ता मुष मुंदन मुंद किय, अलियन जंपहु आलि।
डाढै ऊपर लैन रस, प्रति षिन दिज्जै गालि ॥१५८॥
अंध न दर्प्पन देषही, गुंग न जंपहि गल्ल।
अस्तुत नहि गानहि लहै, अबल न लरहि सबल्ल ॥१५९॥

[अनुष्टुप]

गुरु जना न मे[7] नास्ति, तात मात विवर्जितः।
तस्य कार्यं विनश्यंति, यावच्चंद्र दिवाकरः ॥६०॥

दोहा

नै[8] निषेध कीनौ सु कथ, दुज अरु दुजी प्रमान।
टरै न गंध्रव गंध्रवी, विधि कीनो अप्रमान ॥१६१॥
यह कहि सिर धुनि सषिनि स्यौं[9], देषि संयोग सुराज।
जिहिं पिय तन अंगुलि फिरै, सो प्रिय जन किहिं काज ॥१६२॥

---

1 BK1 सुषि। 2 BK2 BK3 द्रिग। 3 BK1 दिष्यौ। 4 BK1 देषित। 5 BK1 मह। 6 BK2 BK3 दल-दबल तित्तौ। 7 BK2 BK नमो। 8 BK2 मै। 9 BK3 स्यों।

कुंडलिया

धुनति गवषषनि[1] सिर लषि, सषिन[2] मंझ मुष अंबु।
अनिल तेज झलझल कंपै, सरद[3] इंद प्रतिबिंब।
सरद इंद प्रति बिंब सींचि, चतुरानन आनन।
निरषि राज प्रृथिराज कह्यौ, सुंदरि सुनि कानन।
हम सौं भट्ट सुभूप पग्ग, भो हौं नग नंतह।
मानि रीस बिसवास सीस, धुनि[4] नहि धनुंतह ॥१६३॥

कवित्त

सुंदरि जंपै वयन ढीठ, ढिल्ली नरेस सुनि।
कहां सूर सावंत पवन, हल्लहि पहार पुनि।
अज हुँ हल्यौ[5] नहि चल्यौ, गंठी[6] दीठी सु जम्म कह।
जो सद्धइ सुर लोक कलहइ, अच्छरिनि सग्ग मह।
यह चिंत कंत अच्छइ बहुल, बहु समूह सुव वर कहै।
संदेस सास संभरि धनी, पलन प्रांन पच्छे रहै ॥१६४॥

अनुष्टुप

आलोकी नृप नयने वचन, जिक्कास[7] कातरा।
श्रवन समान दुस्सह, स्वामि निंदा सुनंतय[8] ॥१६५॥

॥ नौरस विलास कथनं[9] ॥

कवित्त

श्रृंगारी सुंदरी हास उपजै, तुव बद्दहं।
करुन[10] बोलि इह[11] विहुंत[12], रौ[13] कामिनि कंत[14] सद्दहं।

---

1 BK1 गवष्षिनि। 2 BK2 सषि सषिनि। 3 BK2 BK3 सुरद। 4 BK2 BK3 घुनि धुनि न धनुंतह। 5 BK2 BK3 अल्यौं। 6 BK2 नहि चवौ गंठि दीनी, BK3 नहि चवौ गंठी दीठी नि। 7 BK2 BK3 जिकास। 8 BK3 सुनंतया। 9 BK2 BK3 "कथनं" नहीं है। 10 BK1 करुण। 11 BK2 BK3 यह। 12 BK2 BK3 विहंत। 13 BK1 रौद। 14 BK1 कत

वीर कहत गंधर्व भयौ भामिनि भयानक।
वीभच्छं संग्राम भनिहि, अच्चिज सयानक।
छिन संत मंत विव[1] कंत, इय पिय विलास किय दिन करिय।
इम अष्षै[2] चंद वरदाइ वर, कलह कंत[3] तुव अति डरिय ॥१६६॥

॥ जाम जादौ बोल्यो[4] ॥

कवित्त

ते गच्छोरि जद्दवनि सौंह, सिर धरि पतीज किय।
इह सत्थहं सावंत भुम्मि, संघार भार थिय।
अतुलित बल अतुलित प्रमांन, अतुलित्त वल देवह।
अतुलित छत्रिय छित्ति गयन[5], स्वामित्त[6] सु सेवह।
देष हि न राज वंसि[7] विलगि, वलि[8] कलह केलि कलपंत किय।
अबलत्त छंडि मनु सबल करि, विघर राइ सिंधूति किय ॥१६७॥
पृथ्वीराज वामंग संग, जौ कन्ह तन्ह[9] दल।
हौं चहुवांन समत्थह, रौं रिपु राइ तत्थ[10] बल।
मोहि विरद नरनाह चंद, कौ करै भुवनि-भर।
मो कंपहि सुरलोक सत्त, पायाल नाग नर।
मम जंपि कंपि सुंदरि सषह, बृढिग कोरि काइर रष्षत।
इह भुव हि ढिल्लि कनवज्जनी, तुहि अष्षौ[11] ढिल्ली तषत ॥१६८॥

गाथा

मदन सराल ति विवहा विवहा··················।
दैत प्राण प्राणेण, नयन प्रवाहन[12] विवहा ॥१६९॥

॥ अहबा कांति कथा ॥

रासा

सुंदरि सोचि समुझि[13], सु गह गहक्यौ रुभरि भरि।

---

1 BK3 वुव। 2 BK2 BK3 कहइ। 3 BK2 BK3 कति 4 BK1 वोल्यौ। 5 BK2 BK3 गयान। 6 BK1 सामित्त। 7 BK2 BK3 वंसै। 8 BK2 BK3 "वलि" नहीं है। 9 BK2 नन्ह। 10 BK2 BK3 तथ। 11 BK2 अष्षो। 12 BK2 BK3 प्रवाहित। 13 BK1 समुज्झि।

तब हि राज प्रिथिराज, सुचि सोचिय बहु घरि।
दिय हय पुट्टहिं भार जु, सब्ब सु लछिनिय।
करत तुरंग सुरंगनि, पुच्छनि अच्छनिय ।।१७०।।

गाथा

एक थाइ संजोई एकट्टयो, होइ समर निर-घोषो आनिय।
थाति[1] पदमं अंदोलए, हद आइ हद आइ ।।१७१।।

दोहा

मन अंदोलित चंद मुष, दिषि सावंतनि मुषष।
अंदोलित पृथीराज हुव, सिर कट्टिय सुष दुष ।।१७२।।
वय विलग्गि इक्कत करह, इक कर लग्गिय लाज।
वय जुग्गिनि पुर कहुँ चले, लाज कहै भिरि राज ।।१७३।।
वय तन कुरषनि निरषयो, लाज सु आदर दीन।
कलि नारद निंदय सु कवि, प्रकट्ट[2] करहि हम कीन ।।१७४।।
कहै भट्ट दल विषम है, तुव दल तुच्छि नरिंद।
परनि पुत्ति जयचंद की, करहि न सु गृह आनंद ।।१७५।।
भुकित राइ उत्तरु[3] दियो, मो सथ[4] सत्त सुभट्ट।
हौं चहुवांन सु संभरि, भुज ठिल्लो[5] गज घट्ट ।।१७६।।
चल्यौं भट्ट समुहाइ तह, जहं दल पंग असेस।
जा इच्छै नृप तुज्झ मन, बट्ढो षित्त नरेस ।।१७७।।

अनुष्टुप

कस्य भूपस्य सेनायां, कस्य वाजित्र वाजये।
कस्य रिपुराइ आर्त्ता, कस्य सन्नाह पष्षरं ।।१७८।।

दोहा

छल आयौ[6] चहुवांन नृप, भट्ट सत्थ पृथिराज[7]।

---

1 BK1 याति। 2 BK3 प्रगट। 3 BK1 उत्तर। 4 BK2 BK3 सत्थ। 5 BK2 तिल्लो। 6 BK2 BK3 आयो। 7 BK3 राजा।

तिहिं उप्पर हय पष्षरहं[1], तिहिं पर वाज न बाल[2] ।।१७९।।
सुनि श्रवननि पृथिराज कहुँ, भयौ निसांनह घाव ।
ज्यौं भद्दव रवि अस्त गह, चंपय वद्दल वाव ।।१८०।।
सुनि वयन्न राजन चढिग, सहस संष धुनि चाव ।
मनहुं लंक विग्रह करन, चढ्यौ[3] रघुप्पति राव ।।१८१।।
राम दलह वन्नर[4] सयल, उहिं रच्छस[5] दल वंद ।
असीय लष्ष सौं यौं भिरिग[6], धनि पृथिराज नरिंद ।।१८२।।
परनि राउ ढिल्लिय समुह, रुष किन्निय मन आस ।
कहै[7] चंद नृप पंग दल, जुद्ध जुरहिं जम दास ।।

गाथा

सय रिपु[8] रि ढिल्लि नाथे, सए आर्यया पध्वं सणायं ।
परणि पंग[9] राव पुत्ती, जुद्धाइ मांगति भूषणं ।।१८३।।

इति श्री कवि चंद विरचिते पृथी राज रासे जयचंद संवादो, संयोगिता विवाहो नाम नवमः षंड: ।।९।।

1 BK2 BK3 पष्षरहि । 2 BK3 बाज । 3 BK2 BK3 चढयो । 4 BK3 वनर । 5 BK1 रक्षस । 6 BK1 भरिग । 7 BK2 BK3 कहे । 8 BK2 BK3 रिपु ढिल्लिय । 9 BK2 वा दंग ।

दशम षण्ड

दोहा

चढिग सूर सावंत सह, नृप धर्महि कुल लाज।
सह समूह दिष्षहि नयन, त्रिय जु वरिग पृथिराज ॥ १ ॥

छंद (अडिल्ल)

सज्जंत धूम धूमे[1] सुनंतं। कंपियं तीनि पुर जेनि यंतं।
डमरु डहक्कियं[2] गौरी[3] कंतं। जानियं जोग जोगादि[4] अंतं ॥२॥
किमै किम सेस सह भार डहियं। किमै उच्चै श्रवा नयन बहियं।
कमठ सुत कमठ नहि अंभु लहियं। जाके जकि ब्रह्म न ब्रंह्मड रहियं ॥३॥
राम रावन्न कवि किंन्न कहता। सकति सुरलोक वरदान लहता।
कंस सिसु पाल जुरि[5] जमन प्रभुता। भ्रम्मियं[6] एन भय लच्छि सुरता ॥४॥
चट्ढियं सूर आजानु बाहं। टुट्टि नव सघन वट्ढी[7] न लाहं।
गंग जल जमुन धर हलै मौजे। पंगुरे राय राठौड[8] फौजे ॥५॥
उप्परै[9] रोस पृथिराज राजं। मनौ[10] वानरा लंक लागे हि काजं।
जग्गियं देव देवा उनिंदं। तहां दिष्षियं दीन इंदं फनिंदं ॥६॥
जहां चंपियं भार पायाल द्वुंदं। तहां उट्ठियं रेण आया समुंदं।
लहै कौन[11] अगनित्त रावत्त रत्ता। छत्र छिति भार दीसै न पत्ता ॥७॥
आरंभ चक्री रहै कौन संता। जुवा राह रूपी न कंधे धरंता[12]।
जु सेर सन्नाह[13] नव रूप रंगा। मनौ झिल्लवै सीस त्रिनैन गंगा ॥८॥
तहां टोप टंकार दीसै उतंगा। मनौ वद्दलै पंति बंधि सुरंगा।
जिरह जंजीर गहिं अंग लाई। मनौ देह गोरष्ष लग्गी रषाई ॥९॥
हत्थ रै हत्थ लग्गिय[14] सुहाई। तिते धाइ गंजै न थक्कै थकाइ।
राग जर जीन वनि वानि अच्छै। दिष्षीयहि[15] मनौं नद भेष कच्छै ॥१०॥

---

1 BK1 धूम। 2 BK2 BK3 डह डहक्कियं। 3 BK3 गोरि। 4 BK1 जुग्गनि दिं।
5 BK2 BK3 जुर। 6 BK1 भुम्मियं। 7 BK1 वट्टी। 8 BK1 राठोड।
9 BK2 BK3 उप्परइ। 10 BK2 मनै। 11 BK3 कोन। 12 धुरंता।
13 BK2 BK3 संनाह 14 BK2 BK3 लग्गीय। 15 BK1 दिष्षयहि।

सस्त्र छत्तीस करि कोह सज्जइ[1]। ति इत्तने सोर वाजित्र बज्जई[2]।
निसान निसाहार बज्जइ सुचंगा। दिसा देस दच्छिन्न[3] लच्छी उपंगा ।११।
तबल्लंत दूरं तिजंगी मृदंगा। सुनै नित्त नारद कंठे प्रसंगा।
वधै वंस विस्तार बहु रंग रंगा। जिनै मोहिए सत्य नागो कुरंगा। ।१२।
तहां वीर गुंडीर तैसे सुरंगा। नचै ईस सीस ध्द्रै जान गंगा।
सिंधु समादताय श्रवने उतंगा। सुनै अच्छरी अच्छ मंजै सुअंगा ।।१३।।
न फेरी न वैरंग सारंग भेरी। मनौं[4] नृत्यनी इंद्र आरंम्भ केरी।
सिंग सावक्क उग्गे ननेरी। वजे झिंझि आवज्झ हत्थे करेरी ।।१४।।
असुरे[5] धाइ धर घंट टेरी। चिंततै[6] नही नट्ठै कुवेरी।
उप्पमा षंड नव नयन भग्गी। मनौ राम रावन्न हथ्थे विलग्गी ।।१५।।

दोहा

दल सम्मुह दंतिय सघन[7], गनि कु कहै अगनिंत।
मनु[8] पर चित विधि बरए किय, सह दिषिय मयमंत ।।१६।।

छंद [अडिल्ल]

दिषियं मंत मयमंत मंता। छत्रहं ंग अंगे[9] ढुरंता।
एम अंदूनि बुट्टे जुरंता। वाइ बहु वेग कटकंता दंता ।।१७।
जि सीस सी दूष सुंडै प्रहारे। सार समूह धावै[10] करारे।
उज्जए बान सज्जै हंकारे। अंकुसहं को सहहि ते[11] चिकारे ।।१८।।
मेठ[12] मंग्गोल बहु कोट बंके। भूप बाजू विना[13] षूनि हंके।
तेह रज्जे रपट्टे निझिल्ले। चंपिए[14] पांनि ते मेरु[15] ठिल्ले ।।१९।।

---

1 BK3 सज्जाइ। 2 BK2 BK3 बजइ। 3 BK2 BK3 दच्छिन। 4 BK2 मन्यौ। 5 BK2 उच्छरे। 6 BK2 BK3 चिंतत। 7 BK3 सगन। 8 BK2 BK3 मम नु परषत विधिवरण किय। 9 BK2 अंगै। 10 BK2 BK3 धावइ 11 BK1 ने। 12 BK1 मोठ मामे सच हुं कोट बंके। BK3 मेठ मामे बहु कोट बंके। 13 BK3 बिवा। 14 BK1 चंप्पिए। 15 BK1 गरू, BK3 मरु।

रैस रैसम्म[1] नारी ति भल्ली। सीस[2] सींदूर सोहंति झल्ली।
दिषै रेष वैरष्ष पति पत्तिबल्ली[3]। नेज[4] बाजांह ये ढाक ढल्ली ॥२०॥
हल्लए, मत्त लग्गे विवानं। परबते[5] गजे सम करे मानं।
सिंधुर संबंध[6] धूंर धुरंगा। सुभ्र सुग्रीव डरि इंद्र संगा ॥२१॥
सीस सिंदूर गज झंप झंपै। देषि सुरलोक[7] पायाल कंपै।
पाषरां झलक गज एम झलषे। दंति मनि मुत्ति जर जटित लष्षे ॥२२॥
मनौ बीज गमकंति घन मेघ पष्षे।
इतन ही साम धरि वा रहियौ। कहहि पृथिराज पृथिराज गहियौ।

दोहा

गहि[8] गहि कहि जय चंद नृप, इक्क इक्क गहि अषि।
इकु[9] जनु पावस प्रवह अनिल, हलि बद्दल बहु भिष्ष ॥२३॥

प्रमानिक छंद[10]

हयं गयं नरं भरं, उनै विनै जलंधरं।
दसा निसान बज्जए, समुद सद्द लज्जए[11]।
नाद[12] सद्द अंपुली, व्योम पंक संकुली।
तटाक बान रंगनी, जुविक्क सो वियोगिनी ॥२४॥
पयाल पल्ह पल्लए, दिगंत मंत हल्लए।
अनंदने निसाचरे, कुकंपि रुंड साचरे।
भगंत[13] गंग कूलए, समुद्द सून फूलए।
अवर्त्त छवि[14] छत्रए, सरोज भोज सत्रए ॥२५॥

---

1 BK2 BK3 रेस रेसम्म। 2 BK2 BK3 सीस सिंदू ससिदूष मिलि। 3 BK1 झल्ली, BK2 में "मनौ वनराज ठाले ति ढल्ली। घंट घोरं न सोरं" अधिक पाठ है और BK3 में यहां त्रोटक है। 4 BK2 BK3 यह समस्त चरण छूट गया। 5 BK2 BK2 यह समस्त चरण छूट गया। 6 BK3 संबंधे। 7 BK2 सद्ददेव। 8 BK2 ग ह गहि कवि सेनान सब, चलि हय गय मिलि इक्क, BK3 गहि गहि...त्रोटक। 9 BK2 BK3 जनु पावस पुव्वह अनिल। 10 BK3 प्रवानिका छंदु। 11 BK1 लज्ज पज्जए। 12 BK2 रजोद। 13 BK1 भगत्त गब्ब, BK3 भगतं गब 14 BK2 छत्र, BK3 छव।

अषंड रेन मंडनं, डरप्पि इंदु छंडनं ।
कमठ्ठ पिट्ठि पिट्ठरं[1], प्रसल्लि[2] भार भिच्छरं ।
सापहंस मंगए, समाधि आदि [illegible]जग्गए ।
अपूरबं ति बंधयो, जटालु[3] कालु भग्गयो ॥२६॥
नरिंद पाइ संगसा, भ्रमांत आधि संगहा ।
...न जोगिान पुरे, सु अप्पु विप्फुरे अरे ।
.................................॥२७॥

छंद [अडिल्ल]

पठ्ठिया[4] राइ पंग सु हीसं । भषै दुर्वा[5] नहि नैन दीसं ।
निवष्टं[6] दे तुच्छ रोमं सीसं । ऊपरे फौज पृथ्वीराज रीसं ॥२८॥

छंद रसावल।[7]

कोप[8] पल्लब भषी, मेच्छ सब्बं भष्षी, रोस साहं नषी, वीर बाहु[9] पषी ।
संध सावंधषी, टक[10] अट्टारषी, षंची बिब्भारषी, लोह नाराज षी[11] ॥२६॥
प्रान जापा लषी,[15] कूल चाहंचषी, हिब्बि बाहं नषी, धर्म साहं मुषी[13] ।
काल तेना लषी, पारसी पालषी, जंग[14] पार ठुषी, स्वामिता वित्तषी ॥३०॥
ढिल्ली डाहं[15] भषी, साठि हज्जार षी, पवंगं[13] पारषी ....॥३१॥

कवित्त

बग्घेलौ वर सिंघ[17] राव, केहरि कट्टरि ।
कालिंजर कोलिया[18] राइ, बंधौ वर जोरि ।
रन[19] रावण तल्लार बाग़, कड्ढौ मुष जंप्पौ ।

---

1 BK2 निट्ठरं, पिट्ठिरं । 2 BK3 प्रसल्ले । 3 BK1 जप्तलु काल । 4 BK3 पठिया ।
5 हुई दुवी नहि, BK3 दुवी नहि । 6 BK2 निचष्टं । 7 BK3 रसावलु ।
8 BK2 BK3 कोल पल भष मेच्छ सब मषी । 9 BK1 बाहं । 10 BK2 टंक ।
11 BK2 BK3 की । 12 BK2 लकी । 13 BK3 वांह । 14 BK3 यंग
15 BK1 हाहं । 16 BK2 पचगं । 17 BK2 BK3 सिंघु । 18 BK1 केलिया ।
19 BK1 रण ।

रा विज पाल नरिंद, काम कारन द्वै कंप्पौ ।
गहहु चंपि चहुवांन कहा[1], मत्त सावंत कह ।
मो[2] सहत्थ सहस भारत्थ भर, सहस दिए कमधज्ज दह ।।३२।।

दोहा

सहस मान सह छत्रपति, सहस जुद्ध सरि[3] जुत्त ।
गहहु मत्त वारण[4] बली, सह सावंत समत्त ।।३३।।
मंत्र घात सक सूरिवा, विष उत्तरै फनिंद ।
तुम विनु जग्गु[5] न निब्बहै, तुम विन धाम नरिंद ।।३४।।
सूक कट्ठ कट्ठत नृपति. तात परच्यौ तुम काम ।
जब लगि[6] अंग न नंचिए, काम न होई तांम ।।३५।।
सो इन[7] काम रावण सुं सुनि, जिहिं तन उट्ठिय आप ।
यह अलब्भ लोक त कहहि, जिहिं सर मारिय साप ।।३६।

कवित्त

तब रावण उच्चरिय जग्गि, मंडत कुमंत किय[8] ।
जैति जग्गि आरंभि[9] प्रथम, चहुवांनै[10] बंधिय ।
यह अबि हठ तुम कहहु, कहहि अन दिट्ठौ दिट्ठौ ।
दो उन होहि प्रभु पंग सहित, पौंडी[11] गुड़ मिट्ठो ।
बंच्छहु विचार मंत्रिय मरन, चहुवांन गहु करि गहि संभरिय ।
जाइ कन्या वरइ जुग, अकित्ति प्रकट्टै[12] रहिय ।।३७।।

दोहा

आरंभ न जीय मरण, गर न अंगवै राइ ।
जग्य विगारचौ जुद्ध चढि, लिए[13] सु कन्या जाइ ।।३८।।

---

1 BK2 कह । 2 BK2 मो सत्थ भार भारत्थ भा सहस दिए कमधुज्ज दह । 3 BK2 संरि । 4 BK3 वारुण । 5 BK1 जर गुन निव्वहौं । 6 BK1 लग । 7 BK2 BK3 यिन । 8 BK3 कियं । 9 BK2 BK3 आरम्भ । 10 BK2 BK3 चहुवांन । 11 BK1 पूंडी । 12 BK1 प्रगठै । 13 BK3 लिये ।

दोहा

मुष जादों[1] बोलहु वयन, नगर कंध कुटवार।
सु विधि मीर संग्राम भर, तुम्ह[2] रहहु हटवान ॥३६॥
हट्ट नार कुटवार सुनि, करि सावंतनि जंग।
सवनि निरष्षत पंग दल, परि पंति दीप पतंग ॥४०॥

अडिल्ल

हय दल पय दल अग्ग सुडारे, नृपतिन छत्रन लभै न पारे।
सूर सावंत मज्झे[3] हजारे, मने चिंटिया कोट मध्ये मनारे ॥४१॥

छंद भुजंगी

मोरिया[4] राज पृथि राज बग्गं, उट्ठिया[5] रोस आयास लग्गं।
पत्थ भारत्थ भरि होम जग्गं, षोलिया[6] षग्ग षंडं अनज्ज लग्गं ॥४२॥
उट्ठियं सूर सावंत तज्जे, छोहियं सिंघ साहत्थ लज्जे[7]।
बाज नै दीरए पग्गु[8] बज्जै, मनौ आगमे मेघ आषाढ़ गज्जै ॥४३॥
मिले जोध वत्थे न लग्गे करारे, उडै[9] गैंन लग्गे[10] समं सार झारे।
कटै कंध काबंध संधं[11] निनारे, परै जंगरं[12] गम्म नौ मत्त वारे ॥४४॥
झरै संभरे राइ सौं सार सारे, जुरे मल्ल हल्लैं नहीं ज्यौं अषारे।
जवै दारि हल्लै नहीं कोष चारे, तथैं[13] कोपिया कान्ह मैमंत मारे ॥४५॥
जहा अप्पियं मार मध्ये दुधारे[14], कटै कुंभ रूपंत नीसांन भारे।
गए सुंड दंतो न दंतौ उपारे, मनौ कंदरा कंद भिल्ली उषारे ॥४६॥
परे पंडुरे वेस ते मार सासं, मनां जोगिनी यंत्र लागंत दासं।
बहै वान कम्मान[15] दीसै न भानं, भवै गिद्धिनी गिद्ध पावै न जानं ॥४७॥
रुलै वैत अंतं चरंतं करारं, घुलै कंठ संठी न लग्गै[16] उभारं।

BK2 प्रजाद, BK3 जाद। 2 BK2 BK3 तुम। 3 BK2 BK3 मझे। 4 BK2 मोरियं, BK3 मोरिय। 5 BK2 उट्ठियं, BK3 उट्ठिय। 6 BK2 BK3 षोलिय। 7 BK3 लज्जो। 8 BK2 पंगु। 9 BK1 उभै। 10 BK3 लगे। 11 BK1 संधै। 12 BK1 जंपरं। 13 BK तेथे। 14 BK2 दुवारै। 15 BK2 BK3 ४मान। 16 BK2 लग्गी।

सरं श्रौन रंगं पलं पारि पंकं, बजै वंसनं संस बैसे करंकं ।।४८।।
द्रुमं हल्लि ढालंति हालं सुदेसं[1], गए हंस नासं लगे हंस वेसं ।
परै पानि जंघं धरंगं निन्यारे, मनौ मच्छ कच्छं नरं[2] नीर भारे ।।४६।।
सिरं सा सरोजं कचं सा सि वालं, गहै अंत गिद्धं सुसुभे मरालं ।
टरं रंभ रातं भरंतं विचारे, कृतं[3] स्याम सेतं कृतं नील पीरे ।।५०।।
धरे अंग अन्नं[4] सुरंभं सुभट्टं, जितै स्वामि कज्जै समप्पै[5] सुथट्टं ।
तहां काल जम जाल हत्था समानं, भयौ इत्तनै जुद्ध अस्तं सुभानं ।।५१।।

दोहा

भान विहान[6] जु दिष्ष पिय, वर सुर षिराकु थीर ।
तनह धरौ कि संभरौ, तुम रष्षण रजु मूर ।।५८।।

गाथा

निस गत बंछहि भाणं, चक्की[7] चक्काइ सूर सार घणी ।
विधु संजोग वियोगो[8], कुमुदिनी तु कातरा णारा ।।५३।।

दोहा

उभय सहस हय गय परित, निसि आगत भांन ।
सात सहस असि मीर हणि, थल विंधौ चहुवांन ।।५३।।

कवित्त

बाघराउ[9] बध्धैल[10] हेल्ल, मुगलन्नि हलक्किय ।
मेघ विसिष[11] बिज्जलिय, जाव[12] जंबूर झलक्किय ।
वेगयंद वारुनि बहंत, वार त्तन वारिय ।
मीर पुब्बि आरुट्ठि[13] सेन, गहि गहि अष्षारिय ।
आवत्त मान सावंत रन, जमर मेच्छ सम्मर भिल्लिय[14] ।
अष्टमी चष्ष एकह सुग्रह, प्रथम रोस दुंदु[15] जु मिलिय ।।५५।।

1 BK2 सुदेसं । 2 BK3 तर । 3 BK2 BK3 कतं । 4 BK2 BK3 अनं । 5 BK3 समपै । 6 BK2 BK3 विहन । 7 BK3 चक्क चक्काइ । 8 BK2 BK3 वियोगौ । 9 BK2 BK3 राव । 10 BK2 BK3 बघेल । 11 BK2 BK3 विसिघ । 12 BK3 जाबं जंबूरं । 13 BK1 आरुद्ध । 14 BK1 भिलिय । 15 BK1 दुंदुभ मिलिय ।

प्रथम सार सावंत सही, मीरनि इति मित्तिय।
वाघ राउ[1] बग्घेल हेल, इन उत्तर चित्तिय।
उभय हुमकि राज काज, लाज किन्नो[2] प्रुथिराजह[3]।
एकठ[4] मूंडि अषारि इक्क, मिंडिग[5] पग पाजह।
पुत्तार उरह कढ्ढार कर परिग, षेत रन जित्तिय।
यह जुद्ध मुद्ध चहुवांन सौं, प्रथम केलि कमधुज्ज[6] किय ॥५६॥

परचौ[7] गंग गहिलोत[8] नाम, गोविंद राज वर।
दाहिम्मो नर सिंह परच्यौ, नागौर जासु घर।
परचौ पुन्न पामार चंदु पिष्यौ मारंतौ।
सोलंकी सारंगु परचौ, असि वर झारंतौ।
कूरम्म राव पज्जून सौ, बंधौ तौनि ति कट्टिया।
कनवज्ज रारि पहिले दिवस, सौ मैं सात निघट्टिया ॥५७॥

पज्जूनह उप्परै राज, पृथिराज संपत्तौ[9]।
गरुव राव गोविंद धाइ, अघाइ ससंतौ[10]।
चाइ चित्ति चहुवांन कान्ह, किनौ कर उभ्भौ[11]।
रा रंडा ढिल्लरी[12] आज, लग्गी मन दुभ्भौ।
धाराधि नाथ धारंग घर, जैत जित्ति किन्नौ सदन[13]।
चावंड इक्क रष्षौ सुग्रह[14] राषन[15] छिति छत्री हदन ॥५८॥

अद्ध रैनि चंदनी[16] अद्धि, अग्गे अंधियारी।
भोग भरनि अष्टमी, सुक्रवारे[17] सुदि रारी।
च्यारी रात[18] जंगली रह्यौ, तहं नींद न सूत्तौ[19]।

---

1 BK2 BK3 राव। 2 BK1 किन्नौ। 3 BK3 प्रिथिराजह। 4 BK2 एकत मुंडि। 5 BK1 मिटि गय गप्पाजह। 6 BK1 कमधज्ज। 7 BK2 BK3 पत्यो गंघ। 8 BK3 गुहिलौ सनाम। 9 BK2 BK3 संपत्तउ। 10 BK2 BK3 संसतउ। 11 BK2 BK3 उभौ। 12 BK1 डिल्लरी। 13 BK2 रुदन। 14 BK2 BK3 सुगृह। 15 BK1 BK3 राषत। 16 BK2 BK3 चंदिनी। 17 BK1 सुक्रवारै। 18 BK2 BK3 जाम। 19 BK2 BK3 सुत्या।

थल विंद्यौ[1] कमधुज्ज रह्यौ, कंदल[2] आहूतौ।
दस कोस अंत कनवज्ज तैं, कोस कोस अंतर अनी।
बाराह रोह जिमि पार धी, इमि सध्यौ[3] संभरि धनी ॥५६॥

रासा

षरह चारु चै इंदुज, इंदीवर मुदय।
नव विरही नौ नेह, नवज्जल नौ रुदय।
भीषम सुभ समीपन, मंडित मन्न तन।
मिलि मृदु मंगल कीन, मनोरथ सब्बु[4] मन।
धुरि निसांन गत भांन, कलक्कल[5] मुद्दयौ।
तहं सावंत भरि दच्छिन कुं, धर धुक्कियौ[6]।
सविष पंग दल व्रिष्टि, निहारयउ।
अचल[7] मीस संजोगि रैन, मिस झारयउ[8] ॥६१॥

अनुष्टुप

जतो नलिनी ततो नीरं, जतो नीरं ततो नलिनी।
तिजंत ग्रेह ग्रेहनी, जत्र गृहिनी तत्र गृहं ॥६२॥

दोहा

आजु अवन्नी चंद हुव, तार सुमारु भिन्न।
पलचर[9] रुधिचर हंस चर, करी रवन्नी रौनि ॥६३॥

कवित्त

रानीडर[10] राजैत राइ, भोहा मिलि चिंती।
सो अरिष्ट उपज्यो[11] मरण, अपकित्ति सुनंती।
छुछुंदरी[12] मिलि सप्प गहन, उगहन कुलभह।

---

1 BK2 BK3 विंटे। 2 BK2 BK3 आहुधा। 3 BK2 BK3 रुक्कयौ। 4 BK2 BK3 सब्ब। 5 BK2 BK3 कलकल मुद्दयउ। 6 BK2 BK3 धुक्कियउ। 7 BK3 अचंमी। 8 BK1 झारियो। 9 BK2 चर रुधिवर। 10 BK2 डर राइजैत। 11 BK1 उपज्यौ। 12 BK1 छुछुंदरि।

मारि पुद्यौ कैंवास, मनु लग्यौ[1] जाम झह[2] ।
नृप कियौ सु भय सौ भट संग[3], मेष राज राजन कियौ ।
पर पंच पंच बद्धौ[4] सुपरि, जुग्गिनि पुर जाइ सु जियौ ।।६४।।

दोहा

कांन लग्गि कहि कान्ह सौ, कौतिग राजन वत्त ।
निसा अनुग्गह करौ न कछु, दौत[5] पाजे यह छत्त ।।६५।।

कवित्त

कहै चंद तुम मुद्ध सुद्ध, राजन जिहि संगह ।
उद्ध मरन ते वरिय काय, भंगह[6] अभंगह ।
कहिय राज पज्गून सोइ, वित्तकु अब वित्तिय ।
असुर[7] बुद्धि आसरिंय भट्ट, मंडन किय कित्तिय ।
गारुरी गहौ अमृत मती, विषम[8] जलाजल उत्तरै ।
औघट[9] नाव चंपै नृपति, देव वट्ट घट्टहं करै ।।६७।।
अनि अग्गै हठ परहि चोट, विहर त्तन घालहि[10] ।
पारै[11] लेहि पर गहि दाह, दुवन ति उर साल हि ।
पहु डोलै अच्छै परंत, पर अंचल ही कर ।
अंत असि तुसि रस हाइ[12] भाइ, भल पनह लेहि[13] भर ।
वरदाइ चंद इम उच्चरे, धनि छत्री जिन धर्म मति ।
इक्क दिन स्वामि संकट परै, ततौ[14] राव रावत्त पति ।।६८।।
पंचति रष्षहिं पास पंच, धरनि धर रष्षहिं ।
पंच पुच्छि अनुसार हि, पंच तत्तहिं ले लष्षहिं ।
पंच विहत वारिय हि, पंच आदर आसन इति[15] ।

---

1 BK2 BK3 लग्गौ । 2 BK1 ज्झूह । 3 BK3 संगन वृषम राजन कियो । 4 BK2 BK3 वधौ । 5 BK2 परै यह छत्त । 6 BK1 भग्गह । 7 BK1 BK3 आसु सुद्धि । 8 BK1 विसम, BK2 विष विषम जल उत्तरै, BK3 विषम जल उत्तरै । 9 BK1 ऊघट । 10 BK1 वालिहि । 11 BK2 पैरे लेहि परि, BK3 पार लहि परि । 12 BK2 हहि । 13 BK2 लैहि भर । 14 BK2 तितौ । 15 BK1 इत ।

पंच पंच धरि तौ न करन, मंडिय वास न जिति।
चहुवांन राज[1] सोमेस सुत, इम गते गवट्टिय सुकिति।
अनुसरिय लाज राजन[2] अवनि, सुतौ राज राजन्न पति ॥६६॥

दोहा

राज विमुष अवलोकि मुष, धुनि सावंत सुनंत।
बंक दीह बंछै न को, सुर नर नाग गनंत ॥७०॥

मुडिल्ल

पार सयं पसरी, रस कुंडली[3]।
ज्ञान कि देव कि, सेव अषंडली[4]।
हलि हिं ताल रही, चहुँ कुट्टिय !
दीहु भयो[5] निस की, दिस मुंदीय ॥७१॥

कवित्त

विनहि भान पयानं इंद, कमधुज्ज हुव।
सहि न बोल सांषुलै विरद, पग[6] पग्ग वज्ज भुव।
अवर सुने सावंत सकल, लोक कढयौ भारान्यौ।
विन ही अरुण उदोत[7] अरुण[8], उग्यो[9] धारान्यौ।
पहु बिन पुकार पहु उप्परिग, सपुह पहक फट्टिय कहन।
उद्दिग उदोत असि वर किरनि, मिलिव चक्क चक्किय गृहन ॥७२॥
असि वर झरउ झपटिय[10], चक्क चक्किय आनंद मन।
कमुद मुदिग कमधुज्ज[11] तौन, संपुटिग सघन रन।
पंचजन्य संपूरि सकल[12], धनी धर धारयं[13]।
पशु किम किम मृष पंच तिमिर[14], किरननि निव्बरयं।
उडु गण अचंभ कौतूहलहं, अनुत स्वामि किन्नौ महर।

---

1 BK1 सन। 2 BK1 राजत। 3 BK2 BK3 कुंडल। 4 BK2 BK3 अषंडलि। 5 BK1 भयौ। 6 BK3 पग्ग पग्ग, BK2 पागार। 7 BK2 BK3 उदौत। 8 BK2 BK3 अरुन। 9 BK1 उग्यौ। 10 BK2 BK3 घतिय। 11 BK1 कमधज्ज। 12 BK1 BK3 संकडल। 13 BK2 BK3 धरयं। 14 BK2 BK3 तिमर।

बुंदि[1] गय गार सिर उप्परह, समर सार छुट्टिग पहर ॥७३॥
पहर एक असि एक एक, एकहि[2] निबरत्त[3] धर ।
धर धर धरनि निहारि नाग, ब्बुक्किय्यं कि नाग सिर ।
हल हिलि[4] मिलि रट्ठ[5] वर, रीठि लग्गो रव[6] वज्जह ।
कर कर्कस करि केलि धार, छुट्ट[7] हि लगि धारह ।
दुहु दल पगार भिरि भिरि, भुवंग[8] भोगि पहु फत्ति तन ।
पहु फटिग घटिग सर्वरि समर, अमर मोह जग्यौ सघन ॥७४॥

इति श्री कविचंद विरचिते पृथ्वीराज रासे अष्टमी शुक्रे प्रथम दिवस जुद्ध वर्णनो नाम दशमः षंडः ॥

1 BK3 वूंदि गय । 2 BK2 एंकहं । 3 BK2 BK3 निंबरित्त । 4 BK2 हिलि । 5 BK2 BK3 रट्ठि । 6 BK2 वज्जा रह । 7 BK2 BK3 दुट्ठहि । 8 BK3 भवंगं भोगि गन नापहु फटिग घटिग सर्वरि ।

एकादश षराट

कवित्त

दिन उग्गत भग जुद्ध, जूह चंपै पावंतनि ।
भर[1] उप्पर भर परहि धरह, उप्पर धावंतनि ।
दल दंतिय विच्छुरहि हय, जु हय हय करनक्कहि ।
अच्छरि दरि हर हार धार, धरनिय झननंकहि ।
जय जय सु सद्द जग्गनि कहहि[2], कनवज्जिय ढिल्लिय[3] नयर ।
सावंत पंच मित्तहं परित, भंति भंति भय विप्पहर ॥१॥

गाथा

विपहर पहट्ट परियं[5] हय गय, नर भार सार इत्थेनं ।
रह रोस पंग भरियं, उब्बरियं चीर बींबेण ॥२॥

कवित्त

परचौ माल चंदेल जेनि, धवलिय धर गुज्जर ।
परचौ भांन भट्टी भुवाल, थट्टा धर अग्गर ।
परचौ सूर सांवत[7] राजै, निवानौ मुहु मुच्छहं ।
हसै तिनहिं पांवार विरद, वानावली[8] अच्छहं[9] ।
निर्वान वीर धावर धनी, गन्यौत[10] इक्क[11] नरिंद दल ।
ए परत पंच भुय जग पहर, अगनित भंति अभंग षल ॥३॥
चढ्यउ सूर मध्यान पंग, परतंग गहन किय ।
षभरि षेह षह मिलिय श्रवन, इक्क सुनि लिय[12] ।
तब नरिंद जंगली कोह कढ्यो, सु बंक असि ।
अरि धम्मिल धुंधरिग, हुअ रन मद्धि[13] तियं ससि ।

---

1 BK3 में यह समस्त चरण दो बार लिखा है । 2 BK1 BK3 कजहि । 3 BK3 ढिलिय । 4 BK3 मित्तह । 5 BK1 परिथं । 6 BK2 उधरियं, BK3 उब्बरियं । 7 BK2 BK3 साव । 8 BK3 वागावलि । 9 BK2 BK3 अच्छेइ । 10 BK2 BK3 गन्योत्त । 11 BK2 BK3 इक्कु । 12 BK1 निय । 13 BK2 मनहु वन मद्धिद्धि तिय ससि ।

अरु[1] अरुण रत्त कौतुक कलह, भयो नभ वहं भिरंत भर ।
सावंत त्रिघट तेरह परिग, नृप तन लग्गिग पंच[2] सर ॥४॥

दोहा

द्वै सर अज्ज रह द्वै नृपु, इक्कस इक्क संजोगि[3] ।
जुरि[4] अच्छिनि रत्ति करि, अब जंगल वै भोग ॥५॥
रैन राम रावत्त रान, रन रंग रंग रस ।
उठत एक धावंत पंच[5], बहंत वीर दस ।
वलि[6] वारन मोहिल मइंद, मारू मुह मद्धौ ।
अरुण अलंकृत पंग, पारस दल षद्धौ ।
नारेन[7] वीर बंधव सहित, दिव दिवान गों देवरौ ।
कलहंत जीव सावंत परि रह्यो, स्वामि सिर सेहड़ौ[8] ॥६॥

छंद (मोतीय दाम)

[दु[9] अग्ग रहं तीस लहू बहू पाइ । गुरु दह रस्स तुरंग तुराइ ।
जगन्न विसाय पयंपै[10] जाम । धरै[12] तिहि छंद[13] सुमुत्तिय दाम ।]
रजो रवि रत्थ रही सिर व्योम । धमंकिय बज्ज[14] सरालिय गोम ।
जग्यो रस तामस पंगह पूर । गह ग्गह राज चवै सब सूर ॥७॥
नवम्मिय कृत्तिक सूर सुवन्न । घटी दह सत्त राउ[15] सब दीन्न ।
नयां[16] सिर आइ सडुंगह देव । गहौ पहु जंगल सूर समेव ॥८॥
भुवन्न हरी वसु जंगहं अग्ग । कढ़े कर नट्टिय सिंह सुवग्ग ।
तुरंग मदंति पयद्दल[17] सक्क । महा सजि अंगह मद्द सरक्क ॥९॥
धमक्किय धोम निसांन निनद्द । चमक्किय कातर सिंधु[18] रसद्द ।

---

1 BK1 अनि असरण । 2 BK1 पद्द सर । 3 BK2 संयोगि, BK3 स्ययोगि । 4 BK3 ज्जगरे अस्थनि, BK2 जुरि धरि अच्छिनि । 5 BK1 पब्ब पाहंत वार दस । 6 BK1 विश्व तारन माहिल्ल मद्द दल संमुह मथौ, BK3 महिल मद्द द जारु रत्त मह मथौ । 7 BK3 नारन वार । 8 BK2 सेहरौ । 9 BK2 BK3 अग्गर तीय । 10 BK2 पय पय, BK3 पय जास । 12 BK2 चवै, BK3 थवै । 13 BK2 BK3 चंद । 14 BK1 हज्ज । 15 BK2 गतः । 16 BK2 नयो । 17 BK3 पयद्दल । 18 BK3 संधु ।

घमंडित सिंधु रसं षुर सेन। ग्रम्मह बंचि क्रम्यौ[1] सब सेन ॥१०॥
उलट्टिग सिंधु सपत्तिग अप्प[2]। उरत्थिय सज्जन अंत कलप्प।
मुरक्कि वग्ग सुजंगल राइ। प्रगट्टित कोप धुवंधर धाइ ॥११॥
त्रह[3] त्रह तूंबर द्वै रन तूर। सूरव्वर[4] संष सजे घन सूर।
मिले पहु जंगल सेन सुपंग। मनौ मिलि सागर संगह गंग[5] ॥१२॥
बढ़्यौ रह तामस नंषिय[6] षग्ग। मनौं रहि हारि जुवारि अलग्ग।
झर झर वज्जिय धार निधार। टूटे षग कोर मनौं निसि तार ॥१३॥
लगि सुषि[7] सांगि गयंदनि हेरि। मनौं गज राज बजावत भेरि।
हय दल पैदल दंतिय एक। लए कर आउध[8] सावध केक ॥१४॥
झर झझर सेन झनंकिय सार। धर प्पर लुत्थिय[9] ढरे घन धार।
कढ़ी चहुवांन कमांन सुबंक। मनौ षह सेन सुग्रीव[10] मयंक ॥१५॥
करी अरि अप्पु विडारत तंज[11]। मनौ वन जारन चीय धनंज।
ढहे गज ढाल सुझंडनि[12] सार। मनौं भर भार सुदुट्टहिं ढार ॥१६॥
ढह्यौ घन धाइ सु डुंगह[13] देव। भुवन्नह[14] राउ पर्यौ धर वेव।
भरक्किय सेन सु भग्गिय पंग। परे तह तीनि सहस्रनि दंग ॥१७॥

कवित्त

घरियर स्सर विसेष रह्यौ,[15] कलहंत मत्त भर।
बज्र घात सावंत अंग्गि[16], लग्गिय सु षग्ग झर।
हल हलंत दल पंग दंग, चहुवांन जांन भय।
तब आयो राइ[17] सल्ल विरद, भैरो सुभूत रय।
हाकंत[18] हक्क उच्चरिग अतुल, पान आजांन भुव।
कमधुज्ज लग्गि कमधुज्ज छल[19], बीर धार विज पाल भुव ॥१८॥

---

1 BK3 क्रम्यो। 2 BK3 आप। 3 BK3 त्रह तुह। 4 BK1 सुरम्तर। 5 BK3 गंधं। 6 BK2 नंगिय। 7 BK2 BK3 सुष। 8 BK1 आवध। 9 BK2 लुत्थि। 10 BK2 BK3 सुवीय। 11 BK2 BK3 नंज। 12 BK1 सुकट्ढनि सार। 13 BK1 सुद्दुगह। 14 BK1 सुवन्नह। 15 BK2 परयो। 16 BK1 अग्गि। 17 BK2 BK3 रय। 18 BK2 हाकंत हंत हक। 19 BK1 BK3 जल।

दोहा

सहस वीस भर अप्पु वर, एक एक रषि रिंत्र।
सभर जुद्ध सावंत सम, मनु सम लग्गिग सिंघ ॥१६॥

छंद पद्धड़ी

तहं लगे लग्ग करि, सिंघ धाइ। चहुवांन सूर, कमधुज्ज राइ।
हाकंत मंत, झारंत तेक। हल संत रत्न, हलि चलत एक ॥२०॥
गयनेह[1] सूर रूंधंति भौन[2]। प्रसरी मरीचि, नहि मद्धि तौन[3]।
संचरै काम, सद्धै न व्योम। धुंधरिग धाम, दह दिग्ग धौम ॥२१॥
पावै न मद्धि, गिद्धिय पसारु। भिदंति पंषि, षह अद्ध चारु।
देषेत सूर, कौतिग्ग सोम। नारद्द, अध निरषि व्योम ॥२२॥
षेचरहं सुद्ध, सुभ्भ्फे[4] न कंक। घन षरह षेह, पूरित पलंक।
अच्छरि[5] रत्थ, वद्धंति सीस। पावन[6] रन, इच्छंति सी[7] ईस ॥२३॥
किरतांत[8] काल, सहसल्ल[9] रूप। गहहु चवंत, चहुवांन भूप।
भयति सिर धुंध, सुभ्भ्फै[10] न भांन। प्रकटै न आप[11], टृग अप्प पांन[12] ।२४॥
दिष्षहि[13] न सूर, सावंत राज। संग्रह्यौ[14] सव्व दल, सकल साज।
रुध्यो सुकन्ह, सामंत हद्द। हौं जैत राइ, जामानि जद्द ॥२५॥
नीडरह सिंघ, सुनि अत्तताइ[15]। सुभ्भ्फै[16] न नैन, सिंधू सराइ।
बंच्यौ सु सूर, चौरंगि नंद। लष्षौ[17] सु राज, अरि लष्ष वृंद ॥२६॥
बंच्यौ सुकन्ह, धुव गैन धारि। गय पंति[18] सार[19], बंधी जु पारि।
क्रम[20] कै सु श्रवण, सुनि अत्तताइ। लोहा सुधीर, धरितो न धाइ ॥२७॥
हलकंति सत्थ, सामंत ढार। मनु क्रम[21] क्रमंति, हरि दंत भार।

---

1 BK1 नैह। 2 BK3 भोन। 3 BK3 तोन। 4 BK2 BK3 सुभ्फै। 5 BK1 BK3 अत्तरिय। 6 BK1 पावन्न रन्न। 7 BK2 BK3 "सी" छूट गया। 8 BK2 BK3 कृतांत। 9 BK2 BK3 सइ। 10 BK2 BK3 सूभ्फै। 11 BK2 अप्प। 12 BK3 पानो। 13 BK1 दिष्षाय नाह, BK3 दिष्षाय नाहम। 14 BK3 तं ग्रह्यौ। 15 BK3 जाइ। 16 BK3 सुभ्फै। 17 BK2 BK3 लष्षो। 18 BK1 पत्ति, BK3 पति। 19 BK2 दार, BK3 सर। 20 BK2 क्रम्यौ सु। 21 BK2 BK3 "क्रम" छूट गया।

विहथंति कोपि, बाहत न[1] कौन। भिंदंति[2] सिंघ, उड्डंति[3] श्रौन ॥२८॥
प्रकटंति झाक पावक[4] धोम। किलकंति घुंटी, सट्ठी सव्योम।
धमकंति नागधर, असि उसंध। कदकंति सेष, कूरम्म कंध ॥२६॥
धर टुट्टि धरनि, पल पल निषंक। तन रवन संथि, बंभा निसंक।
गय ढार सार, मुष मत्त भार। प्रकटंति मद्धि, दुहुं दल पगार ॥३०॥
कंधंति पार, पंगुरहं सन। निरषंत स्वामी, सावंत नैन।
.... ॥३१॥

दोहा

संझ संपत्तिय नृपति रन, अरि पारस परिकोट।
रहे सूर सावंत जकि, दिषषहिं नृपतिन चोट[5] ॥३२॥

रासा

मित्त महोदधि मंझ, दिसंत गसंत तम।
पथिक वधू पथ, द्रष्ठि अहद्दि।
चंग जिम जुवन जुवत्ती, रत्ती सद्रष्ठि अपप्पनौ[6]।
जिमि सारस रस लुब्ध, जु मधुप मधुप[7] लौ ॥३३॥

दोहा

संझ संपत्ति[8] रत्त[9] भर, कलि सज्जे दल पंग।
चलिग सूर पहु पंति मिलि, जुद्ध भरनि किंय अंग ॥३४॥

कवित्त

कमधुज्जह राए सब्भ[10], विरद भौरौ[11] सुभूत गह।
करनट्टी कहि राज और[12], सारंग हत्थह[13]।
सुष गुंडी सुग्रीव राव, बघेल राज वर।
मोरी काम मुकुंदपत्ति, मेहासु पट्ट धर।

---

1 BK2 BK3 "न" छूट गया। 2 BK2 भिद्दंति। 3 BK3 उडंति। 4 BK3 पावक। 5 BK3 चौट। 6 BK2 अपप्पनउ। 7 BK2 मधुप लउ। 8 BK2 संपत्तिय। 9 BK3 परत्त। 10 BK2 सल्ल, BK3 सभ्र। 11 BK2 भैंरै, BK3 भौंरै। 12 BK1 ऊर। 13 BK1 हत्थ।

[दुन्निन[1] गु कलहुंति झमकंतिय पतंति।
रयन छंद चवंति सु, नर नाम हुंति।]

नृप कन्ह राव मरहट्ठ वै, हरिय सिंघ हत्थ नेरि घर।
पर पाल राव नृप माल पति, राइ सल्ल क्रमि[2] सत्थ भर ।।३४।।

छंद [हनुफाल]

नवमि सुवन सूर, वजिगं विषम तूर।
गहन गहन पंग, वधिग[3] सविध जंग ।।३५।।
तरनि सरनि सिंधु, धरनि तिमिर धुंध।
सचरि सगुन वांन, झलकि सु इम जांन ।।३६।।
सघन जिगन जूप, प्रकटि पुहमि रूप।
सजित सु चहुवांन, करषि कर कमांन ।।३७।।
रंजित[4] राम निसंक, मनहु लैन लंक।
छुटिग सगुण[5] कन्न, वहित तुरग तन्न ।।३८।।
पषर सबर सार, प्रहसि उरनि पार।
धर धर लगि धार, धरनि रुधिर ढार[6] ।।३९।।
रांय सल लषि राज, क्रमि ग्रह गह गाज।
लषि सम रज धाइ, अय लगि अत्तताइ ।।४०।।
हय गय संगि भार, नषि जु पुर परार।
उट्ठिग क्रमि सु[7] सूर, मंड सम सिंघ सूर[8] ।।४१।।
राय[9] सल पर पिष्षि, क्रमि गहै[10] रज रष्षि।
मिलि कन्ह अतताइ, रषि रन रुकि राइ ।।४२।।

---

1 कोष्टगत दोनों चरण प्रक्षिप्त हैं और प्रति BK के दांए हाशिए पर लिखित पाए गए, BK2 BK3 ये दोनों चरण नहीं मिले। 2 BK2 BK3 क्रमिलै सत्थ भर। 3 BK2 BK3 बधिग सविग। 4 BK1 रजत। 5 BK2 BK3 सगुन्न। 6 BK2 ढारा। 7 BK2 BK3 सु। 8 BK2 रूर, BK3 रूप। 9 BK2 BK3 रय। 10 BK2 BK3 गहि।

परि दह रन धाइ[1], सघन घट[2] अघाइ।
परि[3] जन भुव पिष्षि, भजि सनय सलष्षि ॥४३॥

दोहा

भजै सेन विजय[4] पाल नृप, लषि भय तामस राइ।
सहस एक भर संष धर, कहगि सुछंडि रिसाइ ॥४४॥
बानै संष विरुद्ध[5] वर, वैरागी जुध धीर।
सूर[6] सावंत नृप नाइ सिर, भर पहु भंजन भीर ॥४५॥

कवित्तु

पवंग मोर पष्ष रह मोर[7], ग्रीव ति गज गहिय।
मोर टाप टट्टरिय मोर, मंडित सन्नाहिय।
मोर माल उर संष संक, छंडिय भय भागिय[8]।
धार[9] तिच्छ अहरिय पंग, सेवहि वैरागिय।
तिहं डरनि डोरि घालै फिरै, तिनहि[10] राज रष्षत रहहि।
हल हलत सेन सावंत भय, मुक्कि मुक्कि अप्पनु कहहि ॥४६॥
नृप केहरि कट्ठेरि राइ, परताप पट्ट पह।
सिंधूरा राहप्प ओर, रण राव ठट्ठ[11] वह।
कट्ठिय आस सकाज पत्ति, गुंडि रन रत्तह।
पहु परवत पुंडीर हीर, सांषुला समच्चह।
अन्नेक सेन पति संष धर, सहस[12] एक विन मोह हत।
आग्या[13] सु पंग किलकंति क्रमि, अप्प अप्प मुख भुष्ष रत ॥४७॥
हय हय आयास[14] केकि, सज्जिय सुह संहर।

---

1 BK2 BK3 धाइ। 2 BK2 BK3 घय। 3 BK2 BK3 अनि। 4 BK2 BK3 विजेपाल। 5 BK2 BK3 विरद्द। 6 BK1 BK3 सर। 7 BK3 मोर यावति। 8 BK1 भग्गिय। 9 BK1 में यह समस्त चरण छूट गया। 10 BK1 विहित। 11 BK3 वद्द, BK1 वट्ट। 12 BK3 सह भए कविन मोहंता। 13 BK1 अप्पा, BK3 अया। 14 BK1 आकास।

कहुं धरिग कहुं परिग अरिग, थर रहिग सुहड भर।
अरराइ पति संष्षहं कियो[1], सिंभाइ अतत्ते।
मनहुं पात निर्घात पत्ति, सावंत सुरत्ते।
हम संत सेन उब्भय अभय, चाहुवांन कम धुज्ज कस।
उच्चरिग धीर आनंदु हुयौ[2], सम्भ धीर रत्ते सरस ॥४८॥

छंद [हनुफाल]

विमल सकल व्योम, रजित सिरन सोम।
प्रकटित[3] नृप सपंग, हलि झलि मिलि गंग ॥४९॥
सुरति सेन[4] सुलष्षि, निरषि परषि पष्षि।
विहसि दृग करूर, बलहरि विव नूर ॥५०॥
दल[5] सु समद दूप, अचवन अंषि[6] रूप।
हकि हकि संष धार, संग सु संभरि वार ॥५१॥
रजि सम सिंघ रूप, सूर किय संष भूप।
विरसि[7] उचित वग्ग, तहं सुचवति[8] रंग ॥५२॥
मिलिय उभय भार, बजित विषम सार,
धर धर लगि धार, भर तुर ढरि भार ॥५३॥
झनन[9] झनन झार[10], अवल मनु अधार।
हवकि हवकि संग, अनिल[11] अनगि अंग ॥५४॥
विहल करल कूप, क्रिषित कल सरूप।
वनित सष सावंत, अरिग सु[12] करि अंत ॥५५॥

---

1 BK3 किग्र। 2 BK2 BK3 हुई सभर रूक धीर रत्ते सरस। 3 BK2 BK3 प्रगटितम सपंग। 4 BK2 BK3 सयन। 5 BK1 दस ससमद। 6 BK2 अथि। 7 BK1 थेरसि। 8 BK2 BK3 सुचवठि। 9 BK2 झननंति। 10 BK3 झर। 11 BK2 BK3 आनि अनि लगि अंगि। 12 BK2 BK3 सुकर।

सुचि सरवंत साज[1], अपु अपु इछ[2] साज।
सुमिरि सुमिरि मंत, अयग सब सुनंत ॥५६॥
सकति सकुन धार, हक हक बजि तार।
न विन[3] वीर निषंग, थेई थेई थेई थंग ॥५७॥
घन[4] घनक्कति घंट, किल कित गुम गुंठ।
गिधिनि अंत गहेस, अंतर अकास देस ॥५८॥
सूल अंत मधि धार[5], अंत सु लग्गि[6] अतार[7]।
मनु वर बाल रंग, उडवत चारु चंग ॥५९॥
सु रचि जवर सार, अंधति उद्ध विहार।
फर फर फुरि[9] फेफ, परत पंषि दुरेंफ ॥६०॥
हंकति सिर बिकंध, नचित धर कबंध।
सकति अघय घोर, प्रजिर[10] जिघट घोर ॥६१॥
नचित रजित[11] ढाल, सचित[12] [सजित] सिरनि माल।
रसित[13] सर सभट्ट[24], अंबर जयति सद्द ॥६२॥

कवित्तु

दस सत वज्जत संष सघन, नीसान धुनिक्किय।
पावस रितु आगमन सिषरि, सिषि जांनि निरत्तिय।
विनहि अमित पौरषहं[15] सत्त, सामंत वियप्पिय।
नीडर जैत नरिंद स्वामि, सिंगिनि गर थप्पिय[16]।
हहंकारि भूप भो हायु भर, गहि अकास नंषिय सहस।
उड मंडल उडत निरष्षियो, मनहु बाज पंषी सुभय ॥६३॥

---

1 BK2 BK3 सज़। 2 BK2 BK3 इष्ट। 3 BK2 चित। 4 BK2 BK3 घनन एकति घंट। 5 BK2 BK3 धर। 6 BK2 सुलगी। 7 BK2 BK3 अंतर। 8 BK2 BK3 उध। 9 BK1 फरि। 10 BK2 BK3 वजिर। 11 BK2 BK3 रजिज। 12 BK1 सवित। 13 BK2 रमित। 14 BK2 BK3 सभद्द। 15 BK2 BK3 पौरिषह। 16 BK2 BK3 थपिय।

तब केहरि कट्ठेरि राज, सिंगिनि गर घत्तिय।
वरून पासि निय नंद, लोक पालहं पति पत्तिय।
हसि गहक्कि हक्कारि पंग पुत्तिय जान घन।
तात अग्ग संचरिय[1] राज, राजनह[2] आन घन।
चहुवांन रत्थि सत्थहं चलि, सुवस बंधि कमधुज्ज वर।
षंचित अलापि भर कन्ह दिट्ठि, हर हर हर कहि धर न ढरहिं ।।६४।।

दोहा

गुन कट्टनि रवनि सुवर, दसनह पंगु कुंवारि।
असि वर झर पृथीराज हनि, सिर तु हत्थ निरवारि ।।६५।।

छंद त्रोटक

निरवारि सुकट्ठिय कट्ट तनं। धरि[3] टारि धरद्धर भार घनं।
झरलं झर लग्गिय झार भरं। कटि मंडल षंड विहंड[4] ढरं ।।६६।।
लगि हंकि सुहंकि सुधीर सुवं। कढ़ि हंकि करी मुर धारि धुवं !
हए असि खंड सुमुंड पतं। मनौं मुष[6] कुट्टक वारि कटं[7] ।।६७।।
क्रमै वर केहरि तुंगल चंपि। गहै कर पांव[8] उडंति लडंपि।
धर्र सम जंगल पुच्छ सरोह। सनंतष मंडल उज्जल सोह ।।६८।।
फिरक्कत आइ धर प्पर धुंक। किलक्कति[9] चष्ष ष लग्गिय[10] कुंक।
विभत्थ[11] रसं रस सच्चिय मैन। हयग्गय लुत्थि नरप्पर सैन ।।६९।।
धरप्पर संष धुर स्सय सत्त। मुरक्किय सेन सु पंगुर पत्त।
मनौं भगि[12] धूर अधूर नरिंद। मुदंति मरीचि अत्थि गाय चंद ।।७०।।

कवित्त

निसि नौमि गत चंद, हक्क बज्जी चाव दिसि[13]।
भिरि[14] अभंग सावंत वीर, वरषंत मंत्र आंस।

---

1 BK2 BK3 संवरिय। 2 BK2 राजन। 3 BK2 BK3 धर। 4 BK1 विषंड। 6 BK2 BK3 सुष कुट्टिक। 7 BK2 कठं। 8 BK1 "पांव" छूट गया। 9 BK1 कलिष्षत, BK3 कलिक्कति। 10 BK1 षलग्गित। 11 BK1 BK3 विभत्त। 12 BK1 संग, BK3 सांगि। 13 BK2 द्दिसि। 14 BK3 सिभिरि।

जुद्ध जुद्ध[1] आवद्ध इष्ट, आरन्न[2] सत्ति वर।
इक्क जीव दस घटित दसत, ठिल्लै[3] सहस्स भर।
दिष्यो न देव दानव भिरत, सुहर रत्त विपियंति[4] छल।
सावंत सूर सोरह परिग, गन्यौ न पंग अभंग दल ॥७१॥

छंद [भ्रमरावली]

भई रारि[5] दुहुं कंक, अंकह[6] प्रमानं। परे सूर सोरह, तिनै नाम आनं।
परयौ मंडली राइ, माल्हन्न हंसो। जिनै हक्किया पंगरा, सेन गंसो ॥७२॥
परयौ जावलौ[7] जाल्ह, सावंत भारौ। जिनै पारियौ पंग, षंवार सारौ।
परयौ वागरी वाग, बाहे दुहत्था। भिरे पंग भग्गे, भरे हत्थ वथ्था ॥७३॥
परयौ वीर जद्दौ[8], वलीराव राना। जिनै नंषिया नैन, गैदंत राना।
परयौ सत्त सावंत, सारंग गाजी। दुहुं सत्थ भष्यौ[9], भलौ हत्थ मांझी[10] ॥७४॥
परयौ पाघरो राउ, परिहार राना! पुलै सैल सालै, पुलै पंग वाना।
जबै उप्पटै पंग, आवद्ध नीरं। तहां सांषुला सीह, भुज पारि भीरं।
परयौ सिंघली सिंघ, सादूल भोरी। लगी लोह अग्गी, जगी जांनि होरी ॥७५॥
भिरचौ भोज भग्गौ नही सार भग्गे। जुरचो[11] मल्ल हल्लै, नहो जूह लग्गे ॥७६॥
परचौ राउ भोहा, उभै[12] चंद सष्षी। इकै कित्ति भष्षी इकै कुसुम नष्षी।
जिसी भारथ षोहिनी अट्ठ होमी। चैत सुदि रारि, निसि एक नौमी ॥७७॥

दोहा

पहुप पार राठौर रन, जिनि सिंगिनि गर कीन।
भुज भुजंग सावंत विय, गहि संषद्धर लीन ॥७८॥
तुरंग विछंडिग मंडि[13] रसु, करिग सु शस्त्र बिशस्त्र।
रुधिर सुधारहं उद्धरिय, भरिग उमापति पत्र ॥७९॥
राज पयंपै[14] सुनहु सब, आजु कह्यौ हित छोहि[15]।

---

1 BK2 BK3 सु जुद्ध। 2 BK2 आरम्भ, BK3 आरन। 3 BK2 BK3 ठिल्लइ। 4 BK2 तियति छल, BK3 विय पियति छल। 5 BK2 राइ। 6 BK2 BK3 अंक। 7 BK2 BK3 लो। 8 BK2 BK3 जद्दो। 9 BK2 BK3 भष्यो। 10 BK2 BK3 माझी। 11 BK2 BK3 जुरयो। 12 BK3 उभि। 13 KK2 षंडिन सु। 14 BK2 BK3 पयंप्यौ। 15 BK2 BK3 छौहि।

भोहा भूप पराक्रमह, कुल चंदेल न होहि[1] ॥८०॥

कवित्त

जिहं[2] संषद्धर संष पूरि, पूरित भुव कंपिय।
जिहिं संषद्धर पूरि भूमि, डारत भर चंपिय।
जिहिं[3] संष द्धर पूरि भूप, पर सिंगिनि घत्तिय[4]।
सो संष द्धर असु समेत, आयासहं पत्तिय[5]।
धनी[6] वीर धीरमा[7] सब, सुक जवार अवधारितै।
सामंतन सूरन हन्नहं[8], सु कलि कित्ति विस्तारितै ॥८१॥
दिट्ठी दुग्गं[9] नरिंद कासिराजहं, जुर जग्गिय[10]।
राउ हन्यौ लंगूर गोठि[11], कन्नर[12] कर भग्गिय।
पंग राव परतष्ष[13] जंग, रष्षन रन साई।
निसि नौमी ससि अस्त, गस्त गैंवर गहि पाई।
हाकंत दंति[14] चंप्पौ नृपति, सावंतनि सव्वर बहिय।
भुइं परयौ छत्त आछत्त, को[15] कहहि सव्व गहियन गहिय[16] ॥८२॥
त दिन चाइ चहुवांन, तिष्ष तिरसूल[17] उप्पारिय।
सिंगी नाद अनंद इष्ट करि, ईस संभारिय।
रुधर सत्थ सामंत रुधिर, षप्पर षल संगह।
रहसि राइ लंगूर ग्रीव, चंप्पौ अ.भंगह।
जय सद्द जोति जुग्गिनि करिय, आततताइ[18] उत्तंग ढर।
भर हरग पंगु पंगुर सयन, गग सुरंगिय रंग ढर ॥८३॥

दोहा

अतुलित बल अतुलित तनह, अतुलित जुद्ध सुचंद।

---

1 BK3 होहि। 2 BK3 जिहि। 3 BK2 BK3 जिह। 4 BK2 समस्त चरण दो बार लिखा है। 5 BK2 सपत्तिय। 6 BK2 BK3 धन्नि। 7 BK2 BK3 वीरम्म। 8 BK2 BK3 नहं नहं। 9 BK1 दुर्गन नरिंद। 10 BK1 जुग्गिय। 11 BK2 BK3 गौठि। 12 BK1 कत्तर। 13 BK2 BK3 परतष्षि। 14 BK1 दंत। 15 BK2 BK3 कौ। 16 BK2 BK3 गहोय। 17 BK1 तिरसल। 18 BK1 आवाततताइ।

अतुलित घन संग्राम किय, कहि उतपति कवि चंद ॥८४॥

कवित्त

चौरंगी चहुवांन राज, मंडल आसा पुर।
तौवर घर परधांन, सुवर, मानौं वृत्तासुर।
धनु असंष घर धनिय एक, नाम सुविधाईय।
तिहि पर पुत्रीय जाइ पुत्र, कहि करिग वधाईय।
करि संसकार द्विज नाम[1] दिय, आतताइ कुल कुंवर वर।
नृप अनंग पार दीवांन महि, पुत्र नास अवु सरिय वर ॥८५॥
अति तनु रूप सरूप भूप, आदर करि उट्ठहिं।
चौरंगी चहुवांन नाम, कीरति करि पुट्ठहिं।
द्वादस वरिस सुपूजि मात, गोचर[2] करि रष्षौ[3]।
राज काज चहुवांन पुत्र कहि, कहि मुख भष्षौ[4]।
हरिद्वार जाइ वि.वक सुहर, सेव जननि संगह करिय।
वरु[5] कहि वरु[6] मंत्रिय पुरुष, चहुं रूप देषि सिव उर धरिय ॥८६॥

दोहा

पंच धेनु पुज्यौ सु सिव, गहि गिरिजा तिहिं पांनि।
तिय कि पुरुष छवि सचु कहि, विधि कहि बंधि प्रमांन[7] ॥८७॥
मो पितु जुग्गिनि पुर धनी, अनंगपाल परधान।
पुत्र नाम कहि अनुसरिय, राज डरह चितु षीन ॥८८॥
जव तिय अंग प्रगट्ट हुव, तब किय मात दुराइ।
अद्ध रैनि लै अनुसरिय, सिव सेवन सत भाइ ॥८९॥
तव प्रसन्न गिरिजा भई, मंगि जु मंगन हार।
पुत्ती ते यह पुत्र करि, धन कुल रष्षन हार ॥९०॥

---

1 BK2 नाम। 2 BKI गौचर। 3 BK2 BK3 रष्षो। 4 BK2 BK3 भष्षो। 5 BK3 नरु। 6 BK2 रमन्नि रमनिय पुरुष रूप देषि शिव उर धरिय, BK3 नरु कहि रमन्नियपुरुष.. । 7 BK2 BK3 प्रमानि।

कवित्तु

शिव शिवा[1] हसि सैन रहस्य, सैन उप्पर समत्थ भय[2]।
सुविधि सज्ज[3] आदरिय सत्त, स्वामित्त अत्थ[4] लिय।
वपु विभूति आस रहि सिंग, संग्राम धरै उर।
त्रिकट कंथ संथ संघरिय तिष्ष, तिरसूल धरै कर।
कलहंत बीर किलकंत सह, जुग्गिनि गन सत्थहं फिर।
चौरंगि चंद[5] चहुवांन चित, आतताइ नाम हि धरहि ॥६१॥

दोहा

नमसकार सामंत[6] करि, जब जब दिष्षहि ताहि।
तब तव राज विराज मन, रहे भूप मुष चाहि ॥६२॥

कवित्तु

हाड़ाराइ हमीरराइ, गंभीर विबंधो।
लष्षाना[7] तुष्षार लष्ष, जर जीन सुहंदो।
राज अग्ग फेरिय[8] जहि, जगंल त जांनहि।
चहुवांना[9] चामर नरिंद, जुग्गिन। पुर थांन हि।
अस दुर्ग दुर्ग[10] दल स्यों जुरिय, सामंतनि सत्तहं चढिय।
आलोह सेन लग्गत विषम, ललकि[11] दानवां बल चढिय ॥६३॥
कासिराज दल विषम मध्य, जनु तीरनि छुट्टिय।
फिरि निहारि भुज धारि अद्ध[12], हल हलियति बंटिय।
निघनि घात घन बात घात[15], घन घाव अघानिय।
जनु सायरी[14] जिहाज रहित[15], गति तिहिं ठावांनिय।

---

1 BK2 BK3 सिवा। 2 BK3 मया। 3 BK2 राज BK3 सज। 4 BK2 BK3 अत्थिलय। 5 BK2 नंद। 6 BK2 समंत। 7 BK1 लष्षाराइ जो रुप्पौ जरह सजि जीन सुहंदो, BK3 लष्षाना रुप्पौ जर जीन सुहंदो। 8 BK2 फेरियहि, BK3 फेरेय। 9 BK2 चहुवांन। 10 BK1 दुर्ग्र दुर्ग। 11 BK2 BK3 बलिकि। 12 BK2 BK3 अद्ध लिय बंटिय। 13 BK2 हय गय घात अघानिय। 14 BK2 BK3 साइरी। 15 BK2 निरहित।

बल बंधि बलापति बत्त तिनि, छिनु छिनंत कमधुज्ज दल।
भूमि चाल भाल उथ्थल पथल, इम सुछत्र पहु पंग चल ।।६४।।

छंद भुजंगी

हले पंग छत्री निछत्रं छितानं। उवं हड्ड हम्मीर गंभीरबानं।
थहं थाल भग्गी भुजग्गी जुवानं। रुधि द्वार उद्धार भूमि भयानं ।।६५।।
समं सेल संदेह[1] हेयं अज्ञानं। हयं तीनि हड्डे निछंडे परानं।
समं सेल सजेव[2] जंजीर थानं। निसा एक मेकं स मेकं हियानं ।।६६।।
दिसा धूरि धंधूरी उड्डी गियानं[3]। भिरे वीर सामंत उत्ते उथानं[4]।
महा भार भूतेस साई[5] सभानं। .... ।।६७।।

कवित्त

हाडा राव हलक्क कासि, राजहं कुव डंक्कसि।
इत जुग्गिनि पुर सामंत, उतह कनवज्ज वीर रस[5]।
वियो[7] वीर आहरिय दंत धर, धर अधि आवध।
नाभि नीर निच्चुरिय[8] करिय, केहरि कुस रावध।
उडि हस[9] नसमसह सुहर वर, कहर देव बज्जी सुहर[10]।
जग्गियो नाग नागप्पुरहं, हाम दुर्ग धामंकि धर ।।६८।।

दोहा

हाडा हथ्थ सुहथ्थ धर, गंभीरा रस वीर।
कासिराज दल सौ जुरिग, कुल उत्तरी न नीर ।।६६।।
नृप अलसिग अलसिग सुभर, अलसिग पंग नरिंद।
विलसित काक करंक किय, सहसति तीस गनिंद ।।१००।।
कनक नयन झलकिय तरुनि, वर तजि नैन निषेध।
जिहिं बल बल्लह निरषयो[11], तं भूमि परग सुर वेध[12] ।।१०१
दिष्षि संजोगी चित्र अचल, श्रम जल बूंद[13] बदन्न।

---

1 BK2 सिदेह अंदेह ज्ञानं, BK3 सम सेला सदेह ज्ञानं। 2 BK2 BK3 सिजेव। 3 BK2 येगियानं। BK2 उठानं। 5 KK2 साईं सतानं। 6 BK2 BK3रसि। 7 BK2 BK3 वीयो। 8 BK1 BK3 न्निब्बुरिय। 9 BK1 हसमसमासह, BK2 हंस नंस मंसह। 10 BK1 सुभ्भर। 11 BK1 निरषयौ। 12 BK2 वेव। 13 BK2 BK3 बुंद।

रति पति अत्तिति फुंकि मुषि[1], जांनि प्रजालि मदन्न ॥१०२॥

छंद त्रौटकु

तब दिष्षत[2] राज, रवन्नि[3] मुषं। अतिवंत दुषी दुष, मानि सुषं।
भुव वंकम[4] रंकम राज मनं। इष तत्ति निहत्ति समोह घनं ॥१०३॥
गुन कतृंनि[5] कट्टिनि तात कुलं। किय स्त्रोत[6] महा भर वीर बलं।
अभिराम विरांम निमष्ष करं। उर चंपन विट्टन दिट्टि हरं ॥१०४॥
इति श्रींय सुकीय सुजात कुलं। भुव[7] संपनि कंपनि काम हुलं ॥१०५॥

दोहा

सुघर विलंवत घरिय घर, रहि ठट्ठे घट[8] तीन[9]।
उठहि न असित कर सुवर, कछु मन मोह प्रवीन ॥१०६॥

कवित्त

मिले सब्ब सावंत बोल, मंगहि ति नरेसर।
अप्प मग्ग लग्गियै मग्ग, रष्षहिं सु महाभर।
इक्क इक्क भूभ्भंत दंति, दंतिय ढंढोरहिं।
जिते पंगुरा भीम[10] मारि, मारि करि मोरहि।
हम बोलि रहै कलि अंतरै, देह स्वामि पारच्छियौ।
अरि असि लष्ष कुण अंगमै, परणि राइ सारत्थियौ ॥१०७॥
मति घट्टिय सावंत मरन, भय मोहि दिषायौ[11]।
जग चिट्ठिय विन होइ कहन, क्यौं तुमहि सुहायौ[12]।
तुम गंज्या भर भीम तास, गब्बह मय मत्तौ[13]।
मै गौरी साहाब साहि, सारौ लं सुभत्तौ[14]।
मो चरन सरन हिंदुव तुरक, तिहिं सरनग्गति तुम करहु।

---

1 BK2 BK3 मुष। 2 BK1 दिष्षति। 3 BK2 BK3 रवनि। 4 BK3 कंक मरंकम। 5 BK2 कट्टनि 6 BK1 स्रोन। 7 BK2 मुष जंपनि। ८ BK1 यति। 9 BK2 BK3 तीनि। 10 BK2 BK3 भींब। 11 BK2 BK3 दिषायउ। 12 BK2 BK3 सुहायउ। 13 BK2 BK3। मत्तउ। 14 BK2 BK3 सुभत्तउ।

बुझ्झि न सूर सावंत होइ, तौं[1] बोझू अप्पन धरहु ॥१०८॥
वन रष्षै जौ[2] सिंघ वीझ वन, रष्षहि सिंघ हि ।
धर रष्षइत भुजंग धरनि, रष्षइत भुजंगहि ।
कुल रष्षइ कुल वधू, वधू रष्षइ ति कुल अप्प[3] कुल ।
जल रष्षइ[4] जो हेम, हेम रष्षइत सच्छ[5] जल ।
आब रहै तब लगि जियन, जियन रष्षै जस[6] आवतहं ।
रावत रष्षै राइ जौ, रावत रष्षै राइ कहं ॥१०६॥
तैं[7] रष्षै हिंदवांन गति, गौरी गाहंतौ ।
तैं रष्षौ जालोर चंपि, चालुक्क षहंतौ[8] ।
तैं रष्षौ पंगुलो भीम, भट्टी दै मत्थै ।
तै रष्षौ रन थंभ राइ, जादौं सौ हत्थै ।
यह मरन हित्ति राइ पंग की, जियन[9] कित्ति राइ जंगली ।
पहुप रनि जाइ ढिल्लिय लगैं, होइ घर छ्वर मंगली ॥११०॥
सूर मरन मंगली स्यार, मंगल घर आये ।
बाह मंगल मंगली धरनि, मंगल जल पाये ।
कृपन लोभ मंगली दांन, मंगल मंगल कछु दिन्नै ।
सत[10] मंगल साहस्स वस्स[11], मंगल कछु लिन्नै[12] रहै ।
मंगली मरन[13] किय तिय, सत्थै तनु[14] षंडियै ।
षित चढ्ढि राइ कमधुज्ज सौं, समर[15] सनम्मुष मंडियै ॥१११॥
सरण दियौ प्रृथिराज सहै[16], छत्री करि पट्ठै[17]
मींचल[18] गनिया[19] पाइ पाइ कह्यौ, आयौ घर बैठे ।
पांच घाटि सौ कोस कहै, दिल्ली सा कत्थै[20] ।

---

1 BK1 BK3 तो । 2 BK3 जो । 3 BK1 BK3 अप । 4 BK1 रष्षै । 5 BK1 सब्ब । 6 BK1 जिम । 7 BK3 तिं । 8 BK2 चाहंतौ । 9 BK2 BK3 जीयन । 10 BK1 संत । 11 BK2 मंग, BK3 स्थान रिक्त है । 12 BK1 लिबाराह । 13 BK1 मरण । 14 BK2 BK3 ति सत्थे । 15 BK2 मरन, BK3 मर । 16 BK1 जय है, BK3 पृथीराजय है । 17 BK3 पठे । 18 BK3 मोहल । 19 BK2 BK3 गनीया । 20 BK1 कछै ।

एक एक सूरवां, पिषिय चाहंतौ वत्थै[1]।
घर घरनि परनि राइ पंगु की, पहुंचै कहां बड़त्तनौ।
जब लग्गि गंग धर चंद रवि, तब लगि चलै कवित्तनौ ॥११२॥

गाथा

गिद्धौण[2] जाइ कहणो, गहणो कवि चंद सूर[3] सावंत।
प्राची हय रह बहणो, रहणो गत चितनि[4] दावंत ॥११३॥
सप्त[5] भट किरणि समूहो, सुग्गो आरेणि आणि आएसं।
जुग्गिनि पुर पति सूरो, पार संपत्ति पंग राएसं ॥११४॥

छंद त्रोटक

परि पंग कटिक्कति घेरि वनं[6]। दस पंच ति[7] कोस निसान धुनं।
गज राज विराजत मध्य वनं। जनु बद्दल अंभ सुरंग उनं ॥११५॥
परि पष्षर सार तुरंग रनं। जनु हल्लति हेल[8] समुद्द तनं।
घर बंवर वैरष छत्र तनी। विच महि[9] सु अस्वह हींसं घनी ॥११६॥
हरि तत्त हिमावत पीत पनी। देषि लज्जित[10] रैनि सरत्त तनी।
घननं[11] रत[12] भेरि अनंक सयं। सह नाइनि[13] सिधु वैराग लियं[14] ॥११७॥
निसि सब्ब नृपत्ति अनि[15] रु फिरै। जनु भांवरि भांन सुमेरु[16] करै।
दल सत्त[17]संभारिय रत्त[18] करी। जिति जाइ निकस्सि नृपत्ति अरि ॥११८
नृप जग्गत सब्ब तुरंग चढ़ै। विन भान पयानह लोक कढ़ै।
चहुवांन कमान ति कोप लियं। मिलि साहनि षंचिक सीस दियं ॥११९॥
मद गंध गयंदनि सुक्कि गयं। सब दच्छ रहो[19] न अनंत भयं।
सर विद्धत इक्क[20] सुसात करी। दल दिष्षत नैक टट्टुक्क परी ॥१२०॥
जा नेजह सूरांन भोर परी। ठिलै चहुवांन ति अप्पु वरी ॥१२१॥

---

1 BK1 वच्छै। 2 BK2 BK3 गिघोण। 3 BK2 BK3 सार। 4 BK1 नै। 5 BK1 सव्व। 6 BK2 घनं। 7 BK1 BK3 थि। 8 BK1 हेम। 9 BK3 माहि। 10 BK2 BK3 लजित। 11 BK2 भननं कहि। 12 BK3 रतहि। 13 BK1 नाइन। 14 BK2 BK3 लयं। 15 BK2 BK3 अनी। 16 BK2 BK3 सुमेर। 17 BK2 सब्ब, BK3 सत्। 18 BK2 रत्ति। 19 BK2 रहोत, BK3 रहोव। 20 BK2 यिक्क।

कवित्त

बंधौ[1] सै जैचंद राज, विजपाल सुपुत्ता।
सैरंध्री उर जन्म नाम, वीरम[2] रावत्ता।
सहस सीस सिंदूर ढाल, नैंज सिंदूरी।
सिंदूरी संदेह सेव, वारुनि घड[3] पूरा।
दिन एक महिष भु ंजै भषै, विजै दिग्गै[4] नृपह।
जिते जुवान हिंदुव तुरक, वाम अंग ढोडर[5] पगह ॥१२२॥
शुक्रवार अष्टमी निंद, जांनै न जुद्ध पुर।
नौमी सनि मध्यान स्वामि, संग्राम इंद जुर।
हय दिषषत[6] पाइ गह सत्त, पच्छे पच्छारिय।
रं सु मुद्ध मुद्धंग[7] जंग, लगि हौ न जगारिय।
आयौ निसि सामंत जह कर, कसंत आलम असन।
तिते सूर साहिब सबर, जनु अगस्ति दरिया गसन ॥१२३॥

दोहा

चासू कट्टिढय कंष धरि, पय वसिष्ठ परि हार।
उभय पाणि साहिल समर, गो नृप पंगु सुसार ॥१२४॥
रा जैचंद नरिंद हलि, दरस भृत्य[8] बल काज।
भै भुज पंजर भिरि गहिग, इन मैं को[9] पृथिराज ॥१२५॥
माया मग्गति देव जगि, ह्व[10] जिम हक्क प्रगट्टि।
तानि[11] कटारिय कर धरिग, तिहिं घन सेन निघंटि ॥१२६॥

भुजंगी छंद

घन सेन निघट्टिग पंगु दत्तं। रावत्त वंध्यौ[12] तिहि वीर बलं।

---

1 BK2 बंधौग, "सै" नहीं है, BK3 बंधौर। 2 BK1 बीर, BK3 वीरु। 3 BK2 वन। 4 BK1 दिग्गजै नृप्प पह। 5 BK1 टोडर। 6 BK2 दिष्षत षावाल पाइ गहि सत्त पच्छारिय, BK3 दिष्ष बेस पाइ गहि सत्त पच्छारिय। 7 BK3 मुषंग। 8 BK1 भृत्त, BK3 भृत्य। 9 BK1 हौ। 10 BK2 हचि। 11 BK2 तीनि। 12 BK2 BK3 वध्यो।

रुधि पात पवित्त कियौ समरं । घन दिषिष विमान फिरे अमरं ।।
तिनि पौरुष राज सयो सवरं । कवि चंद कहि वरदाइ वरं ।।१२३।।

कवित्त

कट्टिय वरु[1] विसरयो,[2] धाइ लग्यौ धर राजन ।
जदव भीम जुवांन ति रस, तुंगह भिरि भाजन ।
रा रन वीर पवित्त सुपति, रषिष अप रिहा रह ।
राज काज चहुवांन स्वामि, संकेत अडारह ।
भिरत तिनहि हय गय बहंत, गहि गहि कह[3] तिहिं संभरिय ।
निसि घटिय एक सामंत परि, भइ पीत दिषि अंबरिय ।।१२४।।

दोहा

निसि नौमि वित्तय विषम, सुषम निसाचर चित्त ।
उ कहिन कर पल्लव नयन, अस विड वित्त कुचित्त[4] ।।१२५।।
जग्गि आभंगे[5] पंग नृप, जियन आस चहुवांन ।
सुर षंडल मंडल रवन, भयो सुरत्तो भानं[6] ।।१२५।।

इति श्री कवि चंद विरचितं पृथीराज रासे नौमी-शनिवारे द्वितीय दिवस युद्ध वर्णनो नाम एकादशः यंडः ।।११।।

1 BK1 वर । 2 BK1 विस्सरयो । 3 BK2 BK3 कहै । 4 BK3 कुवित्त ।
5 BK2 BK3 आभंगह । 6 BK1 भाण ।

द्वादशः षंडः

दोहा

कनवज्जिय भंजिय सयन, जे भर डिल्लिय भार।
वे घर अंजुलि जल उठि[1], उद्दित आदित[2] वार ॥१॥
करि[3] विचार सामंत सब, नृपतिहिं रषन काज।
कहै अचल सुनि सूर हो, करहु चलन को[4] साज ॥१॥
उदय तरुनि नट्ठिय तिमिर, सजि सामंत समूह।
नृप अग्गै[5] बदइ सु इम, चलहु स्वामि करि कूह ॥३॥
चलन मानि चहुवांन तब, बजे सु पंग निसांन।
निसि जु दुंदु दुहुं दल भयौ, विद्धु सहित विनु भान ॥४॥
उन घर चंपी रट्ठि वर, मुष धर[6] संभरिवार।
चलत राइ फिरि फिरि फिरिग, अज्जित अद्दितवार[7] ॥५॥

छंद त्रोटक

वटुक्या सेन सब मीर मिल्ले। विट्ठुरिय सेन सव्वे निकल्ले।
चाइ चहुवांन राठोर रल्ले। दिष्षियहिं पंगुरा नैन[8] लल्ले ॥६॥
कप्पियउ[9] वीर विजैपाल पुत्तं। आवध[10] करहि जम जाल जुत्तं।
संहन्यौ सेन सनि सौ सदीपं[11]। नौमि तिथि घलह[12] पृथिराज सीहं ॥७॥
राजसं तामसं वे प्रकट्ट[13]। मुक्किय सारुक्क[14] वट्टं।
सार संपत्त पत्तेति रत्थं। मनौ आवधं रुद्ध इन्द्रानि कच्छं ॥८॥
निट्ठुरइ ढाल गय मंत मंतं। पुट्ठि सामंत सीमंत रत्तं।

---

1 BK2 BK3 उठी। 2 BK2 BK3 अदितवार। 3 BK1 कहि। 4 BK2 कौ। 5 BK2 BK3 अग्गइ। 6 BK2 धरि। 7 BK2 BK3 अहितवार। 8 BK1 ने नल्ले। 9 BK1 कप्पियो। 10 BK2 आवधं। 11 BK2 सोसदीहं। 12 BK2 थलह। 13 BK2 BK3 प्रकटं। 14 BK2 सानुक्क।

भूमि भारथ्थ[1] ढरे सोइ पथ्थं । अथ्थिय विय हथ्थिय प्रथिराज हथ्थं ॥९॥
विढड वीर सावंत सावीर[2] रूपं । जिसौ[3] सेल सादूल भद्दै सजूपं ।
कंपै काइ हय लोह रत्तौ सरत्तं । जिसौ अनिल आरंभ पारंभ पत्तं ॥१०॥
इसौ जुद्ध अनिरुद्ध[4] मध्यांन हूवं । रहै[5] हारि हथ्थं जिसौ वोप जूपं ।
नामियं अस्व दिल्ली दिसानं । पुट्ठए पंग बज्जै[6] निसानं ॥११॥
चंप्पौ चाइ चहुवांन हर सिंघ नायौ । जिसौ सैल[7] तै सिंघ गज जूथ पायौ ॥१२॥

कवित्तु

करि जुहार वर सिंघ नयौ, चहुवांन पहिल्लौ ।
वरि अनि सांवरी लष्ष सत्त[8], भिरयौ अकिल्लौ[9] ।
अगम कया है फिरयौ[10] धरनि, पुर[11] सौं पुर षुंदइ ।
इक्क लष्ष सौं लरइ इक्क, लष्षह रन रुंधइ ।
तिलु होइत भोन ही मुरि हय, हय आयास भौ[12] ।
इमि[13] जंपै चंद बरदिया, च्चारि[14] कोस चहुवांन गौ[15] ॥१३॥
तिमिर बध्ध रट्ठि वर आइ, जब पुट्ठि विलग्गउ[16] ।
गहि गहि कहि चहुवांन हिंद, हिंदवान सुभग्गउ[17] ।
कर कर्क सह रहसिग सिंघ, सम सिंघ निदद्यौ ।
जन कुंजत वे मुह[18] समुह, लभ्यो[19] मुख बंद्यौ ।
घन घाइ चार बित्तिय धरी, करिग आन सावंत सह ।
वैकुंठ वट्ट लद्धी दुहुनि लरति[20], अप्प अप्पनि सुरह ॥१४॥

दोहा

परत[21] धरनि हर सिंघ कहुं, हरषि[22] पंगु दल सब्ब[23] ।
मनहुं जुद्ध जुग्गिनि पुरह[24], तन मुक्यौ[25] सव गब्ब ॥१५॥

---

1 BK2 BK3 भारथ ढरै । 2 BK1 सावीत । 3 BK2 पियौ, BK3 पिसौ । 4 BK2 BK3 अनुरुद्द । 5 BK1 रहे । 6 BK2 BK3 वज्जे । 7 BK2 BK3 सेलते । 8 BK1 सन । 9 BK2 अकिल्लो । 10 BK2 फिरयो । 11 BK2 पुर षुर सौं षुदइ । 12 BK2 BK3 भउ । 13 BK2 इम जंपइ । 14 BK2 चारि । 15 BK2 गउ । 16 BK1 विलग्गौ । 17 BK1 सुभग्गौ । 18 BK1 सुहर । 19 BK1 लभ्यौ । 20 BK2 BK2 लरत । 21 BK1 परति । 22 BK1 हरष । 23 BK1 सब्बु । 24 BK3 पुरहि । 25 BK2 BK3 मुक्यो ।

पनि पृथि राजह[1], अच्छ[2] दल, वलि[3] राठौर नरेस ।
सिर सरोज चहुवांन कौ, सारभ वर सम भेस ॥१६॥

कवित्त

दिग्य[4] सुनहु पृथिराज, कनकनायो बड़ गुज्जर ।
हम तुम्ह[5] दुसह मिलग्गि, सत्त न[6] छंड्यौ सद्धर[7] ।
षंड षंड हुइ रुंड मुंड, हर हारहिं मंड्यौ ।
इमह[8] वंस भज्जिग नरेस, करि षंड विहंड्यौ ।
इम वंस भज्जिग नरेस वर, जुरि पति पंक अरुझयौ ।
इमि[9] जंपै चंद वरद्दिया, षट्ठ ति कोस चहुवांन गौ[10] ॥१७॥

दोहा

बड हत्थ[11] बड गुज्जरां, विरुझि[12] गयौ वैकुंठ ।
भीर सघन स्वामि हि परत, चषि कमधुज्ज सुदिट्ठ ॥१८॥

कवित्त

धर फुट्टह पुर तालन, मेह फुट्टै सिर उप्पर ।
भवन[13] गयौ गति परौ, पत्ति पृथिराज सामि वर ।
षग्गह सीसह नत षग्ग, षुप्परिय षर षबर ।
श्रोणित बुंदह परत पंक, विंटिया जु षप्पर[14] ।
विहु[15] पंष साह वर सिंघ सुव, षंड षंड तनु षंड्यौ[16] ।
नीढर निसंक जुज्झत रणह, अट्ठ कोस चहुवांन गौ[17] ॥१९॥

दोहा

जुझि षेत[18] नीडर परयो, दिष्षि दुहुं दल सत्थ ।

---

1 BK1 राजहिं । 2 BK2 अच्छि । 3 BK2 बल । 4 BK2 दिष्षि । 5 BK2 BK3 तुम । 6 BK1 नहि । 7 BK2 BK3 "सद्धर" छूट गया BK3 में यह समस्त चरण छूट गया । BK2 में चौथे और पांचवें चरण की जगह । 8 BK3 "इह वंस भज्जि जनिन कोई जुरि पति "अरुझउ" पाठ है । 9 BK2 इम । 10 BK2 BK3 गउ । 11 BK2 हस्थ है । 12 BK3 रुझि । 13 BK2 तब नायो राठ्योर नृपति, BK3 गत परउ । 14 BK1 पलचर, BK2 गय घर । 15 BK2 विरचि लोह कर । 16 BK2 BK3 षंडयउ । 17 BK2 गउ । 18 BK1 दुहुं ढर फांडर परयौ ।

कटि पटु छुरि जैचंद पहु, ढक्यौ अप्पु सैं हत्थ ॥२०॥
सम राठौरनि राठ वर, निडर जुज्झि[1] गिरि जाम।
दिनियर[2] दल पृथिराज कौ, चंप्पौ पंग सु तांम ॥२१॥
चापंतह पिछोर दिसि, हय पट्टन तन दिष्ष।
तनु तुरंग तिल तिल करै[3], भयौ कहन ससि सष्ष ॥२२॥

कवित्त

सुनि[4] बहित्त पष्षरै लोह, बड्यौ दल रुक्यौ।
चिहुर होइ चापंत स्वामि, अदभुत यह पिष्यौ।
पहु पट्टन पल्लानि हल्ल[5], हिल्यौ न गयंदह।
सवर वीर वर[6] सिंघ भीर, नहि परै नरिंदह।
रुक्कियो छगन जै चंद दल, सिर टुट्टै असिवर कढ्यौ।
जब लगिं[7] सुतिहं दल रुक्यौ, तब सु कन्ह[8] हय[9] वर चढ्यौ ॥२३॥

दोहा

चढ़त कान्ह सावंत हय, जय जय कहि सब देव।
मनहुं कमल करिवर किरन, कुहर पंग दल सेव ॥२४॥

कवित्त

तबहिं कान्ह चहुवांन तुरिय, पट्टन पल्लान्यौ।
हींसत क्रम[10] करि उछ्यौ, मरण[11] अप्पनौ पिछ्यानौ।
यंह[12] कर असि वर गहै, गहवि गज कुंभ उप्पट्टइ[13]।
वह मारै वह धाइ षुंदि, अरिदंतहं क्रट्टइ।
वह नर निसंक है वर सधर, पिष्षहु चित्त कुचित्तयौ[14]।
वह सीस हार गुंथयौ, वह रवि रत्थहं जुत्तयौ[15] ॥२५॥

---

1 BK2 जुज्झि। 2 BK3 दनियर। 3 BK2 करन। 4 BK2 सुन बहुत वषरैत। 5 BK2 हटकि होइ नौ गयंदह। 6 BK2 संवरौ। 7 BK2 लग्गि। 8 BK2 कान्ह। 9 BK2 BK3 है। 10 BK1 क्रमि। 11 BK2 मरन। 12 BK1 BK3 कह कर अस वर गहै। 13 BK2 उपट्टै। 14 BK2 BK3 -यो। 15 BK2 BK3 -यो।

दोहा

धरनि कन्ह परंत ही, प्रकट पंग दल हंक ।
तनु अकाल अवज्री जरल, गहहि टुट्टि निधि रंक ॥२६॥
तब भुकि अल्हन पग्ग गहि, भयौ अप्पु बल रूप ।
सिर अप्पौ[1] कर स्वामि कै, हन्यौ[2] गयंदनि[3] जूप ॥२७॥

कवित्त

सिर टुट्टइ[4] धर धयौ गदं, कढ्ढियौ कटारौ ।
तहं सुभिरी महं माइ देवी, दिन्नौ[5] हुंकारौ ।
अमी कलस आयास लियो, अच्छरि उछंग तहं ।
भई परतष्षि सुतत्थ सद्द, जय जय कह[6] ठवरु ।
अल्हन कुमार विभ्रत सुभौ, भौ कवि रन मानं मन्यौ ।
तिमि[7] अहिति लोयन[8] गंग धरत[9], मति संकर सिर धुन्यौ ॥२८॥

दोहा

धुनि सीस ईस सिर अल्हनह, धनि धनि कहि पृथिराज ।
सुकि कुप्पौ[10] अचलेस तब, महि वर देव विराज ॥२९॥

कवित्त

करत[11] पैज अचलेस धुकित, चहुवांन षग्ग गहि[12] ।
अरि दल बल संघरिग, धर[13] भरिग रुधिर दह ।
मत्थति हय नर फुरहिं कच्च[14], गज कुंभ विराजहिं ।
उवरि[15] हय फर फुरहिं तत्थ, मुष कमल ति राजहिं ।
चवसट्टि सद्द जय जय क्रहिं, छत्रपति[17] पर संवरिय ।

---

1 BK2 BK3 अप्फौ । 2 BK2 BK3 करित । 3 BK2 BK3 गयंदन्नि । 4 BK1 टुट्टै । 5 BK3 दिन्ने । 6 BK2 BK3 जु कहक्कह । 7 BK1 तिम । 8 BK2 BK3 लोयनं। 9 BK2 BK3 धरति । 10 BK2 BK3 कुप्पइ । 11 BK2 BK3 करित । 12 BK2 गह । 13 BK1 पूरि भूरि रह्यौ रुधिर दह, BK3 पूरि भरंग रुधिर दह । 14 BK2 कत्थ । 15 BK2 समस्त पद की द्विरावृत्ति है, BK3 में त्रिरावृत्ति । BK3 उवरि हंस उड़ि चलहिं । 16 BK2 छत्रपति रतिवर संवारग, BK3 छत्रपतिति वर संवरिय ।

बोहित्थ वीर बाहर तनौ, ढिल्लिय पति चढ़ि उत्तरिग ॥३०॥

दोहा

अचल अचेत सुषेत हुव, पटिन पंग लहुराइ[1]।
पठा[2] कलप उपट्ट छर, विज्झ विरज्झहु धाइ ॥३१॥

कवित्त

कलि न कल्यौ[3] अरिय न मिल्यौ[4], भर हरि विन भग्यौ[5]।
अजस न ल्यौ[6] जस ही न भउ, आमग्ग न लग्यौ[7]।
पहु न लज्यौ[8] जीवत[9] न गह्यौ, अपजस नहि सुनयौ[9]।
इवर[10] जेम[11] दुजरि[12] बह्यउ, गाहंत न गयउ।
चालि गयौ[13] न मंदिर दिस रह्यौ, मरन जानि जुभयौ, अनौ।
विभुल्ल दाग[14] गज्जिलक मिस, बहुल[15] भग्गु लग्गहु धनीय ॥३२॥

दोहा

परत देषि चालुक्क धर, करि पंग दल कूह।
जिमि सुदेव इंदहं परसि[16], रहे विटि[17] अरि जूह ॥३३॥
परचौ सलष पांवर तव, बज्ज[18] दुहूं दल लग्ग।
हसहिं सूर सावंत सद[19], मुर[20] कायर हिय भग्ग ॥३४॥

कवित्त

राह रूप कमधज्ज गज्ज, लग्यउ[21] अयास कहं।
धार तिथ्य[22] उर जांनि फिरचौ[23], पांवर न्हांन तहं।

---

1 BK2 BK3 बहुराइ। 2 BK1 पच्छा-कलप, BK2 पट्टन कलप। 3 BK2, BK3 कल्यउ। 4 BK2 BK3 मिल्यउ BK3 सर। 5 BK2 BK2 भग्यउ। 6 BK2 BK3 ल्यउ। 7 BK3 रुलग्यउ। 8 BK2 BK3 लज्यउ। 9 BK1 जीवन्न गह्यउ। 10 BK2 BK3 सुनयउ। 11 BK2 इयर। 12 BK2 दब्बरि। 13 BK2 BK3 गयउ। 14 BK3 दा गज्जिलक्क। 15 BK2 बहु बहु बहु। 16 BK1 परिसि। 17 BK2 विट्टिट, BK3 विटि। 18 BK3 वज्जबु। 19 BK1 सहि। 20 BK1 मूर, BK3 सूर। 21 BK1 लग्यौ। 22 BK1 तित्थ। 23 BK2 BK3 फिरयो।

गुद सु मधु[1] जव जीव तिलकु, सुतन सीस पिंड उस ।
रत्त सुजल कर षग्ग तहां, सोहियै[2] हु सा कुस[3] ।
करि त्रिपति सार पंगहं नृपति, अब्वुवपति[4] जपु सज्जु[5] किय[6] ।
उगह्यो[7] ग्रहन पृथिराज रवि, सलष अलष भुज दान दिय ।।३५।।

दोहा

दियौ दांन पांवार जब, अरि षंगहं[8] सम षेल ।
मरन मानि मन मज्झि रन, फिरि लर कनह बघेल ।।३६।।

कवित्त

जिते समर लष्षन बघेल, आह निवह षग्ग वर ।
ति धर धुक्कि धरनिह[9] परंत, निवरत अधर द्धर ।।
तहां[10] अंतावलि[11] चलइ, गिद्ध गहि अंतर लग्गउ[12] ।
तरुनि तेज गई सक्कि लगि, पवनाहत वग्गउ[13] ।
तिहिं सद्द ईस मत्थौ[14] डुल्यौ, अमिय बूंद ससि उल्हस्यौ[15] ।
विडुरि बयल्ल संकिग गवरि, डरिग गंग संकरु हस्यौ[16] ।।३७।।

दोहा

परत बघेल सुमेल किय, राउ राठौर सुभार ।
दस योजन दिल्ली पुरह[17], फिरि[18] तौंबर-पाहार ।।३८।।

कवित्त

दल पंगनि राठौर रषित, चंपी ढिल्लिय धर ।
जव जंपै पृथिराज पंडवं, सह पहारन नर ।
हरि हत्थ हहरि गहहि वाम, रष्षै[19] इहि वारह ।

---

1 BK3 सुमधुव । 2 BK3 सोहिये । 3 BK2 कूस । 4 BK1 अब्बुव जति । 5 BK2 BK3 सब्बु । 6 BK3 किश्रा । 7 BK1 उग्रह्यौ । 8 BK2 षंगह, BK3 घंगह । 9 BK1 धरव मिवरत वर तरनि अधर धर । 10 BK2 तह । 11 BK1 अंतलि BK3 अंतर । 12 BK1 लग्गौ । 13 BK1 वग्गौ । 14 BK2 BK3 मत्थउ । 15 BK2 BK3 उलह्यस्उ । 16 BK2 BK3 हस्यउ । 17 BK2 BK3 परहि । 18 BK3 फिर । 19 BK2 BK3 रष्षइ ।

सेस सीस कंपियौ डाढ़, ढिल्लिय[1] भूमि आरह ।
कवि चंद एह अपुब्ब सुनि, नृप रष्षहिं विह भुव भरचो ।
फिरि कंपियौ[2] जंपि जैचंद दल, तौंवर सिरि टट्टर धरचौं ॥३६॥

दोहा

पुर सौरों गंगह उदक[3], जोग मग्ग तथ वित्त ।
अदभुत रस असि वर भरचौं[4], विजन वरन कवित्त ॥४०॥
घरिय सत्त आदित्त देव, दसमी अरु रोहनि ।
रुक्यौ तत्थ प्रथिराज पंच, सत्थहं अध षोहनि ।
सत्त अग्ग वरिस सत्त[5], सावंत सूर तिथ ।
पंच अग्ग पंचास सब्ब, सत्थइ सेवकिय[6] ।
वामंग तुरंगम राजत जित्त, न सजि सिंगिन सुकर ।
वद्यौ सु चंद संदेह नहि, जीव राह अचिरज्ज नर ॥४१॥

दोहा

गंग पुट्ठि अग्गे[7] विहर, व्रत बंक ज्जल जिंदु[8] ।
उड़्यौ[9] छत्र सिर पंगु[10] पर, जनु हेम दंड पर इंदु ॥४२॥

कवित्त

रा कमधज्ज नरिंद अद्ध, षोहिनि[11] भुरंगिय ।
तिन म अद्ध सुव[12] कज्जि नग, गै सुत्ति सुरंगिय ।
तिहि[13] छुट्टै इह लव[14] साहि, सावंत राज चढ़ि ।
ते थल थक्कि विरहत सांस, चहुंवांन रांन रढ़ि ।
सिथिल[15] गंग थल चल अचल, परसि प्रान मुक्कन रहिय ।

---

1 BK3 ढिलीय । 2 BK3 कंपीयौ । 3 BK3 उदजक । 4 BK2 BK3 भयौ । 5 BK2 BK3 सत्ति । 6 BK1 BK3 सेवकियउ । 7 BK2 अग्गै । 8 BK2 किंदु, BK3 फिंदु । 9 BK3 उद्यौ । 10 BK2 BK3 पंग । 11 BK2 K3 षोहिनि । 12 BK2 सुव कजीन नग सुत्ति सुरंगिय, BK3 सुव कज नग ग सुत्ति सुरंगिय । 13 BK1 तिह । 14 BK2 BK3 लव लव लहि साहि । 15 BK1 सिथल ।

जुरि जोग मग्ग सौरों समर, चलवत[1] जुद्ध बंदह[2] कहिय ।।४३।।
दुबौ पष्ष गंभीर दुहुँ, पष्षह रा बच्चै[3] ।
दहुँ बांह दुज्ज रह मान, मातुल रुष लष्षै ।
कंठ माल सुभ कंठ वाग, संजोग सुरष्षे ।
दुहु हथ्थ हय जूझ्झ गज्जि, गज सेन सुरष्षे ।
न संकहै[4] स्वामि वंकट विक्कट, त्रिघट रुक्कि कमधुग्ज्ज दल ।
आदित्त वार दसमी दिवस, गरब जुद्ध गंगहं सुजल ।।४४।।
अभंग राउ भनि[5] जन कचरा, अरि कच्चरि कच्चरि ।
गरुव[6] धर्म स्वामित्त सूर, सम्मुह[7] रन अच्चरि ।
पटन सिर अरु पट्ट गयंद[8], दह घट घटि नष्षौ ।
जय जय हुव दन सद्द[9] नाद, त्रिभुवन मुष भष्षौ ।
पद कर[10] पल्लक बंक्किय हि, हर उग्ग राइ रट्ठ वर धर ।
चालुक्क चलत सुभ सुर्ग[11] मग, ब्रह्म अर्घ दिन्नौ सुभर ।।४५।।
जंघारौ रा भीम स्वामि, अग्गौ भयौ चवन[12] ।
दुहुं बाहहं सावंत[13] दोइ, द्वादस[14] दहु कुदन ।
पंच सत्थ संजोग[15] कलह[16], कंहिय कौतुहल ।
मत्त[17] महना रंभ मोहिनी, सुरा अमृत कुल पूहल ।
दुहुं राइ जुद्ध इंदु ज भयौ, चहुवांन राठौर भर ।
दुइ[18] घड़िय औन असि वर उद्धरचौ, मनहुं धूम अग्गै सझ्झर[19] ।।४६।।

दोहा

निसी नौमी वित्तिय लरत, दसमी पहर ति चारि[20] ।
पुहमि प्रगटि पृथिराज भिरि, अत्थत[21] अदित वार ।।४७।।

---

1 BK2 चवत । 2 BK1 बदह । 3 BK2 रावत्थे । 4 BK1 विकहै, BK8 कहै । 5 BK2 माने जराइ, BK3 भनि जनइ । 6 BK2 BK3 गरुव । 7 BK2 BK3 सामुह । 8 BK2 BK3 गंगघ दह घट्ट नष्षौ । 9 BK1 दत्ति देति सुवननि । 10 BK2 पर कर पलाइ बज्जिय चिहर । 11 BK1 सुग्ग । 12 BK2 उद्धन । 13 BK1 साहाब । 14 BK1 द्वादश । 15 BK2 BK3 संयोग । 16 BK1 कह ककुह कंति । 17 BK2 BK3 मत महन । 18 BK2 BK3 दोइ । 19 BK2 सुझ्झर । 20 BK3 चरि । 21 BK1 अच्छुत ।

छंद भुजंगी

दुरं डार[1] डारंत डारंत डारं[2]। ढरं ढाल ढारंत, मारंत मारं।
वचं सूल सेलं, सरं सार सारं। लगै कौन अंगं, विभन्नं विहारं ।।४८।।
टुटै कंध कावंध, सब्बं[3] उसंधं। बहै[4] सांगि षग्गं, रती रंध रंधं।
चलै श्रौन सारं, चिरंतं सुधारं। मनौ वारि रुंधं, अनंतं प्रनारं ।।४९।।
बजे[5] घंट घोरं, सबद्द[6] विहद्दं। न को हारि माने, न को लोपि[7] हद्दं।
टुटै षग्ग लग्गै, गहै हत्थ तत्थं। मनौ माल जुद्धंति, बे जो निवत्थं ।।५०।।
वढ़ी श्रौन धारायनं, पूरि पूरं। चढ़ो सक्ति उभी, कवंधंति सूरं।
जयंतं त्रय नंच, बद्दी[8] सु सद्दं। असि धार तारं, न चैने मनद्दं ।।५१।।
चवै जंगली सो, विडारं विडारं। करं धारि डारं, कत्ती करारं।
करी फुल्ल दिस नाह, प्रगटंत अच्छी। मुषं धीवरा कंध, कढ्ढंति[9] मच्छी ।।५२।।
ढरं वार रंसीह, अघाइ घायं। वदं सार मुष्षं, अगम्मं न घायं।
पते नेर विद्या, कटे षग्ग हक्कं। परं कातरं कन्न भोजं कटक्कं ।।५३।।
लषं चंपिए सीह, चहुवांन भायं। मनौ सिंघ क्रम्यौ, मद दंति फायं।
जसौ लाघवं कौन[10], बाहंत बंकं। मनौ[11] चक्र भेदंत, सीसं निसंकं ।।५४।।
कटै टट्टरं[12] रूव, सन्नाह वट्टं। बहै[13] षग्ग मानौं, मधि श्रोन फट्टं।
तुटै[14] सुंडि सुंडं, भसुंडं भरक्कं। मनौ मध्य नाराच, रष्षंति झक्कं ।।५५।।
नृपं पेषि धारा धरे, धीर धायं। उठ्यौ डुंग बंधं, रणं लत्थ[15] रायं।
जबै[16] पंग यानं[17], गहन्नं गहन्नं। जगम्मालु क्रम्यौ, सुनं सीस धुन्नं ।।५६।।
करं नंट्टिया राइ, रुद्धंति[18] रायं। रचै वामगं[19] दच्छिणं जंग सायं।

---

1 BK2 जाट, BK3 जर। 2 BK3 डडारं। 3 BK2 संघ उसंधं। 4 BK1 बहं संगि। 5 BK2 बजै। 6 BK2 सुबद्द, BK3 यह शब्द छूट गया। 7 BK1 BK3 लोप। ८ वट्टी। 9 BK2 BK3 कटंति। 10 BK2 कौज वाहंत। 11 BK3 मनो। 12 BK1 ट्टरं। 13 BK2 BK3 षग्ग षग्गं मनौ वीज झट मधि श्रोन फेफं। 14 BK2 BK3 समस्त पद स्थाने "सुडिभं करक्कं" पाठ है। 15 BK1 लेठ, BK3 लड। 16 BK2 बवैं, BK3 यवै। 17 BK2 आनं, आनं। 18 BK2 BK3 रुद्धंत। 19 BK2 BK3 वाम दक्षिण राजंग सायं।

बहैं भिंडि पालं, करवारि सत्थं। दुहुं जग्गि जत्थं, मनो कोपि पत्थं ।।५७।।
करि धार कट्टै, परै वेदि बंभं। जनो[1] भिंडि पत्थी, स उडुंति भिन्नं।
भरं[2] हक्क बज्जी, सु गज्जी सु कत्ती। रची पुहप पृथ्वी, षदै[3] देव पत्ती ।।५८।।
असी हाक बज्जंति, राजंति सूरं। भयं धक्क जुद्धं,[4] भयं देव दूरं।
दलं दून धारा, धरै षंड रंडं। वरै[5] संग्रहै ईस, सीसं स तुंडं ।।५९।।
घनं घोर सूराग, सूरा वरंति[6]। रचै माल कंठं, कुसम्मं हरंति।
सजै किलकलं[7], किला वर्ण विमानं। वरं रोहि तत्थं, क्रमै[8] अप्प थानं ।।६०।।
जयं सद्द वद्दं पलं श्रौन[9] चारं। थक्यौ[10] सूर मारद्द, नंच्यौ[11] विहारं।
घनं[12] घाइ अघाइ, सावंत सूरं। ढरै मंडलं[13] सब्ब, सा मुत्थि[14] जूरं ।।६१।।
दहं पंच पंगं, परे सूर भारं। भरं राज सामंत, हत्थे हजारं।
भयं अद्दभूतं, रसं वीर वीरं। घटी पंच जुद्धं, विहानं विहारं ।।६२।।

कवित्त

घरिय पंच दिन रह्यौ, घरिय दुइ वित्त कुवित्त्यौ[15]।
न कुइ जीव भय मुरचौ, न को हारचौ न को जित्त्यौ।
पंच वीस आहुट्टि लुत्थि, पर लुत्थि अहुट्टिय।
लिषिय अंक हुइ कंकन कोइ, जुभ्भयौ विनु पुट्टिय।
घरि इक्क मोह[16] मारुत बज्यौ, कम्म[17] अब्भ वरष्यौ निमष।
तिहं जलह राज तामस वुभ्भयौ, दिषि सुपंग संजोगि मुष ।।६३।।

दोहा

नैन निरषत कनक कन, वे सम मुहहं बोल।
प्रथम सुप्पिय[18] उड्डन मनहु, तुलवति[19] सुद्ध मराल ।।६४।।

---

1 BK2 मनौ, BK3 यनौ। 2 BK1 भरै। 3 BK2 षदेव पत्ती। 4 BK1 BK3 धक्क। 5 BK3 वीर। 6 BK1 वरत्ती। 7 BK2 भिन्न श्रवर्ण वर्ण विभानं BK3 किलाश्रावर्ण विमानं। 8 BK2 BK3 क्रमं। 9 BK3 श्रोन। 10 BK2 BK3 थक्यो। 11 BK3 नंच्यो। 12 BK3 षनं। 13 BK3 मंभलं। 14 BK1 सा मुच्छि। 15 BK1 अवित्यौ। 16 BK1 मोहि। 17 BK2 BK3 करम। 18 BB1 सुप्षिय। 19 BK1 भुलवति।

दिष्प पंग संजोगि मुष, दुष किन्नौ दल सोग।
जग्गि जुरयौ राजन सगुन, अवर न आहुति[1] भोग ॥६५॥
इय कहि पर दषिषन फिरिग, नमसकार सोइ कांन[2]।
दान प्रतिष्ठा रूप वर, गढ़ ढिल्लिय पुर दांन ॥६६॥
चहुांन ढिव्लीय[3] नु रुषह, उड़ी दुहूँ दल षेह।
छंडी आस प्रथिराज की, गयौ पंगु फिरि गेह ॥६७॥

कवित्त

ज दिन रोस राठौर चंपि, चहुवांन गहन कह।
सौ उप्पर सौ महस वीय, अगनित दह[4] लष्षह।
पुट्टि[5] डुंगर थल भरिग भरिग, जल वलनि प्रवाहग।
सह अच्छरि अच्छहि विवांन, सुर लोक वनाइग।
कहि चंद दुंदु दुहुं दल भयौ[6], जन जिम सिर सारह झरिय।
हर सेस हार हर ब्रह्म तन, तिहु समाधि तद्दिन टरिय।
घरिय तीन रांव रत्त पंग, दल बल आहुटयौ ॥६८॥
जंघारौ रा भीम स्वामि, धरमह, धर टुट्यौ।
सगर गोर सिर मोर, देह रष्षी अजमेरी।
उड़त हंस आकास दृष्टि, जन[7] अचरिज[8] घेरी।
जांगरा सूर अवधूत मन, असि विभूति अंगह घसिय।
पुच्छहु सु जाइ त्रिय भुव सकल, कोक[9] लोक को कह वसिय ॥६८॥
वरु छंड्यौ तिहि राइ वरुन छंड्यौ तिहि वर रवि रथ[10] थक्यौ।
सहि सार करन थक्यौ, गहि सारस रव थक्यौ।
रव रवन रवन थक्यौ मुष मारह..................।
धर थक्यौ धर परत, मन न थक्यौ उच्चारहु।
पायौ न पार पौरुष पिसुन, स्वामिनि सह अच्छर तप्यौ।
जिमि जिमि सुसीह सम्मीर शिव, तिम तिम शिव शिव जप्यौ ॥७०॥

---

1 BK2 अहुति। 2 BK3 करु। 3 BK1 ढिल्लिपुरहं। 4 BK2 BK3 लष्ष दह। 5 BK1 पुड़ी। 6 BK2 BK3 भयो यन। 7 BK2 BK3 यन। 8 BK3 अचिरज। 9 BK2BK3 कौक। 10 BK2 BK3 रथक्यौ।

एक अंग तिय सकल विकल, उच्चरिय न राज मुष।
भृकुटि बंक अंकुरिय अश्व, तिहिं लिषिय मद्धि रुष।
विय विमान[1] उप्परि देव, दुल्लिय मिलि चल्लिय।
भ्रम चमंकि आयास पंति, अच्छरि मिलि अल्लिय।
दस एक चवसट्ठि कवि कमल, अस मग मित तह[2] सीह मिलि[3]।
इम रारि करत जुद्धहं जुरत, भिरत रारि इक्क इक्क मिलि ॥७ ॥
बेद कोस हर[4] सिव उभय, ति गनि बड़ गुज्जर।
इक्क बांन हर नयन निडर, नीडर भय सज्झर।
छगन मत्त पल्लानि कन्ह, षंचिय द्रग पालह।
अल्ह चाल द्वादशनि अचल, विथा भनि कालह।
शृंगार विझि[5] सलषन लषन, पंग राव फिरि गेह गौ।
सावंत सत्त जुझे प्रथम, ढिल्लिय पति पृथिराज भौ[6] ॥७२॥

दोहा

राजन भृत घर कुस रहुव, लब्भ सु कित्तिय मूर।
जिह गुन प्रगटित पिंड किय, ते संघरि गय सूर ॥७३॥
सघन घाइ सांवंत घन, उच्चारिय कवि ईस।
महि अमोलिक सुंदरी[7], डोलते रह तीस ॥७४॥

छंद पद्धड़ी

परि सकल[8] सूर अघाइ धाइ। उच्चाइ चंद नृप धाइ धाइ।
धरि लीयो वीर चालुक्क भीम। वग्गरिय देव अरि चंपि सीस ॥७५॥
पांवर जैत षीची प्रसंग। भारथ्थ[9] राइ भारह प्रसंग।
जामानि राइ पाहार पूज। लोहान पान आजान दूज ॥७६॥
गुज्जरहं राइ रंघरिय राव। परिहार महन नाहर सुजाब।
जंगलह राइ दहिया दुबांह। बंकटिय स पहुव धनौ रथाह ॥७७॥
जद्दवह जाज रावत्त राज। वर बलिय भद्र भर स्वामि काज।

---

1 BK1 बिमानि। 2 BK2 BK3 "तह छूट गया। 3 BK2 BK3 में यह समस्त चरण छूट गया। 4 BK1 हरि। 5 BK2 BK3 विझ। 6 BK2 BK3 भउ। 7 BK2 BK3 सुंदरिय। 8 BK1 पर सिकल। 9 BK2 BK3 भारथ।

देवरह देव कन्हरह राव। बग्घरिय टाक चाटा दुवाह ।।७८।।
अहठि[1] समूह मुह[2] कर प्रकास। कमधुज्ज राज[3] आरज्ज तास।
देव त्तिय हरी बलि दैव सत्थ। परिहार पीप संग्राम पत्थ ।।७६।।
अघ्घाइ राइ वर सिंघ वीर। हाहुलि राइ सथ्थह हमीर।
चहुवांन जान पंचान मार। लषन्न उचाइ पहु पत्ति धार ।।८०।।
भटी[4] अचलेस गोहिल्ल राव। सम विजय राज बग्घेल[5] राव।
गुज्जरहं चंद्र सेनह सुवीर। तेजलहं डोड पांवार धीर ।।८१।।
सोढह समत्थ उवि सत्र साल। संग्राम सिंघ कै दुंदु माल।
परिहार देषि कै रान रन्न। कमधज्ज काल रय सिंघ कन्न ।।८२।।
सैंगरह राइ भोलनह तास। साइरह देव मुष मल्ल हास।
अघाइ घाइ धरह ढाइ। लिष्षी मीचु जिम कंक साइ ।।७३।।
डोली सु मध्य संजोग सार। पट्ट कुटिय[6] मध्य मनु वसिग वार।
उप्परि सब्ब वरदाइ ईस। डुल्लीति[7] सज्जि वर रति रतीस ।।८४।।
संक्रम्यौ सेन दिल्ली सुमग्ग। बद्धाइ धाइ पुर त्रियनि अग्ग[8] ।।८५।।

इति श्री कवि चंद विरचिते पृथ्वीराज रासे दशमी रवि वासिरे
तृतीय दिवसे जुद्ध वर्णनो नाम द्वादशः षंडः ।।१२।।

1 BK2 BK3 औहठि। 2 BK2 BK3 समुह। 3 BK2 BK3 रज्ज।
4 BK1 भाटी। 5 BK2 वघेल। 6 BK2 कुट्टिय। 7 BK1 डुल्लोति।
8 BK1 अग्गि।

त्रयोदश खण्ड

दोहा

बद्धाए ढिल्लिय नयर, एकादसि दिन छेह[1]।
एक रवि मंडल वर मिलन, इक मिलि मंगल गेह ॥१॥
हमंकि हसम हय गय चढ़ित, बाहिर जुग्गिनि नैर।
हलकि जमुन जल उत्तरिय, बाल वृद्ध जुव वर ॥२॥
इक घर सिंधुव संचरिग, इक घर बंदनवार।
तेरसि जमकह[2] विज्जवहु, राज घरहं गुरवार ॥३॥
हेम हय गय अंबरह, दासी सहस सहून।
प्रोहित पंग सु ब्रह्म रिषि, ब्याह विधै इह कीन ॥४॥

अडिल्ल

ढिल्लिय[3] पति ढिल्ली[4] जु संपत्तौ[5]।
फिरि पहु पंगु राउ गृह जंतौ।
जिम राजन संजोगि सुरत्तौ।
सह दुह कहन चंद न रत्तौ ॥५॥

दोहा

दिवि मंडन तारक मघन[8], सर मंडन कमलान।
रन मंडन नर भर सुहर, महि मंडन महिलान ॥६॥
पहिलहिं मंडन नृपति गृह, कनकंति ललनानि।
तिनि उप्पर संजोगितम, विधि रचिय वर वांनि ॥७॥
सुब्भ हरमि मंडिय नृपति, दिपति दीप दिव लोक।
मुष[9] कमलह अमृत झरहि, तिन मनह नहि असोक ॥८॥

---

1 BK1 छौह। 2 BK2 BK3 जमक। 3 BK2 BK3 ढिल्लाय। 4 BK3 ढिल्लि। 5 BK2 BK2 BK3 संपत्तउ। 6 BK3 सुहु दुह कति ढिल्लि जु सरत्तउ। 7 BK2 रक्तउ। 8 BK1 BK3 सयन। 9 BK2 BK3 सुक्कल मुष।

छंद रासा*

अगर धूम[1] मुष गौष[2], किय उन्नय मेघ जनु।
मोर मराल निरत्तहि मत्त पुन:
सारंग सारंग रंग, पहक्कहि[3] पंष रस।
विज्जल काक लसंति, झमक्कहि जास मिस ।।६।।
दादुर मोर स नूपुर, नारि धन।
मिलि सर मद्धि मधूव्रत, माधुर मंजि मन।
साल कंप चप वेस[4]. प्रर्जकि[5] तद्ध सह।
हत्थि सुत्थान प्रवीनति, दास दस ।।१०।।
के जुव सत्थ[6] जु, वाधि प्रमादहि मंत गति।
के वर अंबर वाइ ति, रूपहि[7] अद्द रति।
के वर भाष पराजित, रा कृति देव सुर।
के वर वीन विराजहि, वीर वर ।।११।।

सोरठा

इह विधि विलसि विलास, असारत सार किय।
दै मुष जोग संयोजन[8], पृथिराज जिय ।।१२।।

छंद प्रवानिक

प्रथम केलि मज्जनं, वनं घनं निरन्तरं[9]।
सनिद्ध केस[10] वासयो[11], सुवद्ध वेनि भासयो।
कुसुम्म गुंथि[12] साधियं, सुसील[13] फूल आदियं।
तिलक्कु उप्प किंकरी, अवन्न मंडनं धरी[14] ।।१३।।
सुरेष कज्जलं दुनं, धनुक्क संगुनं मनं।
सनासिका सु मुत्तियं, तमोर मुष दुत्तियं।
सुधार कंठ लागयो, लंम्बोदरं विचारयो।

---

*रासा छन्द के लक्षण यहां घटते नहीं हैं। 1 BK2 BK3 द्धुम। 2 BK 1 गोष। 3 BK1 पयक्कइ। 4 BK2 BK3 विस। 5 BK2 BK3 प्रजंकति द्धस तहह। 6 BK2 BK3 सुत्थ। 7 BK1 रूपइ। 8 BK2 BK3 संयोजनं। 9 BK3 निरंतनं। 10 BK3 केश। 11 BK2 KK3 वाशयो। 12 BK1 गुंथ। 13 BK3 सो सील। 14 BK2 BK3 धरी।

अनर्घ[1] हेम पासयो, सुपानि मध्य भासयो ।।१४।।
कलस्सु पांणि कंकणं, वलय सुगट्ठि मुद्रितं ।
सु कट्टि मेषला भरं[2], सरोह नूपुरं जनं ।
सताह हंस सावकं, तलेन रत्त जावकं ।
सवीर चातुरी रसं, शृंगार मंडि षोडसं[3] ।।१५।।
सगंध गोय चिहूए, अभूषनंति भूषए ।

शाटक छन्द

लज्जामान कटाच्छ[4] लोकन कला, अल्पस्तथा जल्पनं ।
रत्यारम्भ भयाइ पिम्म सरसा, गेहस्स[5] बुभ्याइनो ।
धीरं जे इत्थ भाप चित्त हरणं, गुह्य स्थलं शोभनं ।
सील[6] नीर सनात नित्य तन, साष दून आभूषणं ।।१६।।

गाथा

अंबा अंबाह पत्ति[7] कंता, कंताहि दिट्ठि सा दिट्ठो ।
महिला मरम्म मिट्ठो, पति कंता हि सिषष सिष्षाइ ।।१७।।

दोहा

रस घुंटिय लुट्टिय मयन, टुट्टित मंजरि जाइ ।
भर भग्गत कच्छह[8] सुभी, अलि भर मंजरियाँह ।।१८।।
अलि अलि अलि एकंत मिलि, रस सर वर संयोग ।
ते कवि चित्रिय[9] वर सरस, पहु प्रकटित रति भोग ।।१९।।
वै वसंत छ वसंत किय, भृत सावंत सजीव ।
ग्रीषम गंठि[10] सु पैम प्रभु, अमृत सुधा रस पीव ।।२०।।
उत्तर पष्ष[11] असाढ पषि, छा अद्र सुमंगल मंडन छत्र ।
दारुण भोग लछि किय गत्ति, विलासनि राज करौ नव नित्त ।।२१।।

1 BK2 अनग्घ । 2 BK2 BK3 वैभरं । 3 षोडशं । 4 BK1 कटाक्ष । 5 BK2 BK3 गैहंस । 6 BK1 शीलं । 7 BK2 BK3 पत्ती । 8 BK2 BK3 कस्थह । 9 BK2 BK3 चित्रय । 10 BK3 गंथि । 11 BK1 पष ।

[छंद मालती]

[गुरु पंच सत्तति चांवरे, लहु चार अच्छर बंधए।
सति पिय[1] पिंगल भासए, गीय मालती प्रति छंदए ।।]

प्रिय ताप अंगति दंग दव, रति दव रच्छ वर ति भूशणं।
ककुभेह षेह ति ग्रेह लोपित, श्रोन संकित अंगनं ।।२२।।

नर रहित अहितनि पंथए[2], गति पंक पूजित गोधनं।
रवि रत्त मत्तह अब्भ उद्दिम, कोपि कंकस[3] मो धनं[1] ।।२३।।

जल बुट्ठि उट्ठि समूह बल्लिय, सुश्रम श्रावन आवनं।
हिंदोल लोलति चाल सषि सुर, ग्राम सु रव सुर गावनं ।।२४।।

कुसुमंत चीर गंभीर गंधति, मंद बुंद सुहावनं।
ढरकंत वेनिय बद्धए, निय चंद सेनिय आननं ।।२५।।

त.टंक चंचल लज्जनं, चल मंज मेषला[5] वरणं।
रव रंग नूपुर हंस दूपुर, कंज नूपुर पावनं ।।२६।

नष उप्प उप्पनि दिष्ष अप्पनि, कुप्पि कंपि सुहावनं।
दमकंति दामिनि दसन कामिनि, जुत्थ जामिनि जाननं ।।२७।।

तच्छुर तत[6] घनसार भारह, वेल ति द्रुम छावनं।
इल गुंज माल हि देषि लालहि, रंभ रंभरि वनं ।।२८।।

रासा

विजैं विहसि द्रिग पाल[7] पयातनि[8] पंच थिय।
विरहनि वै गट दहन, मथय अग्र लिय।
गज्ज गहिर जल भरित, हरित[9] हरि तत्त किय।
मानौं निसान दिसाननि, आनि अनंग दिय ।।२९।।

---

1 BK2 BK3 पीय। 2 BK[1] पंथ्य पंगति। 3 BK3 कर्कस।
4 BK2 BK[3] यहां इस छंद में प्रथम चरण की दृष्टि विभ्रम से तृतीय चरण में आवृत्ति हो गई, फलत: तृतीय चरण छूट गया। 5 BK[1] मेषल रावणं, BK3 मेषला रावनं। 6 ततच्छुरतत। 7 BK1 द्गपाल। 8 BK2 पायाननि।
9 BK1 हरित सुतत्थ किय, BK3 हरिततत्त किय।

छंद [मालती]

दिग भरित धुम्मिल, हरित भुम्मुल, कुमुद निर्मल सोभिलं।
द्रुम अंग वल्लिय, सीस हल्लिय, कुहक नट्ठति[1] कोहलं।
कुसुमंति कुंजर, सरोर सुब्भहि[2], सुलभ[3] दुब्भर सद्दयं।
नद रोर दद्दुर, मोर सद्दुर, वनसि वन वन[4] बद्दयं ॥३०॥
झिम[5] झिमकि विज्जलि, काम कज्जलि, श्रोत सज्जलि कद्दयं।
पप्पीह वीहति जीह जंजरी, मणित मंजरी नद्दयं।
जगमगिति जगमिग सुरनि निर्भय, अभय नहि लहि हृद्दयं।
मिलि हंस संग सुवंस सुन्दरी, उरसि आनन बद्दयं[6] ॥३१॥
उर सास आस सुवास वासर, छलित कलि बल छंदयं।
असि सरद सुभ गति राज मन्नित, सुमन काम उमद्दयं।
नव नलिन अलि मिलि, अलि ति अलि मिलि अलि व्रत मंडियं।
चक्क[7] चकि चकोर चष्षित, चष्षि छंडित छंदयं ॥३२॥
दुज अलस अलसिनि कुसुम अच्छित, कुसुल मुद्रित मुद्रयं।
भव भवन भवनि ति सत्रि सुर दिवि, दिवि धुनी किय नद्दयं।
नव छत्र मंत्रनि नृपति रज्जित, वीर जुझुरि बज्जयं।
महि महिष लषि रसु भित अरिवर, सत्त पाठति दुर्गयं ॥३३॥
संजोगि संग सिंगार सोभित, सुभ सिंगार संजोगयं,
दिय दीय दीपति भूप भूपति, जूप जूपति सद्दयं।
असि सरद सुभगति राज मन्नित, सुमति काम उमद्दयं।
.... ॥३४॥

कवित्त

संवत्सर बावना आस, आसोज[8] विपष्षिय।

---

1 BK1 नद्धति। 2 BK2 BK3 सुम्भहि। 3 BK2 BK3 सलिभ। 4 BK2 वनं ग वद्दयं। 5 BK2 BK3 झिमि। 6 BK2 BK9 बदयं। 7 BK3 चक्कि चक्कोर। 8 BK3 असौज।

नव दुर्ग[1] नव दाहन बल, सामंत निरष्षिय।
नव सत नव दिहं[2] महिष जोग[3], जुग्गिनि हुल्लारहि।
हवन मन्त्र द्विज पठहिं[4], पुज्ज दुर्गे हि जमारहि।
उच्छह उत्तंग ति हराइय, रति[5] जर तेग बंधहि नृपति।
संपदा चित्त चहुवांन की, प्रथियराज तेजह नृपति ॥३५॥

तट्ठ अट्ठ अठ अट्ठ[6], दियहं मिलि मंडिय।
अट्ठहं अट्ठ प्रमान सहर, सिंगार सिकंडिय।
आनंद तेज आयास तर[7], भूप भूप भुव पत्तिय।
मानिक राउ कुल उद्धरन, प्रथियराज[8] छत्रहं पतिय।
जैत षंभ मंडयो सामि, सामंत परष्षन।
अष्ट धात करि अष्ट रेव, जुग अष्ट सुरष्षन[9] ॥३६॥

अष्ट[10] मुष्टि चौरिष्ट वहि, विट्ठै जु संगि वर।
इक देव सत सील अंग, आभंग सब्ब नर।
भारुन्नि तुंग सह सत्त भर, अस अभ्यास दिन प्रति करै।
इक मुट्ठि मुट्ठि[11] ति मुट्ठि लहु, किहु न सार दुहु अग सरै।
विहसि चढेरा चहुवांन सूर, सह सेन चलायौ।
जैत षंभ रूप्पीयौ लोह, मन तास मिलायौ[12] ॥३७॥

भयौ[13] राइ आइसु कुंवर, सह्वे सौ पिल्लहु।
चिहुटे न चोट दुइ अंगुलिय, बाहत संग मत्थे धरिय।
अप्पी[14] जु साइ तिहि अप्पु कर, मनौं राइ सठ भर[15] डरिय।
चक्रित चित्त चहुवांन सूर, सावंत सुभ्भै।
रन अष्षार[16] भर भिरन, षंभ सौं षिजि षिजि जुज्झै[17] ॥३८॥

---

1 BK2 BK3 दुग्रें। 2 BK1 दिन। 3 BK3 योग। 4 BK3 पढ़हिं। 5 BK1 रतिज तेग। 6 BK2 BK3 अट्ठह। 7 BK1 नर। 8 BK1 पृथ्वीराज। 9 यहां कवित्त छंद के लक्षण पूरे नहीं उतरते। 10 BK2 BK3 अट्ठ। 11 BK1 मुट्ठि मुट्ठ किल हुक कि हुन। 12 BK3 मिलायो। 13 BK भयो। 14 BK2 BK3 अप्फी। 15 BK2 अह। 16 BK1 अष्षर। 17 BK1 षंभ सौं षंभ षिजि जुभ्भै।

तीन पष्ष पंचमी[1] वार, रवि धौंसा बज्जै
सब्ब[2] वैरि सुलतान साहि, सम्मुह करि मज्जै।
पुंडरी राइ चंदह तनौ, धीर नाम वै अंकुरिय।
रण सिंध कंध थप्परि तरकि, हैम तुल्ल लिन्नौ तुरिय। ॥३६॥

दोहा

दिन छट्टहं पुज्जिय सकति, नवल विधि तव स्थिय[3]।
देह[4] सिलह सुरंग मंडिय सघन, चढ़्यौ तुरंगम सीह ॥४०॥

छंद भुजंगी

चढ्यौ[5] सीह सावंत सज्जे[1] सुभारो। धरै कंध सोहै सकत्ती करारी।
हरे जूह बालद्ध सा लग्ग सारे। षिजै षंभ ताजी दुहूं अंग डारे ॥४१॥
रूरी भेरी भंकारनी सांन धाई। उठी वेद मन्त्री हि विप्रो हि भाई।
तपै तेज वाही सुभग्गी तरारी। वही धात मै धात कढ्ढी निन्यारी ॥४२॥
।मटी रैनु[6] राजा[7] दिषी अंग चंगी। तुला सार डंडी मनौं षंड मंडी।
कियो राइ प्रसाद पुंडीर पाढं। महम्मं मुकामं सु हिंसार कोटं ॥४३॥
पंच हज्जार ग्राम[8] सथानं। झंडा माह वैरष्ष पीलं निसानं।
रषत्तं वषत्तं तुरत्तं उचायौ[9]। थप्यौ सत्त सावंत पुण्डीर जायौ[10] ॥४४॥
बलै देह दुनिया बलै बल उचायौ[11]। कहै चाइ चहुवान सो बोल छायौ[12]।
मरन कौं[13] हरन काहि करन साईं। वधन कौ गहन सुरतांन थाईं ॥४५॥

कवित्तु

ज दिन वंस पुंडीर, वानी[14] मुषहि[15] त्थं।
ज दिन मान महत्त[16] त्तदिनहं पट्ठे लिषि हत्थं।
त दिन गांम सुठांम सुनहि, रावत सु जु सत्थं।

---

1 BK2 पंच वीर नीसान ति बज्जै। 2 BK2 BK3 सब। 3 BK1 थवीय। 4 BK1 दे। 5 BK3 चढ़्यो। 6 BK1 रेनु। 7 BK2 BK3 राया। 8 BK1 जामं। 9 BK2 BK3 उचायो। 10 BK2 BK3 जायो। 11 BK2 उचायो। 12 BK2 BK3 छायो। 13 BK2 कै। 14 BK2 वानै। 15 BK2 BK3 मुदित्थ ज्जिग। 16 BK2 BK3 महंत।

ज दिन हत्थि हय हत्थ दियै, जोरे जग हत्थं[1]।
असु पत्ति सयल दल भंजहु, धीर नाम त दिन लहौं।
वास न पसाव हय गय, त दिन साहि जीवत गहौं ॥४६॥

दोहा

चलि आवाज ढिल्लिय सहर, गहन धीर कहि साहि।
हसहि सु मिलि सामंत हि[2] कुटिल दृष्टि मुष चाहि ॥४७॥

कवित्त

हसि बुल्यौ[3] चामुण्ड धीर, सुनि वात हमारी।
पाति साह दल विषम, तुरिय अगनित्तह भारी ॥४८॥

घर बैठे आपने बोल, तुम्ह बड्डे[4] बोलहु।
मेरु भरन कहि वरय सिंघ, सम कुंजर तोलहु।
सुनहु[5] सूर पुंडीर कुल, इतौ भूठ न तूं कहहि।
जिहिं सत्त फेर[6] सती फिरहि, किम सु साहि जीवत गहहि ॥४९॥

हौं पुंडीर नरेस होत, जुज्झार[7] सवर वर।
हौं सुत चंदह तनौ, वेलि[8] दल त्रिविध देवु घर।
मोहि इष्ट वल सकति मोहि, वरइत वर छज्जित।
मो सम अरु न सूर साहि, दल उप्पर[9] गज्जित।
हौं सु सत्त दाहन दहन, हौं जु तिनहिं तृण वर गनौं[10]।
वर वरन वीर इम उच्चरइ, गहौं साहि सस्त्रो हनौं ॥५०॥

तक्यौ साहि गज्जने धीर, जालंधर जत्तहं।
अट्ठ सहस गष्षरी भेष[11], कप्पर करि रत्तहं।
छल वल करि आंनहु पुंडीर[12], रा चंद कुंवारह।
कर कग्गद लिषि दिए भेज, राजैत पंवारह।

---

1 BK2 BK3 में यह समस्त पद छूट गया। 2 BK2 BK3 सह। 3 BK2 BK3 बुलौ। 4 BK3 बड़े। 5 BK2 BK3 सुनहि। 6 BK2 BK3 फेरह। 7 BK3 जुझार। 8 KK3 वेरिं। 9 BK1 ऊपर। 10 BK1 गिनौं। 11 BK1 भेद। 12 BK2 BK3 पुंडुरी।

तारुन्नि[1] तुंग सा धिक सकल, पंच मयंद डंडलि रचिय ।
गन गुपित हत्थह[2] धरिग, मुगति संग जग तिय[3] हंसिय ।।५१।।
मगति दैन कहि तत्थ हत्थ, पष्षर[4] जु तुम्ह कहि ।
निमा ग्रादि इक्क लौं पुज्जि, मूरति तू सन कह ।
ठांम[5] ठांम सा सिंग फेरि, धरिए धुत्तारहं ।
गहि योजन दस पंच सिंध, सिंधह उत्तारहं ।
लै गए साहि[6] पह धीर कहं, ऊँचौ किम्हु न धरिय ।
द्वादस[7] दिन द्वादस[8] सकल, साहि हिंदु इक्क करिय ।।५२।।

दोहा

हम्हु सुन्यौ ढिल्लिय सहर, गहन धरि कहि साहि ।
जइ सुपन विपरीत भौ, बेर वत्थ हत्थह[6] कंधाहि ।।५३।।

कवित्त

सैं पुच्छै सुरतान अवे[19] तूं, चंदह नंदन ।
तुज्झ[11] बिरद इमि[12] कहहिं, अप्पु वर वैर निकंदन ।
अवसांन हि संकरै जीव, रावत्त जु संचै ।
ता छननी निय दोष मरन, जै[13] षत्रिय बंचै ।
तुव जाहु हरु[14] बाहरि पिसुन, इतौ झुट्ठ[15] न झंपियै ।
कहि धीर लज्ज कारन कवन, प्रान रष्षि मति मुक्कियै ।।५४।।
न मै षग्ग संग्रह्यौ, न मै सिंगिनि कर षंचिय ।
न मै मारियो कोइ पति, लागि रन तन संचिय[17] ।
टर्‌यौ हौं न जोगिन्द्र जांनि, धीर त्तनु धर्‌यो ।
चावद्दिसि विट्ठयौ षुंदि[18], षुंदवि मन रह्यौ ।
वोल्यौ जु बोलु चहुंवांन सुं, सो इन बोल छंडै हियौ ।

---

1 BK3 तारुनि । 2 BK1 हत्थ । 3 BK1 थौं । 4 BK2 BK3 कप्पर । 5 BK3 तांम । 6 BK1 साह पहि । 7 BK1 द्वादश । 8 BK1 द्वादश । 9 BK हत्थ धाहि । 10 BK1 अवत्त । 11 BK3 तुम्ह । 12 BK1 इम । 13 BK2 जौ । 14 BK2 BK3 हडु । 15 BB3 इतो जुट्ठ । 16 BK1 झंषियौ । 17 BK2 BK3 न हौं मार्‌यो कोइ पाति लगि तन संचिय । 18 BK2 BK3 शुंदि ।

गहि साहि हत्थ अप्पुनु करयौ, ताप यज्ञ कारन जियौ ॥५५॥
सुन अप्प सुरितांन धीर, चंदहि चलि चुक्कै ।
जो दुरोग पुंडीर साहि, गोरी किम रुक्कै ।
सुदय[1] जुद्ध संग्राम सूर, सांनहं मनु धीरहिं[2] ।
जुरे जुद्ध जेठ हक्क, हंकारिय वीरहं[3] ।
हिंसार कोट चंदह तनौ, धीर नाम तद्दिन लह्यौ[4] ।
राजनहं काज पुंडीर नृप, च्यारि दिवस बंध्यौ रह्यौ ॥५६॥
पुनि पुच्छै सुरितांन[4] धीर, तैं झुट्ठ जु कुन्नौ ।
किन साइर थाहयो, मेरु किन हत्थहि ठिल्यौ ।
किहिब सूर संग्रह्यौ, किहिव सपनै धन पायौ ।
कौन सिंध स्यौं ससा खेली, जीवत घर आयौ ।
सुरितांन दीन साहाब स्यौं इतौ झूठ न तूं कहै ।
जहं[5] सात वींठ हस्ति जुरहिं, सु साहि क्यों न जीवत गहै । ५७॥
जौ विषहर विष अधिक, गरु डरयौ गरवु न मांडै[6] ।
जौ गल गज्जै[7] सिंध कोरि, कुंजर वन छंडै ।
जौ गल धन सघन मिलंत, पवन परचंडनि कुंदै[8] ।
जौ पसरै रवि किरन, कुहर फट्टै जग वंदै ।[9]
जौ चंपि राह चंदहि गिलौत, कि ताराइन रप्पनौ ।
ज दिन सु साहि चहुवांन रन, तद्दिन धीर परष्षनौ ॥५८॥
रवि न नैडै अत्थवै[10], चंदि नौ नैडे मंडै ।
कोल करक्कइ[11] दट्ढव सुह, वासुग भर छंडै ।
पवन[12] थक्कि[13] थिररहइ, अवधि जलनिधि जल टुट्टइ ।
मेरु[14] डिगै डगमगै[15], ध्रुव[16] तुट्टै वलि छुट्टै ।

1 BK1 सुदया । 2 BK2 संभरि धरहिं, BK3 सांनहं सन धरहिं । 3 BK2 BK3 में यह समस्त चरण छूट गया । 4 BK2 BK3 लहौ । 4 BK1 सुरतांन । 5 BK2 BK3 जहि । 6 BK2 BK3 मडै । 7 BK3 गबै । 8 BK2 BK8 कुंदइ । 9 BK3 वंदि । 10 BK3 अथभै । 11 BK1 करक्कै । 12 BK1 वासग । 12 BK1 जवन । 13 BK2 थाक्कि । 14 BK2 BK3 मेर । 15 BK2 BK3 मगे । 16 धूव शुट्टै ।

जौ जिय तन सुरतांन हि गहौं, तौं न षग्ग पारौं रवरि।
जौ धीर बोलि धरनिहि षिसै, तब सैनहर[1] अंगहं गवरि ॥५६॥

दोहा

पूब पूब सुरितांन[2] कहि, पूब धीर मन बुज्झ[3]।
मंगि मंगि जो मंगनौ, हौं सु समप्यौं[4] तुज्झ[5]॥६०॥

अनुष्टुप

तावत् भवति दारिद्री[6], यावत साहाव न द्दष्ट[7]।
अथवा नष्ट जायंते, दरिद्रं लोप जायते[8] ॥६१॥

कवित्त

उदिर ताम उब्बरहिं जांम, मस परि न विडालहं।
मच्छ ताम तर्फरै, जांम नदी रुंध्यौ जालहं।
गैंवर तहं पगु ठवै, जांम केहरि नहि गज्जे[9]।
हरि न फाल[10] तहं करै, जांम चित्रक नहि सज्जै[11]।
मेरु ताम गरुवत्त नह, जास नह पूरग हु करि वढै।
साहन समूह दल सवल, तहं जहं न धीर पष्षर चढ़ै ॥६२॥
धीर हत्थ दिय पांन षांन, षुरसांन निसांनहि।
किजल[12] बास कैलास मेलि, कढा फुरमांनहि।
रोइ[13] राइ गष्षरिय भेरि, भष्षर भर भारी।
कसकि गहौ कसमीर भीर, भारत्थ संभारी[14]।
जल्लालदीन नंदन नवल, करि अवाज उद्दिम कियौ।
पुंडीर राइ पछै पहर, मिलि मिलान योजन दियौ ॥६३॥
जल जोवन साहाबदीन, सुरतांन दुरंगे।
करे कूच पर कूच तुरंग, तोरिय ही कुरंगे।
जत्थ रत्ति रहि धीर हीर[15], हत साहिनि रष्षै।

---

1 BK1 सिनहर। 2 BK1 सुरतांन। 3 BK2 BK3 वुझ। 4 BK2 BK3 समप्पउ। 5 BK2 BK3 तुझ। 6 BK2 BK3 दरिद्री। 7 BK2 BK3 द्दष्ट। 8 BK3 जाते। 9 BK3 BK3 गज्जइ। 10 BK3 फल। 11 BK2 BK3 सज्जइ। 12 BK1 क्किज्जल। 13 BK2 BK3 रोई। 14 BK2 BK3 में यह समस्त चरण छूट गया। 15 BK2 BK3 ही हत।

वर वेली पुंडीर हत्थ, कर पच्छै पष्षै ।
आवाज राज पृथिराज सुनि, भरनि रत्न संग्रह तिज्यौ ।
वीरंग वंसु पुंडोर है, परनि देषि निय मुष लज्यौ ॥६४॥

दोहा

कर मिंचौ संभरि धनिय, नयन वयन नत[1] चाल[2] ।
हसहित सूर सावंत सब, लज्जि विरहिय माल[3] ॥६ ॥

कवित्त

चौंडराइ जैत सीह, सहि सावंत अभंगो[4] ।
षंभ फोरिग विय चंद[5], गहे गम्भरु सु संगे ।
मुष नन्हान• नादान बोल, बड्डा बहु लग्गा ।
गब्ब गव्वार पुंडोर साहि, बद्धन चलि[6] भग्गा ।
सुरतांन जुद्ध अरु स्वामि वर, मुक्कि मरन आरस कह्यौ ।
वर वरन सूर इम उच्चरै, धीर जननि गब्भह[7] गरयौ ॥६६॥

काल्हि जितौ गज्जनौ, काल्हि तुरकांनौ डंड्यौ ।
मौरौ काल्हि गइंद काल्हि, सुरतांन विहंड्यौ ।
काल्हि जितौ गौरी साहाब, पर दल वित्थारयौ ।
काल्हि चंद की आंन काल्हि, जब स्वामि उब्बारयौ ।
सो काल्हि पैज वरदाइ भनि, संभर[8] धनि संचारिहौं[9] ।
बहुरि[10] हूं काल्हि करि हूं, कलल जुद्ध जोर वर धरिहौं ॥६७॥

जिनकु जुद्ध जिहिं किए, धीर पुंडीर बंधाए[11] ।
ते त्रियन वस्य नहि[12] द्रव्य, वस्य[13] बहु मोह गंवाए ।
सामि धरम साधन हि, साहि बद्धन वल लग्गा ।
सुनि दुनीन[14] गज्जन हि रेगए, अद्ध रेन लग्गा ।
अरु अहन रत्त कौतुक कलह, रनह सूर सावंत हुव ।
पुंडीर धीर हय पष्षरत, सेस सहित कंपिय भुव ॥६८॥

---

1 BK1 कृत , BK3 द्दत । 2 BK2 चाव । 3 BK2 माव । 4 BK3 अभंगौ । 5 BK3 दु चंद । 6 BK2 BK3 चले । 7 BK3 गभइ । 8 BK1 संभरि । 9 BK2 संवारि । 10 BK2 BK3 बहुरि—धीर" तक पाठ छूट गया । 11 BK3 बंधौवाए । 12 BK1 न । 13 BK2 वश्य । 14 BK: दुश्रीन ।

भुजंगी छंद

षटु दूनति साहि सजे सुरतांन[1]। तहं छत्र मुजक्क नजीक निसांन।
गज टालति[2] माल बहु दिसि फेरि। बजो सदनं सदनं रन भेरि ।।६६।।
जल कुम्भ रती जह मेलत कंठि। जहं लष्ष करी धर पाइक[3] गंठि।
हथनारि सुधारि अवाज उतंग। उड़ि रेन रही दल पूरि सिषंग ।।७०।।
फिरि फौज पुंडीर कलिंग निषंग। रवि जांनि उयो जवि बद्दल मंज।
कल कौतिग कूह कुलाहल वीर। सुरतान धराधर मज्झि पुंडीर ।।७१।।

छंद भुजंगी

दुबे सेन लग्गे अमुक्के विवानं। रथं जानि रूढं मनौ सेत यानं।
दुहुं हत्थ खुल्ले हलक्के सुवत्थे। कहि[4] देव देवांनि जो सभि हत्थे ।।७२।।
महाचंद पुत्तं सुवीरं महीनं। कहे तेन बोत्तं न आवं सुहीनं।
भंडा साहि वैरष दीधुं सुराजी। हसे सत्थ सावंत पुंडीर मानं ।।७३।।
इते उत्त मंड्यौ[5] जु षंभ प्रमानं। लियौ सीह ताजी जु हेमं समानं।
उतै[6] मंडली मेच्छ जोरं सु साजं। इते हिन्दु होवै प्रथीराज काजं ।।७४।।
कहै सब्ब सामंत सूरं लहानं। अप्पनै काज कनवज्ज थानं।
दियै चारि[7] देसं जु पुंडीर राजं। गह्यो अप्पु पतिसाह धीरं सुसाजं ।।७५।।
तिनै अप्प लाहौर लुट्टी समाहं। कहै संभरेरी सपति साह साहं।
.... ।।७६।।

छंद भुजंगी

मिले मंडली फौज[8] हिन्दू तुरक्की। मुरै मुक्क[9] नाही सुधारै मुरक्की।
हकौ हक्क[10] वज्जी विरज्जी सु गज्जी। कदिक्का भनक्कै किनक्कै सुतज्जी।।७७
उठे श्रोण छिंछी ठगी लग्गी विंदू। दहै दार अग्गे मनौं दार तिंदू।
पुलै टोप लोलंति बोलंति सूरं। गहै चौर तोरं मरोरंति[11] मूरं ।।७८।।
भिए सद्दिने जाउ मुक्के उतांही[12]। रह्यौ हानि तुंबानि वल्ले बलाही।
पर्‌यो धाइ पुंडीर तेजी पटाटी। जिनै बोल पुच्चै मुषे मुच्छ डाढी ।।७६।।

---

1 BK2 BK3 सुरितांन। 2 BK2 BK3 टालिति। 3 BK2 BK3 पाइक्क।
4 BK1 कहे। 5 BK2 BK3 मंड्यो। 6 BK3 उति। 7 BK2 BK3 च्यारि।
8 BK2 BK3 फोज। 9 BK2 BK3 "मुक्क नाही सुधारै" दो बार लिखा है।
10 BK2 हक्कौ। 11 BK2 मरोरं मरोरं। 12 BK2 उनांही।

कहै चंद बत्तं विरदं पुमानं। करै अट्ठ चारि करि एक वानं।
उनै हस्ति ठेल्यो इनै सीह दीनौ। भये चारि जादौं भये दिट्ठि दूनौ ॥८०॥

कवित्त

गुडलि लग्गि गयं गणि साहि, संमुहि[1] गज ढिल्यौ ॥
धरनी धीर पुंडीर साहि, संमुष असु मिल्यौ[2]।
भिरै[3] सांग सूं सांग, नेज नेजानि फररक्के।
ढाल ढाल ढहढहै, गहै मुछनि फररक्के।
इम दुंदुभि वाजत इसन, घन डुंडु मेल हम्मीर लिय।
हय कंध डारि अरु उसरचौ, पैज पुंडीर प्रमान किय ॥८१॥

छंद भुजंगी

गह्यौ साहि हत्थं जु पुंडीर रानं। कहै सार सावंत पैजं प्रमानं।
हन्यो[4] इक्क गजराज कोटं समानं[4]। कहै देव देवा जु भारथ पुरानं ॥८२॥
कहै[6] चंद बत्ती रदं वार दानं। कहै चंद सूरज्ज कित्ती वषानं।
वेद म्रज्जाद समुद्दं सुषानं। सुनै[7] सोर केनं[8] जु नष्षं बहानं ॥८३॥
अश्वनी कुमार[9] वासं कहानं। पथ्य पंडा जि जाधं रचानं[10]।
कहै चंद कित्ती जु वेली वषानं। रहै झल्ल मेलं सुरत्तांन संगं ॥८४॥
जैत चामुण्ड हासे अभंगं। धीर पुंडीर पैजं पुरानं।
कियौ षंड हत्थं रुधिर द्वार वानं। हेमं समानं जु सीहं पलानं ॥८ ॥
दुहुं दास अंको जु कोठं पठानं। तिनै लुट्टि लाहोर आयौ समानं।
कियं स्वामि काजं जु पिंज प्रमाणं।.......................॥८६॥

---

1 BK2 BK3 संमुह। 2 BK2 में निम्न लिखित पाठ अधिक है, और प्रक्षिप्त है— इसन डुंड किय टूक, संड टुट्टिय सुंड्राहल।
परत भूमि सुरतान षांन, किन्यो कोलाहल।
झकझोरि मोरि उद्धरि उधर गहि हमेल हम्मीर लिय।
3 BK 2 BK3 में चारों पद छूट गये। केवल BK3 में "इसन — डुंडु मेल हम्मीर लिय" पाठ है। 4 BK2 BK3 हन्यो। 5 BK2 BK3 सामानं। 6 BK2 BK3 कहीं चंद वत्तं रदानं। 7 BK1 सुनौ। 8 BK2 केलं। 9 BK1 कुमर 10 BK1 रबानं। 11 BK2 BK3 धार।

कवित्त

नव सै दस सिल्लार पास, अठ दह म्मीरह।
असी लष्ष साहन समूह, चहु पष्षे वर वीरह।
वेद लष्ष तरवारि सपहु, नेजा पसरंतह।
अट्ठ लष्ष घोरं धार मेघ, जिमि सर वरषंतह।
पुंडीर राइ कालं सरिस, भुव भुवंग चित्तहं धरिय।
चौरंग वंस पुंडीरह इ, साहि गह्यौ सस्त्री हन्यौ ॥८७॥

दोहा

गहिव साहि गौ धीर घर, गौषनि मुलितांन।
जित्ति राइ सह उत रहिय, जै लुट्टै सहु जांनि ॥८८॥
वरष वासवै जल कह्यौ, धीर निहोरौ ताहि[1]।
कछु[2] अप कर कर गहि, तबहि धीर गह्यौ पतिसाह ॥८९॥
गुरु ना गयौ[3] गोरी घरह, पर्यौ न देखत प्रांन।
उकति चिंत प्रथिराज भइ[4], धीर गह्यौ[5] सुरितांन ॥९०॥

कवित्त

सुंडा डंड[6] पयंड मुंड, षंडनौ षरक्यौ।
सिल्लारा[7] सुर ससुर बिज्ज[8], उज्जल उझनक्यौ[9]।
गहि गोरी गंजियौ[10], गहिव भुत्र वल उप्पार्यौ।
राइ सर[11] सरायह तुहिव, रुधिरा पष्षार्यौ।
झगरौ झनप्पि भन्यौ हथ्थो, है वर टट्टर[12] अभय हुव।
सो असि वर सज्जहिं बिज्जए, धीर[13] लज्ज दिज्जै न तुव ॥९१॥

छंद मोदक

[गुरु पंच दह मत्त पयौ। श्रिय नाग हन्यौ हरि वाहन यौ।
इति छंद विछंद विलास लहै, तिनि मोदक छंदह छंदु कहै॥]

---

1 BK2 ताहि। 2 BK2 यह समस्त पद छूट गया, BK3 यहां त्रोटक है। 3 BK1 गय। 4 BK1 भै। 5 BK2 BK3 गह्यौउ। 6 BK3 डुंडु। 7 BK2 BK3 यह समस्त पद दो बार लिखा है। 8 BK2 विज्जै BK3 विज्जउ। 9 BK3 उसनच भउ। 10 BK2 BK3 गंजयो। 11 BK2 BK3 सरिस रायह। 12 BK1 टट्टर। 13 BK1 धीरज्जां।

दव दुर्ग निसा दिन तुच्छ रमै । चक चक्कि जिमै भमि चित्त भमै ।
जरि सीतल मंथन वारि जयो । विरही जन रंजन हारि जयौ ।।६२।।
घनसार मृगम्मद पांन कियं । छिन भज्जित लज्जित लोचनयं ।
तन कंपत जंपत मोचनयं । नव कुंडल मंडल कर्ण नवं ।
कच अभ्र घटा विचि[1] विज्जु भवै । कुसुमावलि छुट्टि लवंग वगं ।
रत्ति विछुट्टित पंति चगं । श्रम बुंदनि मुत्ति झरै उरनं ।।६३।।
गलति जन गंभ[2] सिव स्सरनं[3] । कटि मंडल घंट रवन्ति रवै ।
सुर मंज मंजीर अमृत[4] श्रवै । रति उज्ज अमोज तरंग भरी ।।६४।।
हिमवंत रिती रत राज करी । गुरु गुरुव चाव रनंद ।
लहु वरन विच बिंब इंद । विच हीर पय रस चंद ।।६५।।

छंद त्रोटक

रति सिसिर सर्वर सोर । परिपत्त पवन झकोर ।
तन त्रिगुण तूल[5] तमोर । घन अगर गंध निचोर ।।६६।।
भुव भोज व्यंजन भोर । लव अमलनि क्रू कटोर ।
रस मधुर मिश्रित घोर । रति रसन[6] रम नित जोर ।।६७।।
कल कलस निन्त कलोर । वप श्याम गुण अति गोर ।
पर ग्म्मि इम्म सडोर । अवलोक लोचन[7] चोर ।।६८।।
सुष इछति मुक्ति सकोइ ।......................
इति सिसिर[8] सुष विलसंत । रितुराय[9] आइ वसंत ।।६९।।

[सगना जिहि च्यारि परंत गुरं । सोइ त्रोटक छंद प्रमान धरं ।
पय मत्त चये वर ते वरनं । निय नाग कहै वपु[10] पुण्य जणं ।।१००।।]

छंद पद्धड़ी

पवनं भंगति सीत सुगंध सु मंद । लगइ भमरी तन मन्न अनंद ।
जागि जग्गि सनानि लता भइ दार । सुनि कन्निय[11] कंठीय कंठ सहार ।।१०१

---

1 BK2 विच । 2 BK2 BK3 गलती ग्यंभ । 3 BK2 BK3 स्सरिनं ।
4 BK2 BK3 अमीत । 5 BK3 तून । 6 BK2 रमन । 7 BK2 BK3 लोकन ।
8 BK1 सिसर । 9 BK1 राइ । 10 BK2 वषु जाज्य वरयं, BK3 वषु जाण्यं ।
11 BK2 BK3 कन्नि ।

कुहु कुहु कांम सु धांम धमारि। जे जप्पिय[1] पंष प्रगट्ट संवारि।
मुकलित्त मलित्त हलित्त पनं। नव नक्करि चंद रिसंम्य सुनं ॥१०२॥
पृथ पृथु पिम्म उभं मुष लग्गि। सु दार विरत्थ[2] मनोरथ मग्गि।
उदे नलिनी अलिनी रद मंझ। मधु व्रत मद्धि[3] बसौं जिमि संझ[4] ॥१०३॥
रह्यौ गहि संपट चंपट नारि। सुपिंग पराग हरै उनहारि।
रस द्रुम घुंटि गुलाल पृथान। घरि घटि लागि पियौ अलि और ॥१०४॥
मधु रस्स मिश्रित पट्टर दार। वजै रव रंग उपंग समार।
सवित्ति सुवित्तम कुंकुम[5] काज। षिजै षुज षीजि[6] अहो षगरांज ॥१०५
ति चंपक चारु मनं मधु बिन्दु। दरस्सन देव कि.............. ।
सगं धनि अंग सुपंग पराग। लुटै लगि कुंठक कोइ अभाग ॥१०६॥
वलं व्रत बेलि विलंबहि वेलि। करै दिन कंक करान्नय[7] केलि!
लवक्कि अलंगित बंगियै हार। गनौ न कुसुम्म सुगंध अपार ॥१०७॥
सह्यो[8] न वियोग भले सिर गात। तज्यौ[9] तन कंत दसंत प्रभात।
अव स्मर प्रीति न मुक्कहिं प्राण। हसहि[10] तिनै वयन्न सुजांन ॥१०८॥

साटक

श्यामंगं कल धूत पूत सिसिर[11], मधुरे हि मधु वेष्टिता।
वाता सीत सुगंध मंद सरसा, आलोल सा वेष्टिता।
कंठी कूल कुलाहले बकलया, कामस्य उद्दीपनो।
एते ते ढ़िवसा पतंति[12] सरसा[13], संजोगता भोगाइने ॥१०९॥
दीहा दीग्घ सु सुंदरोय अनिला, आवत्त मित्रा[14] करं।
रेने सेन दिसेन थांन मलिना, गो मग्ग आडंबरं।
तीरे नीर अपीन छीन छपया, तपया तरुण्या मतं।
मलया चंदन चंद नंद किरणे, ग्रीष्मे च आषेचनं ॥११०॥

---

1 BK2 BK3 डे डुंपिय। 2 BK1 विररत्थ, BK3 विरथा। 3 BK3 मद्धे। 4 BK3 संक। 5 BK2 BK2 BK3 कुमकुम। 6 BK2, 3 षिहि। 7 BK2 BK3 करनिय। 8 BK2 BK3 सहो। 9 BK2 BK3 तजौ। 10 BK2 BK3 हसही। 11 BK1 सिषरे। 12 BK3 तपंति। 13 BK2 BK3 सरिसा। 14 BK1 मित्ताकरं।

आले बद्दल मंद मत्त दिसयो[1], दामिन्य दामायते ।
सिंगाराय वसुंधरा सुललिता, सलिता समुद्राइते ।
जामिन्या सम वासरे विसरिता, प्रावृट सुपश्यामिते ।
पप्पीहानि सुनन्ति सद्द सुरया, विरहन्नि तीरायते[2] ।।१११।।
पित्रे पुत्त सनेह गेह भुगता, भोगादि दिव्या दिने ।
राजा छत्र निशा ज राज छितया, निंदा चला भाषितो ।
कुसुमे कांतिग चंद निर्मल कला, दीपन्न[3] वरदाइतो ।
मा मुक्के पिय चाल नाल समया, सरदाय दरदायते[4] ।।११२।।
छीनं श्वास वासरं दिग्घ निसया, सीतेन जीनं वने ।
सज्जा सज्जर वास जूह तनया, आनंग आनंगने ।
बाला तंनु निवृत्ति पत्ति नलिनी, दीनान जीव छिने ।
संक्रांते हिमवंत मत्त गवने, प्रमदानि आलंबने ।।११३।।
रोगाली घन नील भूधर वरं, गिरिउ गुना रायते ।
यवया पीनकु वानि जानि शिथिला, कुंकार झंकारया ।
शिशिरे सर्वरि वारिणेय विरहा, माकृष्ट विद्दारया ।
माक्रांते मृग[5] बद्ध सिंध रवने[6], किं देव उच्छारये ।।११४।।

दोहा

भर अनंग अथिय[7] महिल, रति बट्ढिय घटि सार ।
विपरित दिन ढिल्लिय सहर, नृपति अलुज्झिय मार ।।११५।।

इति श्री कविचंद विरचिते पृथ्वीराज रासे कनवज्जत: ढिल्यां पुनरागमन सामंत धीर पुंडीर हस्ते गोरि: सहाबदीन निग्रह षट रितु श्रृंगार वर्णन नाम त्रयोदश: षंड: ॥१३॥.

---

1 BK2 दिसया। 2 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया। 3 BK2 दीपान, BK3 दीपन। 4 BK2 वरदायतो। 5 BK[3] मग। 6 BK2 रावने। 7 BK2 अथ्थिय्य, BK3 अच्छिय।

चतुर्दश खंड

वार्ता

तिन दिननि[1] तैं एक हि दिवसु[2] सुरितांन वा राम करि, आनि षरे हुवै। तत्तार षां पूछ्या—बहुत रोज भये कछु ढिल्लिय तैं–षबरि न आई, तब तत्तार षांन बोल्या—पातिसाहि सलामति षैर षूब है, सिरजनहार करैं तौ जिहिं हिंदू पातिसाह[3] सूं बे आदबी करी देहै तिस हिंदू के टूक टूक करैंगे। भी एक्क बेर दूत भेजिए[4]।

अनुष्टुप

चिरं तपो फलं राजा, चिरं राज प्रभोः[5] फलं।
चिरं[6] नाम धने दाता, चिरं दूतस्य लक्षणं ॥१॥

कवित्त

तब सुसाहि गज्जनै दूत, ढिल्लीय पठाये।
जु कछु मन्न कौ मंत तंत, कहि कहि समुझाए।
लै आवु जंगल नरेस, सब षवरि सबुद्धिय।
राज काज चहुवांन सकल, सामंतहं सुद्धिय।
लियौ साहि फुरमांन सेस, सो भी तिन किन्नौ[7]।
उभय पषष क्रम पंथक[8] गरु, काइब कर[9] दिन्नौ ॥२॥

गाथा

वर वर वेत्तति सिद्धं लिद्धं, चहुवांन राजधानीयं।
सह दूतं पंथानं गोरीयं जत्थ जानाति ॥३॥

वार्ता

धम्म[10] न काइ थपै, षबरि पाइ, तबहिं दूत गज्जनै कूं धाए।

---

1 BK1 दिन। BK2 दिवस। 3 BK2 BK3 पातिसाहि सौं। 4 BK2 भेजीयै। 5 BK2 BK3 प्रभु। 6 BK2 चिरे। 7 BK3 कन्नौ। 8 BK1 पथक। 9 कार। 10 BK1 धम्मं।

केतेक रोजनि मै दरवारि जाइ षरे हुवै। पातिसाह षैरीदं षैरीदं।

गाथा

षैरीदं सुलतानं दुसमन, दैवान महल त्थायं।
भर सह रत्त विरत्ता, आयातं गोरियं दोइ[1] ॥४॥

वार्ता

सावंतनि मन ज्जरै। चौंडराव वैरचौ। भोरे राइ जैत सी पासि भेद रा बुझ्या। पुंडीरौ लाहौर लुब्यौ। भोवा दुनियां मूंकी। माल देव भोति जु की देवरा दीवानि[2] छोड्या। जादवा वीर उड्याह, जाति शुं दाइ षेल आ समर दाम मेल।

दोहा

वर वर वत्तनि सव्व सुनि, झुकि किय घोष निसान।
सत्त सहस कग्गर कहा, पहु फुट्टत फुरमांन॥६॥

वार्ता

ते केहा फुरमान पढै जिमी सुविहान सुरतांन जल्लालदीन जाया, सुरतांन सहाब दीन पेस पर पेस सिताबी। दुसमन जोरवान हत्थै सितान वर परवर, उनकै तोबा[3] करि दइ, इनके कहा है।

दोहा

चढ़ि अचान ढिल्लीय सहर, बढ्यौ साहि सुरितांन।
घर अंगन अंगन कुरिग, सुनत सूर अकुलांन॥७॥

मुडिल्ल

सकल लोइ पच्छन गुरु इच्छहि।
गुरु षट मास राज अन दिष्षहि।
यह प्रजानि[4] परपंच उपायौ।
तब गुरु पुच्छन चंदहि आयौ॥८॥

---

1 BK3 दाइ। 2 BK3 दिवानि। 3 BK3 तौ। 4 BK2 BK3 प्रजानै।

दोहा

आदर चंद अनंत किय, गृह आवत गुरराज।
सम सुत[1] सत्रियणि चरण परि, सिर फेरिग सब साज ।।६।।

मुड़िल्ल

तब गुरु राज राज कवि बुझ्यो। तू वरदाइ तिहुँ पुर सुझ्यौं[2]।
जिहिं अह[3] निसि सेवत[4] गुरु वांनी। तिहिं षट मास मिले विन जांनी ।।१०।।

दोहा

हस्यो[5] चंदवर विप्र स्यौं, तुम जानहु बहु भांति।
जिहिं कामिनि कलह क्कियो[6], सो जामिनि विलसंति ।।११।।

अड़िल्ल

कहिय चंद वर विप्रन मानिय। रहि रहि कवि सोइ[7] बात न जांनिय !
धनु त्रिय मरन त्रिनंचर मानिय। सु किमि देव त्रिय वसि करि जांनिय ।।१२।।

मुड़िल्ल

तुम सम दृष्ट्रि[8] अरिष्टनि[9] दिष्यौ। असिय लष दल गहि गहि भष्यौ।
प्रांन समान परत दव छोह्यौ। मरन छांडि महिला मुष मोह्यौ ।।१३।।

अड़िल्ल

जिहि महिला महिला[10] विसराई। अरु गुरु देव सेव सुनि साई।
विभौ भुम्मि भृत जाइ सुजाई। सुनि सुनि समौ राज गुरु राई ।।१४।।

दोहा

समौ जानि गुरुराज कहि, कहि कहि कवि इह बत्त।
किम वय किम रूपह र बनि, किम राजन रस रत्त ।।१५।।
जोबन तन मंडन समै, सिसु मंडन तन बोल।

---

1 BK1 सत। 2 BK2 BK3 सुझ्झउ। 3 BK1 अहि। 4 BK2 BK3 सेवते 5 BK2 BK3 हस्यउ। 6 BK2 BK3 क्कियउ। 7 BK1 सोई 8 BK1 BK2 द्दष्ट। 9 BK2 अरि न। 10 BK2 माहिला।

बालप्पन सहि विच्छुरत[1], तिहिं चित चंचल लोल ॥१६॥

गाथा

जंजोई संजोई जोईतं, सिद्ध जन मांनि ।
न जोई संजोई जोईतं, सिद्ध जन मांनि ॥१७॥

छंद [अडिल्ल]

संजोगि जोबन जंमनं। सुनि श्रवण दे गुरु राजनं।
तल चरण अरुणि ति अद्धनं। जनु श्रीय श्रीषंड[2] लद्धनं ॥१८॥
नष कुंद मल्लिमु वेसनं। प्रतिबिंब श्रोन सुदेसनं।
गय हंस मग्ग उत्थप्पनं। नग हेम हीर जु थप्पनं ॥१६॥
कसि कासमीर सुरंगनं। विपरीति रंभति जघनं[3]।
रसनेव रंज नितंबिनी। कुसुमेष एष बिलंबिनी ॥२०॥
उर भार भद्धि विभंजनं। दिययं उरोज जु थंभनं।
कुच कंज परसत जंगली। मुष मोष[4] दोष कलक्कली ॥२१॥
हिय अइन सइन ति मैनयो[5]। तजि गृहन जिय तहं रंजयो[6]।
जन हीन झीन ति कंचुकी। भुज ओट जोट ति पंचुकी ॥२२॥
नलि[7] नाभि नाभि[8] ति अत्थयौ[9]। जनु कुंड कुंदन संचयौ।
कल ग्रीव रेख त्रिबल्लियौ। जनु पंचजन्य सुधा लियौ ॥२३॥
अधरे वयक्क सु बिंबनं। सुक सारि आरिन षंडनं।
दसनेव सुक्ति सु नंदनं। प्रतिवास तुरकित बंदनं ॥२४॥
मधु मधुरया मधु सद्दया[10]। कलयट्ठ काकल बद्दया।
हुव भवन जीवन नासिका। निसु[11] अंजनी प्रिय नासिका ॥२५॥
झलमलत श्रवन तटंकता। रथ अंग अर्क विलंबिता।
भ्रुव इच्छ इच्छहि वंकसी। जनु व्याप ज्यावन संकसी ॥२६॥

---

1 BK1 विच्छुरत। 2 BK1 सीषंड। 3 BK2 BK3 जंभ घनं। 4 BK2 BK3 मौष। 5 BK2 BK3 मइनउ। 6 BK2 BK3 रंजयो। 7 BK1 नल। 8 BK1 नाभित। 9 BK2 BK3 अत्थयउ। 10 BK1 मधु मधुर याम मधु सद्दथा। 11 BK2 BK3 नेसु।

सित अमित रत रल पंगयं[1]। अभिसरत षंजन वत्थयं।
भ्रुव[2] वरुनि भूय वरन्ननं[3]। नव निकसि अलि सुत अंगनं[4] ।।२७।।
सुत इंदु मृग मद विंदुजा। चष इंदु निंदइ सिंधुजा।
कच वक्र चक्रित कुंतलं। तन उप्पमा नहि भूतलं।।२८।।
मणि बृन्द पुहप ति दीसयो। कनु कन्द कालीय सीसयो।
त्रिसरावलि वलि वेनियं[5]। अवलंबि[8] अलिकुल सेनियं।।२९।।
चित चिंत चिंतति अंबरं। रति जानि संबरं।
.... ।।३०।।

दोहा

सम रस मंडन समरं गृह, समर सुर प्पुर भोग।
सम रस जित्तिय पंगं, नृप तं बल्लह संजोग।।३१।।
मानि राजगुरु राज रस, तै कवि वरनी सत्ति[7]।
जस भावी नर भुग्गवे[8], तस विध अप्पे मत्ति।।३२।।
उभै उभै रस उप्पजै[9], मिले चंद गुरु राज।
कै विय वहि अवनिहि मिलै, किनै न[10] निरषहि राज ।।३३।।

रासा

मिले चंद गुरु राज, विराजहिं राज दर।
तहं पंगान प्रमान कियो, पृथ्वीराज कर।
तहां अंबज[11] वर वास, विलासहि सुंदरिय।
भृत विन[12] नृप दरबार जु, नग विनु मुंदरिय।।३४।।

---

1 BK2 BK3 अपंगयं। 2 BK1 भुव। 3 BK1 वरन्नवं। 4 BK1 अंनगं।
5BK1 वेनयं। 6 BK2 BK3 अवलंनि। 7 BK3 'सत्ति' शब्द के पश्चात् "समरस जित्तिय दंग, नृप तंब" पद्यांश की आवृत्ति है। 8 BK1 भुग्गथे।
9 BK2 BK3 उप्पजो। 10 BK2 BK3 नि। 1 BK2 BK3 अप्पु।
12 BK1 न।

दोहा

जंपि कह्यौ कविराज गुरु, कंपि कपट निवारि ।
कोइ गुद्दरै नरेस सौं, दिसि गज्जनै पुकार ॥३५॥

रासा

कुटिल भौंह वपु सोहति, मोहन दास दस ।
कछु हंसि कछु पै लग्गि, पयंपै[1] अलि रस ।
तुम सर वग्गि सु कव्वि राज[2], गुरु राज सम ।
तुम तन सुमन निरष्षि गए, पत्ति पाप हम ॥३६॥

दोहा

आसन दिय अनुचरन[3] परि, कच झारि तन रेन ।
सुभहिं सिंगारहि सुंदरिय, आदर आभर नैन ॥३७॥
आदरु अति दिन्नौं तनहि, आइस मंग्यौ[4] दासि ।
कहा पयंपहि नृपति सौं, कहहु चंद गुरु भाषि ॥३८॥
कग्गरु[5] अप्पौ दासि कर, मुष जंपी यह बत्त ।
गोरीय रत्तो तुव धरनि, तूं गोरी अनुरत्त ॥३९॥
दासि संपत्तिय तिहि महल, जहां संजोगि नरिंद ।
सम सुष सषिन निरष्षियौ[6], मनहु पृथ्वीपति इंद ॥४०॥
अना महल दासि निरषि, परषिय जंपन जोग ।
उन्नत मुष रुष राज किय, नृपति समत्तउ[7] लोग ॥४१॥
इय कहि दासिय अप्पि कर, लिषि जु दियौ कवि चंद ।
पहिली आवली बंचियौ, रे भुइं जाइ नरिंद ॥४२॥

कागर वाच्यउ । कवित्त

गज्जनेस आइस असंभ, सब सैन सकिल्लिय ।
इह चादरि[9] आदरिय आनि, ढिल्लिय तन मिल्लिग ।

---

1 BK2 BK3 पयंपइ । 2 BK3 "राज गुरु" शब्द छूट गये । 3 BK1 अनुचरनि पर । 4 BK3 मंग्यो । 5 BK2 BK3 कग्गर अप्पउ । 6 BK2 BK3 निरषियो । 7 BK1 समत्तो । 8 BK1 भुइं । 9 BK1 चादरं ।

दस हजार वारुनि बिसाल, दस लष[1] तुरंगम ।
तहं अनेक भर सुहर भीर, गंभीर अभंगम ।
आवर्त्त बान चहुवांन सुनि, प्रांन रषि आरम्भ करि ।
सावंतन हि सावंत करि, जिनि बोरहि ढिल्लिय[2] सु परि ॥४३॥

दोहा

सुनि कग्गद कुद्यो सु कर, धर रषै गुरु भट्ट ।
तमंकि तूंन सिंगिनि सुकर, जिमि बदल्यौ रस नट्ट ॥४४॥
सु प्रिय प्रिय दिष्षौ[3] वदत, किय जिय निर्भय साथ,
बहु पूज्यो बयन तुह कहि, समि घोरति रतिनाथ ॥४५॥

कवित्त

कहै सु प्रिय कामिनी कंत, धन धर्‌यौ तो न धन ।
सुष कुमार आरुहो सार, संसार मरन मन[4] ।
दिन दिनियर दिन चंद रैनि, दिनियर दिन आवै ।
अंत जंत यह वरन श्रवन[5], लग्गिवि समझावै ।
अरधंग धार अरधंग हम, अरि अर धर अरधंग[6] करि ।
जस हंस हंस जस हंसिनी, सर सुभ्भै पंकजन परि[7] ॥४६॥

कवित्त

अज्ज सुपन सुंदरिय रंभ, लग्गिय परिरम्भह[8] ।
तहं तु वत्तीय सुकीय तेज, अच्छरि रवि गंतह[9] ।
तिनि तुम मिलि झगरच्चउ, गहै कर वर वर जंपै ।
तहं अदिष्ट अरिष्ट द्रिष्टि, दानव तन चंपै ।

---

1 BK2 BK3 लरक । 2 BK2 घोरहि । 3 BK3 दिष्षो । 4 BK3 मना ।
5 BK1 श्रवण । 6 BK2 BK3 अरंग । 7 BK1 पर, BK2 BK3 में यह निम्नलिखित दोहा अधिक है—

कहि राजा संजोगि सुनि, सुपनह कत्थ अकत्थ ।
श्रवनि मंडि कनवज्जिनि, रसा सुपनंतर तत्थ ॥

8 BK1 परिरंभय । 9 BK2 गंभह ।

तहं हन्न तन्न[1] नन अच्छरिय, हर हर सु उपज्यौ।
जान्यौ न देव दैवान गति, कहि न्निमांन विहि निर्मयौ ॥४७॥

सो सुपनंतर सुनिव राजगुरु[2], अनु कवि बुल्ल्यो[3]।
सो सुपनंतर सुनिव तेन[4], मुष तिन प्रति षुल्यौ[5]।
सवर हत्थ मनमत्थ अभय, पंजर पठि दिन्नौ।
दस दिन ते तहं मिलिव गुनी, गुन अरथहं भिन्नौ।
दिस[6] वलि दिसान दस महिष, अह ति मंत अनंतक दान दिय।
तिहि[7] दिवस देव पृथिराज कर, संझ सुहर भर महल दिय ॥४८॥

दोहा

करि महलु मति मंडि छंडि, चावंड राइ वर दंद।
वागरी देव राउ दरस्यौ, नृपति सुमन भा आनंद ॥४९॥
आनंदे भृत भर सुहर, दीन दुलह नृप काज।
बंध बंध्यो बहुरिं साह, गहहु तिहिं साज ॥५०॥

कवित्त

चहुवांनां वर वंस बाल, वेदी जग जुत्ता।
तारा जन कृत कज्ज सेति, सावंत उप्पत्ता।
पंच सूर एकग्ग जत्थ, कच्छहं कुल जाए।
दीयै[8] कर्म्म कर जोग भोग, जुग्गिनि पुर जाए।
ता अनुज राज भगिनी पृथा, वर सकेलि रावल समर।
सग पनह प्रीति वासर सु दश, निगम बोध उत्तरिय धर ॥५१॥
वास मदन सावंत राज, संजोगि सपन्ने।
हय हत्थी सिंगार हेम, नगमुत्ति सु दिन्ने॥

---

1 BK1 तहह तत्तनन, BK3 तहन्न तत्तनन। 2 BK2 BK3 राजू। 3 BK2 BK3 बुल्यउ। 4 BK2 BK3 तेनि। 5 BK2 BK3 षुल्यउ। 6 BK2 यह समस्त पद छूट गया। 7 BK1 तहं। 8 BK2 BK3 दैय।

पृथा कंत घर जाहु हमहिं, गोरी[1] घरि लग्गी।
किं जानै[2] किउ[3] होइ काह, सज्जी काह[4] भग्गी।
संभर हु जाइ संभरि धरा, उर संभरि अवधार्यौ।
सब जंत रीति जांमन[5] मरण, समर राइ विच्चारियौ ।।५२।।
चवं चंदानौ[6] आयास वास, भृकुटी रुद्रानौ।
है नाना घर सूर कुंवर, अश्विन[7] नीसानौ।
जीहं स्वाद जल वरुन करन, मंडल पवनालय[8]।
बाहु इंद्र आसरिय ब्रह्म, इंद्रिय दासालय।
सब देव विष्णु आग्या रमै, प्रांनह आनंदित फिरै[9]।
चित्रंग राउल बल[10] पाहुनौ[11], सवन[12] आस भग्गह भिरै ।।५३।।
पाहुन्ना पर दीप काज पर, जै कांइ जुझ्यौ।
चहुवांनां कुल पूज्ज[13] देव, द्विजवर किमि[14] सुझ्यौ।
तुम पुट्ठइ[15] गिरि जंग[16], दुर्ग दारुन गंभीरा।
गुज्जर वै माल वीहम[17], भज्जौ हम्मीरा।
फल फूल पत्र अम्बर सुवर, मुकुट बंध चामर सुरस[18]।
सावंत सूर जोरा धरा, इक्कस दिन मन्नहु वरस ।।५४।।
मोमं[19] जागी दाल माल, कमला रुद्रानी।
मोगानं[20] मुष सिलिय ब्रह्म, मोगर सिद्धानी।
सिंगी रा अवधूत जोग, बंछ्यौ जुद्धानी।

---

1 BK2 गोरिय। 2 BK2 BK3 जानं। 3 BK2 BK3 किं। 4 BK2 BK3 का। 5 BK2 BK3 जंमन मरन। 6 BK2 BK3 चंदानो। 7 BK1 अश्वनि। 8 BK3 पवना भयं। 9 BK2 BK3 आनंदितौ फिरे। 10 BK2 बवै। 11 BK2 पाहुन्नौ। 12 BK2 BK3 'मवन आस' पद्यांश छूट गया। 13 BK2 पुज्य। 14 BK1 किम। । 15 BK1 पुट्ठै। 16 BK2 BK1 जुंग। 17 BK2 BK1 हाम। 18 BK2 BK3 सरस। 19 BK2 में। 20 BK3 मेगानं।

आहुट्ठा मझ्झामि स्वामि, कहि जौ सुरतांनी।
सामंत मंत केतो[1] कहौं, तैं घर वर गोरी बहन।
कालंक राइ कप्पन विरद, महन रंभ बाहो करन ।।५५।।
महन रंभि आरम्भि[2] राज, रावल रा हिंदु।
सत्त मत्त वर वत्त जमन, जुग्गिनि ग्रह जिंदू।
चाहुवांन कूरम्म गौड़, गाजी बड़ गुज्जर।
जद्दौ रा रघुवंस पार, पुट्टी[4] रति पष्षर।
राठौड पंवार मुरस्थली, ब्रह्म चाल जंगल भरा।
चावंड राइ जद्दौ[5] नृपति, सौ कि वार संभरि धरा ।।५६।।

दोहा

पंगी पाग सुरंग जग, सामंता सति भाय।
जुद्ध निबंधौ साहसौ, छंड्यौ चामुंड[6] राय ।।५७।।
छंड्यौ जाइ चावंड कहुं, जुग्गिनि पुरहं नरेस।
घर रष्षन जै तोहि नृपति, करि आदरु नरेसु ।।५८।।

कवित्त

जिहिं बंभन उच्छाहि ठेलि, ठट्टौ पज्जारिय।
जिहिं मोगर मेवात मारि, मोहल[7] उज्जारिय।
जिहिं केहरि कट्टेरि तारि, कढ्यौ तत्तारै।
ते राया रघुवंस आइ, सम्भरि सम्भारै।
इदंपत्थ[8] सु पत्थे कारणै, चाहर बीर विचारिया।
जावार वीर कट्टन नृपति, राज पौरि पधारिया ।।५९।।

दोहा

इकु सुरितांन अवाज्ञ सुनि, विय राजन घर आइ।
देइ अनंद वधाइया, है घर चावंड राइ ।।६०।।

---

1 BK1 BK3 कोती। 2 BK2 BK3 आरंभ। 3 BK1 राजा 4 BK2 BK3 पूड़ी। 5 BK2 BK3 जद्दो नृप। 6 BK1 चावंड राइ। 7 BK2 BK3 मोहिल। 8 BK2 BK3—पथ।

गए चंद सावंत तह, जहं चावंड वर वीर।
देष्यौ[1] देव ममान तह, सूर सूर त्तन धीर[2] ॥६१॥

सीला सैंगरि मानु जहि, तै नौ षीर षिवाइ।
सिंघिनी सिंघ जु जाइया[3], है घर दाहर राइ ॥६२॥

वैरी सौं पग सम्मुहौं, सो राजन पग लग्गि।
सु ठट्ठा जु सुहाइया[4], जेन[5] उनाही अग्गि ॥६३॥

लज्जए[6] श्रीमानीय सघन, आपन नैंन दुराइ।
सावंता सौं यौं कह्यौ, कढ़ौ लोहनीन[8] पाइ ॥६४॥

वेरी कड्ढी[8] चरण तैं,[9] नमित कियौ[10] तिहिं सीस।
राजा मनह आनन्द किय[11], देन कही बकसीस ॥६५॥

जाहु सबे सावंत तहां, जहां नृपति पृथिराज[12]।
ता दिन मुक्यौ लोह पथ, मौ सौं कछु न काज ॥६६॥

रोजा नाम पुंडीर कुल, ते नौ पुत्तीय[13] प्रताप।
सो राजन पग लग्गिया, आज हनंदे पाप ॥६७॥

डेड्ढ हजार सुरंग वर, हस्ती तेर हजार।
मोती माल सुरंग दस, राजन रषि विचार ॥३८॥

चीर पटंबर फेरि सिर, बज्जी वज्जन लग्ग।
वर वरदाइ वरद्दिया, बोल सु मग्गन लग्ग ॥३६॥

पंवारा पुंडीरयां, कूरम्मा जद्दौनि।
गज्जरिया दाहम्मिया[14], घरै कि लग्गो कौनि ॥७०॥

लै[15] रष्षी निज आलि करी, बड्डा बड्डम बोली।
जीरन जग्ग सु सद्दही[16], ढिल्लीहं दे ढोंल ॥७१॥

---

1 BK3 देष्यो। 2 BK3 सूर सत्त रनधीर। 3 BK1 जाईया। 4 BK1 सुहाइया। 5 BK2 BK3 जीनि। 6 BK3 लजए। 7 BK2 लोह तीन। 8 BK2 BK3 कढी। 9 BK2 BK3 चरणांते। 10 BK 2 BK3 कीयो। 11 BK2 BK3 कीय। 12 BK3 पृथिराज। 13 BK2 BK3 पुत्ति। 14 BK3 दाहिम्मिया। 15 BK1 लै ररकी। 16। BK2 सु सद्दाही।

कवित्त

जह जद्दौ जामान राज, लग्गौ कूरम्मा।
षीची राइ प्रसंग देव, वग्गरी दुरम्भा।
गज्जरा राम दै जैत, साहिब अब्बूरा।
हुइ अवारि हुस्यारि, द्यौस भग्गौ[1] अब्बूरा।
मुष जीह लोल बोलहु घना, राजन काज वरद्दिया।
पावै न पीर पंजर तन नीम, न पष्षह[2] भद्दह भिया ॥७२॥

दोहा

तनु तरवारिन बंटनौ, ह्यां वंटनौ न देस।
मो स्यों[3] बोलि न दाहिमा, हौं अप्पानो भेस ॥७३॥
वर वानै बंधै सकल, अप्प अप्पनै भाग।
तैं बांधी सुर तौ भई, तौन पर[4] षंगी षाग ॥७४॥
जौ मंड्यौ नृप पग्गह तौ[5], सो किम सज्जौं हत्थ।
नृप अयान पास न तजै, कहै चंद कवि सत्थ ॥७५॥

कवित्त

तैं जित्यौ गज्जनौ, तूं ज अड्डौ[6] हम्मीरां।
तैं जित्यो चालुक्क पहरि, सन्नाह सरीरां।
तैं पहु पंग नरिंद इंद, गहियौ जिमि राहह।
तैं गोरी दल बह्यौ वार, षट्टु जिमि दाहह।
तुव तुंग नग[7] तुव उच्च मन, त तौ पास न मिल्लियै।
चामंड राइ दाहर तनै, तो भुज उप्परि षिल्लियै ॥७६॥

दोहा

छोरि तेग नृप आपि कर, अप्पिय हत्थ सु मूर[8]।
लै चामुंड सु बंधि द्रिढ़[9], तूं धर रष्षन नूर[10] ॥७७॥

---

1 BK2 भग्गो बंबूरा, BK3 भगो बंबूरा। 2 BK2 BK3 पष्षै। 3 BK1 BK3 स्यां। 4 BK2 पर षंग षंगी षाग। 5 BK2 BB3 तै। 6 BK2 अडो। 7 BK3 नेग। 8 BK1 BK3 सूर। 9 BK1 द्रढ। 10 BK1 रूर।

सब सावंत जु सिरं धरी, मुष जंपौ यह वैन।
जा सिर पर पृथिराज है, भौ किहिं गौरी सैन[1] ।।७८।।
लोक लज्ज गृह लज्ज उर[2], लज्जा करि एक।
लहु लंगर कट्टन चरन, लरन हत्थ लइ नेक ।।७९।।

छंद रसावला

गहे[3] तेग सुब दंड, सावंत राजी। दियो वाजि राजं, मुजक्कं स ताजी।
छवी रत्त स्याहं, हब्री जानि अंबू। रच्यौ रूप राका, पक्यौ जानि जंबू ।।८०।।
जरौ जीन साकत्ति, है हेम हेलं। निसा निर्मलं कृष्ण ना छत्र भेलं।
उचं कंध कन्नं, नियं नैन नासी। गनै रंध रंधं, सुधा स्याम स्यासी ।।८१।।
नषं[4] मंडलं दंडि, सुम्मं सुढारे। उरं पुट्ठ मंसं, दुवं सै उधारे।
द्रुमं आसनं वाय, ढारंति वायं। छिमा छत्र छाया, तनौ वाजि रायं ।।८२।।

दोहा

वाजिराज दिन्नौ बकसि, मिलि मंगल गल लग्गि।
घन निसांन भेरी सबद, वीर जगावन लग्गि ।।८३।।

कवित्त

शिला इक्क पाषांन हत्थ, तीसह तन लंबी।
द्वादस हस्त चवसट्ठ[6] सट्ठि, अंगुल उदरंभी।
ता नीवै कंदरा तहां, कौ सर निद्दानौ।
ता ऊपर[7] तिहिं दिवस राज, बज्जै सादानौ।
आघात सुनिव करवट्ट लिय, बज्जे बज्जावन गुरिग।
अचरिज्ज[7] करिग सावंत प्रभु, भट्ट सहित पारस फिरिग ।।८४।।
इक्क कहै यह शिला, कहौ काहे ते हल्ली।
इक्क कहै मिलि उठौ, इस इह त उट्ठै भ्रम षुल्ली।
छह लंगर घर घालि, भ्राव लिनौ[9] उच्छंगह।
मुष अनिंद चष निंद, अंगि दिष्षो अति रंगह।

---

1 BK2 कितौ कि गौरा सैन। 2 BK[1] अर। 3 BK2 BK3 गह। 4 BK1 नषुं। 5 BK1 पुंग। 6 BK2 BK[3] चवष्ट। 7 BK3 उप्पर। 8 BK2 अचिरज्ज। 9 BK1 लिलनो।

प्रारत्थि चंद पुच्छे सु तिहिं, कह सु जनमु कह उप्पतिय[1]।
को मातु पितु को नाम तुम, किमि सुथांन इह निद किय ॥८५॥

छंद [रसावला]

चरन्नं ति श्यामं, समं रम्य[2] कामं। नषं पिंड भीतं, भयं भीत मीतं।
जुरे जांन रत्तं, हवी जानि[3] लत्तं। कटि नाभि नीलं, उरं सिंभ पीलं[4] ॥८६॥
वच्छं धर्म रूपं, भषे जोग भूपं। भुजा ग्रीव भूरी, सुरं सिंधु[5] मूरी।
सिरं सोत नित्तं, विराजं पवित्तं[6]। रजु ताम नैनं, जु सा तुक्क हैनं ॥८७॥
डकारंति डाकं, द्रिगं कंपि हाकं। महावीर वाली, दयाधर्म पालो।
वरं विप्र जीहं, न को लोपि हीहं। गयं गात गैनं[7], बोलि वरदाइ वैनं ॥८८॥

..वित्तु

दक्ष[8] प्रजापति जग्गि[9], रुद्र निद्रा सति संभरि।
तनु तिहिं मुक्यौ[10] ज्वलन, जग्गि[11] जन मंतरि मंजरि।
तब हय हय त्रिभुवन[12] नाग, नर गंध्रव गन भरि।
भरि न[13] वीय[14] सुभग्ग सुतो, पुक्कार छंडि रन।
भय भीत भूत वैताल घन, कुवलय[15] कंपि कैलास गिरि।
तिह न्निसल ईस लग्गिय नयन, जट सुगिंद्र[16] पिट्ठिय सु फिरि ॥८९॥
जटा जनम तद्दिनह नाम, मुहि वीर भद्र धरि।
तात अग्ग त्रिपुरारि जग्गि, विद्धंस मी सहरि[17]।
सति जुग्ग संकर्षनी तत्र, त्रेता तु जावालिय।
द्वापर दुभर सल्लि धर्म, धरनी प्रति पालिय।
आनंद निद जुग्गिनि नयर, काल नाम कलि जुग्ग[18] लहि[19]।

---

9 BK[1] उतिय। 2 BK3 रस्य। 3 BK1 जोनि। 4 BK2 BK3 स्यंभ। 5 BK[1] सिंध। 6 BK[3] पवितूं। 7 BK1 गेनं। 8 BK1 दक्षि। 9 BK2 जश्नि। 10 BK[3] मुक्यो। 11 BK2 BK3 जगिय। 12 BK2 BK[3] त्रिभुवनह। 13 BK1 नहि। 14 BK2 विय, BK3 विय। 15 BK3 कुव्रल। 16 BK1 सुद्ध गिद्र। 17 BK1 सहर। 18 BK2 जुगु, BK[3] जगु। 19 BK1 लिहि।

आवर्त्त[1] सौर फुट्यौ सुवन[2], किमि सु सोर[3] कवि चंद कहि ॥६०॥
इहि सु सोर सुनि स्वामि, इन्द्र वृत्तासुर लग्गिय।
इह सु सोर सुनि स्वामि, राम रावन घर भग्गिय[4]।
इय सुसोर सुनि स्वामि, कौर पांडौ[5] फट्यौ अलु।
इह सु सोर सुनि स्वामि, जरासंधह जद्दौ प्रभु।
यह सोर स्वामि सावंत कौ, सु-मति साहि गोरी वयर।
चामुंड राइ छुट्यौ लरन, इम सु सोर ढिल्लिय नयर ॥६१॥
तुम मनुष्य मत्ता हि मैं, देव देवासुर दिष्षै।
सा इंद्रिय तारक चन्द, राजा[6] नृप रष्षै।
रामायन मंडलो मधु, मागध मांधाता।
मान तुंग दुर्योध यथा, पंडव छह भ्राता।
वरदाइ दुर्ग दुर्गहं[7] सजिय, भट्ट जाति जीह दुन्नौ।
साधर्म जुद्ध हिंदुव तुर्क, कथा सुमंत तंतौ[8] सुनौ ॥६२॥
तुम देवासुर सुद्ध जुद्ध, देव दिष्षै जु[9] सयाने।
ए सामंत अमंत रूप, दिष्षिव विहसाने।
इनि आवध आवधानि, झाक बज्जे झक झाइ।
उत्तमंग उत्तरहिं सीस, हक्कइ धुक पाइ।
जिति रुधिर बुंद थल परहिं, तित[10] कंदल दल उट्ठहि भिरन।
उन वीर संग पुन[11] वीर हुव, निमष एक नच्चहं फिरन ॥६३॥

दोहा

जग्गि वीर मंडी नयन, वयनह अलप प्रबोध।
मोहि जगवै[12] जुद्ध कौं, विनु[13] दुर्योधन जोध ॥६४॥

---

1 BK3 सार। 2 BK[2] स्रवन। 3 BK1 सौर। 4 BK3 गिगय। 5 BK2 BK3 पांडव। 6 BK2 BK3 राज। 7 BK2 BK3 दुर्ग दुर्ग। 8 BK2 BK[3] तातौ सुन्नौ। 9 BK2 BK3 जं। 10 BK2 तिति। 11 BK2 तुम, BK3 पुम। 12 BK2 BK[3] जागावइ। 13 BK2 विन।

छंद भुजंगी

जिनै जोध दुर्योधनं[1] जुद्ध कीनं। जिनै दीह नव रूप कौ[2] वृत्त लीनं।
जिनै चक्र धारी करे चक्र रूपं। जिनै जाइ रुंधै तंही ताहि भूपं ॥९५॥
जिनै अप्प अप्पं प्रतिज्ञा निवारी। जिनै नंद नंदन पै पैज पारी।
जवै पत्थ हत्थं चषं कोपि[3] कोपं। क्रियं षंड इत्थं वने वान धोपं[4] ॥९६॥
हनूमान पत्यौ[5] पताषा पतंगं। हन्यौ[6] सेत वाजी जु तं जोति[7] भंगं।
अषै तून कट्टौ[8] न गंजीव गज्जै। दियं देव वत्तं धनुर्बान बज्जै ॥९७॥
कियौ छिन्न छिन्नं सनाहंति छिन्नं। जदुर्वेद वादी रुद्धि[9] देव भिन्नं।
सुतं श्याम रत्ता[10] जु सामं[11] सुदेसं[12]। मधुर्माधवे जानि माधुर्य केसं[13] ॥९८॥
जकी जोग माया बकी ध्यान थानं। कहै देव दैवान जानं न जानं।
न जानंति जानंति जानं न ज्ञानं[14]। न तंत्रीय जंत्रीय मंत्रीय मानं ॥९९॥
हयंती हयंती हयंती ति प्रानं। भरंती भरंती भरंती विवानं[15]।
रथंगी रथंगी रथं मन्नि पानं[16]।.................................॥१००॥
करै षंड षंडं षलू षंड जूरं। सुरंगं सुरंगं चर क्काज सूरं।
वितालं विताली करत्तार तूरं। पथं ष्यंग पथं कथं मार मारं[17] ॥१०१॥
कटि प्पट्ट छुट्यौ लुठै पट्ट पीतं। नर हीनस्य तूनं भयं भात भातं[18]।
....॥१०२॥

दोहा

भयभीत अभीत भीषम सुभर, इषु दिय अर्ध[19] उदार।

---

1 BK2 दुर्ज्जोधन। 2 BK2 BK3 को। 3 BK3 कौपि। 4 BK2 BK3 कियं षंड षंड रथं वान धोयं। 5 BK2 पत्यो, BK3 पत्यौं। 6 BK2 BK3 हनौ। 7 BK2 BK3 जोत। 8 BK2 BK3 कढ्यो। 9 BK2 BK3 रुधिर्दैव। 10 BK2 रत्त। 11 BK1 श्यामं। 12 BK2 BK3 सुदेसू। 13 BK2 BK3 केसू। 14 BK2 BK3 न जानं न जानंति जानं। 15 BK3 भरंती ति वानं। 16 रथंगं ति पानं। 17 BK2 BK3 पथं थं पथं थं काथं मार मारं। 18 BK2 BK3 नस्य नूनं वंभू भयं भीत भीतं। 19 BK2 अर्थं।

आधा आव अवनिहि परन, संतनु राज कुमार ॥१०३॥
छत श्रोनित छिछे सुवन, सु तन लग्ग[1] चव दून।
मनु अंबर पुज्यौ अमर, वर बंधूक प्रसून ॥१०४॥
सु करि ग्यान सुत्तउ समर, हिय धरि ध्यांन गुबिंद।
मंद हास मंडियं श्रवन, कहि कवींद्र कवि चंद ॥१०५॥
भव भविष्य[2] जानु[3] सकल, अकल अपूरव बत्त।
सु मत वैठि सामंत सब, सुनहु त[4] कहौ कवित्त ॥१०६॥

कवित्त

जैत राइ चामुंड राइ, देषि[5] वग्गारी।
बली रांइ वलिभद्र[6] राम, कूरम्म संभारी।
षीची[7] राइ प्रसंग जाम, जद्दौ भर भष्षी।
रवनि राज पहु प्राण साम, दानहं धर रष्षी।
सावंत मंत कैमास विनु, वर बंध्यौ[8] सुरतांन दल।
सावंत सिंह दुज्जन सया, दया न किज्जै काल खल ॥१०७॥
कहै राव[9] चामंड जाम, जद्दो सुनि वत्तिया।
गत सोवन किज्जये सोव, भज्जै[10] बल षत्तिय।
सुष अंतरि दुष होइ, दुष्ष अंतरि सुष पावै।
दुष सुष बंध्यौ जीव, जाव बंध्यो मन गावै॥
मन स्वामि धर्म बंध्यो, कहहि स्वामि धर्म बांधय मुकति।
सो मुकति बंधी सुरतांन दल, मथिन सूर कड्ढइ[11] जुगति ॥१०८॥
पुनि जंप्पौ जद्दो भुवाल, चावंड राइ सौं।
छौ[12] पग लग्गउ[13] लोह, लोह लग्गै सुमंत गौं।

1 BK2 BK3 लग्गि। 2 BK2 BK3 भवस्व। 3 BK2 BK3 जांनहु। 4 BK2 BK3 तव। 5 BK2 BK3 देष। 6 BK2 BK3 बल भद्र। 7 BK2 BK3 षिची। 8 BK2 BK3 बंध्यो। 9 BK2 BK3 राइ। 10 BK3 भजै, 11 BK2 BK3 कट्ठहु। 12 BK2 BK3 ठौ। 13 BK1 लग्गौ।

सांम दांन अरु भेद दंड, जौ बंक करिज्जै।
कंक बंक भर होइ बंक, वर भूपति छिज्जै।
सुरतांन खरौ खुरसान पति, उन्नय दल बद्दल मनौं।
पृथीराज सत्थ सावंत सत, ति नमौ छह सत्तनि गनौ ॥१०६॥

दोहा

ते छल बल छुट्टे पंग पह, सत्त[1] छ छत्रिय छत्र।
समर समप्पन दैव गति, कदहुं न मुष भरि बत्त ॥११०॥

कवित्त

सुनिग सद्द चावंड राइ, जहौं जग बत्ती।
हम पग लग्यो[2] लोह लोह, लग्गौ[3] गइ मत्ती।
ता ते सौं[4] कहूं राज, तूं काज बिनासै।
अद्ध रैनि उठि जाइ करै, दुज्जन पुर वासै।
हम पगन बहुरि वैरि मरै, लरि न मरै जहौं कहै।
जह जह सु दैय,[5] कुल संसहै, तहं २ पंजरपुर सहै ॥११२॥
कहै राइ बलि भद्र, काम कूरम मत्तांनी।
सबरे[6] सौं संग्राम राजनहु[7], वा राजांनि।
म्हें म्हां के ढौलरै, ढाल ढोरा ढंढारी।
कूरम्मां कू[8] परै डाढ, ढिल्लिय उच्छारि।
उर अन्तर अन्तरउ मत, मत[9] जिन साषी जोनै जनौ।
असु मेध जग्गि तुरिया तनौ, जनमेजय बरज्यौ घनौ[10] ॥११३॥
कहै राइ रासेत राव, रावत अज्जूना।
हय हत्थी नौ साज राज, लद्धौ पज्जूना।

---

1 BK2 BK3 सत्तथ। 2 BK1 लग्यौ। 3 BK2 BK3-ग्गै। 4 BK2 BK3 स्यौं कहौं। 5 BK3 देय। 6 BK2 BK3 सवरै। 9 BK2 राजनं नहु राजानि। 8 BK2 BK3 उपरै। ७ BK2 मन। 10 BK2 BK3 घन्यौ।

सावंता उव्भार जुद्ध, अज्ज सद्धानी[1]।
चौ अग्गानी सट्ठि, सट्ठि आनि पंगानी।
म्हें गामी गुज्जर गल्हिया, हासाइ हासाईया।
रति वाह देहु सुरतांन दल, रषिष राज लगि आईया ॥११४॥

तुम भोरे भीमंक रारि, सोझति सौ जीता।
ज्यौं दुज भोरे[2] अंब धाइ, धत्तू रस पीता।
आसानी अस पत्ति लष्षु, सिक्कार चढ़ाई।
हस्तीनी चिक्कार फट्टि, रासभ दर जाई।
पुंडीर राइ भग्गौ[3] भिरै, सिर सुरतांन बंधाइया।
अन भंगी अग्गि अनवुझ[4], भरनै कनवज्ज जुझाइया ॥११ ॥

दै गारी गुज्जरह तूं ज, चावंड कहानौ।
ए जद्दौं कूरम्म जियन, बंच्छहि सद्दानौ।
षिच्चौ राइ प्रसंग च, वर वेधहि सपुरानौ।
जै वीरंग विडार डाक, बज्जै उभ्भानौ[5]।
गोविंद राइ वोला वरै, मलह केलि कलपंत किय।
पंजाब पंचनद पंथ भौ, जात गात रष्षौ[6] सुजिय ॥११६॥

हस्यौ राइ वलि भद्र हत्थ, जद्दौं दिय तारी।
बड़ गुज्जर दाहिमा बोल, लग्गांन अधिकारी।
को सेवक को स्वामी कौन, भर धरकुन षाई।
केहू ना घर जरौ हत्थ, सेकहु कौ[7] आई।
सन मंध राज स पंगन[8], किसौ पत्थै को केही कहै।
सह गवन राज सिवपुर[9] करै, बोलि न कछु वास न लहौ ॥११७॥

राज काज पांवार सिंध, उव्वरयौ वार तिहि।
ए जद्दौं जामानि बलिय, बलिभद्र बार इहि।

---

1 BK2 BK3 उ भार जुझ अजू सद्धानी। 2 BK2 भौरे। 3 BK2 BK3 भग्गै।
4 BK1 अनुवुझ। 5 BK2 BK3 उभानौ। 6 BK3 रषो। 7 BK2 कै।
8 BK2 सगपन। 9 BK1 BK3 विसपुर।

हम गामी गांवार एम, रतिवाह स जंपै।
ससि षंडौ पुरसांन अधर, गुज्जर गृह झंपै।
निर्घात प्रात भज्जै सयन, गयन राज रवि उग्गहइं[1]।
आजानु बाहु पुच्छहि प्रभु, स्वामि धर्म सिर तिच्छ हइं ॥११८॥

लोहानौ आजान बाहु, बह बह हक्कारिय।
तुम्ह सु धर्म राजन[2] नरिंद, लज्जह अधिकारिय।
जो असंत सामंत ताहि, मंतह उत्तारिय।
तुम्ह सु भीम भारत्थ जेम, पारत्थह ज्जारिय[3]।
दस लष्ष भर सुरतांन दल, नर तुरंग उत्तंग नर[4]।
रुधि मंस अस्थि वसु प्रांन, तुम्ह कन निसांन दुषै सकर ॥११९॥

तब चित्रंग नरिंद चित्र, विद्या चिंतानिय।
भव भविष्य निर्मान ब्रह्म, ज्ञानै सु विनानिय।
तुम अजब्ब अंगवनि जंग, सुविहांन विचारिय।
रत्तिवाह दिव वाह क्राह, कैलाह संभारिय।
सुभ थांन प्रार[5] सुरतांन किय, राज जान सम्मुष वलइ।
वत्तीय विगत्ती[6] जंपै सु कवि, वहसि २ बुल्लै कलइ ॥१२०॥

वह सिराइ परसंग षिड्यउ[7], षिच्चिय चमरालिय।
राज नैन हिय सैन वयन[8], बुल्यौ वयठारिय।
रे गुज्जर रे जैत राइ!, चावंड राइ सुनि।
रे जद्दौ[9] जामानि बलिय, बलिभद्र सार धुनि।
बहु कहहुं कहा बरियाम बरि, सुरतांन छत्र सीसह[10] धरौं।
यह समर सीह रावल सुनै, जौ न जुद्ध इत्तौ करौं[11] ॥१२१॥

पुहमि ईस पल तीस रीस, तज रहसि विचारिय।

---

1 BK1 उग्गहै। 2 BK1 राजान। 3 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया। 4 BK3 नरं। 5 BK2 प्रान। 6 BK3 विगति। 7 BK1 षिड्यौ। 8 BK3 दैन। 9 BK3 जद्दो। 10 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया। 11 BK2 BK2 BK3 करों।

पृथा कंत सौं सुनत तंत, हसि हसि दिय गारिय।
निस[1] अन्ध सर संध देव, कंदल नहि षिरवै।
हम मनुष्य[2] सम गिमै[3], कित्ति कह कह कहि भिरवै।
धवलंग दीह धवलिय दिसा, धवल कंध सम्मुष लरै।
सोमेस सुनु[4] सुरतांन सौ, अजब जुद्ध जुद्धैं भिरै ॥१२२॥

छंद [हनुफाल]

वपु स्वामि धर्मति भेष। चष पुंडरीक सुरेष।
कच वक्र कुंतल लीन। मकरंज[5] मैं[6] मुष पीन ॥१२३॥
सक्रीट हार विहार। तम हरन किरन प्रहार।
श्रुत कुंडलीन विलास। कल ग्रीव दुत्ति सलाल ॥१२४॥
निज नाम मुत्ति सुहंद। तिलक सम अति बुंद।
तैं प्रीति अंदर प्रीति। रघुवंस राज सु रीति ॥१२५॥
करि करिय स्पंदन पांनि। मम मधुर मिष्ठति वांनि।
धरि पुष्टि तून[7] धनुक्क। जिय जासु जोन जनक्क[8] ॥१२६॥
इनि कंठ लिय निज नयर[9]। इनि कंठ लग्गौ[10] षयर।
इनि कंठ लग्गौ राज[11]। इनि साहि अज[12] ही काज ॥१२७॥

दोहा

त्रिसल तेज लग्गिय विभुव, चष रत्ताह विजांन।
जैत राइ वर 'जोइ नैक[13], कटि हुँ देषि[14] रिहांन ॥१२८॥

कवित्त

कहै जैत पांवार पार, बग्गरी तुम्हारी।
कहीं सुनी चावंड राइ, जहीं अधिकारी।

---

1 BK2 BK3 निसा। 2 BK2 मनुष्यि। 3 BK3 गिमे। 4 BK2 अनु। 5 BK1 मकरज। 6 BK3 मे। 7 BK1 तूर। ८ BK1 जानक्क। 9 BK2 इनि कंठनि ढिलिलय नयर। 10 BK2 BK3 कंठनि लग्यउ। 11 BK2 इनि आयुध वड्डुनि नृपति। 12 BK3 आज। 13 BK3 नेक। 14 BK1 दैषि।

अप्पु पानि[1] नालि पै, सैन सुरितांन निहारौ।
मरन मत्त चुक्कहु न धर्म, क्षत्रिय जिनि हारौ।
सह सब्बर[2] संभरि धनी, मो प्रतीति[3] राजह तनी।
ऊ अजै भाग भूपति चढ़ैहों, चढ़ौ धरि[4] धारह धनी ॥१२९॥
देव राव बग्गरिय वार, वारह वरु बंध्यौं।
करै सु वौ मिलि करौ, साम दानह धर संध्यौ।
मोहि राज पृथिराज काज, केवल कलहंतिय।
जंत्र जोर सर सारि सारि, भग्गै रहि[5] तंतिय।
जीव हत्थ तुग[6] सत्थ समत्थ[7] सुरतांन, कह थलहं दोइ हौं बल धरौं।
मो बुज्झि जुज्झि सम्मुह लरौं, लरौं न पुनि पत्थह भरौं ॥१३०॥
इक्कस दिन सावंत साहि, गौरी[8] गहि बंध्यौ।
इक्कस दिन सावंत पंगु, जग्गहं धर संध्यौ।
इक्कस दिन सावंत राज, रनथंभ उधारचौ।
इक्कस दिन सावंत चाइ, चालुक्क गहि मारचौ।
दिन इक्क स्वामि सावंत को, मंत छंडि[9] कलहंत किय।
मुष लोक लोक जीहा जरिय, घरियालह बज्जिय घरिय ॥१३१॥

इति श्री कविचन्द विरचिते पृथवीराज रासे चामुण्ड राइ सामंत बंध मोचनं, गौरी साहाब दीन जुद्धार्थं सर्व सामंत मन्त्रो नाम चतुर्दशः षण्ड: ॥१४॥

---

1 BK2 पान। 2 BK2 सर सवर सवर, BK3 सर सवर। 3 BK2 BK3 प्रीतीति। 4 BK2 धारे। 5 BK1 रहै। 6 BK2 BK3 "तुग" अधिक है। 7 BK1 'समत्थ' छूट गया। 8 BK1 गोरी। 9 BK1 छांडि।

पंचदश षंडः

कवित्त

बज्ज घरिय घरियार साहि, उत्तरि[1] सिंधु नद।
विषम वाय[2] उडि भंग[3] सिंध, छुट्यो कु सद्द नद।
तमकि तमकि सावंतराज, राजस किय तामस।
घुमरि घुमरि नीसांन थानु, जग्गिय जनु पावस।
निसि अंध अनेही वीय तीय,[4] पिय पिय पप्पीहा सुनिय।
पंपानि फरकि अंषिनि अनषि, उदय अनंद सुवीर किय ॥१॥

मुड़िल्ल

कला कल पुच्छिय, अथिर वानि। सिषो सिष अंभसि कढ्ढिय जानि।
पियो[5] करुणा मुष, कि मुष वीर। दियो[6] रस संकर अन्तर वीर ॥२॥
संजोग[7] वियोगन,[8] ईसर बंध। लही चक चष्ष, अहर्निस[9] संध।
पिया पिय पुट्ठि, न दिट्ठि भुवन्न! रही चित्र पुत्तलि, जानि अवन्नि ॥३॥
विथा विथ कंपिन, जंपइ[10] सोइ। क पुच्छइ[11] का इक, उत्तरु देय।
थके अंग अंगनि, अंगनि ताहि। रहे चष जानि, दृग दृग चाहि ॥४॥
क्रम क्रम लग्गि न, जग्गहि नैन। गयौ रस छंडि, मनो अमु हैन।
रसी रस निद्ध, निवद्धिय भाल। ग्रहे सुक सब्ब, भयानक जाल ॥५॥

---

1 BK1 उत्तार। 2 BK2 वायि। 3 BK2 भृंग। 4 BK3 तिय। 5 BK2 BK3 पीयो। 6 BK2 BK3 दीयो। 7 BK1 संयोग। 8 BK2 BK3 वियोन 9 BK3 अहर्निसि। 10 BK1 जंपै। 11 BK1 पुच्छै।

निमेष[1] करी करुना, रस केलि। उठी नर वीर, वर घट षेलि।
सुनि छुनि राज, गवन्न गवन्न। निज त्तियन मत्त, भवन्न भवन्न ।।६।।
घनक्कि[2] घसान, निसान निनद्द[3]। षनक्किय सघंट, सुघंट निहद्द।
हरष्षिय राज, सु जुज्झर बद्द। भरक्किय नाग, नवै सिर लद्द ।।७।।
तुरक्किय पष्षर, पष्षर[4] सौर। ढलक्किय[5] ढिल्लिय, ढाल सदोर[6]।
हलक्किय हाल, फवज्जनि सूर। धरक्किय धाम, सकातर कूर ।।८।।
कंथ कथ राज, उमांन गुमांन। हुआ[7] दस कोस, मिलान[8] मिलान।
हिंदूर मेच्छ[9], बज्यो रन ताल। गयौ दिवि देव[10], किद्धिय वाल ।।९।
निपष्षक[11] भूमि, अयासहं अंग। चढ्यौ जनु इंद्र, धनुक्कहि रंगि।
जय ज्जय सद्द करी, तिन वीर। कहौ त्रिय राज, गवन्निहिं पीर ।।१०।।

दोहा

नृप अयान यौमिांन परषि, घटि साहस घटि इक्क।
सुकथ केलि पिय पिउष पिय, जतनि करि सषि किक्क ।।११।।

छंद [भमरावली]

जतनं जतनं जिय संजलियं। दिषि दीपक तुंड डरयौ सुहियं।
भवनं भवनं भव नागरियं। धर मुच्छी परी भव[12] सागरियं ।।१२।।
द्रिग अंचल अंचल सौं मुदियं। विरहा उर उग्रग सासु धियं।
हय षुट्टि लियं वय रज्जु हियं। षह षुट्टि सुधा निधि कीनि धियं ।।१३।।
वर बंबरि लोय सषि किरियं। अश्रु आसिक नासिक संचरियं।
चल चंदन वीर समीर करै। लहरी विष जानत[13] प्राण टरै ।।१४।।
नहि नारिय नाइक[14] पांनि गहै। तजि जाहि न इक्क वियोग सहै।
पल ध्यांनन आंनन पत्त टरै। अलि चोटन जोट समीर हरै ।।१५।।

---

1 BK3 मिन मेष। 2 BK1 घमक्कि। 3 BK2 BK3 "घुग्क्किय घुघ्घर दूदुर सद्द" अधिक पाठ है। 4 BK2 BK3 पक्कर सोन। 5 BK2 BK3 ढलिक्किय। 6 BK2 BK3 सदोन। 7 BK2 BK3 उहा। 8 BK1 मिल्हान। 9 BK1 मलेच्छ। 10 BK1 देवकि। 11 BK2 निमष्षक। 12 BK3 बुधि। 13 BK2 जनित। 14 BK1 नायक।

छनदा[1] छल छीन हि छीन भई। घरियार निहार प्रगास भई।
....
॥१६॥

दोहा

धन घरयार वज्जिग नयर, हलग हिंदु दल ढाल।
दुतिय चंद पूरन विजै[2], बढ़ि वियोग वर वाल ॥१७॥
हरि हि आदि अम्मर[3] सकल, अलि रष्षौ अलि हूर।
जोग भोग प्रिय संग सरै, त्रियन धर्म्म धर ऊर[4] ॥१८॥
जल अधार रष्षै जियन, ब्रत रष्षै तनि प्रान।
अव रवि मंडल वर मिलन, कहं जुग्गिनि पुर थांन ॥१९॥
कहं[5] धरनी कहं अंबरह, कै[6] अंतर तर मूल।
दैव[7] काल वा तूल मिलि, उडहि[8] जंत जिमि तूल ॥२०॥
यह चरित्त पिष्षौ वरनि, वह चरित्त नही राइ।
सो चरित्त सुरतांन[9] सुनि, सिंधु उलंघि धाइ ॥२१॥

कुण्डलिया

कूच कूच षंधार परि, पंच उच्च मृष नीच।
सुन्यौ राज सुरतांन[10] कहं, सिंधु विहत्थहं[11] वोच।
सिंधु विहत्थहं[12] वीचि सैन, सुरतांन[13] सपत्तौ[14]।
है हिंसार पुंडीर आइ, सत नंज मिलत्तौ[15]।
मिलित राज पृथिराज भाव, रष्षौ मन उच्चहं।
सकिल सव्व सावंत क्यों, न उत्तरि नद कुच्चहिं[16] ॥२२॥

---

1 BK1 नदी। 2 BK2 जिवै। 3 BK2 अमर जु सकल। 4 BK2 BK3 उर। 5 BK2 BK3 कै। 6 BK1 किहं अन्तर किहं अन्तर किहं मूल। 7 BK2 BK3 दैय। 8 BK1 उडिय। 9 BK2 BK3 सुरितांन। 10 BK2 BK3 सुरितांन। 11 BK2 BK3 विहत्थहि। 13 BK2 BK3 सुरितांन। 14 BK2 BK3 सपत्तउ। 15 BK2 BK3 मिलत्तउ। 16 BK2 BK3 नदि कुच्चह।

तव लुट्टिग छंडिग सहर, ग्रहर कियौ[1] जुध भीर ।
धीर लज्ज कहं लगि[2] लजौ, रा पावस ·पुंडीर ।
रा पावस पुंडीर धीर, लज्जहं लज्ज रष्षौ ।
नत सोमेसुर आंन प्रांन, गढ़ तैं गहि नष्षौ ।
हसहिं सब्ब सावंत गच्छ, हय गय तुम गच्छह ।
कहै राज प्रथिराज सहर, लुट्यौ सब सत्थह ।।२३।।

कवित्त

पहर इक्क पुंडीर छिमा छम, अदब परष्षिय ।
सो सुनंत सावंत मन्त, अत्थिय भर भष्षिय ।
हमहि दोह लग्गै दिवान, सुरतांन सुजांन हि ।
दीह सत्त अट्ठ महि दोह, मालूम चहुवांन हि ।
दुल्लोह[3] कोह परतें कट्ढिय, अरिन[4] भंजहि सिरनि ।
पृथ्वीराज काज तरवारि झर, जौ न भग्गि उडहि[5] करनि ।।२४।।
सत्त उतरि सतनंज चंपि, पट्ठिय कंगूरक ।
लै आवहु जालंध राइ, हाहुलि हम्मीरह ।
अरु जाल परसियहु परसि, दरसत यह अष्षहु ।
अज्ज जुज्झ दुहुँ दीन सिंध, पष्षरि किन दिष्षहु ।
अरु नमसकारु करि पुज्जियहु, ज्यौं पुच्छहि पिछली पिरति ।
कर जोरि चरन बंदन करहु, हम सु देषि तुम्हह अरति ।।२५।।

मुडिल्ल

मग्गह चलंत करि कहि विरमं ।
सामंत सुभर भर मुदित तमं ।
जालंधर जाहु नृपति सु काज ।
रष्षियहु सु दिन पृथ्वीराज काज ।।२६।।

---

1 BK2 BK3 कीयौ । 2 BK3 लग्गि । 3 BK3 दुलोह । 4 BK1 अरि रिन भंजहि तहं सिरनि । 5 KK1 उड्डहि ।

कवित्त

चलंत मग्ग यह मंगि राज, तब लगि तुम्ह[1] धीरह ।
लै आऊं जालंधराइ, हाहुलि हम्मीरहं ।
विन उत्तर उत्तरहं जाइ, कंगूर संपत्तौ ।
पंच शत अरु पंच पैंड, अग्गै मिलि लित्तौ ।
भोजन भुगत्ति बहु भाइ करि, सब पुच्छिय राजन विगति ।
जालंधराइ जंबू धनी, सुनि हम्मीर चंदह[2] सुमति ॥२७॥

दोहा

ढिल्ली वै है वैदिसा, तिरि भर जल गंभीर ।
हुतं रे रन आतुरहं, चढ़ि हैं हम्मीर ॥२८॥

कारन हौं है वैदिसा, चढि ढिल्ली वै भट्ट
वंक दिसाहन[3] घरह, भौले लाहोरी[4] हट्ट ॥२६॥

बोला बंक सु कंक केलि, संभरि रा गौरी ।
उन्हां उन्हा कहहि चंद, पंचनद मेरी मेरी ।
जुद्धानिगं[5] जागि जग्गि, वीरा उज्झाई ।
हो हम्मीर नरिंद ! चंद, जाइ न वुज्झाइ ।
षग धार धम्म छत्रिय तनौ, चुकै नर्क[6] निवासियै ।
जै काम सूर सिद्ध न करै, तै धू मंडल वासियै !!३०॥

केही काकं केलि करौ, काहे लगि जुज्झे ।
हठि गल्हां[7] सौ लगि जाइ, कैरों फुल बुज्झे[8] ।
हौं हम्मीर नरिंद चंद, बलवंत[9] करि रष्षौ ।
पंचनद पंच देसि अद्ध, अद्धा करि रष्षौ ।
केही न सुष नर लोक मैं, क्यों सुर लोक सुहाइया[10] ।

---

1 BK2 BK3 तुम । 2 BK3 चंद । 3 BK1 बिसाहन । 4 BK3 लाहौरी ।
5 BK2 BK3 युद्धानीगं । 6 BK1 न अर्क । 7 BK1 गलां । 8 BK2 BK3 बुझे । 9 BK2 BK3 बलवत्ता । 10 BK2 BK3 सुहाइय ।

मिष्टान भामिनि भवने[1], पुच्छे तोहि सुभाइया[2] ।।३१।।
चहुवानां कै राज षांन, सावंत बड़ाई ।
ते बोला वर लग्गि जाइ, कनवज्ज जुझाई ।
थे गोरी सहाबदीन, जानहु पहिलूना ।
हसम हय गगय हेम[3] देस, दिष्षहु दह गूना ।
कौ[4] काम कलह कंदल चढौ, कै कामा बत्ती गढ़ौ ।
वे[5] काम भट्ट गल्हां पढ़ौ, जिनि बोरहु ढिल्लिय चढ़ौ[6] ।
गल्हां काजि हमीर सर्ग, सुध्यौ उज्जिन्नी ।※
गल्हां काजि नरिंद नंद, सोवन गिरि कीन्हीं ।
गल्हां काजि गुविंद करै, कैरव पंडव जुद्ध ।
गल्हां काजि भरत्थ अग्रज, कीन्हो रावण वध । [7]
हम गल्हवांन गल्हां पढ़ै, तुमू गल्हां लग्गै बुरी ।
मृत लोक जीव जम पंजरी, तुम्ह[8] जानहु छूट्टे दुरी ।।३३।।
एक उलूक कहि गरूर सौं, सुनि अति मित्राई ।
ताहि उलूक हि देषि देषि, जौ रामु[9] सषाई ।
तव उल्लू[10] कहि भयौ भै, गरूर अग्गैं कर जौरै ।
मोहि तहां लै जाहु जहां, कोइ जीव न तोरै ।
धरि पंष दंग माइर गुहा, जिहां[11] विलाव भुष्यौ मरन ।
सनबंध देह जिहिं ठां पर, सो न मिटै राजन मरन ।।३४।।
कालिय विषुधर डंक संक, वै हरी उच्छारै ।
नील कंठ सिव धरै मोर, मै अंग निहारै ।
काक लंब ढरि जाइ लगै, पप्पीह पुकारै ।
गाजै सिंध गइंद चढ़ै, श्रिक्काल[12], सिक्यारै ।

---

1 BK2 भवन । 2 BK2 BK3 सुभाइय । 3 BK2 हम । 4 BK2 कै ।
5 BK2 BK3 वै । 6 BK3 चढ्यौ । 7 BK2 में तीनों चरण नही दिथे ।
※BK2 BK3 में "गल्हां काजि हमीर राज , मुक्यो रघुराई" अधिक चरण है ।
8 BK2 BK3 तुम । 9 BK2 BK3 जौरा मुसकाई । 10 BK3 उलू । 11 BK2 BK1 जह विलाउ । 12 श्रक्काल ।

सुरितांन समर सद्धन सलष, जैत राइ विरदहं[1] वहै ।
वरदाइ भट्ट हाहुलि कहै, कोइ नष्षु इत्तउ[2] सहै ॥३५॥
दावानलु पांवारु अनल, चहुंवांन पिथाई ।
भुट्ट सम निरषि राज समद, सोषै धरिताई ।
जैत राउ कंठीर हत्थ, सामंत राज सिर ।
पट्ट पंवार पाहार धरै[3], भंजै गोरी घर ।
अब्बु वराइ अग्गइ पहर, षिन न जोर जंबू रहै ।
बुंग लिय बुज्जि जुग्गिनि पुरिय, जं जं भावै तं तं कहै ॥३६॥

दोहा

तुम तत्तुवाद जानहु सु कवि, हम माया पुज्जांहि ।
जालंधरि[4] चलि देहरे[5], मिलि जालप पुच्छांहि ॥३७॥
नारि केल फल दल सुफल, कर कपूर तमोर ।
उभय सरन पुज्जन चले, दिय सब सत्थ वहोरी ॥३८॥

कवित्त

च्यारि कोटि वज्राग्नि मध्य, जालप अस्थानह ।
हेम छत्त जरि मुत्ति मंत्र[6], दुर्गा[7] जप्पानह ।
करि अस्नान पवित्र धोइ, धोवंति धरि मंडिय ।
सुभ सुगंध पढ़ि छंद जाइ, कुसुमावलि छंडिय ।
धूप दीप नैवेद्य[8] मिलि, राज उदेस संदेस कहि ।
बुल्लिय न वयन देविय त दिन, अजित हमीर हिं मंत लहि ॥३९॥
कहि हमीर सुनि देवि, तत्त वादी कवि आयौ ।
या कैं को हिंदू को तुरक, कौन रक्तस[9] कौन रायौ ।
को रविंद को जिंद कौन[10], तापस कुन छाया ।
को साहाव को राज कौन, सूकर कुन गाया ।
यह परम हंस हिंसा रहित, तूं माया हूं मोह मत ।

---

1 BK2 BK3 विरदहि । 2 BK1 इत्तौ । 3 BK2 BK3 धरि । 4 BK1 जालंधर । 5 BK1 देहरै । 6 BK1 मन्त्रि । 7 BK1 दुर्ग्गा । 8 BK2 BK3 नैवेदं । 9 BK2 BK3 रकस । 10 BK1 कोन ।

जानौ न देव दच्छिण करन, हौं सांई संसा हरत ॥४०॥
दिय कपाट चहुं ओर चंद, देवल महि मुक्यो ।
हत्थ न सुज्झइ हत्थ सत्थ, सत्थ सब ठां सक्यो ।
मिलि जांनौ सुलतांन लियौ[1], मुलतान लिषाई ।
हौं पर्वत को[2] राज धांन, पंजाब[3] सुषाई ।
एक रज्ज लाभ[4] अजमेर भरि, दुर कर राज लगाइया ।
बज्जिया डंक डंकिनि पुरिय रहि, हमीर फिरि साइया ॥४१॥

कुण्डलिया

चामर मृग मद मधुर मधु, वाजी अग्र कपूर[5] ।
मिल्यौ[6] जाइ गोरी घरहं, हाहुलि राइ हमीर ।
हाहुलि राइ हमीर साइ, दो ही घर लग्गी ।
सीलवंत तप तेज धमे, धुर धारा[7] भग्गीं ।
गो विप्राय गो छंडि क्रूर[8], पर्वत पति पामर ।
मिल्यौ जाइ गोरी घरां[9], मधुर मृग मद लै चामर ॥४२॥

दोहा

चारि चारि तरवारि भर, हर बंधिय वर धाइ ।
यह चरित्त पिष्षौ चरनि कह्यौ, साहि स्यौं ज इ ॥४३॥
हाइ हाइ बज्जी सुचर धुनि, मुच्छिय सुसताइ ।
जुद्ध स बंध्यौ हिंदू दल, जुझै[10] रहै कि जाइ ॥४४॥
बाल बृद्ध जुव जन कहहिं, ए मत्ते मत्ताइ ।
तेक एक पक्की चवै, चो[11] चक्की भज्जाइ ॥४५॥
करि निवाज सुरतांन कहि, कित किय जित उन ईस ।
गहि न राइ कंधह हन्यौ, गहि मुक्यौ इहिं रीस ॥४६॥

---

1 BK2 BK2 लियो । 2 BK2 BK3 कौ । 3 BK1 पंजाब । 4 BK2 BK3 लभ । 5 BK1 कष्टम पुर BK3 पुरो । 6 BK3 मिल्यो । 7 BK2 धार न भीगो । 8 BK2 कूर । 9 BK2 घर । 10 BK2 BK3 जुझे । 11 BK2 चोकच्ची, BK3 चो कब्बी ।

कुण्डलिया

यह गंदियं मंदियं मरद तुम, मरदहं मरदांन।
तुम्ह[1] सु गब्ब गब्बह हरन, हौं फकीर सुरतांन।
हौं फकीर सुरतांन अप्प, कहि पुच्छहि काजी।
भिस्ती भाष[2] ज्यौं[3] कहौ, होइ हाजी उर गाजी[4]।
जो उमेद जां होइ राह, दुइ अबह बंदी।
को गुमांन जिनि करहु, कहै काया यह गंदी ॥४७॥

कवित्त

सिंधु उतरि सुरतांन कह्यौ, सुरतांन षांन सौ।
षां ततार रुस्तम्भ गहहु, सब्बे[5] मुसाफ तुम।
मै आलम अक्केलि[6] हा दल, हिंदू राइ प्पर।
जिहिं गहि छंड्यौ, सत्त वार बारहौं अप्प कर।
ता गहन हेत अच्छे सुमन, सुमन संच करतार कर।
भग्गहु अभंग[7] मृत संग्रहौ, धरहु लज्ज भज्जहु न नर ॥४८॥
षां षुरसांन ततार षांन, सुविहांन विछोरे।
हा हमीर हिंदू न दीन, गो जारं न जानहि।
एस भय पचिवे काज, जाइ गोरी गुम्मानहि।
अलफ षांन उजब्बक्क, हक्क हमीरं जोरे[8]।
सुरतांन आन चहुवांन सौ, ज़ेन चाल बंधिवि भिरहिं।
दै हत्थ हत्थ अजहूं मनहि, जो दयो[9] रोग दोजक परहिं ॥४९॥
समरकंद मौमदी मीर, महमूद रुहिल्लौ।
नव नव कोरि भु डंड एक, एकहं अकिल्लौ।
किसि यक्क गढ़ ढिल्लिरिय[10], कौन मंडल वह वारह।
कौ वैसत सावंत सहै, को हम जुज्झारह।

---

1 BK2 BK3 तुम। 2 BK3 भष। 3 BK2 BK3 जौ। 4 BK2 गज्जो।
5 BK2 संचे, BK3 सांचे। 6 BK2 सकेलि, BK3 सकैलि। 7 BK3 असं भंग।
8 BK2 BK3 में यह समस्त पद छूट गया। 9 BK2 जोद रोग। 10 BK2 ढिल्लिरिय।

साहाबदीन सुरतांन सुनि, प्रगट एह परतिंग बहि।
षुवाइ भुम्मि हम संचरहि, जौं न देहि चहुवांन गहि ।।५०।।

दोहा

मेच्छ[1] मसूरति सत्त किय, वंचि कुरांन कुरांन।
वीर विचारत रत्त हुव, दिए मिलांन मिलांन ।।५१।।

छंद [मुड़िल्ल]

सहि चल्यौ[2] साहि, आलम असंभ। उप्पटिय जांनि, साइयरनि अंभ।
जल थल ति थल, ति जल होत दीस। उन्नए मेघ, वर वैर रीस ।।५२।।
बज्जहिं विसाल घन, जिमि निसांन। दामिनिय तेक वर, वर कमांन।
वारुनि बहंत मद, गंध बंध। सुज्झइ न भांन[3], दिसि विदिसि ।।५३।।
सिंधु घुम्मिलिब, मिलिय कलयंठ[4] सद्द। चक्की व चक्क, मुक्किव[5] वलंत।
रस दरस सरस, सारस मिलंत। प्रतिबिंब अंब, अम्बर तितार[6]।
भुगतै न मुकति[7], पंजर विंचार ।।५४।।
दर्प्पक अदर्प्प, आलोल नैन, विसरियै कोक, सुर गौन[8] वैन।
चक्कित सुचित्त, मन मित्त मित्त। रस उभय, अमिय आनन्द चित्त ।।५५।।
हसि चक्र वक्र सु, कहिग छंद। माननिय जानि, जामिनि आनंद।
असपत्ति अंसु भर, गहन हिंद। भुक्यो सु जांनि, गोरी नरिंद ।।५६।।
प्रज्जलहिं पंथ, पट्टन न[9] सिद्ध। मिलि चलहिं अग्ग, आरंभ गिद्ध।
अच्छी सु रैन, पत्थी पुकार। मावस तुम क्रमन, सन्निवार ।।५७।।
रवि घरह राह अनुकेत गत्ति। जानै[10] सु चंद, ग्रह ग्रहनि गत्ति।
.... ।।५८।।

दोहा

सज्यौ[11] सेन सत्तरि सहस, जंगल वै चहुवांन।

---

1 BK2 मैच्छ। 2 BK3 चल्यो। 3 BK2 भानु। 4 BK2 कल कलय, BK3 कलय सद्द। 5 BK2 BK3 मुक्कि विवलंत। 6 BK2 नितार। 7 BK1 मुगति। 8 BK2 गैन। 9 BK2 BK3 नि। 10 BK1 जाने। 11 BK3 सज्यो।

घर अंगन मंगन तुरिग, सुनत सूर अकुलान ।।५६।।
सब सपन्न सत्तरि सहस, घटि वढ़ि वर्नत बार ।
जि भर भरि सम्मुह सहै, ते बत्तीस हजार ।।६०।।
सहै भीर नृप पीर जिय, जिनि सिर भारहि[1] दुधार ।
लज्जा धर धरु तिन गनै, ते यहु पंज हजार ।।६१।।
पंच हजारहं मझि दुइ, ते आया वर स्वामि ।
कर बज्जियं बज्जिय सहन, तै सै पंचह छामि ।।६२।।
तिन महि सौ सोभय हरन, सील सत्त सम जुत्त ।
तिन मह दस दारुण दहन, उप्पारण[2] गज दंत ।।६३।।
तिन महि पंच प्रपंच संलषिय, न तिन गति काज ।
दैव ग्गति दैवान सौ, तिन महि पहु प्रथिराज ।।६४।।
पावस आगम धर अगम, दल सज्जै दहुं दीन ।
अंबर छायौ अभ्रतन, छिति छाइ छत्रीन ।।६५।।
कसहि सूर[3] रण आभरण[4], मरन सुध न्निध नाह ।
दल नरिंद वर हिंदु कै, भई सनाह सनाह ।।६६।।

छंद [भमरावली]

दुहुं राइ महा भट[5] यौं मिलियं । सलिता जनु सत्त समुद्द लियं ।
करकादि निसा मकरादि दिनं । जनु जुद्धति[6] सेन दुपाल मनं ।।६७।।
दुहुँ राइ नरप्पति रत्ति उठे । जिहुरे जन पावस अंभ उठे ।
निसि अद्ध विधेत निसान घुरे । दरिया दव जांनि पहार गुरे ।।६८।।
सहनाइ न फेरिय काहलियं । सर वीरह वीर चले मिलियं ।
ठहनंकित[7] घंटनि घंट घुरं । कल कौतुक देव पथाल पुरं ।।६९।।
लगि अंबर बंबर डंबरियं । विसरी दिसि अंधति धुंधरियं ।
समसेरु[8] रुसे लस वाहिनि सौ । दमकै दल मज्जित राइन सौ ।।७०।।
दरसी[9] दल की वर ढल्लरिया । सुमिरे घर काइयर वल्लरिया ।

---

1 BK2 झरहि । 2 BK3 उप्परण । 3 BK2 BK3 सुरा । 4 BK2 BK3 आभरन । 5 BK2 भर । 6 BK2 BK3 वद्धति । 7 BK1 ग्रहनंकित । 8 BK2 BK3 समसेर । 9 BK1 दसी ।

निरषे तन केतन अच्छरिया। जिनके मुष मुच्छरु मुच्छरिया ।।७१।।
नृप जाइ फवज्जनि बंदि लियं। मुहु मारष चावंड राइ दियं।
भुज दच्छिन अब्बुव राव रच्यौ। सिर छत्र सु पेय जु आंनि सज्यौ ।।७२।।
भ एकादिस अग्ग पुंडीर भए। कटि कंध कबंध गिरंत लरे।
कूरम्म अर भनु जाम अनी। सुधरी कवि चंद सुनि सुमनी ।।७३।।
दल पुट्ठित भोरिय राइ सुनै। कवि इत्तान उत्ता सुनै सु भनै।
निरवांन चंदेल ति जद्द भने। हय मुक्कि लरे जम सौ जुरने ।।७४।।
तिन मद्धति संभरि राइ इसौ[1]। भुज अर्जुन अर्जुन राव जिसौ।
भमरावलि छंद प्रमान थियं। नृप जोइ फवज्जनि वंटि लियं ।।७५।।

कवित्त

रा जद्दौ कूरम्म राउ, रावल[2] प्रति वट्ढे।
चमर छत्र नीसांन गिद्ध, ब्यूहा[3] ररि गट्ढे।
एक पषष बलभद्र एक, पषषहं जामांनि।
विंच कंध पुंडरी सेन, सम्मूह सुरतांनी।
पग पिंड पुट्ठि आहुट्ठ पति, पुच्छ सुरुचि मारु महन।
वामंग अंग पृथिराज कै, सुतनु जुद्ध मंड्यौ गहन ।।७६।।

दोहा

सावन मावस सूर सब[4], उभय[5] घटी उदयत्त।
प्रथम रोस दुहुँ दीन दल, मिलै सुभर रन रत्त ।।७७।।
दो ऊदल बद्दल[6] विषम, बाग[7] न लाग निसांन।
मिले पुब्ब पच्छिमहु तें, चाहुवांन सुरतांन[8] ।।७८।।

इति श्री कविचंद विरचिते पृथ्वीराज रासे[9] जालंधर देवी स्थाने हाहुली राइ हम्मीरेन व्याजेन चंद कवि निरोधन अथ च पृथ्वीराज गोरी सहाव दीनयो युद्धार्थंसेना समागमे गृद्ध व्यूह[10] रचनं नाम पंचदशः षंड ॥१५॥

---

1 BK3 इसै। 2 BK2 BK3 राउल। 3 BK1 धूहा ररि। 4 BK2 सुव। 5 BK2 BK3 उभै। 6 BK2 BK3 बद्दल। 7 BK2 BK2 लागरु लाग। 8 BK2 BK3 सुरितांन। 9 BK1 में जालंधर देवी.........से............ पृथ्वीराज" तक पाठ छूट गया। 10 BK1 "ब्यूह" छूट गया।

षोडश षण्ड

छंद भुजंगी

मिले चाइ चहुवांन, सुरतांन षग्गे। मनौ वारुनी, वृत्ति वेसत्त लग्गे।
उठी हक्क कुह कुह, कुहू कुह कालं। करै जोध जोधं, तुटै ताल ताल्हं ॥१॥
बड़ी जंग लग्गी, बजी धार धारं। भए सेन दूनं, दुहूं मार मारं।
सु भइं जु थट्टं जु, घट्टं जु सूरं। स एकं भए सेल, मेलं न[1] पूरं ॥२॥
तहां इक्क इक्कं, भए जुद्ध जेकं। मिली सत्थ मत्थे, अनी एक मेकं[2] ॥३॥

कवित्त

विपथ राइ बलिभद्र[3] सुपथ, जद्दों प्रति रुद्धी।
समर सिंघ रावल समर, साहस गति पत्थी।
राज धर्म्म भृति धर्म्म, धर्म छत्रिय सालोकिय।
कह सुहंस आनंद तत्त, कहि बुद्धि सलोकिय।
यह कहसु मोह मर्याद मै, कहसु जोति जोति हिल है।
जोगींद्र राइ जं तू दिवस देव, त्तहिं तत्तहिं कहै ॥४॥
विपथ जु बंध्यो मोह सुपथ, जिहि मोह निवर्त्ते।
राज तु आग्या अवनि सेव, तिनि बत्र प्रवर्त्ते।
भृत्य जु स्वामिय रत्त नेह, निंदा न प्रगासै।
अह निसि बंछै मरन, सु पहु संकरे निवासै।
सो हंस हंस मंडल रवै, मन अनंत अंतर रूरत।
सामंत सिंघ राव रचवै सुगति, सुगति लब्भे तुरत ॥५॥

---

1 BK2 BK3 "न पूरं" छूट गया। 2 BK2 BK3 तहां इक्क............से "सत्थ" तक पाठ छूट गया। 3 BK2 BK3 बल। 4 BK3 कहा।

तब अर्द्ध चंद्र तत्तार षांन, षन षांन पुरेसी।
षांमूस न मारूफ गरुव, गष्षरा कुरेसी।
हाहुलि राइ हम्मीर चुंग, बंधे दल दोही।
जे संसारहं आदि साइ, दोही गुरु सोही
विहु चाइ ढलकि बद्दल मिलिग, करि हमीर हिंदुव हसि।
पुंडीर राइ पावस नृपति, लरन लोह कट्ठे रस[1] हसि ।।६।।

छंद रसावला

ते पुंडीर जत्ती। महामल्ल षत्ती। लगे[2] लोह तत्ती। मनौ बिज्ज पत्ती ।।७।।
अवे हाति छत्ती। जुटे मेच्छ छत्ती। बजै रूप गत्ती। जनौ तार थत्ती ।।८।।
गजे घाइ अत्ती। मृदंगी सुरत्ती। रूरि[3] भेरि भत्ती। सु तुंबानि रत्ती ।।९।।
गहे दंत सत्ती। चढै[4] कुंभ वत्ती। मनौं इंद्र बत्ती। त्रिना इंद्र हुत्ती ।।१०।।
रुधि द्धार रत्ती। उच्छारे सुमुत्ती। इसा वीर वत्ती। सुभारत्थ नत्ती ।।११।।
दुहुं सेन अंषी। निरष्षी सु अंबा। थंभा[5] न रम्भा। सदा दाव तुंबा ।।१२।।

कवित्त

सहस तीनि गष्षर गुराइं, हाहुलि हम्मीर हिं।
मुरारि मुरारि मारूफ षांन, तत्तार ओटरहिं।
षल पुरेस षन षांन जांन, छंडिय षग झल्लिय।
जन कि महिष मयमंत कहर, ऊडर[6] लग्यौ गयन।
कूरम्भ राव जद्दौं जमनि, अमर सौंह भुल्यो मयन ।।१३।।
समर सिंघ रावलहं सहस, तेरह हय छंडिय।
तत्त नीर गोरिय विलषिब[7], रोहित रन मंडिय।
विदल डारि उडन[8] अभंग, षग षोलि विहत्थह।
कहै चंद वरदाइ सुनहु, छत्रिय यह कत्थह।
भजै मरम्मु जीवन मरन, ति नर तुंग सद्धउ समर।
मुरि गए जु छंडि भारत्थ मैं, कोइय साषि अष्षहु अमर ।।१४।।

---

1 BK2 रहसि। 2 BK1 लागा। 3 BK2 रुरी। 4 BK2 BK3 चढ़ी।
5 BK1 थंभा रान तुम्मी। 6 BK2 BK3 औडर। 7 BK2 BK3 विलष्ष।
8 BK1 उड्डन।

छंद भुजंगी

दुवे सेन हक्के, अमुक्के गुमानं। बजे तुंब तुंबा, दमक्के निसानं।
नचे नट्ट नट्टिय, भेरी भयानं। जनु मेघ गज्जै, दिसानं दिसानं ॥१५॥
बजे घाइ आगद्ध[1], गज्जी हवाई। करी दीन दीनं, दू दीनं दुहाई।
हबक्की हबक्की, वहै नेज नेजं। महामल्ल मल्लं, सबै जांनि तेजं ॥१६॥

गिरे[2] उत्तमंगं, उठै श्रोन लल्लौं। शुभै दंग लग्गै, जु पावक्क पल्लौं।
नचै कंध हीनं, कबंधं कलापं। जनी जोगनी जोग, लग्गी अलापं ॥१७॥

रंगी रंग भूमी, बितालं उसद्द'। हुवै हूक बज्जै, हहल्लं बहिल्लं[3]।
गयन्नं ति गिद्धं, जु सिद्धं बिमानं। रतं रंग रत्तं, सुरत्तं न्नयानं ॥१८॥

लवं लोक पालं, कहं कह सुभीरं। लियो तात संगं, महामल्ल वीरं।
तहां सुष्ष दुष्षं, न तातं न मातं। तियं तुंग तुंबी, महा मोह बातं ॥१९॥

कवित्त

अद्ध रैंनि अंतरी जुद्ध, वत्तरी सपत्ती।
अट्ठ अट्ठ जुग्गिनि, अट्ठ वैताल वियत्तो।
जालंधर सम्मुही ईस, अग्गै यह कत्थी।
भिरे जित्ते हिंदू[4] तुरक्क, भारत्थ जुरि वित्ती।
चावुंडराइ सिर समरसी, सिर जद्दौं कूरम्म बली[5]।
पावा सीस पंचौ पवित्र, दूरि जाल गंठी सु कली ॥२०॥

वीर भद्र अरू रूद्र जोति, जालप्प जलप्पिय।
कहै वीर बैताल सूर, सामंत कलप्पिय।
कहु सांत्ति संक्रमन वार, सतई रन मंड्यौ[6]।
कोइ न हिंदु दल जांन ग्यांन, दिन इक्क न षंड्यौ[7]।
अरु अद्ध राह चंपै रविहि, चंद ज्योति चिहुं दिसि दवै।
ग्रह माल लोइ बंदै नहीं, नीरव मद्धि रष्पौह वै ॥२१॥

---

1 BK2 BK3 आबध। 2 BK2 गरे। 3 BK2 समस्त पद छूट गया।
4 BK2 BK3 हींदू। 5 BK2 BK3 बल। 6 BK2 BK3 मंड्यो। 7 BK2 BK3 षंड्यो।

केंद्री है शनि सूर स गुरु, ग्यारहुं ससि तीजौ।
नौमि शुक्र तिन चक्र जनम, मंगल बुद्ध बाजौ[1]।
राह केत मुष रष्षि विप्र, दष्षिन हर चंतिय[2]।
जोति चक्र जुध वक्र दुष्ट, दानव करि मंतिय।
त्रिय त्रिपुर जीति त्रिपुरारि हूं, षल सनमुष रष्षै।
तव हि ग्रह ग्रहनं गंठि पुज्जै, पुहप सुषहिं जुद्ध जित्तो षिनहि ।।२२।।

जुद्ध करहु भिरि लेहु देहु, कै अप्पि अप्प[3] वर।
जष्ष बंध कुब्बेर नाम, सुब्बेर[4] सुविचित्तिय।
तुम सब कंदल कल्यौ, सूर सावंत कलप्पिय।
कवि मनुष दनु रूप भूप, वंबरि करि उड्डिय।
किमि अरिछ[5] आवर्धान, सिंग वानावलि फुड्डिय।
किमि किमि सुषग्ग पंजर वहै, किमि सुराह सुग्गहि गहिय।
भारत्थ कत्थ भावै भवहि, जच्छराज अच्छी कहिय ।।२३।।

दोहा

सूर सुवन जुद्धंत अथिग, गई सु तित्थि अतीति।
बाम कलउ कंदल अनी, भौ प्रति पदा अदीत ।।२४।।

कवित्त

च्यारि सहस असवार, राइ चावंड दुहिल्लौ।
चौदह सहस मफरद्द[6] मियां, मनसूर सुहिल्लो।
दुहूं हक्क हु[7] छक्क सीस, टुट्टै धर धावहिं।
आनंदित अपच्छरा अप्प, इच्छा[8] वर पावहिं।
चावंडराइ दाहर तनौ, हर हारा वलि संढ़्यौ।
मफरद्द षांन पैरोज सुव, तेजवंत भिस्तहिं गयौ ।।२५।।

रजक दंड सिंदूर[5] सेत, चामरनि सेत धज।

---

1 BK2 BK3 वीजै। 2 BK2 BK3 वंतिय। 3 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया। 4 BK2 BK3 सुवेर। 5 BK2 BK3 अरिष्ट। 6 BK1 फरद। 7 BK2 हहक्करि। 8 BK2 BK3 इच्छानि। 5 BK2 BK3 सिंदूष।

सेत छत्र अभिराम[1] जुद्ध, आचरन[2] अष्ट गज।
हेम मुत्ति गज झंप दंत, कलयस कट्टारहं।
अवनि अद्ध झारहिं झनक्कि, पाइक्क पुंतारहं।
सुरतांन अग्ग पुरसान षां, अग्गवांन[3] हिंदुव सरक।
दुहुं बाह सेन सन्नाह वांन, मनु पश्चिम उग्यौ अरक ।।२६।।

दोहा

उत भज्जे भज्जे तुरक, उन जित्ते जित्तांहि।
डरहि सेन पांवार परि, सेत छत्र उत्तांहि ।।२७।।

कवित्त

हाइ हाइ अरिष्ट द्दष्टि[4], चावंड अंबरिय।
रे जद्दौ बग्गरी राम, कूरम्म संभारिय।
षिच्चिय राइ प्रसंग सोधि, पावस पुंडीरह।
अप्प अप्प मुष वंधि आइ, भंजहु भर भीरह।
नृप जैत राइ उप्पर करन, देइ दुहाइ दाहर तनै।
तिरच्छयौ तरक्कि लग्यौ लरन, मनहु अग्गि जज्जर वनै ।।२८।।

छंद रसावला

हिं मेच्छ भरं। एक्क एकग्गरं। काइ जा कप्परं[5]। झारि वडप्फरं ।।२९।।
षग्ग झार झरं। गैंन लग्गा वरं। निद्ध[6] जालंधरं। द्रोन नच्चै धरं ।।३०।।
सीस हक्का करं। दंत दंतू सरं। अंत आलू झरं। अर्भ सोहै रिनं ।।३१।।
नाल कट्टे सरं। ढाल पील ट्रढरं। केलि साष ट्रढरं। वीर सा बंबरं ।।३२।।
जानि टुट्टे परं। कंध बंधै भरं। तार बज्जी हरं। सटि कंबूत्तरं ।।३३।।
पंच पंच घरं। मुत्ती लद्धी नरं। राइ चावंड सौं। षिरै[7] गौरी लरं ।।३४।।
सोहि गोरी इनं। जैत छत्रं तनं। अवुं राया रनं। मेच्छ भंजे घनं ।।३५।।
अद्ध अद्ध तनं। बाहि बाहु द्धनं। तुंड मुंडे वनं। भीभि नालं भनं ।।३६।।

---

1 BK2 BK3 आभरन। 2 BK2 आवरन। 3 BK2 BK3 अग्गिवांन। 4 BK2 BK3 द्रिष्टि। 5 BK2 BK3 कप्फरं। 6 BK2 गिद्ध। 7 BK2 BK3 षिर।

पीपि वाचा मनं । कूकी लग्गी षनं । अत्थि घोर छनं । वृंद वृंदे लिनं ॥३७॥
लोक लोक ग्गनं । योग मग्गौ जुनं । षग्ग लद्धी षिनं[1] । देव पित्रीयनं ॥३८॥
स्वामि छुट्टे ऋनं । श्रोण रेण[2] प्पनं । पिंड सारे घनं । सूर भित्तीयनं ॥३९॥
कव्वि चित्तीयनं । चंद चंदाननं । देव वरदाइनं । .... ॥४०॥

कुंडलियां

हम दिय छत्र जु छांह कौ, तुम लिय छत्र मरन्न ।
मो दुर्योधन जोध[3] लगि, तुम भय करन करन्न ।
तुम भय करन करन्न, हंकि उठि सिंह सिंह पर ।
झर औझर झंझोरि तोरि, गयंद[4] डारि धर ।
ज्यों गो वच्छा प्रतिमोह दोह, लग्यौ सुदाहं कह ।
कहौ राज पृथिराज छत्र, हम दियौ छांह कहं ॥४१॥

दोहा

परचौ राउ जैतह सुरण, पति अव्बु घन घाइ ।
सूर राज सोमेस सुत, करी अप्प सिर छाय ॥४२॥
हत्थ इक्क इक्कह विहय, विहथ इक्क विवि षंड ।
दल दद्धर[5] समझि न परै । वाजि राज चावंड ॥४३॥
कर कर्कस बज्जिग दसन, जसन जेम त्रिय तार ।
कलह सु प्रिय मन मन मथन, सुनि गौरी उदर हार ॥४४॥
गवरि हार उच्चिय[6] श्रवन, दुज्जिय दिय छत्र चंद[7] ।
समरक[8] समन सपन्न[9] कस, अप्प सुनि कवि चंद ॥४५॥

मुडिल्ल

वाम अनी कंदल सौ वित्यौ । प्रति पद सुत आदित्य आतित्यौ ।
सोम दिनहिं दुतिया तिथि रंज्यौ । उद्दीहन कलह सु कंदल संज्यौ ॥४६॥

---

1 BK2 BK3 छिनं । 2 BK2 BK3 रेन । 3 BK2 योध । 4 BK2 गयदंत ।
5 BK2 BK3 दुधर । 7 BK1 बंद । 6 BK3 गव्बिय । 8 BK1 समरक्क ।
9 BK3 सपन्नं ।

कवित्त

मुष निहारि छत्र धरि परचौ, पांचौ पंचानन।
गौरी[1] दल बल ग्रह्यौ चुंग, चुषषौ मेच्छायन।
एक सर उद्धरिय एक, धारह उद्धारिय।
एक भार[2] सम्भार एक, हारह उज्भारिय[3]।
वर वरन विहसि जच्छ जु कहै, रहसि विहसि पुच्छै सु हर।
घर इक्क तरंगिनि रुक्क जल, कमल जांनि नंच्यो सु हर[4] ॥४७॥
बड़ गुज्जर रा राम ढाल, ढुंढी सुरतांनहं।
हय गय नर वत्थिय न जिनि, मृग राज मृगानहं।
सभय सेन पति साह कंध, कट्ढन झुकि झुक्के।
कुटिल द्दष्टि[5] तहं फिरहिं सकल, मिलि तहं तहं रुक्के।
डंबरिय डहकि जुग्गिनि हसै, जिमि जिमि धज बंबरि परै।
दनु देव जच्छ गंध्रव सकल, कित्ति सूर सोरह करै ॥४८॥
राज राव परसंग देव, बग्गरि बड गुज्जर।
षग्ग मग्ग अकलंक सीय, साई भुज पंजर।
राज गुरु द्विज राव वलिय, वंभन भय भंजन।
सिलहदार सारंग सार, सिंधुर घर गंजन।
छिति छत्र धार पंचायनौ, सहस सत सद्धै[6] समर।
शिव सुनै जच्छ अस्तुति करै, सापि भरै जुग्गिनि सुघर ॥४६॥

छंद रसावला

इति अच्छै भरी। सेन भंगं परी। साहिजा ढल्लरी। चहूं पषं फिरि ॥५०॥
लेहु लेहु क्करी। राइ जा संभरी। ढिल्ली राजं भरी। उट्ठियं बंबरी ॥५१॥
नैन रत्तं वरी। षोलियं षंडरी। एक एकं तरी। जानि बिज्जु झरी ॥५२॥
अद्ध अद्ध द्धरि।...]
भूमि लुट्टे करी। वारि तोच्छं घरी। मत्थ नच्चै नरी। नेज चूरं[7] भरी ॥५३॥
सिद्ध साधं ररी। श्रोन रंग ढरी। देव देवं हरी। वरं अच्छे वरी ॥५४॥
सुभि मग षल्लरी। दुहूँ सद्धन टूरी। सूर निम्भे डरी ....॥५५॥

---

1 BK3 गोरी। 2 BK2 BK3 मार-सम्मार। 3 BK3 उझरिय। 4 BK2 BK3 सुर। 5 BK2 BK2 द्रिष्टि। 6 BK1 रुद्धे। 7 BK1 बूरं।

छंद भुजंगी

वहै वांन चहुवांन, आवद्ध वीसं[1] । लगे मेच्छ अंगं, मनौ वज्ज तीसं[2] ।
टुटै[3] संध संन्नाह, कै, अंग अंगं । उठी श्रोन छिंछी, जरै जानि दंगं ।।५६।।
चटचौ[4] वीर नंदी, ससूली अनंदी । नचै रंग भैरौं, बकै जानि वंदी[5] ।
चवै सट्ठि, चौसट्ठि, सौं[6] श्रोन छुट्टै । ग्रहै मोह भग्गा, जनौ सूर छुट्टै ।।५७।।

कवित्त

परचौ राव परसंग षग्ग, षग्गह[7] पति षुत्तौ ।
परचौ राउ भुवंड चंड, रावां संजुत्तौ[8] ।
सीहत्थैं सीहत्थ गैन, गंध्रव किय गानह ।
वरन इच्छ धर इच्छ द्रोन, श्रोनह कियं पानह ।
संभरिय राज संभरि कला, सघन घाइ संमुष लरिय ।
जिमि जिमि सु जुज्झि धरनिय परिग, तिम तिम इंद्रासन टरिय ।।५८।।
परचौ जुज्झ वग्गरिय वरन, झग्गरिय सुरंगय ।
सूर लोक सिव लोक लोक, भारत्थ कुरंगिय ।
बालप्पन जुवपनह वृद्ध, बडपनह बड़ाई ।
समर राज प्रथीराज बंजिह, वाजि सु चढ़ाई ।
दिव दिव सु दैव जै जै करहिं, पुहपंजलि अच्छै करनि ।
तजि लोक लोक तन घन[9] सघन, वस्यौ देव मंडलि तरनि ।।५९।।
परत सिंघ अचिज्ज विरद, साई भुज पंजर ।
सुन हत[10] कढ्ढौ जीहन तर, रष्यौ[11] मुष मंझर ।
ते कतार कुंडलिय रास, मंडलिय उल्लसिय ।
राइ रहै अध्घाइ जाइ, जुद्धहं मल्लालिय[12] ।
घन घाइ अघाइ निघाइ अरि, सत्त सुभाइ परंत करि ।

---

1 BK2 BK3 वासं । 2 BK2 BK3 तासं । 3 BK1 दुवै । 4 BK1 बढ्यौ ।
5 BK1 चंद्दी । 6 BK2 BK3 तै । 7 BK3 षिहढ्ढिय पति पुत्तउ ।
8 BK2 समस्त चरण छूट गया । 9 BK2 BK3 गन । 10 BK2 BK3 हित ।
3 रथ्यौ । 12 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया ।

दल मलह होलि जोतित्त[1] रह, भिरत सूर दिष्षौ सु हरि ॥६०॥
आरिष्ष राज गुरु राज, विप्रहं मुष चाह्यौ[2] ।
पंचाइत मंडली लेहु, इत्र कोटि सवायौ[3] ।
जा जुग्गिनि पुर देव राज, रष्षौ चहुवांनह ।
मो काया[5] बल भंग संग, होइहि सुरतांनह ।
द्विज हस्ते[5] मंडि छंडो ह्यहिं, मोहर जुद्ध विरुद्ध दिन ।
छिन भंगु देह विंदु छटा,[6] दुष न करहु महांत जन ॥६१॥
पानि मंडलिय दांन स्वस्ति, भनि वेद मन्त्र दिय ।
जंत्रहं[7] जग जालप्पराज, अंगहं अभंग किय ।
साधारन[8] निद्धीर भेद, छेदन रायह वपु ।
सिलहदार दिय सत्ति सत्ति, किय देव इन्द्र जपु ।
बावज्ज पायि[9] गज्जिय सकति, वरिर घंट गोरिय सुघर ।
सुनि हक्क हक्क हय गय मुरिग, सहस पंच उत्तारि धर ॥६२॥
सहस पंच उत्तरिय षांन, षुरसांन सपत्ताउ ।
पहु पष्षै पतिसाह आइ, सुरतांन मिलत्ताउ ।
तीनि[10] वीर उज्जान मारि, अंकुस गज फेरिय ।
चक्रवान चतुरंग चंपि, चावद्दिसि घेरिय ।
परि सिलहदार सारंग दै, गरुब षांन गोरी गसिय ।
उर उरन उरभ्भि अच्छरि[11] छरन, उर[12] वस्य इह ठबसिय ॥६३॥

पन्न[13] धार दिय पन्न[14] कन्न, लग्गिवि कर साह्यौ ।
पंगु पुत्ति किय पत्ति बंचि, संदेस सुनायौ ।

---

1 BK2 जोति जोति । 2 BK2 BK3 चाह्यउ । 3 BK2 BK3 सवायउ ।
4 BK1 मोका रावल लंग संग । 5 BK1 हस्ति, BK2 हस्त । 6 BK2 BK3 विक्क छटा । 7 BK2 जंत्र जाल जालप्पराज । 8 BK2 सार धार निर्थार ।
9 BK2 पाय । 10 BK1 तानि । 11 BK1 अच्छर । 12 BK2 उरवसि उरवःयाह वसिय । 13 BK2 BK3 पंन । 14 BK2 BK3 पंन कंन ।

अमी गयो[1] कल चंद कमल, मंडिय ति मान सर।
गति गयंद गहि इंद रूव, रति रंभ सुग्ग हर।
मति मान विनय लच्छिय सहस[2], मोर पिच्छ केसा[3] सुमन।
हा[4] हंत मार मिट्यो[5] हियो, उडि न हंस तौ हंस विन ।।६४।।

पंन धार परि हार, गुज्ज, गामार वीर रही।
स्वर्ग नारि उर[6] धारि, कह सु संदेस वार इहि।
निवरि पिम्म[7] संकरि सबर, संकर उर लज्जिय।
छल बल कलि छुट्टे न जान, जिय बाल सु सज्जिय।
तू नाम कैहरि कमल सार, धार चट्टिढ़ विमल।
पल चारि[8] जाइ जुग्गिनि पुरह, कहिय कत्थ गिद्धनि समल ।।६५।।

इति श्री कवि चंद विरचिते पृथ्वीराज रासे गौरी साहाब दीनोयुद्ध तदंगर्त जालंधर देवी स्थाने महेशं प्रति वीर भद्र जक्ष बैताल योगिनीनां संवादो नाम षोडशः षंडः ।।१६।।

1 BK2 BK3 । गयउ । 2 BK2 BK3 सहज । 3 BK2 केसी सुस, BK3 केसा सुस । 4 BK3 ह हंभ । 5 BK2 BK3 मिथ्यउ । 6 BK1 उद्धारि, BK3 उधारि । 7 BK1 BK2 BK3 पिम । 8 BK2 चरिय ।

सप्त दश खंड

कुण्डलिया।

जन्म जानि अंतर मिलन, जुग्गिनि पुर आवास।
चरण लग्गि वंद्यौ मरन, सब परि गहरु[1] षवास।
सब परि गहरु[2] षवास, जनमु जान्यौ जंजारह।
काम बाम धर्मार्र पार[3], छंडिय परिवारह।
छत्र धार सुरतांन मीर, सिर षांन षवासहिं।
करै वंदना षग्ग षवास[4], जनम कह कासहिं ॥१॥

पृथु आउध फुट्टहिं, गुरज्ज[5] बज्जिय गुज्जर पर।
जनु पषांन बुंद रुंद चंद, लग्गिय ढुज्जन घर।
टुट्टि टट्टर[6] सिर श्रोण छिछ, उट्ठिय भूमि वुट्ठिय।
तुरग रत्त मन मत्त सहस, आउध[7] ले उट्ठिय।
असि नेत आबु[8] इक्कत घरिय, लरि जुज्झिय अडरित परिय।
धनि सेन साहि गोरिय गुरु[9], यति नर तुंम तिन वर करिय ॥२॥

छंद त्रोटक

नव[10] नब्बि जुरं, जुथयं जुथयं।
ततथे ततथे, ततथे तथयं।
असिजं असिजं[11] असिजं जघयं।
लुत्थि लुत्थि उलत्थि, पलत्थि पयं ॥३॥
गज वाजि फिरक्कि, फिरै हथियं।
उडि[12] मंडल लै, उडि जा कथियं।

---

1 BK1 गहरि। 2 BK2 गइरि।3 BK2 BK3 पारि। 4 BK1 वास न जम। 5 BK2 BK3 गुरज। 6 BK1 टटर। 7 BK2 BK3 आयुध। 8 BK1 आवद्ध क्कत। 9 BK2 गरुवति। 10 BK2 BK3 नवि। 11 BK2 BK3 असिंझं असिझं। 12 BK2 BK3 उड।

सक साल सुवाल, हलक्कि जमा।
करि घाइन दाइन, झाक झमा[1] ॥४॥

कुण्डलिया

दिवि[2] कुंडलि अश्रुति थपिय, फिरि दच्छिन गुरु राज।
सर लग्गे[3] बंछयो मरन, स्वामि स लभ्यो काज।
स्वामि सलभ्यो काज सरल, धायो सन द्रोनह।
वह इन शस्त्र समस्त सबै, बड गुज्जर श्रोणह।
उर चंप्यो कट्टार मेच्छ[4], हत्थह रन मंडलि।
विप्र जोति नृप होति अश्रु, ति थाप्पिय दिव कुण्डलि ॥५॥

कवित्त

हालाहल वित्तायौ[5], गिद्ध जंबुक कोलाहल।
रुधिर बुंद अंतरहि, अन्त अम्मर डोलाहल।
बार बार गुन धुंकि हुंकि, श्रवननि झक झाई।
हा! बलिभद्र सभद्र सिंधु, रुन्ध्यो रन साई।
संग्राम बत्त रम्मिय कहे, लग्गे गात दुराइया।
गुर नाह गरुव गोरिय धरा, जद्दौ तेक उचाइया ॥६॥

रन रत्तौ दलभद्र कह्न, पावस प्रति लग्गौ।
तूं धीर जा धीर भीर, रावत ते भग्गौ।
हुं ढुंढ़ारी ढाल हाल, कट्टौ सुरतांनी।
बड गुज्जर दाहिमा बोल, लग्गे उरतांनी।
प्रारम्भ राज पज्जून सुव, बट्ढारी बट्ढे सुभर।
असवार[6] सनाह अस्वंत अध, मनु विवंध बंटी विधर ॥७॥

अग्गे बधे वियारि[7] पछे, जोवन दव लग्गि।
हय गय नर आररिय, भररि गोरिय घर भग्गी।

---

1 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया। 2 BK2 BK3 दिव। 3 BK2 BK3 लग्गि। 4 BK1 मेक। 5 BK2 BK3 वित्तयो। 6 BK1 असवीर। 7 BK3 वियारइ।

पग छुट्टत पतिसाह षांन, षांना षुर सांनी।
हिंदवान कैं हत्थ सैद[1], अग्गै सुरतांनी।
सिर दाम रिसांन निसांन, पति सुब्बिहान असमान मति।
हलकि गहै चहुवांन कौ तूं, पठान अंगवान पति ॥८॥

छंद [विधु माला]

[लहु गुरु छह सत्तारेह, मात्रा एहा अक्षर अंदोई।
पग पत्ति सुनंदा नाग भनिंदा, विधु माला छंदोई॥]
कूरम्मा वाले, समरस झाले, सिंधुर ढाले कर बेहाले उच्छाले।
गोरी घर काले, अस किय ठाले, परि[2] बेहाले तन हाले ॥९॥
उर धरि सुरतानं, सै सुरतानं, तुरकानं भुज भानं।
डहकंत[3] निसानं, बज्जि दुनानं, असि झननानं[4] सुरतानं अग्गे ॥१०॥
चहुं किय चहुआंन, तेक उवानं, किय घमसानं असमानं।
दुहुं दुहुं मरदानं, झर झर थानं, अस किय ठानं ढर पानं ॥११॥
आवद्ध तुटितानं, मिलि वर ध्यानं, जानि विमानं मल्लानं[5]।
....॥१२॥
धम धम लत्तानं, बहु गत्तानं, राजा भानं सुविहानं!
नर किय तषतानं, दहसित षानं, रहसि रिसानं विरुझानं ॥१३॥

कवित्त

उवे सेन आलम्म[6] आइ, आलम्म[7] संपत्तौ।
है[8] हिन्दू आलम्म[9] आइ, जदु उप्पर कित्तौ।
द्रवइ द्रवइ अंकुरि घरिय, वज्जीय झर झर[10]।
नरिय नरिय वित्थरिय[11] हरिय, जम्मन आवन घर।
रन राम दुर्जोधन भर भिरन, वालमीक व्यासहं करिय।

---

1 BK1 सेद। 2 BK1 पर। 3 BK2 डह डह, BK3 डह। 4 BK1 झररानं। 5 BK1 मल्ल्यानं। 6 BK2 BK3 आलंम। 7 BK2 BK3 आलंम। 8 BK2 यह, BK3 ह। 9 BK2 BK3 आलम। 10 BK1 झूर। 11 BK2 वितुरिय।

हुइ होहिं आदि हिंदुव तुरक, मुकति मग्ग बितिय धरिय ॥१४॥
इकु नव सहस नरेस, इकु त षंधार ततारह।
इकु गोरिय कुल सबल, इकु त मंडल परिहारह।
दुवे सेनपति सूर पूर, हक्कारहं ठाई।
इकु संभरिय सहाइ, इकु त षुरसांन सहाई।
मच्छ मेच्छ भेच्छ छुट्टिय, विसर ढुसर तेऋ लग्गिय सुभर।
अइ उदर बृत्ति लज्जिय सवर, दुहुं नरिंद फुट्टिय सु सर ॥१५॥
षूब षांन तत्तार पूब, मारू मह नस्सी।
षूब षांन आबूव जेन, सोध्यो रन गस्सी।
षूब धर्म स्वामित्त षूब, सिर तेक प्रहारिय।
नाहर राइ नरिंद परिय, पष्षरिय पहारिय।
अहिं हार हिंदूताई सु दिन, वह भोरी बह[1] षूब हुव।
धारंक तेज नीसांन धुरि, सुन्न सेन मंडिय सु भुव[2] ॥१६॥

शाटक

आचिज्जोइ[3] अचिज्ज राजन्न रनं, भूपाल भूपालयं।
भाराक्रांत निवृत्त धन्न धरनी, निर्घातयं घातयं।
धाराधार[4] सु धुंक हुंक धरनी, सुव्वीर[5] सुरतानयं।
गोरी सैरति[6] चार तुंग तरुनी, ताराय तारायनं ॥१७॥
दंती दंत त्रसंत[7] धेनु धरनी, कूहीय कूहायनं।
ढालं ढाल सुढाल माल उललं, उल्लायनं[8] भायनं।
हायं हाय सुहाय हंत तुरगै, जाटी[9] जटा लूटनं[10]।
लूटालूट षवंग षंग षबरं, षायामि[11] षायाइनं ॥१८॥
अंती अंत सु अंत राइ उडनं, चुंगाइ चंचु पुटं।

---

1 BK3 एह। 2 BK1 भव। 3 BK2 BK आचिजोइ। 4 BK2 BK3 धोरा।
5 BK2 BK3 सुवीर। 6 BK1 सेरति। 7 BK1 उसंत। 8 BK2 उआयनं।
9 BK3 जारी। 10 BK2 जूटनं। 11 BK3 षावामि।

गंभी रंभ सुरंभयाइ वरु, भीबं भीयबं भाइनं।
चावंड परचंड जैत छत्रं, मेच्छं समुद्रं मही।
नेजं नेज सनेत नेत फिरियं, लब्भाय[1] मुत्ति सही ॥१९॥

सो रानं बड गुज्जराइ सिरियं, श्रोना हिता श्रोनयं।
सा सूरं धर डंडि गोरि हि धरं, धर नाभि जंगी धरं।
ता कूलं तब कंत कूल कलली[2], वाना हिता वानयं।
सा वाना सुनि मेच्छ इच्छ उवनं, आरंभितं अम्मरं ॥२०॥

वीभच्छ पुंडीर राइ पावस रसं, सिंघा दिनं रावरं।
षाना षान जमान जोति उभयं, ईच्छानि ईसं बरं।
बाहंते[3] कूरम्म षम्म षलयं, जामानि जद्दे दलं।
हे हे कंति हहंति उब्बि निरयं, नी कंपिनायं[4] पुरं ॥२१॥

तो सक्ति गरजंति साहि पलयं, हासंति देवप्पुरं।
जंगी जंग विछुट्टि छुट्टि भरयं, भूमी विहा राइनं।
चोरं[5] घोर स चोर पानि उडियं, चंदानि आयासनं।
सा चौरं हह हंपि[6] चंपि भ्रमियं, एकं घटी जुद्धयं ॥२२॥

सा जुद्धं पृथिराज राइ इक्कं, मेच्छाइसौ सत्तयं!
सन्मुषं षुरसांन षांन भनियं, हिंदु च हिंदू दहं।
बाहिं बाह सहाव गोरिय घरं, कम्मान भू नषियं।
.... ॥२३॥

कवित्त

महन सीह परिहार नाम, रानौ सु दिवानौ।
दल सोसन सुरतांन अद्ध, अंगह[7] अगिवांनौ।
ता ईधर ढिल्लरी सार, हिंदुव सिर वुट्ठे।

---

1 BK2 BK3 लब्भाय। 2 BK1 लवली, BK3 कूलली। 3 BK3 बाहंति।
4 BK2 उर्वीनी कंपिनायं। 5 BK2 BK3 चोरट्ठा रस चोर। 6 BK2 हं चंपि।
7 BK1 अम्हह, BK3 अंमह।

पग पच्छान परंत पग्ग, फोरहं[1] मुष उट्ठे।
षग षंडि भार तेतीस इमि, रुधि भुष्षो[2] झल्लोरियौ।
कट्ठी कुहार कलहंत रहि, ढंकी ढाल[3] ढंढोरियौ ।।२४।।

राम रूप महनंग धुक्कि, नीमांन दियंदे।
करके वर गव गाल तरसि, तुष्षार चढंदे।
समर सिंघ रावल ससि[4], वीर पावस रा अग्गी।
भार सार पष्षर षषरहि, तेक तेरह सै सांगी।
कचरंत षांन तत्तार सों, बल विचार बोल्यो ससुष।
मूहु मरद जांनि मिलि मरद हौ, हौं सु हिंदु तूं मेच्छ मुष ।।२५।।

परत षांन तत्तार परत, मारूफ[5] भग्गन।
हय कंधहं दिय पाय उतरि, विय कन्न[6] सु मग्गन।
उच्च गात उर हाथ ते, कलंपिय उब्भारिय[7]।
घात षंभ निघ्घात[8] जनु, कि झल्लरि झल्लारिय।
वर करिय टुट्टि हिय सिर रुधिर, धार झार संमुष ढरहिं।
सुभियहि सुभट हिंदुव तुरक, जसु जुग्गिनि जय जय करहिं ।।२६

जिहिं मुष कपूर सुवर, तंबोल प्रगासिय।
जिहिं मृग मद मधुर सुद्ध, कृष्णा गुरु[9] वासिय।
जिहिं मुष रम्मिह रम्मि, अधर अधरनि सु पराइन[10]।
जिहिं मुष हरि हरि हरि, भनंत लब्भे[11] ताराइन!
सो मुष परषि परिहार, परि षग्ग धार सम्मुह मिलिय[12]।
स्वामि[13] काज हिंदुव तुरक, सो मुष षंड विहंड किय ।।२७।

---

1 BK2 फेरे। 2 BK2 BK3 मुष्षौ। 3 BK1 ढाढ, BK3 ढा। 4 BK2 सभिरि। 5 BK2 मारूरा। 6 BK2 BK3 कंन। 7 BK3 उत्तारिय। 8 BK2 निर्घात, BK3 निवात। 9 BK2 BK3 गर। 10 BK1 सु पाराइनि। 11 BK3 लभे। 12 BK3 मिल्लिय। 13 BK1 स्वांमित्त।

दोहा

के सांई उप्पर सुभर, के भर उप्पर सांई।
कटि मंडल हिंदुव तुरक, हय गय घाइ अघाई ।२८॥
रावर सिंघ परंत रहि, सट्ठि षांन दस राइ।
परत महन पग्गिहार रन, मेच्छति सहस सवाइ ॥२६॥

छंद भुजंगी

परे सट्ठि षांन नंद, संदेस रायं। रहे ढाल ने जानि, नीसान ढायं।
छुटै मत्त मैमंत, दीसै भयानं[1]। रुप्पा रंधरी राई, सेस दिसांनं[2] ॥३०॥
चढ़ी पंषि पंती, परे पीलवानं। उलालंम आलम्म, छत्ती छितानं।
जुटे[3] जोट जूटे, लुटै भै भयानं।.............................. ॥३१॥
रुप्पौ[4] रंधरी राह, वाराह षेतं। रह्यौ रोहि आकूति, षांन सु जैतं।
भवै वान सन्नाह, सुभे सुदेही। वियो बष्ष अष्षै[5], नषं जानि सेही ॥३२॥
गहै[6] षग्ग धावै, सुबाहै[7] पचारे। लियै पाइं पुंडीर, सांई संभारे।
नियं धर्म रष्षै, सदावर्त गेहा। हुडू डूडू षेलंति, वाक्कल्ल जेही ॥३३॥
परै का भषै का, जरै का हुतासं। असू तन्नि[8] तै कै, धरै[9] कीय वासं।
कियं जट्ठ जड्डु[10] रणं रत्ति रत्ता। लहो मुत्ती छत्ती, सु मुच्छिम्म[11]गत्ती ॥३४॥
फटे सेन दूनौ, भग गौ उधारं। दिषै षांन थानं, जिसै[12] प्रात तारं।
.... ॥३५॥

कवित्त

सिर आलम गुम्मान अषि, आरब ओजबक्किय[13]।
पासवांन सुरतांन सार सभ, मैं नहीं छक्किय।
दह भारा कम्मान तौन[14], साइक सोरह सै।

---

1 BK2 दिसानं। 2 BK2 समस्त चरण छूट गया। 3 BK3 जुये। 4 BK3 रुप्पो। 5 BK2 BK3 अष्षे। 6 BK2 BK3 गहे। 7 BK2 BK3 सुवाहे। 8 BK2 BK3 तिनि। 9 BK2 BK3 धरं। 10 BK2 हड्डं। 11 BK2 मूच्छिम्म। 12 BK2 BK3 जिसे। 12 BK2 उजबक्किय। 14 BK2 BK3 तोन।

अट्ठारा लोह कंध, छारे तु[1] हस्से।
विहत्थ कराई हत्थ की, बत्थराज घालन कहै।
मुज नंस मुजाइन तजि तुरिय, तक्कि तक्कि सम्मुह रहै ।।३६।।
तक्कै वह पृथिराज राज, तक्कै वह तोरन।
दिट्ठो स करूर मिले, मूरदा मुष जोरन ।
वाईं दिसि उनि आइ, चंपि चुंगिल उच्छट्टिय।
सारंगो सारंग भीम, बन मज्झि उयट्ठिय।
चौहान कमान करष्षि कर, अग्गिवान ढट्ढर बहिय ।
लगि थांन पषांन कृसन्न[2], उड़ि वैरनि कै भांल्लय रांहय ।।३७।।
वीयवांन सिंदूक मध्य, सुरतांन जांन बांह।
वहबल षां ढल्लरिय सीस, सिष्षर समेत ढांह।
त्रि लयवान ताकंत बोहि, कांह आलम गोई।
वेद बांन पुरसांन षांन, मुष मद्धि समोई।
पंचमै धुकांत धरनिय धरांक, भरकि[3] पुट्ठि गोरिय सुभर।
अस उच्चवाह अस्तुति करें, षूब षूब हिंदू सुहर ।।३८।।

छंद मोती दाम

धरै गुन पंच उभै इक तोन। रह्यौ रन राज गुरु जिम[4] द्रोन।
सुरंगिय भूमि अब्ब सुश्रोन। तमी तम[5] तेक प्रति घट जोन ।।३९।।
समी सम जुद्ध विरुद्धनि भोन। द्रवै पुहपंजलि अम्मर[6] गोन[7]।
इमि इम[8] अच्छरि कच्छरि ढोंन। वदी वर गिद्धनि संमर दोन ।।४०।।
मुरी घर गोरिय साहि अदिट्ठ। पराक्रम राज पृथ्वीपति रुद्ध।
.... ।।४१।।

कवित्त

जबर[9] जंग सुरितांन षांन, उर वांन विछुट्टिय।
भूमि बाहर इराक घोर, जंबूर उच्छट्टिय[10]।

---

1 BK1 तुर। 2 BK2 BK3 कृसन। 3 BK1 भरिक। 4 BK3 जिमि।
5 BK3 तमे। 6 BK3 अंमर। 7 BK2 BK3 गौंन। 8 BK2 BK3 इमि।
9 BK2 BK3 जबल। 10 BK3 उच्छिट्टिय।

चमर ढार चावग्ग[1] ढार, ढलकंतहं भग्गिय ।
कुहकबांन हूंवक्क सक्कि, संकर षन जग्गिय[2] ।
कहि चुंगल उंगल घरइ, भ्रमि जुग्गिनि पुर[3] विय विमल ।
हिंडोल हेम संजोगि गृह, चमर डारि गिद्धिनि समल ॥४२॥

कुण्डलिया

हा हंत ! न किन्न उस षिनि, गिद्धिनि समल समोल ।
चर मर दिष्षिवि तनु कियौ[4], नग मुत्तासु अमोल ।
नग मुत्तासु अमोल राज, चरनी उर चंप्पौ ।
यह स्वामी संदेस अमल, गिद्धिनि मुष जंप्पौ ।
उदक अर्घ आरम्भ कहहु, भारथ की कत्थहं ।
चमर चंपि उर तरुनि सीस, कट्ढति हा हंतह ॥४३॥

छंद त्रोटक

पति भ्रत्त संयोगि सुनंत सती । समलो[5] उर गिद्धिनि धांम मती ।
अहि कन्ह कुहू दिन कंदल भौ । घटि इक्क घटो मुह रष्षिन ज्यौ॥४४॥

प्रथमं पृथु तंत कथं[7] कथयं । पुरि राज वधू भव राज सतं ।
दिसि वाम चढ़ी पुरसांन अनी । तिन कै मुष रावर सिंध[8] अनी ॥४५॥

कर सिंध जु नाग मुषी निकसी । पहिलैं रस रुस्तम षांन नसी ।
नस ही प्रभु जंबुव कैं जर कै । धक ही धक इक्क परचौ धरकै ॥४६॥

गरु वौ षग षांन षुरेस गिल्यौ । षग षिन्न रह्यौ रण मज्झि मिल्यौ ।
रह्यौ षग षेलन षांन जहां[9] । तजि जीन जु वांनि[10] जिहांन तहां ॥४७॥

षग सेलहु लेह मतै हलकै । गिरिवांनह मैच्छ भुजा छलकै ।
उर पार पढ़े उर ते निकसे । जनु पल्लव केतुकि के विकसे ॥४८॥

---

1 BK2 BK3 चाविग्ग चमर ढारत क्कर भग्गिय । 2 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया । 3 BK2 BK3 "पुर विय" पद्यांश छूट गया । 4 BK2 BK3 कियउ । 5 BK2 BK3 शमली । 6 BK2 कलिह, BK3 कन्हि । 7 BK2 कथौ । 8 BK2 BK3 सिंह अरनी । 9 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया । 10 BK2 BK3 वान ।

मुर पंच हजार ति लुत्थि परै। दस तीनि कवंध उठंत लरै।
इति कत्थ कही समली सरसी। पुन गिद्धनि ग्यांन कहै रहसी ॥४६॥

कुण्डलिया

जो रस रसनन अन्न दिय, अधर दुराइ दुराइ।
से दुज कन कन विकस्यो[1], सषिनु[2] सुनाइ सुनाइ।
सषिन सुनाइ सुनाइ, मुंच मुंचिय लजि मन्नह।
सुथल विथव थल कंपि, नैन नटि नटि संपन्नह।
जियन मरन[3] मिलि मन[4], कह्यउ जीवन ही रण वस।
सो ही जीव सब मंडि है, सबै प्रीति मंडन जु रस ॥५०॥

दोहा

सु रति रैनि जन्निय[5] धुव, धवनि रसै रति रंग।
सु मंति संजोगि आलिंग नहं, भव न चित्त अति भंग ॥५१॥

मुडिल्ल

मै विनय विनय[6] करि, वर संच्यउ।
कनवज्जिय वसि करि, कर पंच्यउ।
लषि लषि नैन वैन, पिय मन्न।
धर धर धुक्कि[7] परी, सहियन्न ॥५२॥
छिन्न[8] छिन्न किसल, त्तन तट्टी।
मन जोइन भोइन, पर नट्टी।
अव्वुय गढ़ पढ़ सुव, अति छंदल।
भोजन नांहिं करावत, 'तंडुल[9] ॥५३॥
रन रुन्ध्यौ[10] गिद्धिनि कह्यौ[11], सुद्धि संजौई कंत।
समली श्याम सुलछिनी, अज्जु, कह्यौ नृप अंत ॥५४॥

---

1 BK2 BK3 विकस्यउ। 2 BK1 सषिन। 3 BK1 मरण। 4 BK1 मन्न। 5 BK2 BK3 जन्नियज। 6 BK1 विनौ विनौ। 7 BK3 धुकि। 8 BK3 छिन छिन। 9 BK2 BK3 तंदुल। 10 BK2 BK3 रुन्ध्यो। 1 BK2 BK3 कह्यो।

हूं जड़ तूं बड़ गिद्धिनी, तैं मिलि हड्ड[1] रु मंस।
वीर विरुद्धिय जुग्गिनी, उड़ तन सुक्यो[2] हंस ।।५५।।
हे बिल्लिनि लिल्लिनि सु गज, धज सम धवलिय बिंद।
उपरन पल पप्पिनि परै, अलप जलप यह निंद ।।५६।।
उड़ि पंषीनि अंषिनि निरषि, अंषिनि[3] अषंडल लग्गि।
घटिय इक्क पच्छे प्रकटि[4], वीर विभाई जग्गि ।।५७।।

इति श्री कवि चंद विरचिते पृथीराज रासे गोरी सहाबदीनयोर्युद्धान्तर्गत योगिनी चिलह गृद्ध रूपेण संयोगिता प्रति सुर समूह पराक्रम वर्णनं नाम सप्तदशः षंडः ।।१७।।

---

1 BK2 हड्डु रु। 2 BK2 सुक्यो, BK3 सुको। 3 BK2 अषन। 4 BK2 प्रकट।

अष्टादश षंड

दोहा

ग्रथ जु समर गिद्धिनि समल, कइ षल[1] पत्तिय साइ।
चवथि कंक जुद्धह सु विधि, आइ कहन विभाइ ।।१।।

कवित्त

डबरु डंकनिय डसन, इक्कै अधरानन।
साम तिलक दच्छिनियं, कन्न लंबे कंथा जन[2]।
ऊद्ध्र[3] केस रत्तलिय नैन, पिंगिय कुच नंगिय।
पै अलग्ग अलग्ग चम्म, अम्बर कढ़ि ढंकिय।
पुस्तक सु प्रश्नं वंचै, विहसि राज रवनि मंडै श्रवन।
वर वाम विरम्मौ[4] पंच सौ, पुनि सुंदरि[5] जुद्धा बरन ।।२।।

छंद भुजंगी

इयं[6] जुद्ध हदं, जु जंपै विभाई। जहां सेत छत्रं, पतै पत्तिसाई।
जहां सेत चौरं जु, मोरं मिमाही। जहां सेत वैरष, सिता गज्ज गाही ।।३।।

जहां सेत जड्डं, गजमुत्ति जूरं। जहां पषरी सेत, मौजं हिलोरं।
जहां सेत तासं, सिता नेज झंडे। जहां सेत दंतीनि, आवद्ध झंडे ।।४।।

जहां सेत आरम्भ, प्रारम्भ सेतं। जहां सेत ताजी, सिताश्री बनेतं।
जहां सेत सिट्ठक्क[7], ता लाग वाजं। जहां सेत ढालं, जु आलम्म गाजं ।।५।।

तहां नष्षि वाजी धरै लाज राजं। अषै षांन सुरतांन वे घन अगाजं[8]।
.... ।।६।।

---

1 BK2 षह। 2 BK3 जुब। 3 BK1 उधुं।4 BK2 विचम्मौ। 5 BK3 सुन्दर।
6 BK1 अयं। 7 BK2 BK3 सिट्टक। 8 BK1 समस्त पद छूट गया।

कवित्त

वज्र पात निर्घात धरनि, किय अंबर टुट्टिय।
दरिया दरि किय मथन मद्धि, गिरिराज अहुट्टिय।
हनवत द्रोन उपारि आंनि, नष्षौ[1] कि वीर घट।
दल धरक्कि सिव सीस बीस, भुज लरति मांन भट।
दल धरकि धरनि सिप्पर धरै, दैयै[2] कि किहिं उप्पर परै।
डंकिनिय कहै तुव कंत इमि, सुविहान अस्तुति करै ॥७॥

कुंडलियां

जिहिं बंध्यौ[3] सुरतांन[4] साजि, सो रुन्ध्यो[5] रन साष।
गुरु गुस्तान सुनंचिया, वीर विभाई भषि।
वीर विभाई भषि सैन, नंच्यौ पतिसाही।
गज कंधा आरोहि दिट्ठि, उट्ठि[6] सिरि ताही।
राजवांन उज्जांन समर, तक्यौ करि संध्यौ।
सो रुंध्यौ रन राज जिहि, सु पतिसाह जु बंन्ध्यौ ॥८॥

कवित्त

चिहुंटी वांन ति छुट्टी दिट्ठि, उत्ती मुठी भिन्नी।
कछु घत्तारी घत्त सगुन[7], जंजूरि विट्ठुन्नी[8]।
आवद्द सित मास कछु, दिन अट्ठा उन्नी।
तहं टोप सहित सिंदूक लूटि[9], भर भय रह भूमी।
अरि अरिय बंदि लग्गिय कहर, धर धमंकि मुच्छिय धरह।
इकतीस षांन षुरसांन सो धरनि[10], राज गहि गहि भरह ॥९॥

जिहिं लइय चोरि राठौर पुत्ति, भर लरन मरन लष।
लेहु बंधि हिंदू हिं तुरत, वाराह करन भष।

---

1 BK1 नष्षो । 2 BK2 दैय । 3 BK2 BK3 बंध्यो । 4 BK2 BK3 सुरितांन ।
5 BK1 रुन्ध्यौ । 6 BK2 BK3 उट्ठी सिर । 7 BK1 सगुनि । 8 BK1 विट्ठुन्न ।
9 BK2 लुट्टि भय रह भूमी । 10 BK2 BK3 स धरनि ।

हत्थ मंडि आरज्ज लई, मानिनि मही[1] छीनी।
जै बंदी[2] जरषइ तेक, तिस उप्परि[3] कीनी।
बेदार हत्थ दीना हिया, अब लब्भै पच्छै सु किय।
इकतीस मसंद विसंद भिरि[4], लेहु लेहु राजान जिय ॥१०॥

पूंजा पंज पहार बलिय, बंकट बघनौरो।
जुग्गिनिपुरिय सहाइ, देव देवर रन बौरो।
दहिया जंगलराइ चंद्र, सेनापति तारौ।
भारिय भारथराइ कंक, करि बार[5] उच्छारौ।
डंडरी[6] टाक टाका[7] चपल, चावद्दिसि रष्षहि[8] नृपै।
देव तिय गरुव[9] चहुवांन, प्रभु विभाई भोजन[10] जपै ॥११॥

लोहानौ आजांन बाहु, पानि प्पति गड्ढा।
लहु बाही लहु बाह, वीर बड्डा ही बड्डा।
पांनी पन्न[11] सु अन्न धन्न[12], वस्तर वासंदे।
हय हस्ती वे वास ग्रास, उप्परि गासंदे।
अग्गइ स्वामि सानाह गहि, चामुंडा बेरी भरत।
विब्भाइ नेत भारत्थ भर, है हीना अग्गै लरत ॥१२॥

ह रतिबाह सोभ्भति राव, जा जा गज बट्ढे।
गज उप्परि ढहि पड्यौ, जानि टुट्टि जिय कट्ढे।
कमानी[13] कालंक विरुद, बाही सिर उप्पर।
पहु पीनंगी ढाल सूर, साधी जु गज प्पर।
सुरतांन कांम सद्धन समर, राज सत्थ जद्दौं पनु।
अरि वांन अबोलो बोल तो, बोलै डंकिनि आह मनु ॥१३॥
करनराइ कुंडली समर, रावल बज्जीरं।

---

1 BK1 मह। 2 BK2 BK3 चंदी। 3 BK3 उप्पर। 4 BK1 भरि। 5 BK2 BK3 वर। 6 BK1 ठंटरी। 7 BK2 BK3 चांटा। 8 BK2 BK3 रष्षैहि। 9 BK2 BK3 गरू। 10 BK2 BK3 भोयन। 11 BK2 BK3 पंन। 12 BK2 BK3 धंन। 13 BK2 कमाना।

अनहिल पुर आभरन, राज राव ततहि[1] भीरं।
धौरे धुम्मिल केस राव, कन्नर[2] कन्नरवै।
कूरम्मी बलभद्र बंध, आरज नीडरवै।
सुरतांन[3] ढाल ढुंढत फिरै, रनव जित्ति प्रथिराज लहि।
डंकिनिय दुसह दुज्जर समर, वेली विद्रुम छंद कहि ॥१४॥

दोहा

दह सत्ता सावंत रन, दह तिय एक मसंद।
कहर कलह बल्लह सुनौ, वह संजोगि नरिंद ॥१५॥
पंच[4] जहां गुरु पंच लहु, मत्त बिसारेह वंड[5]।
डंकिनि डवरु जु डह डहै, रनह विदुग्गम छंद ॥१६॥

छंद त्रोटक

एवत्थ सु अत्थ असी असनं। गल कत्थनि वत्थ गही गसनं
भरतार निहार सुभार वनं। झुकि झुम्मिय झुम्मि सत्थ रनं ॥१७॥
धर धार धमंकि धमंकि रनं। मिलि अस्व[6] असुर प्रहार रनं।
पहुमान महम्मद आर रनं। जकि जग्गिय[7] षांन सुधार रनं ॥१८॥

छंद भुजंगी

आलील आकूब षांनयं। सारीरषां सुरतानयं।
पैरोज षांन पुमानयं। गुंजारि गाजी षांनयं।
ममरेज षां सुलतानयं। तुरकमां ताजन षानयं ॥१९॥
असिवाह[8] ईसफ षांनयं। नारिंग[9] नोसर षानयं ॥२०॥
चहुवांन गहि पहिचानयं। अविहारु भूपति सानयं।
असि आलूषांन सराहिए। कसि कोस काम क्रिवांनए ॥२१॥
धर पंथ रेन संचवी। महमूद जेन जुनेदवी।

---

1 BK1 तितिहिं। 2 BK2 BK3 कंनर कन र वै। 3 BK2 BK3 सुरितांन। 4 BK2 BK3 जह गुरु पंच वि पंचलहु। 5 BK1 चंड। 6 BK2 BK3 अस्व-रसू 7 BK2 BK3 जगिय। 8 BK1 असवाह। 9 BK2 BK3 नारिगी।

विपरीत भैरव मीरुने। गहिमांन षांन सु वेरने ।।२२।।
अलि आलू आलम कांम कौ। सकि स्वामि धर्म सुनाम कौ।
....।।२३।।

दोहा

अलिग जम्म आजम सुबन, भिरि भिरि हिंदुव मेच्छ।
आलम विनु[1] हिंदु आलम हि, साहन सह गहि इत्थ ।।२४।।
नारिंगी भर भूत नभ, अलि गल आलम षांन।
पिति पिरोज नौ राजन, सुवर चंप्पौ चहुवांन ।।२५।।

कवित्त

वान एक बारीह षांन, ढाह्यौ धर उप्पर।
करनराइ कलहंत नप्पि, भिद्यौ[2] सिर सिप्पर।
अहट्ठी हम्मीर वीर, विरच्यौ वारुनि बर।
दम्मसंत मसलिग महंत, आवलि कर उप्पर।
सावा लिंग सिंधु[3] पट्टन, पती मति सुमेर सुरतान सम।
डंकिनिय कहै संजोगि सुनि, सचु[4] पयंपै सुमति हम ।।२६।।

छंद त्रोटक

डह डहति डम्मर[5] डंकिनिय। कह कहति कूकति जुग्गिनिय।
तह तहति तेक तरंगिनिय। लहलहति बान विरुद्धनिय ।।२७।।
रह रहति बज्जन वज्जियन। वह वहति श्रोन षलक्कियन।
धर धरति सिर विन नच्चियं। पर परति पंजुलि अंजियन ।।२८।।
कर करति कलहन कंतियन। असि राज राजन छज्जियन[6]।
कसि माह मार मसंदयं। इति पार रच्छति छंदयं ।।२९।।
उडि हंस हंसनि इंदयं। नत अच्छरी प्रभु बंदयं।
....।।३०।।

---

1 BK2 BK3 विन। 2 BK1 भिषिद्यो। 3 BK1 सिंकक्कधु, BK3 सिंकधु। 4 BK1 सच्चु। 5 BK2 BK3 डंमर। 6 BK2 BK3 छुजियन।

छंद हनुवंत फाल

अति अन्त कालनि अत्थि। सुरतान मुच्छिय गच्छि[1]।
भिरि तेम जिनै[2] अलच्छि। परि भूप आवलि कच्छि[3] ॥३१॥
असि मसद षांन कम्मान। निय मन षिंदे चहुवांन।
परिवार पारस जुज्झि[4]। अस दैव गति अवुज्झि[5] ॥३२॥

कवित्त

इकतीसा आसंद मारि, मासंद महा भर।
दस सत्ता सावंत सूर, जंजुरिग धराधर।
द्वै थाया[6] कलहरी जोइ, जीवत उप्पारिय।
अग्गामी अगिवान राज, वत्था पत्थारिय।
एवत्थ परदार दिट्ठ, भै भग्गा भगाइन हरौ।
सावन वदि पंचमी[7] पंचकर, स्वामी मेच्छाइन हरौ ॥३३॥
अनाचार वर विप्र परौ, पातक हुं जुट्टिय।
हाहुलि राइ हमीर स्वामि, दोही करि नट्ठिय।
शिव केसव करि भेद भेद, करि वेदह निंद्यो।
पंच तत्व प्रभ एत सत्त, तजि साहस संद्यो।
पहु पंगुराइ पुत्तिय सुनहि, मुत्ति विलंबन कंत मिलि।
षट मास वीस वासर विहत, लहित सोम मंडलि[8] सुहलि ॥३४॥

छंद त्रोटक

दहता हत चित्तह हंत तिहं। डवरु डहकंत तमंकि निहं।
भवरी वर हंसनि हंस विनं। पुट रन्ध्र दिसा पहु प्राण विनं ॥३५॥
आल अल्लिनि अल्लिनि सो हसियं। भुव मंडल षंडकि नाव सियं।
त्रिगतं त्रय नंत सु मन्त्र मनं। छल ही छल हंत सुहंत हनं ॥३६॥
पदमा पदमासन वास नयं। उडि सिद्ध अयासन आसनयं।
.... ॥३७॥

---

1 BK1 अच्छि। 2 BK2 BK3 तीम जिने। 3 BK1 केच्छि। 4 BK2 BK3 जुझि। 5 BK2 BK3 अवुझि। 6 BK3 छाया। 7 BK3 पंचमि। 8 BK2 मंडल, BK3 समंडल।

कवित्त

उव संयोगिय आस जीव, जंजरि मंजरि गत[1]।
षंजरीटहं सारि इंदु गज, सिंघ भुंग पत।
अप्प अप्प अप्पयन, सपन जंसन दिट्ठि अप्पन।
निभय रात गत काज, काम किन्नौ क्रम तप्पन।
चिंताविं सचिंत डंकिनि उड़िय, पर परंत पर पार गहि।
संचरिग जुद्ध सावंत दस, उकति बंध कविचंद कहि।।३८।।

गाथा

पत्तिय गैण[2] विभाई वित्तिय, चातुर्थि[3] समर सा बुद्धो।
पंचमी कलह गुरुणो कत्थिय, कवि चंद साइनिय[4] बंध।।३९।।

कवित्त

आलमषां इक वांन वांन, इक्कै भुव भैरों।
इक वांन नारिंग[5] नेज, संगिय कुल कैरों।
छत्र चोर दस वांन नेज, नंडे भकभोरिग।
कढं न अरि अंगुरिय तीष, तोरन तन तारिग।
हय डोल लोल लच्छि न, फिरग कल कमान कुंडल कलह।
वारिधि विलोइ[6] सुरतांन दल, जदौ जाज अतुलित बलह।।४०।।
अतुलित महि मद महि मसंद, असु असनन पत्तिग।
संतुलित सारथि कर कमंध, जंटूर विहत्तिग।
अतुलित मीरां मिहिरवांन, धुक्किय नर नंषिय।
धर परंत सावंत मार, मारह करि हक्किय।
जग्गियो जाज आवाज सुनि, सजि परंत गैंवर घटिय।
हय हय सुसद त्रिभुवन ति, तु[7] रविमान कुल ठहं छुट्टिय।।४१।।
परिहार पीपो प्रसिद्ध, सुरतांन जु दिट्ठिय।
विहर कुंत सामंत अंत, अन्तरि असु नट्ठिय।

---

1 BK3 गतं। 2 BK3 गेण। 3 BK1 चातुर्थ। 4 BK3 साथि। 5 BK3 नारिंगी। 6 BK3 विलाइ। 7 BK2 तुर विमान।

पति पसाइ पंडव तुरंग, हक्कि हहक्कारिय।
उलहले करि कुंद चंद, चंदन उच्छारिय।
वलि विषम सुषम स्वामि तुम, हत क्षत राज रंज्यो रनह।
बाह बाह हिंदुव तुरक, समर शस्त्र टुट्टिय तनह[1] ॥४२॥

दुसासन दिट्ठी षंधारि, अडडो[2] परि पारिय।
केस साहि उर चंपि वीर, बंबरि उच्छारिय।
रे हिंदू रे मुसलमान, सिरि भिरि पुक्कारिय।
अन्न अन्न किय जुझ सुझ, नहि दिवसान भरिय।
इमि दल समुद्द सुरतांन कौ, चहुवांन सेना भिरिग।
किहि टुट्ट मुंड गज झुंड, ढहि धार धार किहिं टुटि परिग[3] ॥४३॥

घन घुरंत गोरिय निसांन, पेरोज षांन धपि।
तिहिं ठट्टर तर तेग वेग, डारिय झनंकि झपि।
षूब षूब साहिब सहाब, सनमान सुहुन्निय[4]।
गहि पष्षर परिहार अश्व, सम सम दो अन्निय[5]।
निद्धंग धाम मंडिग महर, हड् मांस मिलिग रसन।
बज्जिय बनिक्क कर कुच्छरिय[6], मनु षारिक षल्लह कसन ॥४४॥
आनन अग जंबूर वीर, बिद्धिग धर टुट्टे।
तब बंकट बघरौ[7] राइ, केहरि कर छुट्टे।
गोरी गयं गुंजारि हालि, हत्थहं हक्कारिय[8]।
छल पच्छे उच्छारिय बाघु, लग्यौ बबक्कारिय।
गहिनाइ गरुव गैंवर मुरिय, ढाल हाल आलम डरिग।
बलि इष्ट बलिय श्रोनह अवन, पति पवित्र कीनीय धरिग ॥४५॥
जूनानौ चित्रकूट राम, रावन भर भारौ।

---

1 BK1 सुतह। 2 BK3 अडो। 3 BK2 BK3 इस कवित्त के अन्तिम चरण छूट गये। 4 BK2 BK2 सुहुँनिय। 5 BK2 BK3 अंनिय। 6 BK2 BK3 कुत्थरिय। 7 BK2 BK3 वघनौर राइ। 8 BK2 हहकारिय।

समर सिंह करि आंन, सीह[1] लग्यौ ग्रह कारौ।
दान मान छुट्टे न गरुव, गैंवर मुरि हल्लिय।
आवग्रह उग्रहिय राज, द्युति तुंबर पिल्लिय[2]।
पर पुट्ठि दिट्ठि हनि[3] इन पिशुन, बार बार आयौ इहै।
सुरतांन षांन षंजरि बहि, गज हत्थहं जीवत रहै ॥४६॥
अलि ग्रहौ सुलतांन[4] टंक, ठट्टरी टुक्कि दल।
धंक धाम धररिय परत, वीर रहि हिं विरद बल।
हम[5] गरुव गोरिय गुमान, भुव बल उप्पारयौ।
स्वामि काज संग्राम धाम, धर तिल तिल डारयौ।
सुरतांन अग्रह कियौ, सु ग्रह संभु न संभु दिषयौ।
असमान असपति इग्गिय, कसि कसि कंदल पिषयौ ॥४७॥
कासमीर कामरूव[6], टंकहं उप्पारयौ।
टुंकराय हम्मीर धीर, पच्छै पति पारयौ।
साहि सब गिल करित तेक, डंडरिय न डुल्लिय।
छत्र छत्रपति छत्र अश्व, भूमी महं[7] मिल्लिय।
आलम्भु लब्भु[8] आलमन हुव, अभ्रन असमान हि धरत।
रस रासि रसंत जाति गति, जौ न सूर इत्तउ करत ॥४८॥
पूरि पैज[9] पहार देव, दहिया दल षित्तह।
वै छम्मी उच्छाह[10] धीर, राजन इत उत्तह।
चाइ गरुव चहुवांन राइ, देव ची[11] दीवानौ।
परत घाइ अघ्घाइ सरन, तक्यौ[12] सुरतांनौ।
बड़ वृत्ति गत्ति छत्रिय तनी, कुल घट बढ़ि न बधान हुइ।
भंडार विधाता मुकति किय, लूटन हार सु लुट्टि सुइ ॥४९॥

---

1 BK2 BK3 सीहि। 2 BK2 तंबर पल्लिय। 3 BK2 BK3 हन। 4 BK3 सुरतांन। 5 BK2 हसम। 6 BK1 काम रू। 7 BK2 BK3 महि। 8 BK2 BK3 लभ्भु। 9 BK2 BK3 पंज। 10 BK2 BK3 औच्छाइ। 11 BK2 वी। 12 BK2 तक्यो।

तबै राज गौ राज ज्वाबु, दीनौ हम्मीरा।
अहट्टी[2] गंभीर राव, पुहकर पुह[3] मीरा।
स्वामी सा चंडाह स्वामी, अड्डा सन्नाही।
ना जानौ मैं मेच्छ तेक, कीसी[5] सावाही।
रे राजपूत राजंग धर, कलकु भान रथ वोटरहि।
मंडलहं भेद भेदिग भुवन, आलोकह[7] सव्वह सु कहि ।।५०।।

छंद भुजंगी

पर मेच्छ पुंडीर, मिलि मास भौरे। गड़े गात गोरी, जरे हिंदु गोरं।
परे सहस सै दून, कूरम्म वाले। रुरे हत्थ डुंडु, मुंडे[8] विहाले ।।५१।।
परै पंच सै पंच, चहुवान ऊने[9]। मुरे मोरिया सव्व, भइ जाति सूने।
भिरे देव दानौ, मनौ वैर चीत्यौ। मुरचौ सेन चहुवांन, सुरतांन जीत्यौ ।।५२।।
परे सहस सोरह, सबै सेन गोरी। रहे जांने हिंदू, तुरक षेलि होरी।
....।।५३।।

दोहा

दिव्यौ देवल सम दयतु, रण ठट्ढो चहुवांन।
फिरि घेरचौ गोरी[10] सैन, मनहु छत्रनि भांन ।।५४।।
कहै मुच्छ मुह अग्गरे, वे कुफार फरजंद।
बांह षांन षुरसांन की, सिंगिनि अप्फि नरिंद ।।५५।।
सहि न बोल सम्मुह हन्यौ, वांन षांन षुरसांन।
दुहुं दुज्जी पुज्जी घरी, दिन पलट्यौ चहुवांन ।।५६।।
दिन पलटत पलट्यौ न मनु, भुज वाहै सव शस्त्र।
अरि भिद्यो मिटे कवचु[11], लिष्यौ जु धाता पत्र ।।५७।।

अनुष्टुप

बिधात्रा लिखितं यस्य, न तं मुचंति मानवाः।
म्लेच्छ मूर्षस्य हस्तेन, ग्रहणं पृथिवी पते ।।५८।।

---

1 BK1 राहु। 2 BK2, BK3 औहट्टी। 3 BK2 BK3 पहु। 4 BK1 अहु। 5 BK2 कसी। 6 BK1 क्कल कु। 7 BK2 BK3 अलोक। 8 BK2 BK2 मुंडे। 9 BK1 जांने। 10 BK2 BK3 गौरी सयन। 11 BK2 कवनु।

कवित्त

जिहिं करिवर अरि जरहिं, जरचौ निय करि तिहिं[1] कढ़त ।
जिहिं सकत्ति मुष सकत्ति, सकति षंचित छक छंडित ।
जिहि बाणावलि वांण[2] प्रांण, कंपहि मद सिंधुर ।
तिहिं मद सिंधुर सुंडि दंडि, किय छत्र नृपति वर ।
जिहिं मुष सहाब सम्मुह रुहि, न तिहिं मुष जंप्पौ[3] गहि गहन ।
पृथीराज देव दुब्बन[4] निगह्यौ, रे छत्रिय गुर गब्बहु न ।।५६।।
यह झंष्षो संझरिय मात, बंझरिय दिसा दिस ।
रा केली चहुवांन समर, वित्यो गंगा[5] दिस ।
नील गात पग पीत सीत, भैरौं भूतारिय ।
वत्तरि पहु पहु फुट्टि साम, झूली संसारिय ।
निग्रह्यौ राज सुरतांन[6] छत, रुधिर धार छवि उच्छरिय[7] ।
चहुवान आना वंध आननह, सु कवि चंद भनिय न धरिय ।।६०।।
सूर गहनु टरि गयो[8], सूर गह भयो राज तन ।
भारथ भर वित्तयो, भार उत्तरचौ[9] भुवन घन ।
हारु हर न[10] निसंठयौ सार, संसार नि तुट्टिय ।
मिलि हिंदू अरु मुसलमांन, षग्गहं षल षुट्टिय ।
संचरिय गल्ल संसार सिर, विरह संझ गछहं हरिय ।
वन[11] धाइ साहि चहुवांन लिय, गज्जने दिसि संचरिय ।।६१।।
गहि चहुवांन नरिंद गयौ, गज्जनै साहि घर ।
सा ढिल्लिय हय गय भंडार, तिहि तनै अत्थि धर ।
वरस अद्ध तिहं अद्ध मुद्ध, किन्नौ नैननि, बिन ।
जम्म जम्म वर रुद्ध जाइ, पृथिराज[12] इक्क दिन ।

---

1 BK1 तहि । 2 BK2 BK3 वान । 3 BK2 BK3 जंपो । 4 BK2 BK3 द्रुवन । 5 BK2 BK3 गा संगस । 6 BK2 KK3 सुरितांन । 7 BK1 उच्छारिय । 8 BK2 BK3 टरियो । 9 BK2 BK3 उत्तरयउ । 10 BK2 BK3 'न' छूट गया । 11 BK1 रन । 12 BK1 पृथुराज ।

कह करै नृपति समझन मनहि, अप्पु उपाइ सु बहु करिय।
विधिना विचित्र निर्मिय पटल, सुलिषित निमेष न इकु टरिय ॥६२॥
देवन सुर उद्धम्म[1] भयो, मद्धमन भारथ।
गदा पर्व उद्धम्मवान,[2] उद्धम्मन पारथ।
मेच्छ हिंद उद्धम्म कियो, पुव्व[3] हि नां किन ही।
अब न होइ है कहूं कहै, कह कवि दिन इन ही।
इनि जुद्ध मेच्छ हिंदुव हवस, हय गय पायक जुत्थ रथ।
संग्राम कच्छ नच्छह तनी, कहिय चंद कवियन सइत्थ ॥६३॥

गाथा

संबाह संझ रैनी नंचन[4], वित्ताह वीर वेतालं।
दह कोह गिद्ध गोम रणथल, थल्लिय पंच दीहाइं ॥६४॥

छंद त्रोटक

इति जद्द कथा सुकथी कथयं। अलकावलि आंगन संगनयं।
भव राजित धू वर संधुनयं। तनु जग्गित रत्त[5] रुमावलियं ॥६५॥
कर डोर डहक्क डहक्क वियं। विथुरे सिर अर्क कुसुम्भ हियं।
उनमत्त पुहप्प पराग कियं। वडवानल नैन झलम्भ लियं ॥६६॥
गलि चंद ललाट असीष सियं। गर मुंडिय माल महा कसियं।
फुनि डंबर डोर फनी उचियं[6]। जट गंग सिरोहिय ह्वै धसियं ॥६७॥
सिव आनन देषि सिवा हसियं। पुनि बध्ध चरम्म करी सु जियं।
पुच्छ उच्च[7] तिनं दिय के च थियं। बुचकारत भेष लग्यौ अस्थियं ॥६८॥
इह चंद वडं कविता कथियं। पहिचानत वीर समीप थियं।
.... ॥६९॥

दोहा

पहिचान्यौ तिहि चंद कवि, वीर भद्र सम वीर।
जा जुग्गिनि पुर जंगलहं, धरनि न रष्षै धीर ॥७०॥

---

1 BK1 उद्दम। 2 BK2 BK3 उद्धमन। 3 BK2 BK3 पुव्व ...से ...इन ही... तक पाठ छूट गया। 4 BK1 नच्चन। 5 BK1 रुत्त रमावलियं। 6 BK3 ओचियं। 7 BK3 उव्व।

कवित्त

परम हंस फल वंस राम, वासिष्ठ मंत्र सुनि।
अवधि राज रघुवीर नटिय, सभ मंडि छत्र धुनि।
छिनु नरिंदु[1] लहि नंद भयौ, चंडाल पर सुत्तह।
न छुव न छुव सोहित मुहित्त, लग्यौ[2] कलंक यह।
जागरत जोग दिष्षौ सुपनन, कर बंदि सन मुद्ध दुष।
संचरिय सोक लोक हुव, सन कवि कविंद लब्भिय[3] सु सुष ।।७१।।
सोक लोक संसार मिटै, आवन जु सद्य[4] कहु।
तूं जुगिंद्र जट पुत्र ग्यान, गोरष तत्त लहु।
मनि सु माया समुद्र निरत, हन नहि बुट्टिय।
हरित रंड लागंत कोह, कंदल सों जुट्टिय।
वीराधि वीर जंपहि सु गुरु, जह सुग्रीव दुष्ष न लहै।
देवादि धर्म षुल्लै कमल, सु शिव पुत्र संची कहै।

दोहा

मुद्रा काननि मेषला[5], कच्छ धरचौ सिर भट्ट।
कंथा जोगपन धरै, पुनि बंधन कवि थट्ट[6]।

कवित्त

बज्र पाट दे घाट पाट, उघ्घरिग सद्द सुनि।
घंट घोर संक्रमन भइय, आवास वास धुनि।
तपै त्रिविध गुन तीनि, झीन जुग्गिनि पुर थांनहि[7]।
गहि नरिंद रिष[8] अंध सुनिय, संचरि किल कानहं।
पर नारि विरत उम्मत मनहु, आस वासन तज्यौ।
रस राज सपेमह मित्त तन[9], भर न छंडि धर्मह सज्यौ ।।७४।।

---

1 BK2 BK3 नरिंद। 2 BK2 BK3 लग्यो। 3 BK3 लभिय। 4 BK2 BK3 सब्व। 5 BK2 BK3 में दोहे का प्रथम तथा तृतीय चरण छूट गया। 6 BK2 BK3 तत्व। 7 BK2 BK3 थानह। 8 BK2 त्रष, BK3 नरिंदष। 9 BK1 पेम इह मित्त मन।

दोह।

इमि कवि आयो जात करि, दग सुपिषिष गृह साज।
पुच्छे सुत भृत सु त्रिय तहं, कहा करै पृथिराज ॥७५॥
तव सु त्रियनि उत्तरु दियौ[1], बोलि कुभाए वैन।
गोरिय बलि कर संग्रहौ[2], कियौ साहि बिनु नैन ॥७७॥
सुनि श्रवननि धरनिय परिग, हरि हरि हरि रट्टिग।
नहि संभार विकरार सु कवि, तन मन हिय फट्टिग[3] ॥७७॥
तजिय बंध पित मात सुत, अरु मित्र इष्ट जन।
माया मोह संसार सुरग, त्रिय सब्ब अनित गिन ॥७८॥
इमि चंद बात सुनि मंद मति, कछू न काहु किहि विधि न कहि।
दिग वसन इक्क विविरत्त मन, गहिय भट्ट गज्जन सुरह[4] ॥७९॥

इति श्री कविचंद विरचिते पृथ्वीराज रासे पृथीराज गोरी सहाव दीनयोर्युद्धं तदंर्गत योगिनी वीर विभाई रूपेन संयोगिता प्रति सूर सामंत पराक्रम वर्णन, राज्ञो ग्रहण कथनं, अथ च जालंधर देवी स्थाने चंद्र कविना वीर भद्रण समागमं, ततो मुक्का इंद्रप्रस्थ गमनं नामाष्टादशः षंडः ॥१८॥

---

1 BK2 BK3 दियो 2 BK2 BK3 संग्रहो। 3 BK2 BK3 में समस्त चरण स्थान में—"तजि पुत्र-मित्र भाया सकल, गहिय चंद गज्जन सुरह" पद दिया है।
4 BK2 BK3 में ७८ ७९ संख्यक दोहे नहीं दिये।

उन्नीसवां षंटः

दोहा

प्रथम वैर भंजन मनह, पुनि स्वामी उद्धारह।
लोक वेद कीरति अमर, सु किय चंद सुद्धारह ॥१॥
गहिय चंद रह गज्जने, जहं सज्जन स्वामि नरिंद।
कब हूं नयननि[1] पिषिहुं[2], मनहु नयन[3] अरविंद ॥२॥
वपु बिभुति बहु चिट्टई, जट बंधी जम जूट।
माया मुक्कै मन गहै, को[4] पुज्जै अवधूत ॥३॥
सरसै वरु अरु कंठ वर, अरु हिय वर बीर।
हिंदु कहै हम देव है, मेच्छ कहै हम पीर ॥४॥
दिवस तीस पंथहं बहिग, गनिय न अहि निसि सभ्भ।
षटु दिन नैनन[5] असुद्ध भौ, थकि सुत्तो[6] वन मंझ ॥५॥
तहं पिपास लग्गिय सघन, जल ढूंढत वन लग्गि।
जहं सु इक्क वट तट निकट, कलयल सिंह सुजग्गि ॥६॥
ता सिंवहं उप्परि तरुनि, वह कह जंपि हसंति।
मनहूं धूम मज्झहं[7] अगनि, झब झलंत दरिसंत ॥७॥

छंद मुक्तादाम

सुगल्ल विनोद, विनोदिय भट्ट। धरयौ सिर केसनि, कौ जट जूट्ट[8]।
छिन छिन दर्प्पण लैकर हत्थ। करै प्रति बिंब, नियंब सुकत्थ ॥८॥
अहो[9] तुव रूव अहो[10] तुव गत्ति। दुष सुष भोगिय, को जिय पत्ति।
को प्रभु कौन[11], पुरी कहं वास। को अविनासिय, काहि विनास ॥९॥
कहौ किस वंदे, निंदै कौन। सु कौ वर वद्दै, कोइ सु मौन।
अहो कवि कब्बि, जिवे जल बिंव। त[12] उत्तर जाइ दियो प्रतिबिंब ॥१०॥

---

1 BK2 BK3 नयन्निनि। 2 BK3 BK3 पिषिहो। 3 BK2 BK3 नयौ।
4 BK3 कौ। 5 BK2 BK3 नैन। 6 BK2 BK3 सुत्तउ। 7 BK2 BK3 मझ्झह।
8 BK2 पट्ट। 9 BK2 अह। 10 BK2 अह। 11 BK3 कोन। 12 BK1 ते।

दर्प्पनु लै प्रतिबिंब सु सद्दय। चन्द्र सु चंद्र कला प्रति वद्दय।
द्वादस दून सु तत्तु[1] तुम्हन्निय। पंचनि आसि प्रकृति सुहन्निय[2] ।।११।।
ता सिर इक्क कमल्ल प्रगासिय। दिष्षत ताहि गयो भ्रम नासिय।
नील अनील वरन्न सुहंतिय। मुत्तिय मान प्रमांन सु मुत्तिय ।।१२।।
ता वर सद्द अनाहत होइय। ब्रह्म अनंत सुग्यानह जोइय[3]।
रेचक कुंभक पूरक पूरै। नाभि तटे जुग वट्ट सु जोरै ।।१३।।
सो महि[4] रवि अंबर जु गलिज्जइ[5]। ह्वै भ्रूकुटी रवि मंडल लिज्जै[6]।
नासिका अग्र दिठै[7] दिठि रष्षै। काम विराम षगै षट षंडै[8]।
जीरन वस्त्र जिमै तनु छंडै[9]।.......................................।।१४।।

दोहा

दरसि देविकिय भट्ट वर। कर सिर मंडन मंति[10]।
सो पवास करि सुंदरिय, जिहं जस[11] संग जु अंति ।।१५।।
हसि हरि[12] सिद्धिय सुद्ध मुष, नृप दह[13] दट्ट उभट्ट।
निरषि वीर अंबर धजिय, दिय सिर बंधन पट्ट ।।१६।।
इक[14] पट्टरु भट्ट रु सुभट, भव भव[15] [भय] भग्गी हंस।
परम तंतु रत्तउ[16] वयरन, परस पत्त...उदंस ।।१७।।
त्त्रुध पियास निद्रा गमिय, दम्यौ सु मोह मयंद।
रेवा रस पिय[17] पिवु दस, सुध्यौ चंद गयंद ।।१८।।
इहिं विधि पत्तौ[18] गज्जनै, जहं गोरी सुरतांन।
तपै मेच्छ इच्छ अप्पनी, मनहुं भांन[19] मध्यान्ह ।।१९।।
जय जय उभ्रति शुभ्र गति, नट नाटक बहु सार।

---

1 BK1 BK3 सुतत्त। 2 BK1 सुभ हन्निय। 3 BK2 मुजोइय। 4 BK2 BK3 सुम्मि द्रवि। 5 BK2 BK3 भिज्जइ। 6 BK2 BK3 लिजे। 7 BK3 दिट्ठै दिट्ठि। 8 BK2 षंडे। 9 BK2 छंडइ। 10 BK1 मत्ति। 11 BK3 जुसु। 12 BK2 BK3 हर। 13 BK2 BK3 डह दहट्ट। 14 BK2 BK3 इक्क। 15 BK1 जस। 16 BK1 रत्तव। 17 BK1 "पिय" छूट गया। 18 BK2 BK3 पत्ताउ। 19 BK2 BK3 भानु।

यह चरित्त पिषषत नयन, गयौ चंद दरबार ॥ २० ॥

छंद रसावला

दरब्बार गोरी भरब्भीर[1] कोरी। उडै रेण[2] झीनं। करै वाव सेनं ॥२१॥
मुषं मेच्छ उट्टी। पय पंच[3] गट्टी। कटि तूण धानं। कसै कैक[4] मानं ॥२२॥
हंसे कू[5] हलक्के। महीने अधिक्के[6]। फरी नेक भारं। गनै कोटि हारं ॥२३॥
बहै सोन राजी[7]। करै के निवाजी[8]। तसब्बीत सानं। कहे के कुरानं ॥२४॥
पढ़ै पत्ति सोही। सुरत्तान दोही। मरोरंति पुच्छं। गरु ग्यान तुच्छं ॥२५॥
दिट्ठी भट्ट दिट्ठी। हिय पट्ट फट्टी। क्रमं चे पिपानं। दरब्बार[9] थानं ॥२६॥

रड्ड

तहं सु अग्गै निरषि दरवांन[10], कनक लकुटि मनि जटित[11]।
रटित सुब्भ[12] तव दुब्भ[13] दिट्ठौ।
तुच्छ अंबर, संबल नहीं, अहित चित्त बुल्ल्यौ[14] त मिट्ठौ।
वपु विभूति पाषंड घन, धूत धूत पर पट्ठ।
भवन भोग रह छंडि करि, किमि सि जोग रह भट्ट ॥२७॥
हम सुजोगी जमन परिदार, जच्छ[15] जुग्गिनि पुरं।
दरस रस वै ति पारसि, त्रिविधि कल कवित्त।
जानौं सुच्छन्ति दर रसन रसाइ, न जाइ नहि गीह गाह गुरु ग्यांन।
सैल इत्थ पुच्छै कहौ जो, गुदरै सुरतांन[16] ॥२८॥

दोहा

हस्यौ जमन परि देषि कै, तुहि जानु कवि चंद।
जाहि स्वर सुन देव पुनि, मानत अमृत कंद[17] ॥२९॥

---

1 BK2 BK3 भ्भीर। 2 BK2 BK3 रण। 3 BK2 पेच। 4 BK2 BK3 केक। 5 BK2 BK3 क। 6 BK2 BK3 अधिके। 7 BK2 रज्जी, BK3 रजी। 8 BK2 BK3 निवज्जी। 9 BK1 वर ब्बीर। 10 BK3 दरावांन। 11 BK1 BK3 रजतनि जटित। 12 BK3 सुभ। 13 BK3 दुभ। 14 BK2 BK3 बुल्यो तु। 15 BK1 जत्थ। 16 BK3 सुरितांन। 17 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया।

तहां चिरं सु कवियन करिय, सु रुचि अप्पनी इच्छ।
सह सहा गुरु दिष्ष ही, जु कुछु भूमि पर सिच्छ ॥३०॥

छंद भुजंगी

रुहम्मी रहंगी रुहिल्ले सुरम्मी। श्रवन्नी वसन्नी सहक्कार[1] रम्मी।
धरत्ती धरन्नी[2] धरत्ते सुमाले। तुरक्काम क्कातं न तातं जलाले ॥३१॥
हबस्सीह हम्मी पवन्ने सुपन्नी। कुरेसी[3] पुरेसी गरूवे गुरन्नी।
नियाजी वियाजी सु काजी कुसल्ले। सवानी मसामी पुमेलै[4] सुसल्ले ॥३२॥
सुभै सेष जादे अवादे पठाने। दिषे[5] साहि गोरी गरज्जे सुथाने।
....॥३३॥

दोहा

इह विधि जांम[6] सुवित्तगो, भयो तीयो पहरांन।
हदफ साहि षिल्लन चढ्यौ[7], मनहुं उदधि अररांन[8] ॥३४॥

छंद पद्धरी

सह सलाम मग्गह सुमीरं। तहं रहे बंधि फिरि फौज तीरं।
अंगुलि धरन्नि धर धर मसंद। सिर नयौ[9] जबहिं भई न जारमंद ॥३५॥
पारस सहस्त्र लच्चारिय लाल। वन सुभहि पवारी मनहुं माल।
अग्गै सुबंधन सुरत्ति षांन। दस पंच हत्थ उत सुव्विहान[10] ॥३६॥
आसनह हंस ताजी सु साहि। नग जरित जीन लग्गै जु ताहि।
कंचन मुहाल करि मज्झि[11] वग्ग। जर जरित[12] रंग अति वग नग्ग[13] ॥३७॥
तसु कटक सेस सहि सकै सीस। धन पत्ति कम्पक डरि भुज्ज[14] वीस।
सिंगिनि सुवन्न करि आप हत्थ। मनु श्वेत वाजि सज्यौ सुपत्थ ॥३८॥
सिर ताज साहि सुब्भै[15] सु दीस। गुरु दनुज उदै किय तनुज सीस।

---

1 BK1 सहक्कारि, BK3 सहक्कर। 2 BK2 BK3 धरत्नी। 3 BK2 कुरैसी। 4 BK1 पुमैले। 5 BK1 देषि। 6 BK2 BK3 याम। 7 BK2 BK3 चढ्यो। 8 BK2 BK3 अरराज। 9 BK2 BK3 नयो। 10 BK1 सुव्विहानि। 11 BK1 मज्झ। 12 BK2 जटित। 13 BK2 में समस्त पद स्थाने "कठै कसै साहि सर सत्तो, नाय मनेस भेस धन पत्ति दोन" पाठ है। 14 BK2 BK3 दोनों पद छूट गए। 15 BK2 BK3 सुभै।

रंगहि[1] सुतीय अम्बर सुरंग। पिष्षियै इक्क चंदै विरंग[2] ॥३९॥
आलमु[3] अदव्वु पिष्षौ न जाइ। रुक्यौ सु मग्ग कवि चंद धाइ।
तनु बहु विभूति अवधूत दीस। करि करह दंडि दीनी असीस ॥४०॥

असीस = (आशीर्वाद) पद्धड़ी छंद

साहि झार साहिब्ब, भारव करियंति।
साहि कंध कुद्दार, निबलंत[4] साहि थापना चार।
शत्रुवनि साहि, मस्तक त्रिशूल।
लो भीति साहि, सिर अंकुस मूल॥
सर्वेति साहि रष्षण सहाइ ॥४१॥
कंटकिन साहि, हिय दत्त पाइ।
उत्तरे साहि दक्षिणे साहि पूर्वे साहि।
पश्चिमे साहि चारि साहि, सिर साहानि साहि।
समुद्रांत भूमि तप वलेश्वर इन्द्र भोगेश्वर।
जलाल अंगेश्वर एवं सुलतान सहाबेश्वर ॥४२॥ } 5

दोहा

देत असीस सिरु[6] नयौ, विन अछै फुरमांन।
दुसह भट्ट पिष्षौ नयन, वे पुच्छे सुरतांन[7] ॥४३॥

छन्द मोदक

विनु बुल्ल[8] तत्थ बुल्ल्यो सु छंद। हम सु साही वर भट्ट चंद।
अवतार[9] लीन पृथिराज सत्थ। वह गह्यौ होत अत्थौ अनत्थ ॥४४॥
मै सुन्यो साहि विनु अंष कीन। तजि भोग जोग मै तत्थ लीन॥
मै तक्यौ[10] तत्थ वद्रिका थांन[11]। थिर रह्यौ तत्थ सुनि सुव्विहान[12] ॥४५॥

---

1 BK2 BK3 रंगह। 2 BK2 BK3 विरामंग। 3 BK1 आलम। 4 BK2 BK3 निबलंत शत्रुवनि—तक पाठ स्थान में "निवेरति साहि भारात मत्सरेणात" पाठ है। 5 अस्वीकृत पाठ है। 6 BK2 BK3 सिर। 7 BK3 सुरतांन। 8 BK3 बुल्लत। 9 BK2 BK3 अवितार। 10 BK2 तक्यो। 11 BK2 BK3 थानु। 12 BK2 BK3 सुव्विहानु।

वै चंद अंधु मै रिसन दच्छ[1]। करतार हत्थ न क्करिय गव्ब।
अब चंद जाइ षिल्ले हदप्फ। द्वे[2] गल्ह काल्हि करि चलहु तप्प ॥४६॥
फिरि साहि जाहि फुरमान दीन्ह। तिहिं बहुत चंद मिहिमान[3] कीन।
....॥४७॥

दोहा

फिरत चंद चलि नगर कहु, दियो साहि फुरमांन[4]।
विधु उदित कुमुदिनि मुदित, गयौ अस्तमित भांन॥४८॥
करहि चंद महिमांनि सब, अगर धूप दिवि देह।
भिदहि न तिहिं सुष दुष्ष मन, मृतक वरं गन नेह॥४९॥
हदफ हरष करि षिल्लयौ[5], गृह आयौ सुरतांन।
झषत चंद मन महि मरम, इमि इच्छै सु विहांन[6]॥५०॥
उमर साहि घन घाइ इहि, रस रत्ती कर राइ।
तिमिर तेज लग्गिय किरनि, सुमिरि मन्त्र वरदाइ॥५१॥

छंद भुजंगी

निराधार विद्या दई देवि चंदं। जपै तोहि तोहिज्ज तोहि प्रचंडं।
कहं साहि गोरी असम्मान सूरं। कहं भट्ट फक्कीर लुट्टन्ति धूरं॥५२॥
कहं राज अंधल्ल बंधै विधायं। कहं कोस[7] कम्मान आवै न दायं।
तूहीं वान मातंगि[8] उत्तंग भारी। तुही वैर रूबी सकत्ती करारी॥५३॥
तु ही सत्य सत्तं वदं वेद मन्त्रं। तुही भेद अब्भेद[9] जानंति सत्रं।
तुही तेज सूरम्म सीयल्ल बंदै[10]। तुही अस्मान तुही भूमि नंदै[11]॥५४॥
तुही माइ जालंधि जालंध बद्धो। तु ही सिद्ध साधंति साधक्क संधो[12]।
तु ही प्रकृति पारं अपारं पुरुष्षं। तुही अज्ज अरधंग अज संग सुष्षं[13]॥५५॥

---

1 BK2 अदच्छु, BK3 अदच्छ। 2 BK2 द्वि। 3 BK3 मिहमान। 4 BK2 BK3 फुरमानु। 5 BK2 BK3 षिल्लयो। 6 BK2 BK3 "सुविहांन" के पश्चात भै विहान सुरितान दर दिसानं। 7 BK1 कास। 8 BK1 मातंग। 9 BK2 BK3 अभेद। 10 BK2 वंदो, BK3 बंदा। 11 BK2 नंदो BK3 नंदा। 12 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया। 13 BK1 सष्षं।

करामाति किद्ध करत्तार कायं[1] । तुही कामना[2] काम संसार जायं ।
हरै सत्रु[3] बंधं सु मंत्रं जपंतं । जुते[4] तेज तेजं जयं अंध मंदं ॥५६॥
अजै वा विजै वा सहि देव छंदं । घरी पंच ज्यों देवि कोतिग्ग देषे[5] ।
सती साहसी सिद्धि तूंही विसेषे[6] ।.................................॥५७॥
मनं मातु मैं शूर लग्यौ मरत्ती सिरं सर्व भद्रा सुतारी करत्ती ।
जमी जंतु सिज्जंति जालंध रानी । सरै सर्व काजं वरदाइ[7] वाणी ॥५८॥
तुहीं देवि पुष्पं विरुष्षं रिसानी । तज्यो मोह मग्ग गो आसमानी ।
निरूपम्म रंगी अरंगी सु जायं । सुभै सुब्भ यानं लियं हत्थ हायं ॥५६॥
स गुन्नै मनम्मै विहानं । बजैं दुंदुभी देव घूमै निसानं ॥६०॥

छंद भुजंगी

महिल साहि सुरतांन साहिब्ब गोरी । जगे जुल करणं जानि सम्मान जोरी ।
किताबैं कुरानैं किसे कन्न लग्गै । डरे देव वाणी नहीं मंत्र जग्गै ॥६१॥
दरै दानु दिज्जै सु लिज्जै फकीरं । तहां करि सकै कौन गृह साहि पीरं ।
चलै सिष्ष रुष्ष[8] वल्ली मुंडली धा । रहै सत्त दूनी दुहूँ ग्यान दीधा[9] ॥६२॥
हियं हेतु अनहेतु[10] विद्या दुलष्षै । सुगंठै धनंतरी[11] रूप सष्षै ।
वाचिज्जै वीश्र नारद जेहा[12] । जिकै अन्न पीवै नहीं जीव[13] तेहा ॥६३॥
वस्तरै वास वासै जु हत्थं । इतै सुन्न कन्नै दुकं नैन कत्थं ।
जितै पुन्न पुंगी कथं पुन्न धारी । तिते अप्रवाही जिसे भूप भारी ॥६४॥
हजामत्ति सिष्षं तृता[14] तीय लोयं । तहां किं करै दुष्ट वैरी सकोयं ।
षान षंधार अनुकूल सारै । भव कपट धरिया चिंत[15] भारै ॥६५॥

दोहा

भइ सद्द आयास धुनि, भौ सु काम तुव सत्य ।
तिहिं चिंतै चित्यौ सु मनि, मनि रष्षौ रष्षौनि ॥६६॥

---

1 BK3 कायां । 2 BK1 कामनी । 3 BK1 हो सेत, BK2 हरे सेतु । 4 BK1 हुते । 5 BK1 देषी । 6 BK1 विसेषं । 7 BK2 BK2 में उमामै विसासै षरतीति साही । तुंही अथि सासाइ तुंही देवि नाहि । अधिक पाठ है । 8 BK1 रूपावली । 9 BK2 रीध्या, BK3 रीढ्यो । 10 BK1 अहेतु । 11 BK2 BK3 तरित वीबंति तेहा । 12 BK1 वंति । 13 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया । 14 BK2 BK3 तृया । 15 BK2 BK3 चित ।

छंद पद्धरी

इम चिंतित चिंत्यौ[1] सुरतांन। कहां भट्ट निसुरत्ति षांन।
विह[2] विराग वन जाइ चंदु। द्वै करहिं गल्ल दुनियाय[3] दंद ॥६७॥

वार्ता

ततार षांन, दस्त षांन, मियां षांन, विलंद षांन, च्यारि षांन, सदर बजीर आनि अरदास कीनी।

दोहा

षां ततार अरदास किय, वे अदब्ब सुरतांन[4]।
नट नाटक डंकिनि डंबरु, नहि पुच्छे सुविहान ॥६८॥
बहु फकीर अरु जाइ हम, करामाति सुरितांन।
कहहु गल्ह[5] द्वै[6] बुज्झियहिं, अरु जु[7] लेइ कछु दांन ॥६९॥
बह[8] जु भट्ट चहुवांन कौ, सुन्यौ वीर वर सत्थ।
अरजु[9] साहि आलमु कहहिं[10], किये वनै छत्रपति ॥७०॥
यह सहाब मुष उच्चरिय, मियां मलिक्क जु षांन।
धाइ चंद सम्मुह[11] चलै, वे बुल्लै सुरतांन[12] ॥७१॥

छंद पद्धड़ी

चुल्यो[13] सु चंद हज्जूर साहि, बुज्झी[14] सु बत्त अपु पतिसाही।
वैराग चंद तुम जोग सत्त, जो[15] गहि विरुद्ध हम मिलन मत्त ॥७२॥

दोहा

हमहि मिलै वै चंद सुनि, विरह दरिद्र स[16] लोभ।
अरु जै दुनियइ अद्दरिय[17], गई महत्त[18] न सोभ ॥७३॥
तब हि चंद अरदास[19] किय, भल पुच्छिय सु विहांन।
जोग भोग रह रीति हौं, सब जानै[20] सुरतांन[21] ॥७४॥

---

1 BK2 BK3 चिंत्यो। 2 BK2 वैराग गया। 3 BK1 दुनी आइ। 4 BK2 BK3 सुरितांन। 5 BK2 BK3 गल्ल। 6 BK1 क्कै। 7 BK1 ज। 8 BK2 BK2 वहु। 9 BK2 अरुजु। 10 BK2 BK3 कह। 11 BK2 BK3 संमुह। 12 BK2 BK3 सुरितान। 13 BK1 बुल्यौ। 14 BK3 बुझी। 15 BK1 सु। 16 BK1 सु। 17 BK2 BK3 अद्दरेहय। 18 BK2 BK3 महित। 19 BK2 BK3 अरदासि। 20 BK3 जानौं। 21 BK2 BK3 सुरितांन।

वालप्पन पृथिराज संग, अति मित्त तन कीन।
जु कछु सद्ध मन मैं भई[1], सब इच्छा रस दीन ।।७५।।
पुब्ब पराक्रम राज किय[2], कछु जंप्पौ तुच्छ ग्यांन।
अरज अब्ब कछु जंपिहौ, सो जानैं सुरतांन ।।७६।।
इक्कस दिन पृथिराज रस, मुष करिय तिहि वार।
सिंगिनि सर फर अग्र विभु, सत्त हनहि घरियार ।।७७।।
अप्रमांन कंप्पौ हियौ, दिलु न रह्यौ थिर थांन।
मुजद रोग मन रोग भौ, कढ्ढन[3] कौ विहांन ।।७८।।

छंद त्रोटक

तिहं कढ्ढ[4] कट्टन कौं पतिसाही तुं ही। मन मज्झि[5] रही कवि साल जु ही।
दै अजु किधौं करिहु किन ही। वन जा उस ही पतिसाह गही ।।७९।।

दोहा

सुनि सहाब हसि उच्चरिय, वै वे भट्ट विनट्ठ।
अंषी हीन बल हीन भौ, कामंट्ठौ[6] मति नट्ठ ।।८०।।
अंषी विनट्ठै बलु घटै, मन[7] नट्ठै सुरतांन।
जु किछु मोहि अप्पनु कह्यौ, बोलु रहै परवांन ।।८१।।

छंद पद्धड़ी

सुरतांन[8] साही फुरमांन दीन। सब नयर छोरि घरियार[9] लीन।
मुक्कल्यौ चंद राजनहं पास। तूं मंगि हम सु दिष्षहि तमासु[10] ।।८२।।

छंद त्रोटकु

मिलि साहि हरम्यहं रम्य चढ़ी। पृथ्वीराजहं अंत अनन्त बढ़ी।
जरकंबर अंबर सो पटयं। झष जांनि झमंकति[11] टंकतयं ।।८३।।
प्रति बिंब झरोषनि हाटकयं। नगिनी[12] नग मंडित नाटकयं।

---

1 BK2 BK3 भयी। 2 BK2 BK3 कीय। 3 BK1 BK3 कढुन। 4 BK2 BK3 कढु। 5 BK2 BK3 मझि। 6 BK1 BK3 मंठो। 7 BK3 मनि। 8 BK2 BK3 सुरितांन। 9 BK2 BK3 घरियाल। 10 BK2 BK 3 तमास। 11 BK2 BK3 झमंकित। 12 BK2 नलिनी।

मिलि तुंग तमास निहास कयं । ढकि अम्बर डंबर वास कयं ।।८४।।
वर वीर[1] विरंगिनि लास कयं । कल छंद कला कल पास कयं ।
रंग अत्तिनि वीरनि रात कयं । सब्बद भय चित्रक[2] बात कयं ।।८५।।
सरि दुग्ग विदुग्ग अबद्द कयं । वस रासित साष सबद्द कियं ।
कपट ग्गन छन्नक मुद्द कयं । ....।।८६।।

दोहा

चच्छु हीन दुर्बल नृपति, दस बंभन रहि पास ।
रोस अगनि तन प्रज्जरे, अरि चिंतत[3] चित्तास ।।८७।

छंद पद्धड़ी

फुरमान साहि साहाब ईस । दस हत्थ रषि दीनी असीस ।
धर बंधराइ अज्जान बाहु । दुज्जनै[4] राइ वर वैर दाहु ।।८८।।
चालुक्क राइ फिरि पैज पारि । पंगुरे राइ जग्गहं[5] सुं ढारी ।
धनु[6] धर्म धीर अर्जुन नरेस । जिहिं अस्सु[7] वंधि किय तिय भेस ।।८६।।
मन मत्थ राइ अवधूत धूत । संभरे राइ सोमेस पूत ।
जुग रषि नाम जज्जर शरीर । बलि संग रंग आयो सधीर ।।६०।।
राजनह दान है सुरति एक । घरियार[8] सत्त सर विधन मेक ।
विचारि देहि उत्तह सुभग्ग । यह सुनि श्रवन्न मन चित लग्ग ।।६१।।
एहि[9] वांनि चंद सुनि धुनिग सीस । सिरि नयो, नयो नहीं मानि रीस ।।६२।।

दोहा

सुनि कवित्त बल चंद किय, दस दिस भूपय पाल[10] ।
रिस धुनि सीस निषिद्ध किय, लोभी चंद मुहाल ।।६३।।

कवित्त

संभरेस धरि रोस सीस, धुनहि न[11] धनु सज्जहि ।
यह मित्त तन मित्त चित्त, चिंता तुव कज्जहि ।।

---

1 BK2 BK3 मीर । 2 BK2 BK3 चिचक । 3 BK2 BK3 चिंतित । 4 BK2 BK3 दुज्जने । 5 BK2 BK3 जग्य । 6 BK1 धन । 7 BK2 BK3 असु । 8 BK1 घरियार सार विधान मेरु । 9 BK1 इहि । 10 BK1 भूप जमाल । 11 BK2 धुनिहि न ।

निकट[1] सुनैं सुरतांन[2] वाम, दिसि उच्चह वसौं[3]।
जस अवास रतनं च अत्थि, लुट्टिनि कहि अत्तौं[4]।
दै दानु जानु सभरि धनी, बहु गड्डुहि तूं जरहि अब।
दिति अदिति वंस द्वै हंस उड़िय, हु उपाव हौं करों कब ॥६४॥

दोहा

सुनि कवित्त चल चित्त किय, अजहूँ चित्त शरीर।
मोहि असुभ्यौ[5] जांनि जिय, तात प्रबोधन धीर ॥६५॥
तूं विहुँ[6] अंषिनि अनुसरहिं[7], हुबहु[8] अंषि उलूक।
असुर वद्ध किंमि करि करौ, सुषं दैत अचूक ॥६६॥

कवित्त

संभरीस करि रीस[9] सीस, धुनिहि न नहि संकहि[10]।
चलह चित्त नन करहि मोह, अच्छर मन अंकहि।
उत्तंगह कर असिय वीह, उप्पर वावं गहि।
सैल वत्त संचरै राइ भुव, पर सब सुन्नहि।
सरतांन[11] षांन गुरु ग्यांन गहि, गुरु अच्छर चंदह भनिय।
मुक्कहिं न सत्त सर सत्त कहु, तूं सावंत[12] सोरह धनिय ॥६७॥
रेन रिंदवा अंध पिंड, सब्बउ[13] सुर संचौ।
आप तेज सम्भरि धरा, आयस गय पंचौ[14]।
जरा जाल बद्धयौ[15] काल, आनन पर षिल्लै।
हंत तहं अजप जप्पि, सर वर करि मिल्लै।
चलि हंस हंस हंस[16] हित, छंडि नेह तनयं जरहि।
पृथ्वीराज आज तुव कर मुकति, करि नरिंद जिमि उब्बरहि ॥६८॥

---

1 BK2 BK3 निकटे। 2 BK2 BK3 सुरितांन। 3 BK1 वंतौ। 4 BK2 BK3 लुट्टिय न करिय तौ। 5 BK1 अजूभ्यौ। 6 BK2 BK3 बिहूँ। 7 BK3 अनुसुरहि। 8 BK2 BK3 हैं बिहु। 9 BK3 री सीस। 10 BK3 संकिय। 11 BK2 BK3 सुरितांन। 12 BK2 BK3 संवत। 13 BK1 कब्बौ। 14 BK1 पांचौ। 15 BK2 BK3 वद्धयउ। 16 BK1 हंसा।

अनुष्टुप

मां देहि चित पूर्णानि, नित्यं कालानि संचयेत्।
वृषादि उदये प्राप्ते, कल वल्लींश्च जारयेत् ॥६६॥

छंद

राजदान सामर्थ सु किन्नौ । स्वर्ग अर्थ जस रत्त जु लिन्नौ।
अर्थी दोषो न पश्यति रावो। वकसि नरिंद बोल व्यवसायो[1] ॥१००॥

दोहा

जलपि भट्ट सुभ भट्ट स्यों, कर अप्पौ तिहं वैन।
परम तत्थ[2] सुभ्यौ नृपति, संगहि फुरमानेन ॥१०१॥

कवित्त

तव हिं चंद वरदाइ साहि, अग्गे कर जोरे।
कृपन दान तिमि गंठि[3] राज, हिय[4] गंठि न छोरे।
नटिन[4] कारन हीन[5] करै, जिहिं[6] आस छंडि तप।
अद्भुत रस सुरतांन सुंजु, मुक्यौ न जाइ अप।
छंडै न मोह जिय जनम कौ, अवै तेव अन्तर रहै।
फुरमान साहि सत्तौं विधे, फुरमान न सर गहै ॥१०२॥
झुकि ततार षां कह्यौ, भट्ट जीवन अनरत्तौं[7]।
कहत साहि फुरमांन सुरतांन, जांन प्पति जुत्तौ[8]।
लच्छ सबल घरियार अग्र वितु, इक्क[9] न विद्धै।
सर दुजु[10] मुष उच्चरै जु, कछु अग्गै सब सिद्धै।
फुरमांनु[11] साहि तुहि तीन दियै, जौ चहुवानहि होइ[12] कला।
इय वान इयैं वर सिंगिनि, घरियार निबिद्धे तला ॥१०३॥
भयो चंद मन चंद दंद, गय काम सपत्तौ।
पाति साहि गोरी नरिंद, दिय बोलनि रत्तौ।

---

1 BK2 BK3 व्यवसायौ। 2 BK2 BK3 तत्व। 3 BK3 गंटि। 4 BK1 नट्टिन। 5 BK2 BK3 ही। 6 BK2 BK3 जड जिहिं। 7 BK3 आन०। 8 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया। 9 BK3 इक। 10 BK1 दुज। 11 BK1 फुरमांन। 12 BK1 हुइ।

फिरिव चंद वरदाइ बहुरि, राजनं प्रति आयौ।
जो[1] कछु तंत कौ मंत अंत, कहि कहि समुझायौ।
मै दियौ दान[2] चिंता न करि, होइ चंद सद्दह[3] अरति।
त फुरमान काज अग्गे सरौ, देंहि साहि सैं नृपति ॥१०४॥

दोहा

सपत धत्त घरियार विन, पंच तत्तहांन जांम।
कठिन काम[4] गोरी बहन, अप्प देहि फुरमांन ॥१०५॥
पुनि[5] राजा कहि चंद सौं, सत रष्षौ हिय प्रांन।
हन्यौ सु अरि घरियार स्यौं, जो अप्पै[6] विय वांण[7] ॥१०६॥

कवित्त

इक्क वांन चहुंवांन करण सिर, अर्जुन अप्पौ।
इक्क वांन चहुवांन राम, रावण रुप्यौ।
इक्क वांन चहुवांन भरथ, लच्छन पारद्धिय[9]।
इक्क वांन चहुवांन ति कर, संकर जिम सद्धिय[10]।
सो इक्क वांण संभरि धनी[11], वियो बांण[12] नहि जंपियै।
घरियार इक्क[13] इक्क मुग्गरी, इक्क वार नृप टुक्कियै ॥१०७॥

अनुष्टुप

आलोकय महत्[14] चिंता, नित्यं कालेन संचितः।
अर्प्पयेद्[15] बाण बाणेन, प्राण मार्गे[16] न संशयः ॥१०८॥

कवित्त

एक फोरि पुह मेस सत्त, फोरे[17] जसु नासै।

---

1 BK2 BK3 जु। 2 BK2 BK3 दानु। 3 BK2 सदह, BK3 सद सदह। 4 BK3 करि विन काम। 5 BK3 फुनि। 6 BK2 BK3 अप्फै। 7 BK1 वांन। 8 BK2 BK3 चहुवांन कर्णे। 9 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया। 10 BK3 सद्धिज। 11 BK2 BK3 धणी। 12 BK2 BK3 वांन। 13 BK2 BK3 इक। 14 BK3 मह। 15 BK2 अर्प्पये वाणानि। 16 BK2 BK3 मार्गे। 17 BK2 BK3 फौरे।

ते दीहा बहि गये साहि, बंध तौ तमासै।
रवि बलु झंषौ[1] थयौ, कहा कोउ पढ़ियै वुझयै[2]।
मूओौ[3] न जीवै कोइ, मोहि पर मष्षर सुझयै[4]।
इमि[5] जंपै चंद वरद्दिया, वेरी[6] कट्ठ सुधौ रहर।
अब सांन न चुक्कहि नर रयन[7], इक्कु न फोरहि इक्कु सर॥१०९॥
पृथियराज कम्मांन बांन, डिढ़ मुट्ठि[8] गहहि कर।
जिन विन समुइन धरइ[9], भरइभुव पत्ति अप्पवर।
जु कच्छु दियौ कैंवास कियौ, अप्पनौ जु पायौ।
सुनि संभरी नरेस तोहि, अमरप्पुर आयौ।
विधना विधांन मिट्टै कवन, दीन मांन फल पाइयै।
सर इक्क फोरि संभरि धनी, सत्तह सत्तु गंवाइयै[10] ॥११०॥

दोहा

तबहि सु पांनि प्रविष्ट किय, सिंगिनि सर गुन बंधि।
रवि चंदह मन चंद भौ[11], मिलि राज मनि संधि ॥१११॥

कवित्त

भयौ इक्क फुरमांन इक्क, बांन हि गुन संध्यौ।
सो सबद्दु अरु वांन अग्र, अविचल करि बंध्यौ।
भयौं वियौ फुरमांन, षंचि रष्षौ श्रवननि वर।
भयौ तियौ फुरमांनु, परचौ सुरतांन[12] आनि धर।
लगि[13] दसन रसन बहु रंध हुव, बिहुं कपाट रुंध्यौ सरन।
सुरतांन परचौ षां पुक्करचौ, भयौ चंद राजन मरन ॥११८॥
परत धरनि सुरतांन षांन, मिलि षलक पिट्टि सर।
मै वरज्यौ चहुवांन साहि, दुसमन असंभ वर॥

---

1 BK3 झंष्षौ। 2 BK2 BK3 पढियहि वुझै। 3 BK[1] मुओ। 4 BK2 BK3 परमष्षिर सुझै। 5 BK2 इम। 6 BK2 BK चेद्दी। 7 BK2 BK[3] न ररयउ। 8 BK2 BK3 मुठि। 9 BK2 BK3 जिन विसमौ न धरइ। 10 BK2 BK3 सत्त गंवाई पइ। 11 BK2 BK3 रवि चंद मन वंद भौ। 12 BK[3] सुरितांन। 13 BK3 लग्गि।

भवन भोग रहि जोग पास, आयो रत तुव अरि।
बचन विद्धि तहं[1] सिद्धि, लियो[2], गोरी नरिंद हरि।
तिल मज्झि[3] भट्ट टूकहं कियो, तब सु साहि गोरिह धरचौ।
हिंदवांन षांन इम[4] उच्चरचौ, अब प्रतीति[5] को जिन करौ ॥११३॥
मरन चंद वरदाइ राज, धुनि सुनिग साहि हनि।
पुहपंजलि असमांन सीस, छोड़ी सु देव तिनि।
मेच्छ अवद्धित धरनि, नृपति नव किय संमत्तिग[6]।
हंस हंस मिलि मिलिग जोति[7], ज्योति हिं संपत्तिग।
रासौ असंभ नव रस सरस, बंद चंद किय अमिय सम।
श्रृंगार वीर करुण विभच्छ भय, अद्भुत हसंत सम ॥११४॥
न रहै तनु धन[8] तरुणि, किरणि उदयं अरु अस्तय।
चंद कला परिपष्ष[9] राह, करि गस्त विगस्तय।
न रहे सुर नर नाग लोक, लग्गै जनु जग्गै।
न रहै वापी कूप सत्त, सरवर गिरि भग्गै।
जांनहु सुजांन अच्छर अमर, विमिल[10] विमलि पुच्छित कहै।
भषि काल व्यास संसार सब, रहित गुरु गल्हां रहइं[11] ॥११५॥

दोहा

मंत्रीश्वर मंडन तिलक, वच्छा वंश भर भाण।
करम चंद सुत करम बड़े, भाग चन्द स्रव जाण ॥११६॥
तसु कारण लिषियो सही, पृथ्वीराज चरित्र।
पढतां सुष संपति लहै सकल, अरु सुष होवे मित्र ॥११७॥

॥ शुभं भवतु ॥

[यहां ग्रन्थ समाप्ति सूचक पुष्पिका नहीं दी गई ।]

1 BK2 BK3 विधि तिहि। 2 BK2 BK3 लीयो। 3 BK3 मंझि। 4 BK2 BK3 इमि। 5 BK2 BK3 प्रतीत। 6 BK2 नव नृपति सोहसि गति। 7 BK2 नहि तिनहि संजोति ज्योति। 8 BK2 BK3 धनु। 9 BK1 पिष्ष। 10 BK1 विवर। 11 BK1 रहहिं।

BK2 BK3 के अन्तिम छंद—

दोहा

प्रथम वेद उद्धरिय बंभ, मच्छह तनु किन्नउ ।
दुतीय वीर वाराह धरनि, उद्धरि जसु लिन्नौ ॥१॥
कौमारिक भद्देस धम्म, उद्धरि सुर रष्षिय ।
कूरम सूर नरेस हिंदु, हद उद्धरि रष्षिय ॥२॥
रघुनाथ चरित्तु हनुमंत कृत, भूप भोज उद्धरिय जिमि ।
पृथिराज सुजसु कविचंद कृत, चंद्र सिंह उद्धरिय इमि[1] ॥३॥

BK2 की अन्तिम पुष्पिका—

दोहा

महाराज नृप सूर सुव, कूरम चंद उदार ।
रासौ पृथीय राज कौ, रष्षौ लगि संसार ॥
शुभं भवतु । कल्याणमस्तु । पत्र ७ माहे संम्पूर्ण ३३५० लिषीयो छै ।

BK3 की अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री पृथिराज रासो समापता । शुभं भवतु । किल्याणमस्तु । श्रीरस्तु साह श्री नर सिंघ सुत नरहर दास पुस्तका लिषावतं । श्री: ग्रंथाग्रंथ ५५५ ध ॥छ॥
जाद्रिसं पुस्तकं द्रष्टवा, ताद्रसं लिषतं मिया ।
जदि सुद्धि मवि सुद्धं वा, मम दोषो न दियात ॥छ॥
लिषतं मयेन उदा ब्राह्मपुर मध्ये ॥ छ । श्री ॥

(इति नवदश खण्ड)
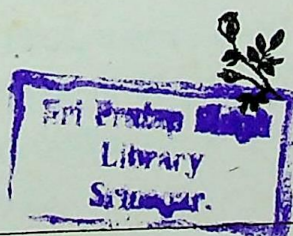
1 BK1 में ये तीनों दोहे नहीं हैं ।

नामानुक्रमणिका

इ

क

ष (ख)

स

Glossary

The meanings of such words which are considered to be in प्राकृत or प्राकृताभास, अपभ्रंश or अपभ्रंशाभास or peculiarly Bardic are given below.

Sanskrit, तत्सम and अर्द्धतत्सम words have been mostly left out. A few words, the origin of which could not be traced, have been given in a supplimentary list.

अकज्ज=अकार्य
अकिल्लौ=अकेला
अकुलातं=व्याकुल हुआ
अषारे=अखाड़े में
अषेदं=प्रसन्न
अष्षै=कहता है।
अग्ग-अग्गर=आगे आगे
अग्गि-जज्जर=अग्नि-ज्वलित
अचान=अचानक
अचिज्जं=आश्चर्य
अच्चे=अर्चना करता है, तृप्त होता है
अच्छ=निर्मल
अच्छरि=अप्सरा
अच्छित∠अच्छत∠अक्षत
अच्छयं=अच्छा, 2 क्षत रहित
अजहुँति=अभी से
अज्ज=अद्य
अजित=अजित-अजेय, 2 अर्जित
अजुत्त=अयुक्त
अजै=अजय, पराजय

अजौं=अभी तक
अटर—अटल
अत्तं=आप्तम्
अत्थ— अर्थ 12 अस्त्र। 3 अथ
अत्थत, अत्थयौ, अत्थइत, अत्थि-गय=अस्त हो गया।
अत्थ=था
अथ्थि=अस्थि
अद्धं=अर्ध
अदिट्ठ=अदृष्ट
अदेव=राक्षस
अनषंते=अनखते हैं, क्रोधित होते हैं
अनपग्ग-पुलंते=विना पाँव उछलते हैं।
अनभंग=जो न टूटे।
अनमंति=झुकते नहीं है
अनरोम-सिरल्ले=मुंडित सिर वाले
अनेव=अनेक
अपच्छरा=अप्सरा
अपत्त=अपत्य
अपं—आत्मीयम्।

अप्प = अपना । 2 अर्पण करना
अप्पति = अर्पण करता है ।
अप्पौं = अर्पित करता हूं ।
अप्पिय = अर्पित किया ।
अपुट्टै = उखाड़े न जा सके ।
अपुव्व = अपूर्व ।
अभ्रति = भरता है, पालन करता है ।
अम्मर = देवता
अमरच्छरि = स्वर्गीया अप्सरा
अमलत्तनि = निर्मल शरीरा सुंदरी ।
अमोह = विना मोह के, 2 अमोघ
अयान = नादान, अयाना (पंजाबी)
अरज = (फा.) प्रार्थना
अबल = निर्बल
अबलत्त = निर्बल
अवसान = (हि.बो.) होश हवाश
अवट्टि = उवट = उमँग = जोश में आकर
अविहठ = बुरा हठ
अविहर = लगातार ।
अवुज्झि = न समझ कर
अलष्षं = अलक्षित ।
अलक्क = अलक, जुल्फ ।
अलापी = स्त्री ने अलाप लिया ।
अलित्त = भंवरा
अल्लिनि = सखिएं
अलुज्झै = उलझते हैं
अलुज्झिय = उलझ गया ।
असवार = घुड़ सवार
अस्सं = अश्व
असज्झयौ = असाध्य हो गया ।
असमे = असमय में
असिषा = अशिक्षा
असिय = तलवार
असुधार = अश्रु धारा ।
असेर = अशेष
अहबा = अथवा
अहितं-सुहितं = हिताहित ।
अहुट्ठ = अधयुष्ठ, अविस्थित ।
अंजुलिय = अंजली ।
अंड बंड = व्यर्थ, अंट संट
अंदु-हस्ति = इंद्र का हाथी ।
अंदेस = संदेह
अंसी = अंशी

आ

आउध = आयुध
आकुल्ल = आकुल
आड = तिलक
आपं = आप्तम्, 2 स्वयं
आपतियं = प्राप्त किया ।
आभंग = भंग रहित, निर्विघ्न
आभरन = आ भूषण
आमुष्ष = मुख तक
आथ्यि = अस्थि
आन = अन्य
आयस, आइस = आज्ञा
आयास = आकाश
आया समुदं = आसमुद्र
आरज्ज = आर्य, २ अरज

आरज=आरज राय एक सामंत
आरन्नि=अरण्य
आरि=अड़ी करना, जिद्द करना।
आरीह=अरि ।
आरुठ=आ-रुठ-बहुत रूठना।
आलुज्झै=उलझते हैं।
आवट्टिय=आवर्तित हुये, मुड़े
आवद्दं=आर्द्र
आवधं=चारों ओर से घेर कर मारना-
२ आयुध
आवज्झ=आवध्य।
आस=आशु
आसंद=आसन
आसंस=आशंका
आहित=आहत।
आहुट्टे=चारों ओर से भिड़ पड़े ?
आहुट्टि=भिड़कर, आहुट्टपति-एक सामंत
भी है ।
आहुट्टना=ऐंठना ?
आहुट्ठि=आहुति ?

इ

इकइक्कति=एकैक ।
इक्कराय=एक सम्मति से
इच्छसु=इच्छस्व
इत्थी=स्त्री
इल=पृथ्वी, २ इलायची

उ

उक्किल्लिय=उखाड़ दिया।
उग्गह=उगता है।

उघटा=उघड़ना ।
उघरी=उघड़ी, जाहिर हुई ।
उच्च=ऊँचा।
उचाइ=ऊपर को उठा कर
उचाविया=ऊपर को उठाया
उच्चरे=उन्नत (वक्षस्थल)
उच्छंग=उत्संग
उच्छंगी=ऊँची, भारी (सेना)
उच्छटिय=उचट गया, हाथ से उच्छल
कर निकल गया।
उच्छह=उत्साह ।
उजारी=उजाला ।
उझनक्यौ=उझक गया, चूक गया ।
उझकि=उचक कर ।
उज्झारिया=उभार दिया ।
उज्झार=उद्धार ।
उटंकि=उटंकना करके
उतांही=वहीं पर।
उत्थू—उन्नत
उथपे=उखाड़ दिये।
उदंत=उद्-अंत, वर्षा ऋतु की समाप्ति ।
उदरंभी=चौड़ो ?
उद्ध=ऊँचा।
उद्धरै=उद्धार करते हैं।
उद्दंस=उध्वंस ।
उद्दंगह=उर्ध-अंग
उदिग्ग=उदित हुआ।
उद्दिम=उद्यम ।
उद्दुंति=उदय होते हैं।

उनंगी=भारी (सेना) "उनंगी सुरताण दल" (10-12)
उन्नरा=उन्नता
उनहारि=अनुहार करके, २ देख कर "चंद जेम रोंहिनि उनहारि" (3-9)
उनाहं=ऊँचा
उपट्टि=(हि. बो.) उपड़ कर, पहुंच कर
उपट्टै=उपड़ते हैं, पहुँचते हैं।
उप्पम=उपमा।
उप्पमाति=उपमा देता है।
उप्परहि=ऊपर को उठाता है।
उप्पारि=उखाड़ कर।
उप्पारै=उखाड़ दिये।
उप्पारणं=उखाड़ना
उपायौ=उपाय किया
उब्बरियं=उभारा
उब्भ=उत्सुकता, "सुनिरव सुंदरि उब्भ हुव" (9-130)
उब्भारि, उब्भरै, उब्भारहिं=उभारते हैं।
उभी=ऊपर को उठी।
उम्मत=उत्सुक होता है। "उम्मत मनह" (18-74)
उमद्दयं=उदित हुआ।
उय=उदय।
उरक्की=उर में अड़ गई।
उरद्ध=ऊर्ध्व।
उलट्टिग=उलट गया।
उलत्थि-पलत्थि=उलट पुलट करके
उल्लं=उल्लसित हुआ।
उल्हसै=उल्लसित होते हैं।
उलिचि=उलीच कर
उवं=उदित हुआ।
उवानं=ऊपर उठाया "तेक उवानं" (17-11)
उचाविया=ऊपर को उठाया।
उविट्ठ=उठ गया
उसास=साँस सूखना, व्याकुल होना।
उस्सालहिं=उसारता है।
उहास=जोर की हंसी।
उष्ठ=ओष्ठ।

ए

एकग्ग=एकत्रित।
एकठ्यो=एक स्थान पर।
एम=इस प्रकार।
एरहु=हेरहु=खोज करो।

ऐ

ऐल=भीड़, "ऐल गैल" (भूषण) "परी ऐल आलम्म हुवं जान थानं" (4-14)

ओ-औ

ओपम=उपमा
ओन=ऊन
औत्थान=उत्थान

क

कग्ग=कौआ
कचरा=कचरे=टुकड़े टुकड़े।
कच्चरि=कचूरा करके।
कच्छ=कच्छ
कच्छे=कच्छे=काँच्छ में

कछ्छ=कच्छप।
कच्छि=कांछ दबाकर
कज्ज, कज्जे=(पंजा०) कज्जे कर दिये अंग हीन कर दिये।
कट्टि-पट्टी=कटि पट।
कटक्क=कटक
कटक्कति=अति कटक
कटोर=कटोरा (हि. बो.) एक बर्तन
कर्णयर=कनेर का फूल या पौदा
कत्थं=कथा
कत्थी=कही
कनकनायो=क्रोधित हुआ।
कनं=(हि. बो.) कण=बल
कन्नरवै=कान मारता है।
कन्निघरे=कान पर धर लिया, सुना
कप्पियौ=काट दिया।
कबंध=धड़
कमट्ठ=कमठ।
कम्मान (फा.) कमान
कया=काया
करंक=हड्डियों का ढाचा
करक्कहि=कड़कता है।
करनक्कहि=कड़कता है?
करषि=खींच कर।
करवत्त=आरा
करव्वारि=करवाल
करारं=करारा=कठोर
करह=करभ
करिग=किया
करिज्जै=करिए।
करीव=हाथी।
कलउ=कलियुग।
कलक्कल=कल कल शब्द।
कलप्प=कल्प।
कलप्पिय=कल्पना-चिंतित हुआ।
कलह=कला, २. कलह, ३. कलभ।
कलंक=कलकी अवतार।
कसिक्कसि=कस कस करके।
कसंत=कस दिए।
कंक=मूठ।
कंगूरक=स्थान विशेष, २. कंगूरा।
कंठील=कंठ संबंधी।
कंदल=कंद मूल, २. एक सामंत।
कंदलह=कंदरा में।
कंदहि=कष्ट देता है।
कंनन=(बहुव०) कर्ण, कान।
कंध=कंधा
क्रष्यौ=खींचा।
कृत्या=मारण मंत्र।
काइ=कोई।
काइक=काया।
काइर=कायर।
काल्हि=कल।
कावंध=कवंध।
किक=कितना।
कांढे=कंढे पर, किनारे पर।
किकट्टिय+दांत किट कटा कर।
कियां=(हि. बो.) कण=हिम्मत।

कितकु=(हि॰ बो.) किधर को, २ कितना
किती=कीर्ति ।
किष्टं=क्लिकष्ठ ।
क्रिषित=कृश ।
कुच्च=कुच ।
कुचित्तयौ=बुरा सोचा ।
कुटवार=कूटने का वार=आक्रमण
"हथनार कुटवार सुनि" (10-44)
कुल्ली=(पंजा॰) झोंपड़ी, २ कुल समुह ।
कुसादे=(फा॰) कुशादा=विस्तृत ।
कुलह=कुल का ।
कुहक=मधुर स्वर ।
कुहराव=कुहराम, शोर ।
कूह=(फा॰) कोह=पर्वत, २ क्रोध ।
केलीत=क्रीड़ित ।
केव=कुछ, २ अथवा ।
कोटरा=कोट=किला ।
कोतिग=कौतिक ।
कोद=कोना ।
कोह=क्रोध ।
कोहल=कोलाहल ।

ष

षरग-षोद=तलवार की खोंद=मार ।
षग्गवर=श्रेष्ठ खड्ग ।
षनेद=खोदना ।
षप्पर=षप्पर ।
षभरि=खलबलि ।
बरि (फा॰) खबर, समाचार ।
षंधारी=खंधार संबंधी ।
षरक्यौ=खड़क गया ।
षरभरहिं=खलबलि मचाते हैं ।
षरह=खरना, शनैः २ समाप्त होना ।
खरे=खड़े रहे ।
षरौ=खरा-अच्छा ।
षलं=खल ।
षवास=(फा॰) अनुचर ।
षह=खेह=मिट्ठी ।
षहक=आसमान ?
षंगारौ=खंगार जातीय राजपूत ।
षंची=खैंची ।
षंजरी=खंजर ।
षिजि, षिजि=खिज खिज कर ।
षिजै=खिजते हैं, नाराज होते हैं ।
षिणं=क्षण ।
षुच्चै=खच खच नादानु कृति ।
षुदंत=खोदते हैं ।
षेदथारं=खेद करं ।
षेद्यौ=खदेड़ दिया ।
षेह=खे=आकाश ।
षोहि=(पंजा॰) खोस कर, छीन कर ।
ष्षोहिनी=क्षोहिणी ।

ग

गष्षर=एक राजपूत जाति ।
गज=गर्जना ।
गजी=गूंजी ।
गड्डं=गढ़, गढ़ा=गर्त ।
गब्ब=गर्व, 'गब्बहु न'=गर्व न कर ।

गब्भ = गर्भ ।
गर = गर्दन ।
गरिच्च = गरिष्ट ।
गरिट्ठु = गरिष्ठ ।
गरुव मुक्कि = गर्व छोड़ कर ।
गलिज्जइ = गलता है ।
गल्ली = गल गई ।
गल्ये = गल गये ।
गयंदी = गयंद = हाथी ।
गल्हां = यश ।
गवं = गौ ।
गवरि = गौरी ।
गवष्षिनि = गवाक्ष ।
गसंत = ग्रसता है ।
गसन = ग्रसन ।
गस्त = (फा०) गश्त ।
गहक्के = झपट पड़े ?
गहिग = ग्रहण किया ।
गहिला-वहिला = जंगल विशेष
"गहिला वहिला कनं वासिनं" (2-35)
गंज = समूह-ढेर ।
गंजन = नाश, विध्वंस ।
गंठि = गांठ कर ।
गंथ = ग्रंथ ।
गंभार = गंवार, मूर्ख ।
गंसी = नोकदार बर्छी ।
गंसो = बर्छी चुभो दो ।
ग्रहन पानीग = पाणिग्रहण किया ।
गाजी = (फा.) गाज़ी ।
गाजे = गर्जे ।
गारुरी = गारुड़ी = सर्प विष उतारने वाला ।
गासंदे = ग्रास करते हैं, कबलित करते हैं ।
गाहा = गाथा ।
गाहंतौ = गाहते हुए, अवगाहन करते हुए ।
गिंभ = ग्रीष्म प्रखर "गिंभ तेज वर भट्ट-रोष" (7-61)
गुज्जन = गुह्य ।
गुज्झव = (पंजा०) गुज्झा, गुप्त ।
गुंथिय = गुंथ दिया ।
गुद्दै = गुप्त बात कहता है । "कोइ गुद्दै नरेस सों" (14-35)
गुनच्ची = गुणी ।
ग्रेह = गृह ।
गैन = गगन ।
गोम = दिशा, गीदड़ । "गिद्ध गोम" (14-35)
"हर हर सुर गोम गौ"

घ

घट्टिय = घट गया ।
घत्तिय = (पंजा०) भेजा, २ मार दिया ।
घरणि = गृहिणी ।
घालि (हि. बो.) घाल कर, डाल कर ।
घालन कहै = घालने को कहता है ।
घुम्मइ = घुम्मण घेरी, चक्रित ।
घेरि = घेर कर ।

च

चक्कए=चक्रवत् घूम गए।

चक्कवै=चकित होते हैं।

चकावूह=चक्रव्यूह।

चष=आंख।

चषे=आंख में।

चषित=चखा, स्वाद लिया।

चतुरंगी नाह=चतुर स्वामी।

चव=चार।

चवै=बोलते हैं।

चंग=चंगा, अच्छा, "सुरंग चंग पिंडरी" (7-31)

चंटक=चतुर, वदमाश।

चंपट=(हि. बो.) चौपट, गायब।

चंपि=दबाकर।

चंलिचालु=चंचल।

चापि=चाप।

चारं=चारु=सुंदर।

चावग्ग=चार वर्ग।

चावद्दिसि=चारों दिशाओं में।

चाहम्=चाहता हुँ।

चिंटिया=चिपट गया।

चिट्टई=चिपटा ली।

चित्तह=चित्त का।

चित्रंगी रावर=पृथ्वी राज का वहनोई सामंत सिंह।

चिहुट्टहिं=चिमटते हैं।

चिहुरार=चिकुर।

चीचाल=पानी का वहाव।

चीचा=चंचु।

चीत=चित्त=।

चौकी=पड़ाव।

चौघट्टी=चार घड़ी।

छ

छगन=छाग-वकरा, तथा एक सामंत का नाम।

कग्गल=(हि. बो.) टोकणा=भारी वर्तन

छज्जियन=शोभित होते हैं।

छद्दं=अच्छादितम्।

छप्पयं=छपद=भौंरा।

छयल्ल=छैल छबीला, बांका।

छर=छल।

छंडी=छोड़ दी।

छंडै=छोड़ते हैं। २ छाले पड़ते हैं। "हिय छंडै"

छंदलं=स्वतन्त्र।

छावनं=छा गया।

छिंछ-छिंछी=छींटे।

छिति=क्षिति।

छेह=खेह, राख।

छोणी=क्षोणी, २ छावनी, ३ समूह।

छोहियं, छोहिया=क्रोधित हुआ।

ज

जकि=जक कर, संकुचित होकर।

जके=जक गए।

जक्क जक्की=संकुचित होती है।

जष=यक्ष।

जषं=(फा०) जख़्म।

जगि=यज्ञ ।
जग्गी=जागी, प्रकट हुई ।
जच्छु राज=यक्षराज ।
जठां=जरठांग ।
जत्ते=(हि. बो.) जितने ।
जद्दो=यादव ।
जवै=(हि. बो.) जभी. उसी समय ।
जमकह=यवक, जौं ?
जमारहि=जमाता है ।
जरकंबर=जरीदार वस्त्र ।
जरषइ-तेक=जड़ाउ तेग़ ।
जरजीन=जड़ाउ जीन का वस्त्र ।
ज़रद (फा०) ज़रद, पीला ।
जराव जरे=जरी तिल्ले से जड़ाउ ।
जरीन=(फा०) जरीदार रेशमी वस्त्र ।
जरेवे=जलाता है. मान करता है ।
"जरेवे गयंदं"
जलजिंदु=जलजीव ।
जलप्पिय=बोला ।
जंघारा=झगड़ालू योद्धा "जंघारा भीम"
जंजरिय (फा०) जंजीर से बांध दिया ।
जंजीवहि=जीवित रहता है ।
जंजोई=सम्यक् देख कर ।
जंबू=जम्मु नगर, २ जामुन ।
जंबूर=(फा०) छोटी तोप ।
जंत=जीव, जंतु ।
जंतौ=चला गया ।
जहं-कहं=जहां कहीं
ज्झरी=झड़ी (बाणों की)
जाम=जिस को, २ याम ।
जांम=याम, प्रहर ।
जावकं=यावक, मेंहदी ।
जाइ=जिस का ।
जिकारा=जय जय कार ।
जितकु (हि. बो) जिधर को, जितना ।
जिंदू=जिन (फा०) जिंद=आत्मा ।
जिनं=जिन को ।
जिनर जल्ले=जिनवर जल्पे ।
जियं=जितम् ।
जिरह=(फा०) कवच ।
जीह=जिह्वा ।
जुइ परी=दृष्टि गोचर हुई !
जुज्झार=योद्धा ।
जुट्टयौ=जुट पड़ा ।
जुत्तं=युक्त ।
जुत्तौ=जुत गया, काम में लग गया ।
जुथ्थ=यूथ ।
जुवत्ति=युवति ।
जुवानं=(फा०) ज़वान ।
जुविक्क=युवक ।
जूप=यूप ।
जूरं=जुड़ा हुआ, "गज मुत्ति जूरं" (18-4)
जुवं=जवं, वेग ।
जूह=यूथ ।
जे जुरी=अगर जुड़ गई—भिड़ गई । २ जाज्वल्यमान ।
जेत्तियं=जयाप्तिकम् ।

जेणि = जिस ने ।
जेरं = (फा.) ज़ेर, आधीन ।
जेहा = जैसा ।
जोइयं = जोया, देखा ।
जोगिनि पुर = दिल्ली ।
जोट = (पंजा०) जोड़ा ।
ज्योफ = (फा०) जोफ, हानि ।
जोयि = देखा ।
जोरं = (फा०) जोर, बल ।

झ

झनक्कै = झन झनाता है ।
झनप्पि = झड़प लेकर, "झगरौ झनप्पि" (13—91)
झरलं झर = झरल झरल करना, थर्राना ।
झली = झेल ली, सहन कर ली ?
झल्लोरियौ = झलोर दिया, पकड़ कर हिला दिया ।
झलक्किय = झलक पड़ी ।
झंकलिया = झलका दिया, चमका दिया ।
झंप, झंपै, झंपि = झपट कर ।
झंषै = झख मारता है ।
झाक = धाक ।
झार = ज्वाला ।
झारउ = झाड़ दिया ।
झारंतौ = झाड़ते हुए ।
झारै, झारौ, झारउ = झाड दिया ।
झिंझ = झांज, "बजे झिंझि आवज्झ हत्थे" (10—14)
झिल्लवै = झेलता है ।
झुज्झ = जूझना ।
झुरै = (पंजा०) झुरता है, दुःखित होता है ।
झौनि = छौनी, समूह "रुनंति भौंर झौनि ।"

ट

टुक टुक = किंचित् ।
टग ट्टग = टकटकी, निर्निमेष ।
टट = किनारा, तट ।
टंक = टंकार ।
टुट्टिय = टूट गया ।
टेरं = टेर लिया, बुलाया ।
टोप = शिरस्त्राण ।
टोरं = पंक्ति "कहं मालती टोर भूरि सुवेशी" (1—143)
टोरिवै = (पंजा०) टोरने के लिए, चलाने के लिए ।
टोंहं = (पंजा०) टोहना, खोजना ।

ठ

ठट्ठ = समूह, भीड़ ।
ठठुक्की = ठिठक गई, ठहर गई ।
ठयउ = ठहर गया ।
ठारु = ठहराव ।
ठा = (पंजा०) स्थान ।
ठिल्लै = ठेल दिए, धकेल दिये ।

ड

डड षरौ = डट कर खड़ा हो गया ।
डंड = दण्ड ।
डंडियौ = दण्ड दिया ।
डहक्कियं = डहका बजा, 'डमरु डहक..

डंबर—आडंबर।
डाढै—(पंजा०) डाढा—प्रबल।
डिंडिय—डौंडी बजाई।
डिंभ घटिया, निकम्मा, 2 हस्ति शावक
डुंग—डुंग देव-एक सामंत।
डुलिग—डुल गया, घबरा गया।
डुल्लिय—डुल गया, बबरा गया।

ढ

ढट्ठी—(पंजा०) भारी, भरकम, 'गदा चक्र ढट्ठी' (1—130)
ढट्ठी—ढरना, घड़ाम से गिरना।
ढरिपरयौ—ढह गया, गिर पड़ा।
ढरकत—ढलकते हैं।
ढंकन—ढक्कन, रक्षा करना। नृप ढकन इल होइ"
ढाढे—(पंजा०) डाढे-प्रबल।
ढारु—ढाल।
ढिभरु—बच्चा, "नहि ढिभरु षिल्लिय"
ढिल्लीस—दिल्लीपति।
ढुरि—ढुरना, (पंजा०) सरकना, चलना।

त

तकंत (पंजा०) ताकते हैं, देखते हैं।
तक्कै—(पंजा०) देखता है।
तग्गी—तकड़ी—प्रबल।
तच्छि, ताछकर, काटकर।
तड़िस—तड़ित
तरण—तन—(राजस्था०) का, की।
तत्ते—गरम जोशिले।
ततथे—तबले की नादानुकृति।
तथ्थ—तथ्य, २ तत्र।
तद्द=तदा, तभी, तब।
तद्ध सह=उसके साथ।
तन्न=तन।
तपि तामं=क्रोध से तप कर।
तमक्कि=तमक कर।
तमाशु=(फा०) तमाशा।
तमोर=ताम्बूल।
तयं=त्रय।
तर=तरु।
तरफरै=तड़फता है।
तर-स्याम=श्यामतर (शब्द व्यत्यय)
तलपत्र=तड़फता है, 2 पत्तों की शय्या।
तबल्लंत=(हि-बो०) तबलौं=तबतक।
तसव्वीह=(अ०) तसवीह।
तंती=तन्त्री।
त्थं=था।
त्थनयं स्तनितम्।
ताजी, ताजिय+(फा०) अरबी घोड़ा।
तानी=फैलाई।
ताम=उसको। 2 तामस गुण।
तारिय=(फा०) तारी—अन्धकार।
ताल्हं=ताल ठोकना।
तिषं=तीक्ष्ण।
तिष्ठ=तिष्ठ।
तिडग्गी=तिड़कगई=फट गई।
तिड़िय=तिड़क गया।
तिरसल=त्रिशूल।
तिरहुत्ति=मैथिल प्रदेश,

तिरहुति" (अयोध्या कांड)
तिरायं=तैरा दिया।
तिलोय=तीन लोक।
तिलक्क=तिलक।
तिस्त=तिस्नं=त्रस्त तृष्णाम्।
तुष्षार=घोड़ा।
तुंगल=तुंग।
तुटं=टूट गया।
तुट्टई=टूटता है।
तुट्ठि=तुष्ट हो कर।
तुंदु=(फा०) तुंदुर=घोर शब्द।
तुंवरं=तुंबे की तरह फूला हुआ।
तुंबा=एक पंजाबी वाद्य विशेष, तंबूरा।
तुरक्की=तुर्की।
तूरं=तूर्णं। त्वरा
तुरंतौ=तुरन्त, शीघ्र।
तुरिय=घोड़ा।
तूल=रूई।
तेक=तेग़।
तेजल्ल=तेजस्वी।
तौं=(हि. बो.) तूने।
तौन=तून, तूणीर।
तौ लगि=(हि. बो.) तब तक।
त्रिवल्ली=त्रिवली।
त्रीय=तीन।

थ

थट्टं=थट्टह=समूह।
थट्टौ=ठहर गया?
थपे=स्थापित किए।
थवाइत=स्थापित करवाया।
थहं=(पंजा.) थहं=स्था।
थहरिय=ठहर गया।
थाइ=स्थिर।
थानए=स्थान पर स्थित हुए।
थानह=स्थान;
थार=थाल।
थिर=स्थिर।
थुति=स्तुति।
थुंग=नादानुकृति।

द

दज्झ=दाह्य
दज्झइ=जलाता है।
दड्ढ=दाढ़, २ दृढ।
दद्दइ=देता है।
दद्दुर=दंदुर।
दर=द्वार।
दरया=(फा०) River
दल=सेना।
दलिद्द=दरिद्र।
दह=दस।
दहिंग=जल गया।
दंतिय=दंती।
दंद=द्वंद्व।
दाइत्तं=दयित।
दाच्छ=दक्ष।
दादुल्ल=दंदुर।
दाया=दाता।

दारँ=(द विदारे) विदीर्ण किया।
दावतं=(फा.) प्रीतिभोज।
दाम=दाम=रस्सी।
दिग्ग=दिशा।
दिग्गय=दिग्गज।
दिनियर=दिनकर।
दिट्ठं=देखा।
दिरके=विदक गए, पशु का विदकना।
दिस्नं=देखा।
दीरए=विदीर्ण किए।
दीह=दीर्घ।
दुआ=(फा.) प्रार्थना।
दुज्ज=द्विज।
दुंदं=द्वंद्व।
दुधारी=दो धारी (तलवार)।
दुन्निन=(अ.) दुनियां।
दुब्भौ=द्विविधा।
दुम=द्रुम।
दुल्लह=दुर्लभ।
दुहत्ती=दोही, गौ दुही?
दुहत्था=दोनों हाथ।
दून=दुगना।
देवगानि=देवता गण।
देहरे=द्वार।
दोजकि=(फ०) दोज़ख।
दोही=द्रोही।

ध

धषी=फैंकी, "धषी अंषी धूरं"।
धज=ध्वजा।
धंधीर=प्रबल योधा।
ध्रम्म=धर्म।
धार धार=धाड़ धाड़।
धारधरी=धराधर।
धुंधर=धुआंधार।
धुंधरिग=धुआंधार हो गया।
धुम्मिल=धूमिल=अंधकारमय।
धुम्मिलिय=धूमिल किया।
धुरक्की=दिल में धक धक हुई।
धुव=ध्रुव।
धूपं=संतापकारी, "वधे संब धूपं"। १०४
धूरं=धूल।
धोम=धूम।
धौरं=धौला=सफेद।

न

नषं=नष।
नष्षै=क्रोधित होता है।
नछत्री छितानं=पृथ्वी को क्षत्रियों रहित कर दिया।
नट्ठिग=नट्ठ गया (पंजा.) दौड़ गया। २ नष्ट हो गया।
नट्ठयं=नष्ट हुआ।
नत्थं=नत्थ लिया, नाक में नकेल डाली।
नत्थि=नत्थ कर।
नद्धं=बाँध दिया।
नप्पिय=(पंजा.) नप्प लिया, पकड़ा।
नफेरि=(फा.) नफीरी।
नयर=नगर।
नरी=स्त्री, २ बंदूक, ३ नाड़ी।
नवल्ल=नूतन।

नस्त्रं=नस्तर लगाया।

नंष-नंषौ=क्रोधित हुआ।

नंचिए=नाचने लगे।

नंधे=रोक लिए।

नांउ=नाम।

नारं=नाला, नद।

नारि=(फा.) तोप।

नाहं=नाथं।

नियं=निज।

निकत्थं=निकृष्ट।

निकड्ढी=निकाल कर।

निकद्दं=निकृष्ट।

निकल्लि=निकल कर।

निषे=नषे।

निगड्ढि=गाड़ कर।

निघट्टिया=घट गया, कम हो गया।

निझिल्लै=झेलते हैं, सहन करते हैं।

निर्द्दयारं=निर्दयी।

निर्धरयं=निराधार।

निट्ठं=निष्ठा, नष्ट।

नित्यार=नित्य।

निनारे=न्यारे, पृथक।

निवट्ट=निपट।

निब्वरं=निपट गया।

निब्भइ=निभाता है।

निम्मल=निर्मल।

नियं=निज, २ नित्य।

नियरेण=समीप से।

नियाग्न=नयाणा, नादान।

निरत्ति=निरक्त=विरक्त।

निवट्टै=निपटते हैं।

निवड्ढी=निवद्ध=बांध कर।

निवाजिय=(फा०) नमाज पढ़ी।

निसान=(फा०) झंडा, २ नगाड़ा।

निसुरत्त=निसुरत्ति खांन।

निहाय=छोड़कर।

नूरँ=(फा.) नूर, चमक, तेज।

नेन=नैन।

नेर, नैर, नयर=नगर।

नैड़ै=(हि. बो.) नेड़े=समीप।

प

पष्ष=पक्ष।

पष्षर=पाखर।

पष्षारयौ=प्रक्षालित किया।

पगह=पग।

पच्छा=पश्चात्।

पच्छैयरे=पीच्छे हटा दी (सेना)।

पत्त=प्राप्त करना, पहुँचना।

पतावहि=विश्वास दिलाता है।

पतियहि=प्रत्यय, विश्वास करता है।

पतीज किय=विश्वास किया।

पत्तीमि=प्रत्येमि, विश्वास करता हूं।

पथ पथ्य, पन्थह=पथ, मार्ग।

पथरिय=फैल गया।

पत्थी=पथिक, प्रथित।

पत्थे=पथ में।

पद्धर=(पजा०) पद्धरा, हमवार।

पट्ट=पट।

पट्टनं=पत्तन, नगर ।
पटंबर=रेशमी वस्त्र ।
पट्ठया=भेज दिया ।
प्पमान=प्रमाण ।
पयं=पांव ।
पयंपि=पकड़ कर, २ बोल कर ।
पयंपै=प्रजल्प, बोलते हैं ।
पयानह=प्रयाण ।
परच्चए=परच गए, दिल वहल गया ।
परष्षन=परीक्षण ।
परजंक=पर्यंक ।
परट्ठि=भेज कर ।
परतिष्य=प्रत्यक्ष ।
परिश्रंत=पर्यंत ।
परिश्ररि=परिक्रमा करके ।
परिट्ठ=प्रतिष्ठा ।
परिणाम=प्रणाम ।
परिहार=एक राजपूत ।
परि वहि=परि-वहित ।
पारिहरि=प्रतिहारि ।
परेव=कबूतर ।
पल्ह=प्लवंग=नौका ।
पल्लए=नौकावत्, डगमगाए ।
"पयाल पल्ह पल्लए (10-25)
पलक्क=पलक ।
पलट्टहिं=पलटते हैं ।
पलत्थिय=पलट दिया ।
पल्लानि=पलान, पलायन ।
पस्तर=प्रस्तर ।
पसाव=फैलाव ।
पहक्कि=पृथक् करके ?

पहर=प्रहर ।
पहार=पहाड़, २ प्रहार ।
पहु=प्रभु ।
पहुपंजलि=पुष्पांजलि ।
पंषिय=पक्षी ।
पंजलि=प्राञ्जलि ।
पंगुले=पंगुर ।
पंडिय=देवी का पांडा ।
प्रजारी=प्रज्वलित की ।
प्रज्जाल=प्रज्वलित अग्नि ।
प्रतच्छि=प्रत्यक्ष ।
प्रथ्थ=प्रथा ।
प्रप्प=प्रश्न ?
प्रब्ब=प्रबल, "भुमि प्रब्बल" (17-3)
प्रसद्द=प्रासाद ।
पाइक्क=पायक=पदाति ।
पाषरां-पष्षर=पाखर ।
पागार=पगार ।
पाटह=पटड़ा-तखता ।
पानं=प्राण, २ पाणि, ३ ताँबूल ।
पायार=पाताल ।
पारत्थह=पार्थ ।
पारद्धी=पार-धी=विद्वान् ।
पारस=स्पर्श ।
पारसि=स्पर्श कर के ।
पार-त्थियौ=पार हुआ ।
पासयो=समीप आया ।
पिक्कए=मोती ।
पिषि=देख कर ।
पिछोर=पिछला ।
पिट्टि=सिर पीट कर ।

पिट्ठि-सर = सिर पीट कर ।
पिट्ठ = पृष्ठ ।
पिट्ठरं = पिष्टम् ।
पिंड = (पंजा०) गांव, २ शरीर ।
पिंडुरी = पिंडली ।
पिथाई = पिथौरा, पृथ्वीराज ।
पिम्म = प्रेम ।
पियं = पीतम् ।
पिल्लिय = पिल गया, जुट पड़ा ।
पिल्लहु = पिल पड़ो, काम में लग जाओ ।
पिहत्थ = मोंती ।
पीउस = पीयूष ।
पीनंगी = स्थूल शरीरा ।
पीय = प्रिय ।
पीरं = पीड़ा ।
पील = (फा०) हाथी ।
पीलवान = (फ०) हथवान ।
पुट्ठी = पुट्ठ = उल्टा, २ पृष्ठे ।
पुत्ति = पुत्रि ।
पुर-पुरंग = पुर तथा उसके अंग ।
पुलानं = पुराणम्, २ पलान ।
पुह = पुष्प ।
पुहकर-प्रसद्द = पुष्कर राज के प्रसाद से ।
पेषी = देखी ।
पेज = पैज-प्रतिज्ञा ।
पेरोज = मोती ? मतौं लाल माणिक्क पेरोज
थप्पे (१-३७) ।
पेस = (फा०) पेश, सम्मुख ।
पैंडल-चलै = पैदल चलते हैं ।
पैंड = (पंजा०) पैंडा-मार्ग ।
पोहं = पहुंच गया ।
पौंडी = पौंडा, गन्ना । यह शब्द हांसी
हिसार में प्रयुक्त होता है ।

फ

फट्टं = फट गया ।
फट्टए = फट गए ।
फरजंद = (फा०) पुत्र ।
फरसम्मिय = परशु से काट दिया ।
फिरक्कि = फिरक कर, उछल कर ।
फुनवै = फुंकारे मारता है ।
फुल्लट्टया = फूलों से लदी लता ।

ब

बष्षर = (पंजा०) वख़रा, पृथक्
बषतर = (फा०) कवच ।
बगसीस = (फा०) बखशीस ।
बज्ज = वज्र ।
बज्जपति = इन्द्र ।
बंभ = ब्रह्मा ।
बंभी = (हि. बो.) बहुत ।
बंबरं = नादानुकृति ।
बब्बूरे = बावरोला whirl-wind
बद्दर = बादल ।
बिथुरि = फैंक कर ?
बड्ढ = वृद्ध ?
बयल्ल = बैल ।
बलक्किति = बल करता है, जोर लगाता है ।
बलह = बल, २ वल्लभ ।
बलापति = सेनाध्यक्ष ।

बलिज्जा=बली।
बल्लिनि=लताएं।
वली राय=बलिराज।
बहत्त=बह गया।
बहे=बध किया, २ बह गए।
बृहि=वर्हि=मोर।
बिजवहु=बीज दो, वपन कर दो।
बारह=बार "इहि बारह"=इस बार।
विहल्लं=स्थान से हिल गया, २ विह्वल।
ब्बुक्कियं=बुक्कने लगा, रोने लगा।

म

भग्ग=भग्न।
भग्गी=भाग गई।
भषहि=कहता है, २ खाता है।
भष्षु=भक्ष्य।
भत्तं=भक्त।
भत्ति=भक्ति।
भद्दं=भद्दा।
भद्दव=भाद्रपद।
भमी=घूम गई।
भरक्कं=भड़क गया, क्रुद्ध हो गया।
भरक्के=भड़क गए।
भल=भला।
भल्लनि=भाले।
भल्ली=भली, सुंदर।
भंजनह, भंजिय=तोड़ दिया।
भृत=भृत्य।
भाय=भाव।
भारथ्थ=भारत।
भारिय=भारी, बोझल।
भिंग=भृंग।
भिंडिपाल=सं० भिंडिपाल="अश्म प्रक्षेप-साधनम्" (दे० समुद्रगुप्त प्रशस्ति) भाषा में=टोपिया।
भित्ते=भर दिए।
भिद्दिहे=भेदेगा।
भिंद्यौ=भेद दिया।
भिभियं=भयभीत हुआ।
भिरिग=भिड़ गया।
भिल्ली=भिलिनी।
विहस्त=(फा०) बहिश्त।
भीमानी=भयंकर।
भीव=भय।
भुग्गवै=भोगता है।
भूरं=भूरि।

म

मग्गहि=ढूंढता है।
मग्गिवान=खोजी।
मग्गे=मार्ग में।
मग्गसिसि=मार्गशीर्ष मास में।
मच्छरी=प्रदेश विशेष।
मज्झि=मध्य में।
मज्झै= ,, ,,
मत्त=मदोन्मत्त, २ मात्रा।
मतिय=मति, बुद्धि।
मते करी=मतवाला हाथी।
मत्थे=मस्तक पर।
मत्थौ=मथ दिया।

मद्दं=मद ।

मधूनेरी=मधुपुरी, मथुरा ।

मनुहार=मनहरना ।

मंडील=मंडलाकार ।

मप्पिय=माप कर ।

मयमंत्त=मन्दोमत्त ।

मसाण=शमशान भूमि ।

मसलति=(अ०) मश्लहत=सम्मति ।

मसलिग=मसल दिया ।

मसंद=(फा०) मसनद ।

मसूरत्ति—(अ०) मशवरत- मशवरा ।

महग्ग=महार्घ्य ।

महा भर=महा भट ।

महिल-सुषं=महिला के सुख, भोग ।

महल्ल (अ०) महल ।

मंज=मंजु, २ मंझ=मध्य ।

मंजै=मांजते हैं, रगड़ते हैं ।

मंडी=मंडित की ।

मंडव=मंडित करता है ।

मंस-फट्टे नरी=मांस की नली फट गई ।

मृगे-तिस्न=मृगतृष्णा ।

म्रजादं=मर्यादा ।

मित्तिय=मिता, विचार किया ।

मिहिमान=(फा०) महमान ।

मुक्कौ=छोड़ दिया ।

मुक्की=छोड़दी, २ मुक्ति ।

मुक्करे=मुकलित हुए ।

मुकल्यौ=मुकुलित हुआ ।

मुगत्ति=मुक्ति,।

मुच्छि=मुर्च्छा, २ मुष्टि ।

मुत्तिय=मौक्तिक ।

मुत्ति सारे=मौक्तिक सार ।

मुद्द=मुद्रा ।

मुंदिग=मूंद दिया ।

मुनारे=(फा०) मीनार ।

मुरक्किय=मुरक गया, जरक गया ।

मुसाफ (अ०) मुसहफ=पुस्तक कुरान ।

मुही=मुझ को ।

मूरं=मूल ।

मेर=मेरू पर्वत ।

मेल्हीं=मेल दी, फैंक दी ।

मैद्धितिय=मद्धम, मैला कर दिया ।

मैन-मैनत्थ=काम देव ।

मै मंत्ता=मदोंन्मत्त ।

मोर=मेरा ।

मोरी—मोड़दी ।

मोहरयं=मोह जनक ।

मौजे=(फा०) मौज में ।

र

रष्षं=रख दिया ।

रषत्त=रखता है ।

रजक्क=धोबी,

रजत=रजता है, तृप्त होता है ।

रज्ज=रजना, तृप्त होना ।

रजियं=रज गया ।

रत्तल (फा०) रक्त, "रत्तुलिय नैन" ।

रत्तिय=रात्रि ।

रत्तरी=रात्रि ।

रत्तौ=अनुरक्त हुआ ।

रत्थं—रथ्या, २ रथ ।

रदग्रे=दांत पर,' 'रदग्रे इलाहं" ।
रनंकि झंकि=नूपुर नादानुकृति ।
रन्नि=रण ।
रपट्टे=रपट गए, फिसल गए ।
रल्ले=रल गए, जा मिले ।
ंग=आनंद ।
रंजहु=प्रसन्न होओ ।
रंज रंजिय=(फा०) रंज=कष्ट ।
रंजीनं=रंजित=प्रसन्न, करने वाला ।
ंध=रंध्र ।
रंभसु==रंभस=वेग ।
ंसीह=रण सिंह ।
रातं=अनुरक्त
रांन (फा०) जंघा ।
रावर=राजकुल, २ तुम्हारा ।
राह=(फा०) मार्ग ।
रिंगए=रेंगे, पेट के बल चले ।
रिंघए= ,, ,, ,, ,,
रिजे, रिज्झै=रीझते हैं, प्रसन्न होते है ।
रुक्कि=रुक कर ।
रुष्षं=रुक्ख (पंजा०) वृक्ष ।
रुषह=रुख तरफ ।
रुधिद्र=रुधिर से आर्द्र ।
रुद्धी=रोक दी ।
रुंधइ=रोकता है ।
रुरंति=रुलंति=रुलते हैं लुढकते हैं, शब्द करते हैं ।
रूपयं=रूप ।
रूव=रूप ।
रूर=सुन्दर, प्रशस्त ।
रेहए=रेखांकित किए ।
रोहं=आरोहण किया ।
रोहत=पैदा होते है ।

ल

लष्षि=देख कर ।
लग्न=लग्न ।
लच्छि=लक्ष्मी ।
लच्छि=लक्षयित्वा ।
लद्दं=लदा हुआ ।
लद्धी=प्राप्त की ।
लवक्कि=लपक कर, लढ़कना, लहलहाना ।
लहता=प्राप्त करता है ।
लहं=प्राप्त करता हूँ ।
लही=प्राप्त की ।
लिद्धं-रिद्धं=समृद्ध ।
लीकं=लकीर ।
लुंगी=लौंग, २ सिर पर बांधने की रेशमी दुपट्टा ।
लुत्थि=लोथ=लाश ।
लुब्भइ=लोभित होता है
लुब्भि=लोभित हो कर ।
लूसंदी=(पंजा०) लूसती है, जलाती है ।
लोइ=लोक ।
लोहानौ=एक राज पूत कुल "लोहाना आजान बाहु ।

व

वइट्ठु=बैठा है ।
वषत=(फा०) वख़्त—समय ।
वग्ग=(फा०) वाड़ा, वर्ग ।

वग्ग=घोड़े की वाग, लगाम।
वग्गी=वर्गिक, सैनिक।
वगे=(हि० बो०) वग गए, दौड़ गए।
वग्गे=वर्ग में।
वच्छ=वत्स, वच्छा।
वज्जइ=वजता है।
वट्टी=वाट (हि० बो०) मार्ग।
वट्ट=वत्ती, वर्तिका।
वट्टै=वांटते है ?
वडत्तनौ=वड़े तन वाला, हृष्ट पुष्ट।
वड्ढि=वाढ़ कर, काट कर।
वत्त=वात, वार्ता, २ दूत।
वत्तै वतरहि=वातें करता है।
वत्थ=वर्त्म, "अम्मौ जंगली राव कन्नौज वत्थं" (8-3)।
वत्थ=वस्ति-कटि, २ वक्षस्थल।
वद्द=वजना।
वद्दर=वादल।
वधूव=वधु।
वनाइग=वनाया।
वन्यौत=वन्य—जंगली।
वपं=वपु।
वरज्ज=रोकना।
वरी=वरण की, २ श्रेष्ठा।
वल्लिय=वेल।
वल्लिए=वेष्टित किए।
वसीठ=दूत।
वहनी=भगिनी।
वहणो=वहना, वहाव।
वंक्रिय=टेढ़ा किया।
वांच्छि=चाह कर।
वाजित्र=वाद्य विशेष।
वाम-वाइव-वाव=वायु।
वार=केश।
वारूनि=सेना, "दस हजार वारूनि विसाल" (१४-४२)
वारी=वाटिका।
वाहं=भुजा।
वि=अपि।
विअ, विय=दो।
विक्कस=विकसत।
विगत्ति—विगति—दुर्दशा।
विगलि—विगलित होना, विखरना "विगलि केस" (६-५६)
विचीच=वीच वीच में।
व्रिच्छन=वृक्ष (वहुव०)
विंजना=वींजना, वीनना।
विज्ज, विज्जल=विद्युत।
विंज्झ=विंध्य, २ विंध्याचल।
विझुक्का=भय से विदकना, उछलना ?
विटरंत=विटरते हैं, विगड़ते हैं।
विट्टयौ=रोका ?
विट्ठुरे=विस्तरित हुए।
विंटिया=विखेर दिया ?
विड्डरि=वहुत डर कर।
वित्तिय, वित्तयौ=वीत गया।
वित्तक्कु=धन।
वित्थारयौ=विस्तार किया।
व्रिदं=वृंद।

विद्दरे=विदीर्ण हुए, बिखर गया ।
विद्धु=विधु ।
विधुव=विधु ।
विन्निय=वीना, चुना ।
विनट्टै=नष्ट होते हैं ।
विनानि=नाना प्रकार ।
विन्यानि=विज्ञानी, २ न्यारा ।
विपं, विप्प=विप्र ।
विफ्फुरे=विस्फुरित हुए ।
विभट=विशेष भट-योद्धा ।
विंभ-भट्ट=ब्राह्मण भटट ।
विभुच्छ=बुभुक्षा ।
वियसि=आकाश में ।
विरत्थ=वृथा ।
विरद्द=विरुद ।
विरट=बहुत रटना ।
विरूझियो=उलझ गया ।
विरूरं=अति सुन्दर ।
विलष्यो=विलखा, रोया ।
विलग्ग=अधिक संलग्न हो गए ।
विलसंदे=विलास करते हैं ।
विबंध=वंधन रहित ।
विवहर=व्यवहार ।
विवहा=विविधा ।
विवानं=विमान ।
विसास=विश्वास ।
विसाजयौ=अच्छी प्रकार से सजाया ।
विसाइन=विश्वास घात ।
विसूरं=जो सूर न हो ।
विहत्तिय=मार दिया ।
विहान=विभात, प्रातः काल ।
विहथंति=क्रोध में आकर उधम मचाते हैं ।
विहर=विहार ।
विहल=विह्वल ।
विहल्लं=वेहाल ।
बिहिणा=विधिना ।
विहुं=विधु ।
वंझ=वीच में ।
वीनी=चुनी ।
वीरह=वीर का ।
वेतसल्ल=वैंत ।
वेर=(हि० बो०) वार, कितनी बार ।
वेबास=विवस ।
वेसा=वेश्या ।
वैरष्ष (फा०) झंडा ।
वैरंग=विना रंग के ।
वैरागरे=वैर का घर ।
वैसंघय=वयः संधि ।
वोई=वापी ।

स

सकट्टं=शकट ।
सक्रासं=सुकृश ।
सकिल्ली=किली सहित ।
संकीन=संकीर्ण ।
सष्षं=सखा ।
सग्ग=स्वर्ग ।
सज्जए=सज गए ।

सज्जा=शय्या।

सज्झयौ=साध्य हुआ।

सतनंज=सतलुज दरया।

सत्थं=साथ। २ समर्थ।

सत्थह= ,, ,,

सथ्थलं=(हि० बो०) घास की भरी जो दोनों भुजाओं में आजाए।

सद्द=शब्द।

सद्दे=(पंजा०) बुलाए।

सद्धनह=साधना-इच्छा।

सद्धै=साधता है।

सदाहं=सदा।

सद्धन्नाह=सनाह, कवच, सनाथ।

सनिद्ध=संनिहित;

सबल्ल=सवल।

समष्ष=समक्ष।

समज्झं= ,, ,,

समत्त=समस्त, २ समर्थ।

समत्तह=समर्थ।

समप्पन=समर्पण।

समाहं=सम-आहव—युद्ध ?

सम्हो=सम्मुख

समरह=समर।

समल=श्यामल।

समली=श्यामली काली।

समि=सम। २ स्वामी।

समुद्दं=समुद्र।

समूरं=समूल।

समे=साथ में।

सयल=सकल, २ शैल।

सरक्क=सरकना।

सरंत=शरद ऋतु।

सरद्धं=शरद ऋतु।

सरम=(फा०) शर्म-लज्जा।

सरीव=शलाका ?

सल=सालना, कष्ट देना।

सल्ल=शल्य।

सलक्कहि=सिसकता है।

सल्लक्कमि=संक्रमण करके।

सलष तणी=सलषपंवार की कन्या इंच्छिनी।

सलमलहिं=सिकुड़ते हैं।

सलहै=प्रशंसा करता है।

सविग=सवेग।

सहर=(फा०) शहर।

सहलौ=सहज, आसान।

संष=शंखासुर राक्षस।

संगरह=संगर—युद्ध।

संगाने=साथ में।

संघरिग=संहार कर दिया।

संच्चयं=संचित किया।

संचवी=संचित करती है।

संजुत्त=संयुक्त।

संझरं=झरना टपकना।

संठयौ=सांठा, जोड़ लगाया।

संठी=सांठ लगाई।

संदुषि=संदूख।

संघं=संधियां—जोड़।

संघै=संधि करता है।

संन्नाहिय=संहार किया।

संभरयं=संभृतम्।

संपत्ते=पहुँच गए।

संमरि=स्मरण करके।

संमुही = सम्मुख ।
संवरिय = संवरण किया ।
सांई = स्वामी ।
साई = निद्रालु ।
साइक्कं = सायक ।
साइय = शाया किया ।
साइयर-सायर = सागर ।
साकर = शक्कर ।
सागौर = सगौरव ।
साघन्न = सघन ।
साजि = सजाकर ।
सात = घात ।
सादं = (फा०) खुशी ।
सादूल = शार्दूल ।
साधं — साध्य ।
साधी = साधक ।
सानं = (सं० शाण) तीक्ष्ण ।
सानुक्क = सानु-सानुक — पर्वत शिखर २ अंत, ३ वनं ।
सामित्त = स्वामित्व ।
सामी = स्वामी ।
सामुषी = सम्मुख ।
सायरी-जिहाज = समुद्री जहाज ।
सार-सारह = शस्त्र, तलवार ।
सारा = समस्त ।
साराइ = सारा ही, समस्त ही ।
सारौ = सारा — गुप्त समाचार ।
सावज्ज = वज्ज — वजना टकराना-टकराव सहित । श्वापद ?
सावधं = सावधान ।

सास = श्वास ।
सांषुलै = कड़वे बोल "सहि न सांषुले बोल' (१०-७४)
सांग = शंकु — चौड़े फल वाला भाला ।
सिंगिनि = सांग — बर्छी ।
सिजंति = सृजंति ।
सित्ताबी = (हि० बो०) शीघ्र ।
सिंघवार = सिंध की वार — प्रदेश
सिंभ = शृंग-सींग ।
सियाल = शृगाल ।
सिलह = (अ०) कवच ।
सिलहदार = कवच धारी व्यक्ति ।
सिल्लार = (फा०) शिल — भाला ।
सिंवरयौ = (हि०बो०) सिंवर गया, सज गया
सिवालह = शैवाल ।
सीष = शिक्षा ।
सीवानो = सीमित बल शाली ।
सुग्र = सुत ।
सुकै = सुकृत ।
सुकोर = सुन्दर कोर-किनारा ।
सुगति = सुगति ।
सुगोभा = सुगठित शरीरा ।
सुघट्ट = सुघड़ ।
सुछंदे = स्वछंद ।
सुठयौ = ठहर गया ।
सुठार हां = सुन्दर स्थान ।
सुथोर = सुस्थान ।
सुनद्दं = सुनाद ।
सुपत्त = सुप्त ।
सभर = सुभट ।

सुभागय=सुभागकम् सौभाग्य जनक ।
सुभग्गी=सुभगा ।
सुभुल्लिय=भूल गया ।
सुभ्र=सुभर—सुभट, 2 शुभ्र ।
सुभ्रीयं=शुभ्र ।
सुरायह=अच्छी राय—सम्मति ।
सुलह=सुलभ ।
सुल्प=स्वल्प ।
सुलोय=सुलोक ।
सुविहान=सुलतान गौरी ।
सुह-दुह=सुख दुख ।
सुहडभर=हृष्ट पुष्ट योद्धा ।
सुहंत=शोभित होते हैं ।
सूक=सूह लेना, गुप्त रूप से पता करना
सून=प्रसून ।
सूरवां=शूरमा ।
सेत=श्वेत ।
सेद=स्वेद ।
सेनिय=श्रेणी, 2 सीढी ।
सेली=भ्रुकुटि भ्रु ।
सेसनि=अशेष, 2 शेष नाग । (वहुव०)
सेहड़ौ=सेहरा ।
सैद=(फा०) शायद ।
सोएल=सोहल, नाजुक ।
सोझ=सूझ बूझ ।
सोझनह=सूझना ।
सोम=सौम्य ।
सोहहि=शोभित होता है ।
सोहो=शोभित हुई ।
सौव्रन्न=सुवर्णमय ।

ह

हक=अहक—अधिकार अनधिकार ।
हक्कारियौ=बुलाया ।
हकाव=हकलाना ।
हष्षयं=घोड़ों का हांफना ।
हज्जारषी=हजार वीं ।
हति=है ।
हथनार=हाथ की नाल—वंदूक ।
हत्थी=हाथी, 2 हाथ की ;
हत्थे=हाथ में ।
हद्दं=(फा०) सीमा ।
हदनं=सीमाएं ।
हद=हृदय ।
हमकि=हमक कर ।
हमसि=हुमक कर ।
हयग्गय=घोड़ा-हाथी ।
हरिग=हर गया, पराजित हुआ ।
हरिणाच्छि=हरिणाच्छि ।
हरम्मि=(फा०) हर्म्य, अंतःपुर संबंधी ।
हल्लए=हिल गए ।
हलक्की, हलक्किय—हलक गई ।
हलकंति=हलकते हैं ।
हवकि=हबक कर ।
हसम=(फा०) हश्म—अनुचर ।
हहक्के=हुंकार भरी ।
हं=अहम्—अहंकार ।
हंक=हांक-बुलाना ।
हंकि=बुलाकर, हांक मार कर ।
हंकारे=ललकारे, चैलेंज दिया ।

हंकारिग=बुलाया, 2 अहंकार किया।

हाह=है।

हीति=सूर्य किरण।

हुँकु=हुंकार।

हुष्षै=हूंकता है, खंगारा मारता है।

हुतौ=था।

हुल्लारहिं=हुलारे देता है।

हुल्लसै=उल्लसित होते हैं।

हूर=(अ०) सुंदर परी।

हूल=पीड़ा।

हेंगुरी=इंडुरी, इंडुवा।

होमी=होम कर दी।

परिशिष्ट शब्द कोष

अंकुरिय—अंकुरित हुआ ।

अंकवारिय—अंकवार करना, जप्फी मारना

अंघुली—10—24 ।

अंगमै—अपनाता है ।

अंजियन (18-29) अंज—कमल ।

अंजु—(1—81) अंज कमल ।

अंजुरियांह (6—66) अंजलि ।

अषुत्तं 1—29 "अषुत्तं प्रहारे" ।

अषंडली—अषंडल—अखण्ड—ईश्वर

अप्षार— अखाड़ा ।

अष्षी—अक्षी—आंख ।

अगनित्तह—अगणित—असंख्य ।

अग्गइ—आगे ही ।

अगिवान—अग्रणी ।

अंगू—आगे से ही, पहिले से ही ।

अग्गे—अग्रे ।

अगैवान—अग्रणी, अग्रगामी ।

अचिन्जोई—आश्चर्य हुआ ।

अट्टारषी=10—28 ।

अडरित—डरा नहीं, भयभीत नहीं हुआ ।

अढर—जो न ढलता हो, अडिग ।

अतत्ते—जो तत्ते—गर्म जोशिले न हो ।

अत्थवै—अस्त होता है ।

अंदूनि—अंदुक—हाथी बांधने का लोहे का किल्ला ।

अंदोई—17—9

अघार—आधार ।

अनघोरं—जो घोर न हो ।

अनरत्तौ—अननुरक्त ।

अनेही—जो स्नेह न करता हो ।

अंबरिय—अंबर ?

अभंगो—दृढ़ योद्धा ।

अभं—16—31

अम्म—अम्मर—अमर —देवता ।

अमग्गह—अमग—कुमार्ग ।

अमजेज—3—45 ।

अरत्त—अरक्त, विरक्त ।

अरुट्ठ—जो न रूट्ठा हो, अर्थात् रुष्ट न हुआ हो ।

अलंगिल—आलिंगित ।

अवन्नह—2—6 ।

अवसांन—अंत ।

अविहर—4—18 ।

असारी—विना सार के ।

असंभी—असंभव ।

अहुट्टि—अटक गई ?

अहन—न हनन करना ?

आ

आकर्षी—आकर्षक ।

आषेचनं—सिंचन ।

आमग्ग 2—9 आ-मार्ग ।

आरुट्ठो—(4—19) आरूढ़ ।

आरत्तत—अनुरक्त होता है।
आररिय—रार—लड़ाई की।
आरस—अर्श—(फा०) आसमान।
आले—विरले।
आवतहं—आते ही।
आवर्दा—लर्जा 5—15।
आसरिय—आश्रय लिया।
आसिक्क—आशिक।

इ

इष्षि—ईक्ष, देख कर।
इत्ते—इतने।
इत्तौ—इतना।
इंद पत्थ—इन्द्र प्रस्थ।
इम—इस प्रकार।
इलाहं—इला—पृथ्वी।

उ

उग्गाह—उग्घा (पंजाबी) प्रसिद्ध।
उज्जए 10-18
उब्भाएं 8-8
उरप्प 9-82
उल्लं 8-10
उवत्ति 9-132
उसंघ 11-29
उदिग्ग—उदित हुआ।

क

कंक—क्षत्रिय।
कंष—कांख, कक्ष।
कंजियन 18-29
कंटून 8-78
कंठलाए—गले से लगाए।
कंध्रति—कंधा देते हैं, सहारा देते हैं।
कष्षंतर—कक्षान्तर।
कग्गद—कागद, कागज़।
कग्गलं—3—6 कौआ?
कच्छी 9-118, कच्छ जातीय।
कच्छै—10-!c कटिबंध कसते हैं।
कज्जै—(पंजा०) कज्ज पड़ गया, अंग-विहीन हो गए।
कट्टइ—काटता है।
कट्टनी—काटने वाली।
कढ्ढौ—(पंजा०) निकाल दो।
कटारिय—कटार, कटारी, बर्छी।
कटिक्कति—कटकटाता है, दांत चबाता है।
कट्टिया—काट दिया।
कट्टेरि—काटने वाला।
कठेरं—कठेर-एक राजपूत जाति।
कढ़ै—(पंजा०) निकालता है।
कणंजे—10-9
कर्त्तरि—काटने वाला।
कद्दव—कर्द्रम?
कद्दं—कर्दम, अथवा कद, कब।
कनकंति—कनक-कांति।
करकिय—कड़क गईं, बजने लगी, "करकिय षंजरी"—डफ बजने लगी।
करस्सि—(पंजा०) करेगा।
करारे—करड़े, कठोर।
कलक्कलि—कलिकाल, अथवा कलकल।

कलंपिय—पकड़ कर।
कलप्पि—कल्पना करके, अथवा
कलप कर—दुःखी होकर।
कलमलहि—कलमल करता है, घबराता
है।
कलयत्त—कलायुक्त।
कलली—सुंदर !
कसना 3-21, कस देना, बांध देना।
कसयं—कस दिया।
कहल—(फा०) कहर।
काइ—(पंजा०) क्यों ?
कायिक्क—कायिक, शारीरिक।
कास—कांहि—सरकंडा।
कासहिं—किस लिए।
किक्क—(15-17) क्यों ?
किकट्ट—क्रोध में दांत कटकटाना।
किकट्टिय—दांत कट कटा कर।
किनक्कै (13-77)
किम—क्यों ?
किहिव - किस प्रकार।
कीजं—किया।
कुंक—11-69
कुद्दै—कूदता है।
कुंद्दै—कुंद-मधम—ढीला पड़ता है।
कुरंगे—हरिण। तोरिय ही कुरंगे—हिरण
जैसी तोर—गति वाले।
कुसुमंति—कुसुमों सहित।
कुसल्ली—कुशल।
कोइक—कोई।
कोटरा—कोट।
कोठं पठानं—पठान कोट।

ष

षंगी—खड्ग हाथ में लिए।
षयर (14-127)
षलक्किय—खड़ खड़ाहट।
षलक्कियन—18-28
षलपतिय—खलपति—दुष्ट।
षहंतौ—खैंदा हुआ (पंजा०) लड़ता हुआ।
षिजि षिजि—खिज कर, नाराज़ होकर।
षित=खेत=रणांगण।
षिंदे—खिन्न होते हैं।
षिल्ले—खेल खेले।
षिसै—खिसक गए, सरक गए।
षुट्टी—खुटक गई, खड़क गई—आभास
हुआ।
षुंद—कुरेद कर।
षुद्यो—खोद दिया।
षोलियं—खोल दिया।
षंचित—खींचा।
षंजए 7-27
षंडल—खण्ड।
षंड विहंड—नष्ट भ्रष्ट।

ग

गंज्या—गंजा कर दिया।
गंधति—अति गंध युक्त।
गंठि—गांठ लिया, समझ लिया,
गांठ बांध ली।

गंभ—गर्भ ।
गजमुत्ति—गज मौक्तिक ।
गज्जित—गर्जित ।
गज्जिलक्क 12-32
गड्यो—गाड़ दिया ।
गडडहि—गाड़ता है ।
गड्ढ—गढ़ा ।
गत्तानं=गलतान—(हिसारी) व्यस्त ।
गम्भरु (पंजा०) नव युवक ।
गयन्नं—गया ।
गयनेह—गगन में ।
गरयौ—गल गया ।
गरिट्ठ—गरिष्ठ ।
गवट्ठिय—(10-69)
गस्सी—ग्रसित हुई ।
गात—(हिसारी) शरीर ।
गामी—ग्रामीण ।
गांवारह—गंवार, मूर्ख ।
गारूरी—गारुड़ी—सर्प विष उतारने वाला
गुद्दरै—गुप्त बात करता है ।
गुरहिं—गुर्राते हैं ।
गोईतं—गोपितम् ।
गुस्तान—18-8

घ

घुंमर—घुमड़ कर ।
घत्तिय—(पंजा०) भेज दिया, अथवा मार दिया ।

च

चक्क चक्किय—चकित हुए ।
चक्रित कुंतल—घुंघराले केश ।
चढंदे—चढ़ते हैं ।
चवत—चब चवाता है ।
चवहिं—बोलते हैं ।
चवट्ढा—चौगुणी ?
चहुंट्यौ—चुहुँट गया, चिपक गया ।
चमरालिय—14-121
जाइ=चाव से ।
चाकरह—चाकर—नौकर ।
चिकारे—चिल्लाना, दुःख से कराहना ।
चिट्ठिय—चिट्ठी—पत्र ।
चुंगाइ—चुगने के लिए, चरना ।
चुंगिल—चंगुल ।

छ

छक्का=छक गए, थक गए ।
छज्जै—छाजे—शोभित हुए ।
छज्जित—शोभित ।
छंडै—छिंडे पादिए, शरीर छलनी कर दिया ।
छद्द—आच्छादित ।
छपया—चपा—रात्रि ।
छयल्ल—छैल छबीला ।
छाछी—छाछ—तक्र ।
छिकारै—जय जयकार ।
छिंछ—छींटे ।
छितानं—क्षिति—पृथ्वी ।
छिरक्कति—छिड़कती है ।
छुछुंदरी—छुछुंदर ।

ज

जंगी मृदंगा—जंग का बाजा।
जंजरीं 13-11
जंजारह—जञ्जाल।
जंजूर 18-9
जंजोई—14-17
जंटूर 14-41
जंतिय—जाता है।
जंबर —(9-104) जबरदस्त।
जक—जकना, संकोच करना।
जगारिय—जगाया।
जगि—जाग कर।
जग्गारै—जगा दिये।
जग्गै—जाग गये।
जज्यौ—18-74
जज्जर—ज्वलित।
जड्ड-जड्डु—जड्डु उजड्डु—मूर्ख।
जत्थ—यथा।
जत्तहं—जाता है।
जरकस—जरीदार वस्त्र।
जद्द—जद्द—वंश, जद्‌द औलाद।
जदु—यदुवंश अथवा जब।
जबरजंग—जबरदस्त।
जाजं—48-21 एक सामंत ?
ज्याव—(14-26) यावत्।
जानि—यानि के अथवा जानकर।
जांम—याम, अथवा जहां।
जामिनि—यामिनि।
जापालषी 10-30
जिक्कास—9-165
जिंगन 11-37
जितकु (हिसारी) जिधर को।
जिते—जितने अथवा जीत लिये।
जिलारा 9-114
जिंगरी 8-88
जीपिय 5-66
जुजल्लं 1-162
जुट्टयो—जुट गया, पिल पड़ा।
जुर—जुड़ना।
जुरि—जुड़ कर।
जुवप्पन—युवापन।
जूरं—जड़ित।
जेजरी—8-65
जैरों 5-20
जोट—जोड़ा।
जोइल—देखता है।
जोतिक—ज्योतिष।
जोरा—जोड़ा तथा जोरावर।
जोरन—जोड़ने के लिये।

झ

झंष्षो—झष मारी।
झंषहि—झख मारता है।
झण्डा—पताका।
झंप झंपै—झपटता है, आक्रमण करता है।
झक झाई 17-6
झकझोरिग—झकझोड़ दिया।
झुकि—झुक कर।

झगरौ—झगड़ा।

झमकंति—झमकते हैं।

झरप्पि—झपट कर।

झरोषनि—झरोखे, गवाक्ष।

झल्लरि-झल्लरिया—झकझोड़ दिया। भींच दिया।

झल्लिय—झेल लिया, सहन किया।

झल्लोरियो—झल्ला गया, पागल हो गया।

झाई—छा गई।

झाक झमा—17-4

झारयउ—झाड़ दिया, झिड़क दिया।

झारान्यौ (10-72) झाड़ दिया।

झारि—झाड़ कर।

झारौ—झाड़ दिया, झिड़क दिया।

झिंझि—झांज—खड़ताल।

झिम झिमिक—झलकारा देकर।

झुम्मिय—झूम कर।

झूझंत—जूझंत, जुझते हैं।

झूमि—झूम कर।

ट

टंकतयं—ताटंक?

टट्टर—टट्टरी—गंजा सिर।

टट्ठा—मखोल।

टार—2-5 तार?

टुक्कि—टुकड़े टुकड़े करके।

टूकहं—टुकड़े कर दूंगा।

टोडर 11-121 एक राजपूत का नाम।

टोप—टोपी—सिर स्त्राण।

टोर—(पंजा०) चाल, गति।

टोरिवै—(पंजा०) टोरने के लिये, चलाने के लिए।

ठ

ठट्ठरि—ठट्ठा मखौल।

ठाई—उठाई, ऊंची की।

ठानी—ठान ली।

ठांम—स्थान।

ठिल्ले—ठेल दिये, धकेल दिये।

ठिल्लन—धकेलना।

ठौ—स्थान।

ड

डंड्यौ—दंडित किया।

डंडली 13—51।

डंडने—दण्ड देने के लिए।

डंड्री 5-55

डरप्पि—डर कर।

डहकंत—डहकते हैं।

डहडहै—डमरू डह डह करता है।

डाढो—दाढी।

डार—(हिसारी) पंक्ति।

डिगै—डिगता है, गिरता है।

डुल्यौ—डुल गया, घबरा गया।

डुलिग— ,, ,,

डुलिय— ,, ,,

डोलाहल—डोलते हैं, घूमते हैं।

ढ

ढंकिय—ढंक लिया।

ढंढोंरियौ—ढंढोरा दिया। डिंम डिम वजाकर घोषणा की।

ढंढोरहिं—ढंढोरा फेरते हैं।
ढरकंत—ढलकते हैं।
ढलक्किय—ढलक गया।
ढल्लिरिय—धकेल दिया।
ढहि पर्ची—(हिसारी) गिर पड़ा।
ढारे—ढाल दिये, गिरा दिए।
ढाहियं—ढाह दिया, गिरा दिया।
ढिल्लरी—ढीली।

त

तषतानं—मार मार कर तखता बना दिया।
तग्गे—(1-14) तकड़े—प्रबल।
तटंकता—ताटंक।
तंत—तत्त्व।
तंतू—तत्त्व।
त्थटं—समूह।
तद्द तद—तब।
तनहाले—तनहाई—अकेला।
तबल्लह—तबला।
तमूला 9—105 ताम्बूल।
तरकि—तरक कर, उछल कर।
तरफरै—तड़फता है।
तरप्पि—तड़फ कर।
तरारी—1-66।
तवस्थिय—स्तवन करके।
ताटंकता—ताटंक—कर्ण आभूषण।
तारी—(फा.) अन्धकार।
तारे—तारा गण।
तिंदू 13-78
तिपा-तिपत्ति 8-65 नादानुकृति।
तिरायं—तैरा दिया, पार कर दिया।
तीष—तीक्ष्ण।
तुंगह—उत्तुंग।
तुटितानं—टूट गया।
तुरत्तं—तुरत्तं—शीघ्र मार देना।
तोन—तूणीर।
तोग्यि—तोड़कर।

थ

थट्टा 11-3
थरहराना—थर्राना, कांपना।
थंमन—थम्बा—स्तम्भ।

द

दंती—हाथी।
द्रवइ—द्रवित होता है।
दट्ट 19-16
दम्म—दम रखना, हौसला करना।
दर्व्वानि—दर्व—अहंकार।
दसंत—देखते ही।
दहभारा—दस भार।
दहसति—दहसत—डर।
दिढंवर—दृढ़ अम्बर—कवच।
दिद्धिय—दींहदा है (पंजा०)—दीखता है, अथवा दिया।
दियंदे—दे दिए।
दीघा—(पंजा०) दीखता है।
दीधुं—देखने के लिए।
दीलवलं—(फा.) दिलवर।
दुंदर—दुर्धर।

दुनी—दुगनी।

दुभ्भौ—द्विविधा।

दुरंगे—दो रंगा—कपटी, दो रंगी चाल

दुर्यात—दूर होना, नष्ट होना।

दुरित—दूर कर दिया, दुत्कार दिया।

दुवे—दोनों।

दुसल्ली—दु-शल का पति जयद्रथ।

दूनति—दुग्गण, "षट्ट दुनति"। छः दूनी बारह।

दूप – दर्प।

देहरे—दरवाजे पर, देहलीं पर।

ध

घर—घड़।

धरकै—धड़कता है।

धरंग—अरधंग।

धराधर—धड़ाधड़, लगातार।

धसियं—धस गया।

धुक्कियौ—धकेल दिया।

धुकति—धुकती है, जलती है।

धुरक्की—9-118

धूमंग—धुएं जैसा।

धू मंडल—ध्रुव मंडल।

धूप—एक देव।

न

नषी 10-39

नंचिया—पकड़ लिया।

नट्ठिग—नष्ट हो गया, अथवा नट्ठ गया, दौड़ गया।

नठ्ठिनी—नटनी नर्तकी।

नत्थै—नकेल डाल दी अथवा सनाथ किया।

नंदरी 9-82

नद्दयं—नाद करता है।

नट्टं—नष्ट ?

नया—नूतन।

नल्ल विहल्लं 1-162

नस्सी—नष्ट हो गई।

नाषं 8-21

नाइक—नायक।

नाच्छे 5-47

नाजी 9-113

निक्करि के—निकल कर।

निकस्सि—निकल कर।

निघट्टिग—घट गया।

निघट्टिया—घटा दिया।

निर्घातयं-घातयं—घात प्रतिघात।

निछत्री—क्षत्रियों रहित।

निट्ठरइ—निढाल होता है।

निढाल—कमजोर!

निदधिजा—समुद्रजा—सरस्वती।

निर्धारं—निराधार।

निम्मई—निर्माण करता है।

निवाहियउ—निर्वाह किया।

निवारे—दूर कर दिए।

नीलंकर—नीला करने वाला।

नुम्महि—नम्र होता है।

नेवर—नेवल—नेवला।
नैक—(हिसारी) जराक, ईषद्।
नैण—नैन।
नैन नटि नटि—नयनाभिनय करके।

प

पक्कर—15-8
पष्षर—हाथी का लोहे का झूल।
पगार 11-30 किनारा
पच्छै पष्षै—पिछला पखवाड़ा।
पच्छारिय—पच्छाड़ दिया।
पच्छै पहर—पिछले प्रहर।
पजाए—पहुँचा दिए।
पट्ठर 7-6
पट्टरोह—पटड़े पर चढ़ना, चौकी पर खड़ा करके आदर करना।
पटाटी 13-79
पट्टुर 13-105
पट्ठे—भेज दिए।
पत्तं—प्राप्तम्।
पत्थारिय—प्रस्तार, फैलाव किया।
पत्थिय—प्रथित।
पद्धर—(पंजा०) पद्धरा, हमवार।
पन्न—पण्य।
पयातनि 13-29
पयानह—प्रयाण।
परषिब—परख करके।
परस—स्पर्श।
पराइन—पड़े हैं ?
परिगह—परिग्रह।
परिहार—एक राजपूत जाति।
परिपंति—परिपतंति=चारों ओर से गिरते हैं।
पल्लौं—प्रलय।
पलट्यौ—पलट आया, वापिस हुआ।
पलट्टहि—पलटता है।
पलंक—11-23 एक पल
प्रसरै—प्रसर, फैलता है।
पसारु—प्रसार, फैलाव।
पहु पंजुगी—पुष्पांजली।
पंचजन्य—शंख।
पंचफारि—पांच फाड़ें, फांकें।
पंचुकी—14-22
पंजर—पिंजर—कंकाल।
पंजरी—पिंजर।
पंजरत—कंकालवत् आचरण करना।
पंसारी—प्रसारी—फैला दी।
प्रगासिय—प्रगट हुआ।
प्रज्जरे—प्रज्वलित होता है।
प्रलंबे—लटक गये।
प्रसल्लि—10—26
पाइक्क—पायक—सेवक ?
पाघ=पाग, पगड़ी।
पाजी (हिसारी) मूर्ख।
पातक्क—पापी।
पार-छियो—पार हो गया।
पारि—पंक्ति।
पिंगिय—पीली।
पिंज—पिंजर।

पिछान्यौ—पहिचान लिया ।
पिट्ठि=पीट कर ।
पिल्यो—(हिसारी) पिल पड़ना, किसी काम में लग जाना ।
पुञ्जि=(पंजा०) पहुंच कर ।
पुट्ठि—पुट्ठा होकर ।
पुंतारह (16-26)
पुलंत—3-1
पुलै—13-78
पैषि—देख कर ।
पैलग्गि—पांव पड़ कर ।
पोह—पुहे—गुंथे हुए ।

फ

फट्टै—फटता है ।
फरी—परी-पड़ी, पड़ गई ।
फिरक्की—चक्की—चक्रवत् फिरती है, नाचती है ।
फुल्लिग—फूल गया, विकसित हुआ ।

ब

बग्गु—वागडोर ।
बज्जी—वज गई ।
बंकौ—वांका, छैल छबीला ।
बंगिए—बन गया ।
बंछै—चाहता है ।
बंटनौ—बांटणा (हिसा.) विभाजित करना ।
बज्जए—बजते हैं ।
बड्ढ—वाढ़ दिया —(हिसा०) काट दिया, नष्ट भ्रष्ट किया ।
बद्दइ—बोलता है ।
बद्धन—बांधने के लिए ।
बाव—वायु ।
बांही—बाहता है, अथवा बाहों वाले ।
बिहंड्यौ—नष्टभ्रष्ट किया ।
बीज—बिजली (हिसा०) विद्युत ।
बीयवांन—(हिसा०) वियावांन जंगल, शून्य स्थान । अथवा वीय—दूसरा, बांन—तीर ।
बुज्जि—15-36 ।
बिफरयौ—(हिसा०) विखर गया ।
बुल्लिग--बुलाया ।
बुंद—बूंद ।
बेहाले—बुरा हाल ।
बोभू—बोझ—भार ।
बोरहि—डुबोता है ।

भ

भंवर—भ्रमर ।
भट्टी दै मत्थै—भट्ठी देकर, अग्नि देकर, मस्तक पर भठी की अग्नि मार कर ।
भमंतिय=भ्रमण करता है ।
भमी—भ्रमित, घूम गई ।
भरक्कं—भड़कना, उत्तेजित होना ।
भरकि—भड़क कर ।
भरहरानं—भर्राना, उत्तेजित होना ।
भल्लिय—भली—अच्छी, सुन्दर ।
भांवरी—भांवर—फेरे देना, चक्र लगाना ।
भिच्छुरं—10-26

भिंटे—भेंट की।
भिंभरीं—भंवरी—भ्रमरी।
भिभियं—विभिषिका।
भित्तीयनं—भित्ति बन जाना, दीवार की तरह मजबूत।
भिरंति—भिड़ते हैं।
भीष—भिक्खा, एक नाम या भिक्षा।
भीवं—भीम—भयंकर।
भीभिनालं—16-36।
भु—भ्रु।
भुंजै—भूनता है।
भुंइ—(पंजा०) भूमि।

म

भोगाइने—भोगने के लिये।
मंगली—मंगल।
मंजर—15—54
मंडलरी—मंडलाकार।
मंडलीक—मंडलेश।
मष्षं—मख।
मज्झहं—मध्य में।
मद्दं—मर्दन।
मनद्दं—मनाना।
मथे—मथ दिए, मसल दिये।
मरनज्ज—मरण।
मल्ललिय—मल्लवत् आचरण करना।
मवन्नि—15-3
मसंद—बिसंद 14-10
मसलिग—मसल दिया।
महीन—महीन।
माइलु—8-19 मायके पीहर।
माउ—(पंजा०, माता।
माड़े—करना, "गरव न माड़े" गर्व न कर।
मारद्द—(फा०) मरद।
मारिक्करि—मार कर।
मिकहए 11-78
मिमाही 18-3
मिवल 3-5
मुक्कलौ—मुक्त कर दो।
मुष्षने—मुक्त करने के लिए।
मुद्रयं—मुद्रित, विकसित।
मुरहिं—मुड़ते हैं।
मुंहर—मोहरी, सेना का अग्रगामी योद्धा
मुहुन्नियं—18-44
मेवात—मेव, मुसलमान जाति जो आज कल गुड़गांव जिला में है।
मैनत्थ—मनमथ।
मोष—मोक्ष।
मोगर—एक मुस्लिम जाति।
मोरौ—मोड़ दिया, हरा दिया।

य

यौं—(हिसा०) इस प्रकार।

र

रष्षइत—रखता है।
रंगुजा—7-32
रंजयौ—रंजित हुआ, प्रसन्न हुआ।
रंजियहि—रंजित होता है।
रज्जं—रजना (हिसा०) तृप्त हुए, अथवा शोभित हुए।
रजन्त—रजते हैं।

रजाए—रजा दिए, तृप्त कर दिए।

रजियं—रज गया, तृप्त हो गया।

रट्ट्या—7-30 रटना ?

रत्तहं—अनुरक्त होता है।

रत्तलिय—रत्तल (पंजा०) रक्त।

रत्ति—किस्मत, तथा रतिक–जरा सा, थोड़ा सा।

रत्थी—रथ चालक।

रम्मिय—रमण करके।

रल्लै—(हिसारी) रल गये, जा मिले।

रहसी—(पंजा०) रहता है, तथा रहसि-एकान्त में।

राजंग—राजाओं का समूह।

रारि—झगड़ा।

राहप्प—(11-47) (फा०) राहत से।

राह-विराह—मार्ग कुमार्ग।

रिंघ 11-19

रिंघए—(7-30) रेंगना, पेट के बल चलना।

रिंधीग—रींध दिया, रींधना—(हिसा.) पकाना।

रिंद—1-7 (फा.) शराबी, बदमाश।

रुद्दी—रोक दी।

रुधिद्रा—रुधिर से आर्द्र।

रुप्पौ—रोप दिया (हिसा०) आरोपण किया।

रूप्पीयौ—आरोपण किया।

रूब—रूप।

रोभ—रोब—प्रभावित करना।

ल

लं—(हिसा०) तक।

लषिन—लक्षण।

लडंपि—लड़कर।

लत्तानं—लत्ता—(पंजा०) वस्त्र, तथा लातें मार..।

लद्दी—(हिसा०) लाद दी, लादना—गडडे पर सामान लगाना।

लद्धी—लब्ध की, प्राप्त कर ली।

ललाटेय—ललाटे।

लवन्न=(9-57) लवन7लवण।

लहानं—लहणा (हिसा०) प्राप्त करना।

लाजी—9-113

लामस—3-33

लिध्यौ—रोंक दिया ?

लिद्धिय—प्राप्त किया।

लीव—6-31

लुटै—लुट गए।

लौं—(व्रज) तक।

लोवीयलो 9-19 समान, तुल्य।

लोहनीन पाइ—लोहे की बेड़ियां पांवों में।

व

वषत्त—वखत (फा०) समय।

वट्ठै—बढ गए, अधिक हुए।

वत्थयं—14-27 वक्षस्थल ?

वनेतं=वन्य, जंगली।

वर-विंज 7-34

वसीठनि (बहुव०) दूत

वंच्छरी—चाहती है।

वंजी—वंझना—जाना (मुलतानी पंजाबी)

वंझरिय—(18-70) वांझ, वंध्या

वद्दि—बढ़ गई ।
वाजित्र—बाद्य वृंद ।
वार—केश, तथा आक्रमण, घात प्रतिघात ।
वावहि—वायु करता है,
वाहुंपषी—10-29
विछुंडिग—छोड़ दिया ।
विचष्ष—विचक्षण ।
विज्झ-विरझ 12-31
विझुल्ल 12-32
विझ्झि 12-72
विझुक्का 4-6
विट्टया 7-30
विंटिया—9-60
विट्टै—13-37 रोक दिए ?
विट्ठुन्नी 18-9
वितानं—वितान, तंबु ।
विथा—व्यथा ।
विप्पानिय—विप्रवत् आचरण किया ।
विप्फरे—(10-27) विस्फुरित हुए ।
विपियंति—व्याप्त होते हैं ।
विभारषीं 10-29
विमुहायं=विमुख ।
वियत्ति—बीत गई, अथवा वियति=आकाश में ।
वियापो—व्याप्त हुआ ।
वियारि—वयार, वायु ।
विरदाति—अति विरद ।
विरद्दिय—क्रिया ।
विरुद्दाति 5-4 ।
विरुझानं—बुरी तरह उलझ गया ।
विरुझ्झिगयौ—उलझ गया ।
विवहा—9-169 विविधा ?
विवकंत—9-166
विसुनाइउ—चुगली की ।
विहत्थ—विना हाथ के ।
विहत्थहं—5-22
विहनोंए
विहबंध 9-19
वीरंग—शूरवीर ।
वींट—(13-57) मापने का प्रमाण विशेष ।
वुचकारत—पुचकारता है, प्यार देता है ।
वुट्टिय—17-28
वेसत्त—(16-1) व्यसन ?
वैछुत
वैरष्ष—पताका ।
वैस—वयस—आयु ।
वोट—7-42
वोप—(12-11) तेज ?

स

सक्क—शक—संदेह ।
सकाइता—(9-88) फा० शिकायत
संज्जलि—(13-31) सज्जरी—(हिसारी) ताजी ।
सज्जै—सज गए, शोभित हुए ।
सिजंत—सजते हैं ।
सिज्जंति—सजते हैं ।
सज्झर>सज्जर>सज्जित—तैयार ।
सझर—(12-72)

सतंपत्र—कमल ।
सत्थति—साथ ।
सद्धि—साध कर ।
सद्धिय—साध दिया ।
सनंतष—11-69
सनाह=कवच ।
सनेत-नेत—17-19
सपज्जै—पज्ज—(पंजा०) बहाना, बहाना करता है ।
सपुरानौ—(14-116)
सबक्कि 3-23
सभे—सब, सर्व ।
समंक—सम्-अंक—एक साथ ।
समाह--13-76
समुहाइ—सम्मुख होकर ।
समूरं—समूह ।
समोधं—1-68
सलिता—सरिता ।
सरालिय—11-7
सलब—(4-26) फा० जपत करना ।
सवाइ—सवाया ।
सविग—(2-63) सवेग ।
सस्त्री—शस्त्रधारी ।
सहियन्न—सहन किया ।
सहीर 6-2
सत्रियणि—स्त्रियों सहित ।
स्रवै—स्रवता है, झरता है ।
संकलापने—एकत्रित होना ।
संक्रमि—संक्रमण करके ।
संकुली—संकुल—व्याप्त ।
संकसी—शंका करता है ।
संचना—संचित कीं, एकत्रित की ।
संजोई—संजोकर, संवार कर ।
संजलियं—(15-12)
संझं—(हिसा०) सायंकाल ।
संझरियं (18-60) झड़ गया ।
संठहु—सांठ—गाँठ लगा दो ।
संवरं—सम्बल ।
संभरहु—संभल जाओ ।
संभरै—संभलता है ।
साषि—साक्षी ।
साजं—साजों सामान ।
सातं—4-17 सात—घात ?
सार—शस्त्र, तत्व ।
सारम्म=(फा०) शरम, लज्जा ।
सारुक्क 12-8
सावंघर्षी 10-29
सावा—(पंजा०) हरित ।
सावाही=साबाश, वाह-वाह ।
सावीर—12-10 सवीर ?
स्याल—शृगाल ? तथा शूल ।
सिकंडिय—13-36 शिखंडी ?
सिंगिन—(बहुव०) शृंगी—सांग—बरच्छीं
सिंगिन—हेम—शृंगी हेम—शुद्ध स्वर्ण ।
सिंघले—सिंहली घोड़े ।
सिज्या—शया ।
सिज्जंति—सृजंति 19-58
सिट्टक 19-5
सिंदूरी—सिंदूर वाला घोड़ा या हाथी ।
सिंधुव—सिंधुव—हाथी ।
सिप्पर—सिर पर ?

सिभाइ—11-48
सिलहंता—सिलहदार—कवचधारी।
सिल्लार—13-87
सिल्है—सिलह—कवच पहन कर।
सिल्ली 4-18
सीमंत 12-9, सीमा का अंत।
सीर—(6-31) क्षीर?
सीरी 9-19
सीहत्थै—सीहत्थ 16-58
सुक्किगयं—सूख गया।
सुचंगा—बहुत अच्छा।
सुभ्झै—सूझता है, दीखता हैं।
सुठांम—सु स्थान।
सुतज्जी 13-77, सम्यक् छोड़ दी।
सुंदहि—9-155
सुथाटं 5-2
सुपिंग—पीला।
सुभियहि—शोभित होता है।
सुयं—स्वयं।
सुसताइ—सुस्ता कर।
सुसाकी (4-17) मद्य पिलाने वाला।
सुहर—सुहड—हृष्ट पुष्ट।
सुहीनं—अति हीनता।
सूक—10-35
सूरवां—सूरमा (हिसा०) शूरवीर।
सोझती 4-9
सोदं-मादं 1-65
सोनु—स्वर्ण।
स्रोन-लल्लौं—रक्तधारा।
सोसन—शोषण करने के लिए।
सौकी 5-49।

ह

हकाव—(9-145) हकलाना?
हंड-नेजा 5-36
हंपि—हांफ कर।
हनंदे—(पंजा०) हनन करते हैं।
हमं—अहंकारोक्ति।
हयो—है।
हलकि—हलक कर।
हलक्के—हलक गए, पागल हो गए।
हल्ल-भल्ले—हड़बड़ाकर हल्ला—हमला करना।
हलग—हिले, हलचल हुई।
हल्लति—हिलता है।
हलि—हिल गई।
हसिय—हंसता है।
हस्से—हंसे।
हाटकयं—हाटक—स्वर्ण।
हामति—(5-31)
हलीं—हिल गई।
हिंगोली—5-30
हित्ति—इति।
हिल्ली—(5-82) हिल गई।
हिब्बी—बाहंनषी 10-29
हुक्कै—(6-41) हुंकारता है?
हुत्ती—थी।
हुलास—उल्लास।
होति—होता है।

त्र

त्रसंत—डरते हैं।
त्रिडग्गे—त्रि-डग—कदम।

सहायक पुस्तकों की सूची

१. संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो—आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी साहित्य सदन, इलाहाबाद।

२. चंद वरदाई और उस का काव्य—डा० विपिन विहारी त्रिवेदी, हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद।

३. अपभ्रंश व्याकरण—केकाराम, वरनैकुलर सोसाइटी, अहमदाबाद।

४. अपभ्रंश पाठावली— " " "

५. प्राकृत व्याकरण—हेमचन्द्र सूरी।

६. गुजराती इंगलिश डिक्शनरी।

७. सन्देश रासक—सम्पादित—जिन विजय सूरी, भारतीय विद्या भवन, बम्बई।

८. अनल्ज़ ऑफ राजस्थान—कर्नल टाड, रौटलेज एण्ड केगन, लण्डन।

९. जायसी ग्रन्थावली—डा० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।

१०. वीसलदेव रासो—सम्पादित डा० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी परिषद् इलाहाबाद।

११. रामचरित मानस का पाठ—डा० माता प्रसाद गुप्त।

१२. इन्ट्रोडक्शन टु इण्डियन टैक्सचूअल क्रिटिसिज़म्, द्वारा एस. एम. कात्रे—ओरियण्टल पब्लिशिंग कं०, पूना।

१३. इजर्टन्स पञ्चतन्त्र।

१४. रेवातट समय—डा० विपिन विहारी त्रिवेदी, लखनऊ युनिवर्सिटी।

१५. राजस्थानी साहित्य और भाषा—मिनारिया, बीकानेर।

१६. हेमचन्द्र—देसी नाम माला, पिशल।

१७. पृथ्वी राज रासो वृहद् संस्करण—काशी नागरी प्रचारिणी सभा।
१८. अर्ध मागधी डिक्शनरी।
१९. हिन्दी शब्द सागर—काशी नागरी प्रचारिणी सभा।
२०. हर्नले, कम्पेरेटिव ग्रेमर ऑफ गौडियन लैंगवेजिज।
२१. रासो संरक्षा—मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या, काशी।
२२. इण्ट्रोडक्शन टु प्राकृत—ए. सी. वुलनर।
२३. प्राकृत पैंगलम—सी. एम. घोष, बंगाल एसियाटिक सोसाइटी।
२४. पृथ्वीराज विजय—ऑफ जयानक,
२५. पुरातन प्रबन्ध संग्रह—जिन विजय सूरी, भारतीय विद्या भवन बंबई।
२६. कोषोत्सव स्मारक संग्रह—काशी नागरी प्रचारिणी सभा।
२७. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति—जा. एच. ओझा।
२८. मध्यकालीन भारत का इतिहास—,, ,,
२९. राजपूताने का इतिहास—जगदीश गहलोत।
३०. हिस्टोरिकल ग्रैमर ऑफ अपभ्रंश—डा० तगारे, डक्कन कालेज पूना।
३१. पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ियां—व्रज विलास, राजकमल दिल्ली।
३२. व्रज भाषा—डा० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।
३३. प्राकृत ग्रैमर—ऋषिकेश, मेंहरचन्द लक्ष्मणदास लाहौर।
३४. निघण्टु तथा निरुक्त—डा० लक्ष्मण स्वरूप, औक्सफोर्ड।
३५. प्रौलिगेम्ना टु महाभारत—डा० वी. एस. सुकथंकर, पूना।
३६. भारतीथ प्राचीन लिपिमाला—जि. एच. ओझा।
३७. भारतीय सम्पादन शास्त्र—श्री मूलराज जैन, बसाती बाजार लुधियाना।
३८. महाकवि धनपाल—प्राकृत कोष, भाव नगर।
३९. करण्ड चरिउ—डा० हीरालाल जैन।
४०. प्रबन्ध चिन्तामणि—मेरु तुंगाचार्य, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, अहमदाबाद।
४१. वर्ण रत्नाकर औफ ज्योतिरीश्वराचार्य—सम्पादित डा० सुनीति कुमार चैटर्जी।
४२. रासो की भाषा—डा० नामवर सिंह, सरस्वती प्रैस, वाराणसी!

हिन्दी पत्रिकाएँ

१ सरस्वती—मई, जून १६२६, नवम्बर १६३४, जून १६३५, अप्रैल १६४२, नवम्बर १६२६।

२. राजस्थानी—सम्पूर्ण फाइल (शादूल रिसर्च इन्स्टीच्यूट)।

३. राजस्थानी जिल्द—३ जनवरी १६४०।

अंग्रेज़ी पत्रिकाएँ

१. हिस्टोरिकल क्वाटरली जिल्द १८, १६४० तथा दिसम्बर १६४२।

२. एसियाटिक सोसाइटी जनरल जिल्द २५।

३. प्रोसीडिंगज़ बंगाल एसियाटिक सोसाइटी, सन् १८६८

४. जिल्द ६ वीं, एसियाटिक सोसाइटी जनरल १८६४।

५. बंगाल एसियाटिक सोसाइटी जनरल जिल्द १२, १८७३।

६. कवि चंद वरदाई—इण्डियन आण्टी क्वेरी जिल्द १, १८७२।

———